अनुवादक . राजीव सक्सेना
सम्पादक: विनय कुमार गुप्ता
चित्रकार न. म कुरोव

БОРИС ПОЛЕВОЙ

Повесть о настоящем человеке

На языке хинди

BORIS POLEVOI

A Story About a Real Man

A short novel

In Hindi

$П \frac{4702010200-161}{031(01)-84}$ без объявления

अनुक्रमणिका

पाठकों के नाम कुछ शब्द*

द्वितीय विश्वयुद्ध, जिसने आधे से अधिक योरोप को खून में डुबो दिया था, सोवियत लोगों के लिए महान देशभक्तिपूर्ण युद्ध था। हम सोवियत लोग २२ जून १९४१ का दिन कभी नहीं भूलेंगे जब हिटलर ने हमारी भूमि पर अपनी २३० श्रेष्ठ डिवीजनों की पूरी शक्ति से आकस्मिक प्रहार किया था। उस समय नाज़ियों की शक्ति अपनी चरम सीमा पर थी। हिटलर की सेनाएं पश्चिमी योरोप में आसान विजयों के नशे में मदहोश थी। फ़ासिस्ट डिवीजनों के प्रहार से योरोपीय शक्ति के गढ़ माने जानेवाले देशों का चंद हफ़्तों में पतन हो जाता था। कुछ ने लड़ने का प्रयास *किया मगर उन्हें ध्वस्त कर दिया गया, कुछ को अपने बुज़दिल शासकों* की गद्दारी के कारण बिना किसी प्रतिरोध के समर्पण करना पड़ा। इस विजय-यात्रा में हिटलर की सेना मज़बूत ही होती गई। उसको सुसज्जित करने के लिए सारे पश्चिमी योरोप के कल-कारखाने काम कर रहे थे।

परंतु वर्ष के उस सबसे लम्बे दिन से, जिसे प्रतीकों के प्रेमी हिटलर ने सोवियत संघ पर आक्रमण के लिए चुना था, उसका सैनिक भाग्य मुंह मोड़ने लगा। सोवियत भूमि के पहले किलोमीटरों पर घमासान लड़ाइयां हुईं। सीमा-रक्षा टुकड़ियों और सीमावर्ती छावनियों की सेना से लड़ाइयों में शत्रु की चुनिंदा डिवीजनें रक्तहीन कर दी गयीं। फ़ासिस्ट कमान द्वारा आयोजित तूफ़ानी हमला अवरुद्ध हो गया, सोवियत भूमि पर आक्रमणका-

---

रियों के आगे बढ़ने के साथ ही उनकी हानि भी बढ़ती गयी। स्वयं ज
जनरलों के अनुसार तूफानी अभियान की पूरी योजना सोवियत मोर्चे
पर ही विफल हो गयी।

हमारे लिए ये युद्ध के त्रासदीपूर्ण महीने थे। लड़ाइयों में शत्रु ह
होता जा रहा था, परंतु वह देश के काफी बड़े क्षेत्र पर क़ब्ज़ा करने,
लेनिनग्राद को घेरने और मास्को की दहलीज़ तक आने में सफल हो गय
उस समय सोवियत सेनाएं न केवल जर्मनी की सेनाओं बल्कि उसके प
पिट्ठू देशों की डिवीजनों के विरुद्ध भी अकेली वीरतापूर्ण संघर्ष कर र
थीं। और युद्ध के हमारे लिए कठिनतम दौर में हमारे दुश्मनों को
और दोस्तों को भी यह पता चल गया कि अपनी समाजवादी मातृभूमि, अप
विचारधारा की रक्षा के लिए उठ खड़ा हुआ सोवियत मान
क्या है।

आपके हाथों में जो पुस्तक है वह ऐसे ही एक व्यक्ति को समर्पित है
उस समय अपने अधिकांश देशवासियों की तरह मैं भी फ़ौजी वर्दीधारी था
इस व्यक्ति से मेरा परिचय उन दिनों हुआ जब विशाल संग्राम छिड़ा हुआ
था जो इतिहास में "कुर्स्क युद्ध" के नाम से विख्यात है। बिना पैरोंवाला
विमान-चालक! न केवल विमान-चालक बल्कि एक सर्वमान्य श्रेष्ठ हवा-
बाज़ जिसे उन श्रेष्ठ जर्मन उड़ाकों पर अनेकों विजयों का श्रेय प्राप्त है,
जो स्वयं अपने रणकौशल के लिए प्रसिद्ध थे। अलेक्सेई मरेस्येव का नाम
सारे मोर्चे की ज़बान पर था। सच कहूं तो मुझे इन बातों पर पूरा
विश्वास नहीं हुआ। इसलिए मैंने उस हवाई अड्डे पर जाने का फ़ैसला किया
जहां वह तैनात था। मरेस्येव से मेरा परिचय उस समय हुआ जब वह
हवाई द्वंद्व से लौटा था और थकान से चूर अपने विमान के कॉकपिट से
निकल रहा था।

उसके साथी सैनिकों और स्वयं उसके शब्दों में मैंने इस व्यक्ति की राम-
कहानी अंकित कर ली, जो बाद में, युद्धोपरान्त इस पुस्तक का आधार
बनी। युद्ध के अंत तक सीनियर लेफ़्टिनेंट अलेक्सेई मरेस्येव मेजर बन
चुका था, उसे सोवियत संघ के वीर का स्वर्ण सितारा मिल चुका था।

जब यह पुस्तक हमारे यहां, सोवियत संघ मे प्रकाशित हुई और बाद मे उसका चालीस से अधिक देशों मे प्रकाशन हुआ, मुझे विशेषकर पश्चिमी देशों में यह सुनने मे आया कि पुस्तक में वर्णित घटनाएं संदिग्ध है। एक प्रसिद्ध अमरीकी हवाबाज, जो स्वयं द्वितीय विश्व युद्ध में लड़ चुका था, मुझसे बोला, "यह हो ही नहीं सकता, बिना पैरों के उडना असंभव है, और लड़ना, और आकाश द्वंद्व में विजय पाना तो सर्वथा असंभव है।" यह न्यूयार्क की बात है जहां मैं भूतपूर्व सैनिकों के शिष्टमंडल के साथ गया हुआ था। पर इसी शिष्टमंडल मे मेरी पुस्तक का नायक भी था। अमरीकी हवाबाज को यकीन करना ही पड़ा।

मुझे हमारी नौसेना के हवाबाज कैप्टन सोकोलोव से परिचित कराया गया, जो लडाकू विमान के चालक थे और बिना पैरों के युद्ध मे लड़े थे।

वायुसेना की एक प्रहारक ब्रिगेड का कमांडर भी जो जनरल था, एक पैर काट दिए जाने के बाद भी शत्रु पर प्रहार के लिए अपने स्क्वाड्रनो का नेतृत्व करता था और स्वयं आकाश युद्धो मे भाग लेता था।

मेरे लिए मेरा मित्र अलेक्सेई मरेस्येव हमेशा ठेठ सोवियत मानव है, जिसमे मानों हमारी जनता के सभी लाक्षणिक गुणो का समावेश है।

और उन पाठको को जो यह पुस्तक पढ़ेंगे मैं यह और बता सकता हूं कि इसका नायक जीवित है, उसने युद्ध के बाद दो उच्च-शिक्षा संस्थाओ से डिग्रियां पाई और अब कई सालो से भूतपूर्व सैनिको की अखिल सोवियत समिति का उत्तरदायी सचिव है। आज तक हमारी दोस्ती चली आ रही है, और कभी-कभी हम शांति-सेनानियो के विभिन्न सम्मेलनो में एक साथ भाग लेते है, क्योकि वे सभी लोग जो पिछले महायुद्ध की अग्निपरीक्षा से गुजर चुके हैं, अब शांति के उत्साही सेनानी हैं। मैं पाठको को यही बताना चाहता था और उन्हें पुराने रूसी सैनिक और लेखक का सलाम देना चाहता हूं।

बोरीस पोलेवोई
१९७८

तो मैं भी असली इनसान की कहानी लिखता...

बोरीस पोलेवोई से मेरा परिचय १९४३ की गर्मियों में हुआ। उ दिनों कुर्स्क प्रदेश में घमासान लड़ाई चल रही थी और हमारी रेजीमें उसमें खूब जोर-शोर से हिस्सा ले रही थी। हम हवाबाज हर दिन क कई बार दुश्मन से मोर्चा लेने के लिए उड़ानें भरते थे। तो एक श को ऐसी ही एक उड़ान के बाद मैं नीचे उतरा। हवाई जहाज से बा आते ही मुझे हवाबाजों के दल में एक अपरिचित व्यक्ति दिखाई दिया औ हवाबाजों ने मेरी ओर संकेत किया। "फिर कोई संवाददाता आ गया," मैंने कुछ परेशान होते हुए सोचा और मैस की ओर बढ़ चला।

अपरिचित आन की आन में मेरे पास आ गया और अपना परिचय दे हुए बोला, "'प्राव्दा' का सैनिक संवाददाता बोरीस पोलेवोई।" पोले वोई... मुझे याद तो आया कि 'प्राव्दा' में मैंने यह नाम देखा है मगर ईमान की बात कहूं कि यह महाशय कैसा लिखते हैं और किस वि षय पर लिखते हैं, यह मैं नहीं जानता था। पर खैर, पहली ही न में ये चुस्त, फुर्तीले, सीधे-सरल और हंस-मुख व्यक्ति मेरे दिल में उ गये। मैं इन्हें खोह में अपने साथ ले गया और हम बहुत देर तक बैं बातें करते रहे। पोलेवोई ने कई नोटबुकें काली कर डाली, मगर फि भी उनके सवालों की झड़ी लगी रही। जब हम विदा हुए तो पौ फ चुकी थी। जाते हुए उन्होंने कहा: "मैं जरूर तुम्हारे बारे में लिखूंगा, जरूर लिखूंगा।"

सुबह फिर दुश्मन से लोहा लेना था। यही सिलसिला चलता रहा। कहना चाहिए कि हर दिन की ऐसी लड़ाई-भिड़ाई की जिन्दगी में मुझे

'प्राव्दा' के संवाददाता की याद नहीं रही। वैसे यह सही है कि मैं पहले की भांति 'प्राव्दा' के पृष्ठों पर इस नाम को देखता था। जिन लोगों के बारे में उन्होंने लिखा था, वे भी मुझे बहुत पसंद आये थे। मगर ये मुलाकातें तो सिर्फ समाचारपत्र के पृष्ठों पर ही होती थीं।

मुझे महीना तो ठीक-ठीक याद नहीं पर यह बात १९४७ की है। एक दिन मैंने अपना रेडियो चालू किया तो उद्घोषक को यह कहते सुना, "बोरीस पोलेवोई की रचना 'असली इनसान' का अगला अंश हम कल सुबह नौ बजे प्रसारित करेंगे।" काले बालोंवाले इस पत्रकार की सूरत, जिसने खोह में मेरे साथ रात बितायी थी, फ़ौरन मेरी आंखों के सामने घूम गयी। अगले दिन मैंने सुबह के नौ बजे रेडियो चालू किया। मैं सुन रहा था मगर मुझे अपने कानों पर यक़ीन नहीं हो रहा था। पोलेवोई ने मेरी ही दास्तान लिख डाली थी।

इसी शाम को मैं पोलेवोई के घर बैठा था। उन्होंने मुझे बताया कि युद्ध के दिनों में मेरी बड़ी खोज की, मगर बेसूद। बाद में उन्होंने युद्ध-सम्बन्धी ढेरों सामग्री छान मारी और जल्दी-जल्दी घसीटी हुई नोटबुकों की सहायता से हमारी पहली मुलाक़ात के ब्योरे को निश्चित रूप दिया।

तो इसी शाम से लेखक बोरीस पोलेवोई के साथ मेरी मैत्री का श्रीगणेश हुआ। अफ़सोस की बात है कि हम बहुत कम ही मिल पाते हैं, सो भी सभा-सम्मेलनों में और कभी-कभार घर पर।

१९७८ में बोरीस पोलेवोई सत्तर साल के हो गये। पचास से अधिक साल हो गये उन्हें सोवियत साहित्य की सेवा करते हुए। चार बड़े उपन्यास और कहानियों तथा शब्द-चित्रों की बीस से अधिक पुस्तकें अपने पाठकों को भेंट कर चुके हैं। चैन से बैठने का तो उन्हें सपने में भी ख़्याल नहीं आता। कारण कि उन्होंने ऐसा पेशा चुना है, जिसमें चैन है ही नहीं — पत्रकार का पेशा। मैंने कुछ ग़लत नहीं कहा है — वे लेखक हैं, मगर पत्रकार की तरह सजीव। हमेशा दौड़-धूप करते, खोजते-ढूंढते हुए और हमे-

शा लिखने को तैयार। वो गीम पोलेवोई युवजन की पत्रिका 'यूनोस्त' के मुख्य संपादक हैं।

दुख की बात है कि मैं साहित्यकार नहीं हूं। अगर मैं शब्दों के मोती पिरोना जानता, तो अवश्य ही 'असली इनसान की कहानी' लिखता। वह कहानी होती महान देशभक्तिपूर्ण युद्ध के वीर सैनिक और 'जोशीले संवाददाता,' श्रेष्ठ सोवियत लेखक और पत्रकार तथा बहुत ही बढ़िया दोस्त बोरीस पोलेवोई के बारे में।

अलेक्सेई मरेस्येव,
सोवियत संघ के वीर
१९६८-१९७=

असली इनसान

प्रथम खण्ड

१

तारे अभी भी उज्ज्वल और शीतल आभा के साथ झिलमिला रहे
लेकिन पूरब में आसमान उषा की हल्की-सी लालिमा से आलोकित
लगा था। धीरे-धीरे वृक्ष भी मनहूसियत से उबरने लगे। यकायक त
हवा का तेज़ झोंका वृक्षों का शीश छूता हुआ उड़ गया। क्षण भर में
रा वन-प्रदेश अनुप्राणित हो उठा और तीव्र प्रतिध्वनियों से गूंज उठ
सदियों बूढ़े चीड़ वृक्षों ने एक दूसरे को कानाफूसी के स्वर में बुलाया औ
उनकी उद्वेलित भुजाओं से क्षार-क्षार शुष्क बर्फ़ हल्की-सी सरसराहट के साथ
झड़ने लगी।

जैसी तेज़ी में हवा उठी थी, वैसे ही वह शान्त हो गयी; वृक्ष पुनः
जड़ मौन में डूब गये। और तभी भोर की अगवानी करनेवाले सारे वन्य
स्वर फूट पड़े, निकट ही वन-प्रान्तर में भेड़ियों की भूखी गुर्राहट, लोमड़ि-
यों की चौकन्नी चीत्कार और अभी-अभी जागे कठफोड़वे की अनिश्चित
ठक-ठक, जो जंगल की खामोशी में ऐसी संगीतपूर्ण प्रतीत होती थी मानों
वह किसी पेड़ के तने को नहीं, वायोलिन के खोल को ठोक-बजा रहा
हो।

चीड़ की बोझिल चोटियों पर से हवा का एक झोंका फिर शोर मचा-
ता हुआ गुज़र गया। उज्ज्वलतर आकाश में अंतिम तारे भी धीरे-धीरे
बुझने लगे, आसमान स्वयं संकुचित हो गया और अधिक घना मालूम
होने लगा। रात की मनहूसियत के रहे-सहे निशान झाड़कर जंगल अपनी
ताज़ी शान-शौकत में खिल उठा। मनोवर के घुंघराले शीश और देवदार
की नुकीली चोटियों पर गुलाबी आभा देखकर यह बताया जा सकता था
कि सूर्य उदय हो गया है और आज का दिन निर्मल रहेगा, कड़ाके की
सर्दी होगी और पाला गिरेगा।

अब तक काफ़ी प्रकाश फैल चुका था। रात के शिकार को हज़म करने
के लिए भेड़िये घने जंगलों में घुस गये थे और वह लोमड़ी भी बर्फ़ पर

आवाज़ों से घबराकर जंगल से मैदान की तरफ़ भागकर आये एक म[illegible] के पंजों से बर्फ़ दबने की ध्वनियां साफ़ सुनायी दे रही थी।

भालू विशालाकार, वृद्ध और झबरीला था। उसके अस्त-व्यस्त ब[illegible] छाती की अग़ल-बग़ल भूरे लौंदों और कूल्हे पर गुच्छों के रूप में लि[illegible] आये थे। शरदारम्भ से ही इस क्षेत्र में घमासान युद्ध छिड़ा हुआ था और व[illegible] इस घने वन में भी घुस आया था, जहां पहले सिर्फ़ वन रक्षक और शि[illegible] कारी ही आया करते थे और वह भी कभी-कभार। शरद में युद्ध नि[illegible] आ जाने के कारण इस भालू को अपनी मांद छोड़ने के लिए विवश होन[illegible] पड़ा जब कि वह जाड़े भर सोने की तैयारी कर रहा था और अब भूख और क्रोध का मारा जंगल में भटकता फिर रहा था—उसे तनिक भी चैन न मिलता था।

भालू उसी स्थान पर, मैदान के किनारे आकर रुक गया जहां कुछ देर पहले हिरन खड़ा था। उसने हिरन के ताज़े चिन्हों को सूंघा, सांसें गियों को मरोड़ा और सुनने लगा। हिरन चला गया था, लेकिन जहां वह खड़ा था, वहां भालू ने कुछ ऐसे स्वर सुने जो स्पष्ट ही किसी जीवित और शायद निर्बल जीव के थे। भालू के कन्धे-से रोएं खड़े हो गये। उसने थूथनी पैना दी। और तभी उसे मैदान के किनारे पर करुण कराह महसूस हुई जो मुश्किल से ही सुनायी देती थी।

धीरे-धीरे सावधानी से अपने नर्म पंजों के बल चलते हुए, जिनके भार से सख्त, सूखी बर्फ़ चटककर धंस रही थी, वह भालू उस निश्चल मानव-आकृति की ओर बढ़ा जो बर्फ़ में आधी दबी पड़ी थी।

२

हवाबाज़ अलेक्सेई मेरेस्येव दोहरी 'कैंची' में फंस गया था। आकाश युद्ध में किसी फ़ाइटर के लिए इससे बुरी कोई बात नहीं होती। उसका सारा गोला-बारूद खत्म हो गया था और जब चार जर्मन हवाई जहाजों ने उसे घेरा, तब वह असहाय निहत्था था, उन्होंने उसे भाग निकलने या लड़ाई करने का कोई मौका दिये बग़ैर, अपने अड्डे की तरफ़ ले चले थे।

[illegible] अलेक्सेई मेरेस्येव की कमान में लड़ाकू हवाई जहाजों

वाला स्तम्भ उठ खड़ा हुआ था, उसके दो चक्कर लगाकर उसने पुन अपना हवाई जहाज शत्रु के हवाई अड्डे की ओर मोड़ दिया।

किन्तु वह वहां न पहुंच सका, उसने अपने दस्ते के तीन लड़ाकू जहाज शत्रु के नौ 'मेसरस्मीट' लड़ाकू हवाई जहाजों से जूझते देखे—स्पष्ट था कि इन हवाई जहाजों को जर्मन हवाई अड्डे के कमांडर ने लड़ाकू बममारों के हमले का जवाब देने के लिए बुला लिया था। जर्मन ठीक एक के मुकाबले तीन थे, मगर फिर भी हवाबाज साहसपूर्वक उनपर टूट पड़े और उनको लड़ाकू बममारों की ओर से हटाने का प्रयत्न करने लगे। इस संग्राम में वे शत्रु को उस स्थान से दूर और दूर ले गये—जैसे जंगली पहाड़ी मुर्गी घायल होने का नाटक करके शिकारियों को अपना पीछा करने के लिए लुभाती है ताकि उसके बच्चे बच जायें।

अलेक्सेई सहज शिकार के प्रलोभन में स्वयं फंस गया, इस बात से वह इतना शर्मिन्दा हो उठा था कि उसे हेलमेट के नीचे अपने कपोल जलते हुए अनुभव हो रहे थे। उसने एक निशाना चुना और दांत भींचकर भिड़ गया। निशाना जो उसने चुना था, एक 'मेसर' था, जो अपने अन्य साथियों से बिछुड़ गया था और, स्पष्ट ही, वह स्वयं भी कोई शिकार खोज रहा था। उसका वायुयान जितना भी तेज उड़ सकता था, उतने पूरे वेग से अलेक्सेई बाजू से शत्रु पर झपट पड़ा। उसने इस कला के हर नियम के अनुसार जर्मन हवाई जहाज पर हमला किया था। जब मशीनगन का घोड़ा दबाया, तब उसे आंखों के सामने लक्षक में शत्रु के वायुयान का धूसर ढांचा साफ दिखायी दे रहा था, मगर शत्रु फिर भी अक्षत बच निकला। अलेक्सेई का निशाना चूकना न चाहिए था। निशाना नजदीक ही था और साफ दिखायी भी दे रहा था। "गोला-बारूद!" अलेक्सेई समझ गया और उसकी रीढ़ की हड्डी में ऊपर से नीचे तक एक कपकंपी दौड़ गयी। मशीनगन की परीक्षा करने के लिए उसने फिर घोड़ा दबाया, लेकिन उसे वह सिहरन न महसूस हुई, जो हवाबाज को मशीनगन दागने के साथ सारे शरीर में ऊपर से नीचे तक अनुभव होती है। कारतूस का जखीरा खाली हो चुका था; परिवहन विमानों का पीछा करते हुए उसके सारे कारतूस चुक गये थे।

लेकिन शत्रु को इस का पता न था। अलेक्सेई ने जूझ पड़ने का निश्चय किया ताकि दोनों पक्षों के संख्यात्मक अनुपात में सुधार किया जा सके। लेकिन उसकी धारणा ग़लत थी। जिस लड़ाकू विमान पर उसने अचानक

पर मशीनगनों का घोड़ा दबा दिया। अलेक्सेई के इंजन की गति मन्द हो गयी और जब-तब उसकी धड़कन बंद होने लगी। पूरा विमान इस तरह काँप रहा था, मानो उसे काल-ज्वर चढ़ आया हो।

"मैं निशाना बन चुका हूँ" अलेक्सेई एक सफेद घने बादल में विलीन होने में सफल हो गया था और इस तरह अपना पीछा करनेवालों को गुमराह कर चुका था। मगर अब आगे क्या किया जाय? क्षत-विक्षत विमान की कंपकंपी वह अपने सारे शरीर में महसूस कर रहा था, मानो वह उस विमान की मौत की आख़िरी तड़प नहीं, ख़ुद अपने शरीर का बुख़ार जो उसे सता रहा था।

इंजन किस जगह क्षति-ग्रस्त हुआ है? विमान कितनी देर और आसमान में ठहर सकेगा? क्या पेट्रोल की टंकी फट न जायेगी? अलेक्सेई इन प्रश्नों पर सोच उतना नहीं रहा था, जितना उनको महसूस कर रहा था। वह महसूस कर कि वह ऐसे डायनामाइट पर बैठा हुआ है जिसका फ़्यूज़ जलाया जा चुका है, उसने अपना वायुयान मोड़ा और अपनी फ़ौजों की तरफ़ भाग चला, ताकि अगर काम तमाम हो ही जाये तो कम-से-कम उसका अंतिम संस्कार उसके अपने लोगों के हाथों हो।

चरमोत्कर्ष भी अकस्मात ही आ गया। इंजन बंद हो गया। विमान इस तरह ज़मीन की तरफ़ गिरने लगा मानो किसी पहाड़ से लुढ़क रहा हो। नीचे अनन्त समुद्र की धूसर-हरित लहरों की तरह जंगल लहरा रहा था। "जो भी हो, अब मुझे बंदी न बनाया जा सकेगा," यही विचार था जो उस हवाबाज़ के दिमाग़ में उस समय कौंध गया जब विमान के पंखों के नीचे, निकट के वृक्ष, एक समतल सड़क की तरह एकाकार होकर सरकते नज़र आ रहे थे। और जब जंगल वन किसी जंगली जानवर की तरह उसकी तरफ़ झपट पड़ा तो उसने अन्तर्प्रेरित होकर मैगनेटो बंद कर दिया। चरचराहट करनेवाला धमाका सुनायी दिया और एक क्षण में ही सारी चीज़ें इस तरह ग़ायब हो गयीं मानो वह और उसका विमान किसी बड़ी भारी पानी के तल में डूब गया हो।

गिरते समय वायुयान चीड़ के शिखरों से टकराया। इससे गिरने का वेग कम हो गया था। कई वृक्ष काटता हुआ वह विमान गिरकर चकनाचूर हो गया, लेकिन इससे एक क्षण पहले ही अलेक्सेई अपनी सीट से बाहर फेंक दिया गया था और एक सदियों पुराने भारी-भारी शाखाओंवाले देवदार का शिखर, उसकी शाखाओं पर फिसलता टपकता वह उस बर्फ़ के ढे

मौका मिल सकता है यदि वह देखभाल करे, बशर्ते उस पर [illegible]
और इसके पहले कि वह अपनी बंदूक चला पाये, उसकी [illegible]
हो जाये और हाथापाई करने लगे तो ... लेकिन यह सब सावधानी से
और बड़ी बारीकी से करना होगा।

शरीर की स्थिति अलिक्सेई की बदले बिना अलेक्सेई ने धीरे, बहुत धीरे
से आँखें खोलीं और पलकों की [illegible] पलकों से उसे कोई अधिक नहीं, कोई भूरा-
भुरभुरा गुच्छा दिखायी दिया। उसने आँखें अलिक और साँसें और फिर
एकदम बंद कर लीं: उसके सामने एक बड़ा भारी, [illegible] भालू
कूल्हों के बल बैठा था।

३

वह भालू इस तरह खामोशी के साथ, जैसे कि सिर्फ जंगली जानवर
ही खामोश रह सकता है, इस निस्पंद मानव शरीर के पास बैठा था जो
सूर्य की किरणों से चमकती बर्फ की नीलिमा में मुश्किल से दिखाई दे
रहा था।

उसके गंदे नथुने धीरे-धीरे फड़क रहे थे। उसके आधे खुले जबड़ों के
अंदर से पुराने, पीले, मगर अभी भी तीखे दांत दिखाई दे रहे थे और
उनसे लार की पतली-सी डोर हवा में झूल रही थी।

युद्ध ने उसकी शीतकालीन निद्रा छीन ली थी और अब वह भूखा और
क्रुद्ध था। लेकिन भालू मुर्दा मांस नहीं खाते। निस्पंद शरीर को सूंघकर,
जिसमें से पेट्रोल की तीखी गंध आ रही थी, भालू अलस गति से उस
मैदान में टहलने लगा जहां इस तरह के अनेक मानव शव भुरभुरी बर्फ में
जमे पड़े थे; लेकिन एक कराह और किंचित खड़खड़ाहट उसे फिर अले-
क्सेई के पास खींच लायी।

इसलिए अब वह अलेक्सेई के क़रीब फिर आ बैठा था। शव के मांस
से घृणा के खिलाफ भूख की तड़प संघर्ष कर रही थी। भूख हावी होने
लगी। उस जानवर ने सांस भरी, उठ बैठा, अपने पंजों से शरीर को
पलट दिया और हवाबाज़ की वर्दी को अपने नखों से फाड़ने की कोशिश
की। मगर कपड़ा बरकरार रहा। भालू धीमे से गुर्रा उठा। उस क्षण
आँखें खोलने, एक तरफ़ लुढ़क पड़ने, चिल्ला उठने और छाती पर चढ़े
हुए भारी पशु को धकेल देने की इच्छा को दबा लेने में अलेक्सेई को बड़ा

प्रयत्न करना पड़ा। उसका रोम-रोम उसे उन्मत्त और प्रचंड रूप में आत्म-रक्षा करने के लिए प्रेरित कर रहा था, मगर उसने अपने को मजबूर किया कि धीरे-धीरे, अगोचर रूप में, अपना हाथ जेब में डाले, रिवॉल्वर की बन्द मुठिया टटोले और इस सावधानी से घोड़ा चढ़ाये कि जरा भी आवाज न हो और फुर्ती से उस हथियार को बाहर निकाल ले।

वह पशु और भी क्रुद्ध होकर उसके वस्त्र फाड़ने की कोशिश करने लगा। मजबूत कपड़ा चरमरा उठा, मगर फिर भी फटा नहीं। भालू पागल होकर गरज उठा, उसे अपने दाँतों से खींचने लगा और रोएंदार चमड़े तथा रुई को चीरकर उसने शरीर में दाँत गड़ा दिये। इच्छाशक्ति का अन्तिम बल संजोकर अलेक्सेई किसी भाँति अपनी कराह दबा गया और जिस क्षण भालू ने उसे बर्फ़ के ढेर में से बाहर निकाला, उसने अपनी रिवॉल्वर उठायी और घोड़ा दबा दिया।

तीखी और गूँजती हुई कड़क के साथ गोली दग गयी।

नीलकण्ठ ने पंख फड़फड़ाये और तेज़ी से उड़ गया। प्रकम्पित डालों से सूखी बर्फ़ झड़ पड़ी। भालू ने धीरे-धीरे अपने शिकार को छोड़ दिया। भालू पर नज़र गड़ाये हुए अलेक्सेई फिर बर्फ़ में लुढ़क गया। भालू कुछ देर तक कूल्हों के बल बैठा रहा, उसकी काली, कीचड़-भरी आँखों में किंकर्तव्यविमूढ़ता का भाव उमड़ आया। बर्फ़ पर उसके मुँह से मटमैले लाल खून की मोटी धार बह निकली। उसने कर्कश और भयावनी गुर्राहट की, ज़ोर लगाकर अपने पिछले पैरों पर खड़ा हो गया और अलेक्सेई के दोबारा गोली चलाने से पहले ही बर्फ़ पर ढेर हो गया। नीली बर्फ़ पर धीरे-धीरे गुलाबी रंग चढ़ गया और ज्यों-ज्यों वह पिघलने लगी, भालू के सिर के पास एक हल्की-सी भाप उठने लगी। जानवर मर गया था।

अलेक्सेई जिस तनाव में फंस गया था, वह यकायक ढीला पड़ गया। उसे फिर अपने पैरों में तीखा और जलन-भरा दर्द महसूस होने लगा। बर्फ़ पर पुनः गिरने के बाद वह अचेत हो गया।

उसे जब होश आया तब सूरज आसमान में काफी चढ़ आया था। देवदार की घनी चोटियों को चीरकर आनेवाली उसकी किरणों से बर्फ़ सुनहरी आभा से दमक रही थी। छाया में बर्फ़ अब नीली नहीं रह गयी थी—गहरी नीली हो गयी थी।

"मैं भालू के बारे में क्या सपना देख रहा था?" अलेक्सेई के दि-
माग में सबसे पहला विचार यही उठा

नीली बर्फ पर, नजदीक ही, भालू की भूरी, ऊबड़-खाबड़ गंदी लोथ पड़ी थी। सारा वन स्वरों से गूंज रहा था। कठफोड़वा पेड़ को ठक बराबर बजा रहा था, पीली छातीवाली चंचल फुदकियां इस शाख से उस शाख तक उछलते हुए आनन्दपूर्वक चहचहा रही थीं।

"मैं जिन्दा हूं, जिन्दा हूं, जिन्दा हूं!" अलेक्सेई ने अपने मन में बार-बार दोहराया। और उसका शरीर, रोम-रोम जीवित होने की ऐसी शक्तिशाली अद्भुत मद-भरी संवेदना से स्फूर्त हो गया, जो कभी भी भयानक खतरे से बच निकलने के बाद हर व्यक्ति पर हावी हो जाती है।

इस स्फूर्तिप्रद संवेदना से प्रेरित होकर वह उठ खड़ा हुआ, मगर तत्क्षण कराहकर भालू के शव पर लुढ़क गया। पैरों में तीखा दर्द महसूस हुआ। उसे अपने मस्तिष्क में चक्की के पुराने खुरदरे पाटों की मनहूस गड़गड़ाहट महसूस होने लगी जो मानों उसके माथे में कंपकंपी पैदा कर रहे हों। उसकी आंखें यों दर्द कर रही थीं जैसे कोई व्यक्ति अपनी अंगुलियों से उनकें दबा रहा हो। कभी तो उसे चारों ओर की वस्तुएं स्पष्ट रूप में सूरज की शीतल और पीत किरणों से नहायी हुई दिखाई देतीं, तो दूसरे ही क्षण हर चीज धूमिल, चकाचौंध परदे के पीछे गायब होती नजर आती।

"बुरा हुआ। गिरने पर जरूर मुझे आघात पहुंचा होगा। और मेरे पैरों में भी कुछ गड़बड़ है," अलेक्सेई ने सोचा।

कुहनी के बल उठते हुए उसने आश्चर्यपूर्वक विस्तृत मैदान की ओर देखा जो जंगल की सीमा से आगे खुला नजर आ रहा था। उसके पार क्षितिज पर दूर के जंगल का छोर अर्धवृत्ताकार दिखाई दे रहा था।

स्पष्ट था कि शरद में या शायद शीतकाल के प्रारम्भ में इस जंगल की सीमा पर [illegible] थी, जहां लाल सेना का कोई दस्ता, शायद [illegible] तक नहीं, मगर कदम कदम [illegible], मृत्यु-पर्यन्त डटा रहा था। बर्फ़ीले तूफ़ानों ने बर्फ़ की रुई की तहें जमाकर ज़मीन के घावों को भर दिया था, लेकिन इन तहों के नीचे भी [illegible], [illegible] के [illegible] व [illegible] और जंगल के किनारे पर गोलों से उड़े या कटे-फटे पेड़ों की [illegible] में बिखरे छोटे-बड़े गोलों के टुकड़ों का पता चल रहा था। इस [illegible] मैदान में जहां-तहां कई टैंक पड़े थे, जो [illegible] की [illegible] रहे थे। वे बर्फ़ से [illegible] थे और लगभग [illegible] [illegible] की [illegible] -जानकर आख़िरी हार

के ढेर में से मुड़े हुए घुटने, उठी हुई ठुड्डियाँ और मोम जैसे चेहरे झ
रहे थे, जिन्हें लोमड़ियाँ कुतर चुकी थीं और नीलकण्ठ तथा कौए चोंच
मार चुके थे।

अनेक कौए मैदान के ऊपर धीरे-धीरे चक्कर काट रहे थे और इसे
यकायक अलेक्सेई को 'ईगोर का युद्ध' शीर्षक शोकजनक किन्तु गौरव-
ली चित्र का स्मरण हो आया। महान रूसी चित्रकार वस्नेत्सोव के चित्र
की अनुकृति स्कूल की इतिहास की पाठ्य-पुस्तक में दी गयी थी।

"इन्हीं की तरह शायद मैं भी यहां पड़ा हुआ होता," उसने सोचा
और एक बार फिर जीवित होने की संवेदना उसके रोम-रोम में पुनः उठी।
उसने अपने को हिलाया-डुलाया। अभी भी उसके दिमाग़ में चक्की के खुर-
दरे पाट धीरे-धीरे चल रहे थे, पैर जल रहे थे और उनमें पहले से भी
बुरी तरह दर्द हो रहा था; फिर भी वह उस भालू के शव पर बैठ गया
जो सूखी बर्फ़ के चूरे से ढंककर ठंडा और रुपहला हो गया था; वह सो-
चने लगा कि अब क्या किया जाय, कहां जाया जाय और अपनी सेना
की अगली पांतों तक कैसे पहुँचा जाय।

हवाई जहाज़ से गिरते समय उसका नक़शेवाला बस्ता खो गया था;
फिर भी नक़शे के बिना ही उसके सामने उस दिशा का चित्र साकार हो
उठा था, जिधर से वह उड़कर आया था। जिस जर्मन हवाई अड्डे पर
लड़ाकू बममारों ने हमला किया था, वह अगली पांत के पश्चिम की ओर
६० किलोमीटर दूरी पर स्थित था? जर्मन लड़ाकू हवाई जहाज़ों
आकाश-युद्ध में उलझाकर अलेक्सेई के हवाबाज़ उन्हें उसके हवाई अड्डे
२० किलोमीटर पूर्व की ओर ले आये थे; और दोहरी 'कैंची' से निक
भाग आने पर वह स्वयं थोड़ा और पूर्व की ओर आ गया होगा। इ
तरह वह अपनी अगली पांत से कोई ३५ किलोमीटर दूर, अगली जर्म
डिवीज़नों के बहुत पीछे, उन घने जंगलों के क्षेत्र में आ गिरा होगा जि
काला जंगल कहते हैं और जिसके ऊपर से अनेक बार आस-पास के जर्मन
अड्डों पर हमला करने के लिए बममारों और लड़ाकू-बममारों के साथ उसने
उड़ानें की थीं। आसमान से उसे यह जंगल सदैव ही हरा-भरा अनन्त सा-
गर-सा दिखाई दिया था। अच्छे मौसम में यह वन चीड़ के वृक्षों की लह-
राती चोटियों के कारण उमड़ पड़ता था; लेकिन बुरे मौसम में झीने,
धूसर कुहरे से आच्छादित वन सपाट और मनहूस गदले पानी जैसा लगता
जिसकी सतह पर छोटी-छोटी लहरियां भर मचल रही हों।

बाद स्थल खोजने की कोशिश न करने का संकल्प किया; हर कीमत पर बढ़े चलने का निश्चय किया।

भालू के शव पर से वह दृढ़तापूर्वक उठ बैठा, हाफ उठा, दांत किट-किटाये और पहला कदम बढ़ाया। एक क्षण वह खड़ा रहा, फिर बर्फ में से दूसरा पैर निकाला और दूसरा कदम बढ़ाया। उसके मस्तिष्क में विभिन्न स्वर गूंज उठे और मैदान घूमने लगा और उड़ता-लहराता गायब हो गया।

अलेक्सेई को महसूस हुआ कि वह थकान और दर्द से कमजोर होता जा रहा है। ओंठ काटते हुए वह बढ़ता गया और जंगल की एक सड़क तक पहुंचा जो एक ध्वस्त टैंक और हथगोला थामे हुए उजबेक के पास से गुजरती, पूर्व की ओर, जंगल के गर्भ में समा गयी थी। नरम बर्फ पर लंगड़ी चाल चलना इतना बुरा न था, मगर ज्यों ही उसके पैरों ने बर्फ से ढंकी, हवाओं से सख्त बनी सड़क की ऊबड़-खाबड़ सतह को छुआ, उसका दर्द इतना दुखदायक बन गया कि उसे फिर क़दम बढ़ाने का साहस न हुआ और वह रुक गया। और इस तरह वह खड़ा रहा, उसके पैर भौंडे ढंग से एक दूसरे से दूर जमे थे और उसका शरीर यों झूल रहा था, मानो आंधी उसे उड़ाये ले जा रही हो। यकायक उसकी आंखों के सामने धूमर धुंध छा गयी। सड़क, देवदार के वृक्ष, चीड़ की मटमैली चोटियां और उनके बीच आसमान के नीले चकत्ते – ये सभी विलीन हो गये... वह अपने हवाई अड्डे पर था, अपने ही विमान के पास खड़ा था और उसका मेकेनिक, दुबला-पतला यूरा, जिसके दांत और आंखें हमेशा की तरह उसके दाढ़ी बढ़े, मलिन चेहरे पर चमक रही थीं, विमान की गद्दी की तरफ इशारा कर रहा था, मानो कह रहा था: "यह तैयार है, चढ़कर हवा हो जाओ..." अलेक्सेई ने विमान की तरफ पैर बढ़ाया, मगर जमीन घूम गयी और उसके पैर इस तरह जल उठे मानों तपकर लाल-लाल धातु पर उसने पैर रख दिया हो। इस ज्वालामय स्थल से बच-कर उसने वायुयान के पंख की तरफ बढ़ने का प्रयत्न किया, मगर वह उसके ठंडे-ठंडे ढांचे से टकरा गया। वह आश्चर्यचकित था कि हवाई जहाज का ढांचा चिकना और पालिश किया हुआ नहीं, खुरदरा था मानों उसपर चीड़ की छाल चढ़ा दी गयी हो... मगर वहां कोई वायुयान न था; वह सड़क पर खड़ा था और एक पेड़ के तने पर हाथ फेर रहा था।

साये घने होने लगे, तब तक वह जूनिपर की झाड़ियों के दोन तक [illegible]
चुका था, और यहां उसकी आंखों के सामने ऐसा दृश्य साकार हो।
कि जिससे उसे महसूस हुआ मानों किसी ने उसकी रीढ़ पर शीशा [illegible]
फेर दिया हो, और टोप के तले उसके बाल खड़े हो गये हों।

स्पष्ट था कि जब मैदान में युद्ध चल रहा था, तब इस दोन में [illegible]
कल दस्ता नियुक्त किया गया था। यहां घायल लाये जाते थे और देव[illegible]
की नुकीली पत्तियों की शैया पर उन्हें लेटाया जाता था। और यहां [illegible]
भी झाड़ियों के साये में वे घायल, बर्फ़ के नीचे आधे गड़े हुए और [illegible]
तो पूरी तरह गड़े हुए पड़े रह गये थे। पहली ही नज़र से यह स्पष्ट था [illegible]
वे अपने घावों के कारण नहीं मरे थे। किसी ने छुरे के कुशल [illegible]
से उनके गले काट दिये थे और सब अभी भी उसी स्थिति और मुद्रा में [illegible]
पीछे की तरफ़ लटकाये हुए पड़े थे, मानों यह देखने की कोशिश कर रहे
हों कि उनकी पीठ पीछे क्या हो रहा है। और इस भयानक दृश्य के रहस्य
की कुंजी भी यहीं थी। एक देवदार के नीचे, लाल सेना के किसी सिपा-
ही के बर्फ़ से ढंके शव के पास, एक नर्स कमर तक बर्फ़ में धसी अपनी
गोद में इस सिपाही का सिर रखे बैठी थी – वह छोटी-सी दुबली-पतली
युवती थी जो सिर पर रोएंदार खाल की टोपी पहने थी और इस टोपी
के कनफुदने ठोड़ी के नीचे फीते से बंधे थे। उसके कंधों के बीच किसी
छुरे की बढ़िया पालिशदार मूठ झलक रही थी। पास में एस. एस. टुक-
ड़ी की काली वर्दी पहने फासिस्ट सिपाही और माथे पर खून रंगी पट्टी
बांधे रूसी सिपाही के शव पड़े थे। दोनों अपने आखिरी संघर्ष में एक
दूसरे का गला पकड़े थे। अलेक्सेई ने फ़ौरन अनुमान कर लिया कि इसी
काली वर्दीधारी ने घायलों की हत्या की थी और ज्यों ही उसने नर्स को
छुरा मारा था, त्यों ही वह सिपाही, जो अभी मरा नहीं था, हत्यारे
पर टूट पड़ा था और शत्रु का गला दबाने के लिए उसने अपनी आखिरी
शक्ति को उंगलियों में भर लिया था।

और फिर बर्फ़ीले तूफ़ान ने सभी को दफ़न कर दिया था – वह रोएंदार
खाल की टोपी पहने छरहरी युवती, जो अपने शरीर की आड़ करके घा-
यल सिपाही की रक्षा करने का प्रयत्न कर रही थी, और ये दो – हत्यारे
और प्रतिशोधक – जो एक दूसरे का गला पकड़े हुए पुराने और खूब लम्बे-
चौड़े फ़ौजी बूट पहने युवती के पैरों के पास पड़े थे।

अलेक्सेई कई क्षण तक मूर्तिवत खड़ा रहा और फिर नर्स तक लगड़ाता

हुआ पहुंच गया और उसकी पीठ में से छुरा निकाल लिया। यह एस. एस. कटार थी जो पुरानी जर्मन तलवार की तरह बनायी गयी थी और उसकी महोगनी लकड़ी की मूठ पर एस. एस. का चिह्न बना था। उसके जग खाये फल पर अभी भी यह लेख दिख रहा था: „Alles für Deutschland" (सर्वस्व जर्मनी की सेवा में)। अलेक्सेई ने जर्मन के शव से चमड़े का म्यान उतार लिया रास्ते में उसे इस छुरे की आवश्यकता पड़ेगी। फिर उसने बर्फ़ के नीचे से सख्त जमा हुआ लबादा खोदा; हार्दिकता के साथ नर्स के शव को इस लबादे से ढंक दिया और उस पर चीड़ की कुछ डालियां रख दीं...

यह करते-करते सांझ उतर आयी। वृक्षों के बीच से झांकती रोशनी की लकीरें भी मिट गयीं। इधर दोन पर घना और बर्फीला अंधेरा छा गया। सब ओर शांति थी, किन्तु सांझ की हवा के झकोरे वृक्ष-शिखरों को झकझोर रहे थे और वन गा रहा था... कभी सुहावनी लोरियां, तो कभी भयपूर्ण राग। बर्फ़ गिरने लगी, और सूक्ष्मतम शुष्क कण, जो अब आंखों से दिखाई तो न देते थे किन्तु हल्की-सी सरसराहट के साथ झर रहे थे और चेहरे पर चुभ रहे थे, इस दोन के अन्दर भी उड़ते चले आ रहे थे।

वोल्गा स्तेपी में कमीशिन नगर में जन्मा, एक नगरवासी, वन-जीवन से अनुभवहीन अलेक्सेई ने रात का सामना करने की या आग जलाने की तैयारी न की थी। घने अंधकार से घिर जाने और अपने क्षत-विक्षत तथा थकित पैरों में असहनीय पीड़ा अनुभव करने के कारण उसमें लकड़ी जुटाने की शक्ति ही न थी; वह रेंगते हुए नव देवदारों के घने झुरमुट में घुस गया और वृक्ष के नीचे बैठ गया, उसने कंधे सिकोड़ लिये, अपना सिर भुजाओं से घिरे हुए घुटनों पर टेक लिया और अपनी ही श्वास-निश्वास से अपने को गरम बनाता हुआ बिल्कुल मूर्तिवत बैठकर उस नीरवता और शान्ति का उपभोग करने लगा।

वह अपनी रिवाल्वर तैयार रखे था, मगर जंगल में गुज़ारी गयी उस पहली रात में वह उसका उपयोग करने में समर्थ होता, यह संदिग्ध है। वह निर्जीव लट्ठे-सा पड़ा सोता रहा। उसे न चीड़ की अनवरत खड़खड़ाहट सुनाई दी, न सड़क के पास ही कहीं बैठे हुए उल्लू की कर्कश बोली और न कहीं दूर पर से भेड़ियों का चीत्कार—गरज़ यह कि इस जंगल के कोई भी स्वर उसे न सुनाई दिये, जिन से वह घना अंधकार परिपूर्ण था जिसकी चादर में वह लिपटा पड़ा था।

एक-एक पग पर अलेक्सेई जो यातना भोग रहा था, उसकी तरफ़ से ध्यान हटाने के लिए उसने अपने रास्ते के बारे में सोच-विचार करना और हिसाब-किताब लगाना शुरू कर दिया। अगर वह हर दिन दस या बारह किलोमीटर चले तो तीन दिन में या अधिक से अधिक चार दिन में अपने लोगों तक पहुंच जायेगा।

"यह ठीक रहा! मगर दस या बारह किलोमीटर चलने का मतलब क्या होगा? दो हज़ार क़दम का एक किलोमीटर होता है, इस तरह दस किलोमीटर के बीस हज़ार क़दम हुए, लेकिन अगर यह ध्यान में रखा जाय कि मुझे हर पांच या छः सौ क़दम के बाद आराम करना पड़ेगा तो यह बहुत बैठेगा..."

पिछले दिन यात्रा आसान बनाने के लिए अलेक्सेई ने कुछ दूर से दिखाई देनेवाले लक्ष्य बनाये थे, कोई चीड़ वृक्ष, कोई ठूंठ या सड़क का कोई गड्ढा और इस तरह हर लक्ष्य को विश्राम-स्थल बनाता हुआ वह उसकी तरफ़ बढ़ रहा था। अब उसने यह सब आंकड़ों में परिवर्तित कर दिया – यानी किसी ख़ास संख्या तक क़दमों के रूप में। उसने प्रत्येक मंज़िल के लिए एक हज़ार क़दम की सीमा यानी आधा किलोमीटर, और घड़ी देखकर एक निश्चित समय तक यानी पांच मिनट तक ही विश्राम की अवधि निश्चित की। उसने हिसाब लगाया कि इस तरह, यद्यपि कठिनाई का सामना करना पड़ेगा, फिर भी वह सूर्योदय से सूर्यास्त तक दस किलोमीटर पार कर सकेगा।

किन्तु प्रारम्भिक एक हज़ार पग कितने कठिन थे! दर्द भुलाने के लिए उसने क़दम गिनना शुरू किया, मगर पांच सौ के बाद वह गिनती भूल गया और उसके बाद दाहक और वेधक पीड़ा के अतिरिक्त अन्य कोई बात न सोच सका। इस सबके बावजूद, फिर भी उसने एक हज़ार क़दम पूरे कर ही लिये। बैठने की शक्ति के अभाव में वह बर्फ़ पर औंधा लेट गया और उसे कुत्ते की तरह चाटने लगा, उसने अपना माथा और कनपटियां बर्फ़ से चिपका दीं और हिम-स्पर्श से अवर्णनीय आनन्द अनुभव करने लगा।

वह सिहर उठा और घड़ी की ओर देखने लगा। सेकंड की सुई निश्चित पांच मिनटों के आख़िरी सेकंडों पर से गुज़र रही थी। भागती हुई सुई की तरफ़ उसने भयपूर्वक दृष्टि डाली और इस तरह कांप उठा, मानो

ऊबड़-खाबड़ बंद किया था। इसके बारे में वह बिल्कुल भूल ही गया था, क्योंकि वह काम उतना सरल था और उसकी भी ऐसी चाहिए थी। जिस चीड़ के वृक्ष के नीचे वह सोता था उसकी सूखी और चाई लगी थी, जिसे उखाड़कर उसने उन्हें चीड़ की टहनियों से ढक दिया और आग लगा दी। धीमे धुएं के बीच से तड़तड़ाती हुई नीली ज्वालाएं उठने लगीं। सू-खी, गोंदयुक्त लकड़ी शीघ्र ही बिल्कुल आग से जल उठी। मानो चीड़ की टहनियों पर हल्की और हवा का झोंका लगा? तिलमिलाती और कराह-ती हुई उधर गयी।

कमाल से धुआं नहीं आ रही थी। अलेक्सेई का मन एक सुखद भाव-ना से भरपूर हो उठा। उसने अपनी वर्दी की जिस जेब सम्भाली और अपार की बर्दाश्त की जेब से मुड़े-तुड़े कुछ पत्र निकाले जो एक ही हस्तलिपि में लिखे हुए थे। एक पत्र के अंदर से सेलोफेन के टुकड़े में लिपटी हुई एक तस्वीर निकली, जिसमें फूलोंवाली छींट की फ्राक पहने एक छरहरी लड़की घास पर पैर समेटे हुए बैठी थी। वह काफी देर तक उस तस्वीर पर दृष्टि गड़ाये रहा और फिर उसी सेलोफेन के टुकड़े में उस फोटोग्राफ लिफाफे में बंद करके वह क्षण भर किन्हीं विचारों में खोया-सा उसे हाथ में थामे रहा और अंत में उसे जेब के हवाले कर दिया।

"सब ठीक है, सब कुछ ठीक हो जायेगा," उसने कहा, उस लड़की से या अपने आप से, यह बताना कठिन है। और पुनः विचारलीन होकर उसने दोहराया, "सब ठीक है. ."

फिर सावधान भाव से उसने रोएंदार फरवाले बूट उतार डाले और ऊनी पट्टियां खोलकर पैरों की परीक्षा करने लगा। वे और भी सूज आये थे, उंगलियां सभी दिशाओं में फैल गयी थीं, पैर ऐसे लगते थे मानो हवा भरकर फुलाये गये गुब्बारे हों और पिछले दिन की अपेक्षा और भी गहरे स्याह रंग के हो गये थे।

अलेक्सेई ने ठंडी सांस ली, बुझती हुई आग की ओर विदाई की नजर डाली और पुनः अपनी यात्रा पर चल पड़ा—उसकी छड़ियां सख्त बर्फ पर खिटखिटाने लगीं। वह होंठ काटता हुआ बढ़ रहा था और कभी-कभी तो लगभग चेतना खो बैठता था। सहसा जंगल के उन सामान्य स्वरों के बीच, जिनके प्रति उसके कान इतने अभ्यस्त हो चुके थे कि उन स्वरों की ओर वह ध्यान भी न दे पाता था, उसे कहीं दूर से मोटरों की आवाज सुनायी पड़ी। पहले तो उसने सोचा कि वह थकान के कारण मायावी भ्रम

का शिकार हो रहा है, किन्तु वह आवाज़ें और भी तीव्र हो उठीं–कभी पूरे वेग से धड़धड़ातीं, तो कभी मंद हो जातीं। स्पष्ट था कि वे टैंक हैं और वे उसी दिशा में जा रहे हैं जिस ओर वह स्वयं जा रहा था। फौरन अलेक्सेई का दिल दहल उठा।

भय ने उसमें शक्ति भी पैदा कर दी। अपनी थकान और पैरों का दर्द भूलकर वह सड़क से मुड़ गया और एक झाड़ी की ओर चल दिया। वहां पहुंचकर वह उसके अंदर रेंग गया और बर्फ़ पर लेट गया। सड़क से उसे देख पाना तो कठिन था, मगर देवदार की चोटियों की कटीली चहारदीवारी से ऊपर चढ़ आये सूरज की किरणों से रोशन सड़क को वह खुद बख़ूबी देख सकता था।

आवाज़ें और करीब आ गयीं। अलेक्सेई को याद आया कि जहां से उसने रास्ता छोड़ा है, वहां से उसके चरण-चिह्नों की रेखा साफ़ दिखाई देती है, किन्तु यहां से भागने की कोशिश करने के लिए अब अवसर भी नहीं था, क्योंकि सब से आगे की गाड़ी के इंजन की धड़-धड़ अब बहुत क़रीब आ गयी थी। अलेक्सेई बर्फ़ से और भी अधिक चिपक गया। पहले एक चपटी, कुल्हाड़े के फल जैसी, चूने से पुती बख़्तरबंद गाड़ी पत्तियों के बीच से प्रगट हुई। डगमगाते हुए और ज़ंजीरें खनखनाते हुए वह गाड़ी उस स्थान के निकट आ पहुंची जहां से अलेक्सेई के पद-चिह्न सड़क छोड़कर मुड़ गये थे। अलेक्सेई ने सांस रोक ली। बख़्तरबंद गाड़ी बढ़ती ही गयी। उसके बाद एक छोटी खुली हुई मोटर-गाड़ी निकली। ऊंची टोपी पहने और रोएंदार खाल के कोट के भूरे कालर में अपनी नाक घुसेड़े हुए कोई व्यक्ति ड्राइवर की बगल में बैठा था और उसके पीछे ऊंची बेंचों पर, मोटर-गाड़ी के हर धक्के से झूलते हुए कई टामीगनवाले बैठे थे, वे धूसर हरे ग्रेटकोट और लोहे के कनटोप पहने थे। उनसे कुछ पीछे एक और, मगर पहली से बड़ी खुली गाड़ी घरघराती और खनखनाती हुई प्रगट हुई और उसमें बारह जर्मन क़तारों में बैठे थे।

अलेक्सेई बर्फ़ में और भी ज़ोर से चिपक गया। गाड़ियां इतने पास आ गयी थीं कि उनके इंजन से निकलनेवाली बेशार गैस के झोंके अलेक्सेई के मुंह पर पड़ रहे थे। उसे महसूस हुआ कि गर्दन पर रोएं खड़े हो गए हैं और उसकी मांसपेशियां तनकर गेंद बन गयी हैं। मगर गाड़ियां गुज़र गयीं, उनकी गैस की गंध विलीन हो गयी और उनके इंजनों की आवाज़ कहीं इतनी दूर पहुंच गयी थी कि सुनना कठिन था।

फिर दूसरी करवट बदलता हुआ पाँव फैलाये लेटा रहा, और कभी-कभी उठता तो उस लट्ठे के अगल-बगल हौले-हौले सरसराती हुई लपटों को पुनर्जीवित करने के लिए और झाड़-झंखाड़ रख देता।

अर्धरात्रि को बर्फ़ीला तूफ़ान आया। भयभीत चीड़ वृक्ष झूमने, खड़खड़ाने, चटखने और कराहने लगे। नुकीले हिम-कणों के बादल धरती पर उमड़ पड़े। छनछनाती, सनसनाती आग के चारों ओर गड़गड़ करती मनहूसियत घुमड़ने लगी। लेकिन इस अंधड़ से अलेक्सेई विचलित न हुआ। वह आग की उष्णता से संरक्षित, गहरी और मधुर निद्रा में सोता रहा।

आग ने वन्य पशुओं से भी उसकी रक्षा की। और जहाँ तक भेड़ियों का प्रश्न है, ऐसी रात में उनसे डरने की कोई आवश्यकता न थी। बर्फ़ीले अंधड़ में वे घने जंगल के अंदर प्रवेश करने की हिम्मत ही नहीं कर सकेंगे। इतना होते हुए भी, यद्यपि उसका थकित शरीर धूम-धुमारी आग की गर्मी में विश्राम कर रहा था, फिर भी उसके कान, जो वन के निवासियों के लिए आवश्यक सावधानी के अभ्यस्त हो चुके थे, हर आवाज़ के बारे में चौकन्ने थे। भोर होने से पहले, जब तूफ़ान शान्त हो गया और शांत धरती पर घना सफ़ेद कुहरा घिर आया, तब अलेक्सेई को लगा कि झूमते हुए चीड़ वृक्षों की खड़खड़ाहट और हिमपात की कोमल थपकियों के स्वर के ऊपर कहीं दूर से युद्ध की ध्वनियां, विस्फोटों, टामीगनों के दगने और बंदूकें चलने की आवाज़ें आ रही हैं।

"मोर्चे की घात क्या इतने क़रीब हो सकती है? इतनी जल्दी?"

७

लेकिन जब सुबह हवा ने कुहरे को छिन्न-भिन्न कर दिया और जंगल, जो रात में रुपहला हो गया था, ठंडे और दमकते सूरज की रोशनी में चमक उठा और पंखधारी जीव, मानों इस आकस्मिक रूपान्तर से आनन्दित होकर फुदकने, चहचहाने और वसंतागमन की आशा में गाने लगे, तब अलेक्सेई को बहुत कान लगाने पर भी न तो किसी युद्ध की आहट जान पड़ी और न किसी बंदूक के दग़ने या तोप तक के गरजने की आवाज़ सुनाई दी।

सूर्य की रोशनी में चमचमाते हुए नुकीले हिम-कण सफ़ेद धूम-धुमारे झरने की तरह वृक्षों से झड़ रहे थे। यहां-वहां भारी जल-कण भूमि पर

रही बर्फ़ के ऊपर हल्की-सी थपकी के स्वर में गिर पड़ते थे। वसंत! आज पहली बार उसने इतनी स्पष्टता और दृढ़ता से अपना आगमन घोषित किया था।

अलेक्सेई ने डिब्बे में से बची-खुची सौंधी चरबी में लिपटे हुए गोश्त के चंद क़तरों को भी आज सुबह ही खा डालने का निश्चय किया, क्योंकि उसे लग रहा था कि अगर उसने ऐसा न किया तो वह उठने भर की शक्ति भी न सजो पायेगा। उसने उंगलियों से इस तरह डिब्बा बिल्कुल साफ़ कर दिया कि खुरदरे किनारों की रगड़ से जहां-तहां उसकी उंगलियां कट गयीं, किन्तु फिर भी उसे यही लगता रहा कि अभी भी चर्बी की खुरचन वहां लगी रह गयी है। उसने डिब्बे में बर्फ़ भर ली, बुझती हुई आग की राख झाड़ दी और दमकते शोलों पर डिब्बा रख दिया। बाद में गोश्त की हल्की गंध से सुवासित गर्म पानी को उसने अत्यन्त स्वाद से पी डाला। पानी ख़त्म कर उसने डिब्बा फिर जेब में खिसका दिया—इस इरादे से कि बाद में उसे चाय बनाने के लिए इस्तेमाल करेगा। गरम चाय! यह आनन्ददायक खोज थी, और इस बार जब उसने पुनः यात्रा आरम्भ की, तो इस खोज के कारण उसका हौसला कुछ बढ़ गया।

किन्तु अभी तो उसपर एक और बड़ी निराशा टूट पड़नेवाली थी। रात के बर्फ़ीले तूफ़ान में सड़क पूर्णतया विलीन हो गयी थी, बर्फ़ के ढलवां ढेरों के कारण वह मार्ग अवरुद्ध हो गया था। उस एकरस, आसमानी चकाचौंध से अलेक्सेई की आखें दुखने लगीं। कोमल और अभी तक अनजमी बर्फ़ में उसके पैर धंस-धंस जाते थे और वह बड़ी ही कठिनाई से उन्हें निकाल पाता था। इस स्थिति में उसकी छड़ियां भी किसी काम की नहीं रह गयी थीं, क्योंकि वे भी बर्फ़ में गहरी धस जाती थी।

दोपहर तक, जब पेड़ों के नीचे साये गहरे हो चुके थे और वृक्षों की चोटियों के ऊपर सूरज सघनता की दरारों के बीच से झांकने लगा था, तब तक अलेक्सेई सिर्फ़ करीब पद्रह सौ कदम पार कर पाया था और वह इतना थक चुका था कि इच्छाशक्ति का ज़बर्दस्त ज़ोर लगाकर ही वह एक-एक क़दम चल पाता था। उसे चक्कर आ गया। पैरों तले ज़मीन खिसक गयी। बार-बार वह गिर पड़ता, बर्फ़ के किसी ढेर के ऊपर भुरभुरी बर्फ़ से मस्तक चिपकाये हुए वह एक क्षण निर्जीव-सा पड़ा रहता और फिर उठकर चंद क़दम और चल पड़ता। सोने की, लेट जाने और सब कुछ भूल जाने की, कोई भी अग न हिलाने-डुलाने की अदम्य आकांक्षा

उसे मनाने लगी। जो होना है सो हो। वह रुक जाता, सुन्न-सा खड़ा रहता, इधर-उधर डगमगाता-फिरता और फिर ओंठ इतने जोर से काटकर कि उनमें दर्द हो उठता, वह अपने को संभालता और बड़ी मुश्किल से पैर घसीटते हुए कुछ कदम बढ़ जाता।

अंत में उसने अनुभव किया कि अब वह आगे नहीं चल पायेगा, कोई ताकत नहीं जो उसे इस जगह से हिला सके, और अगर वह बैठ गया तो कभी न उठ सकेगा। उसने चारों ओर लालसापूर्ण दृष्टि डाली। सड़क के किनारे एक नन्हा-सा, घुंघराला चीड़ वृक्ष खड़ा था। बचा-खुचा जोर लगाकर अलेक्सेई उस ओर बढ़ा और उसके ऊपर गिर पड़ा। उसकी ठोड़ी उसकी डालियों पर जा टिकी। उससे उसके टूटे हुए पैरों पर से कुछ भार कम हो गया और उसे कुछ राहत महसूस हुई। वह स्प्रिंग जैसी शाखाओं पर झुक गया और विश्राम का आनंद लेने लगा। जरा और आराम पाने की गरज से उसने पेड़ की भारी डाल पर ठोड़ी टिकाये हुए अपना एक पैर फैला दिया और फिर दूसरा भी सीधा कर दिया, और इस तरह अपने पैरों को पूर्णतया भार-मुक्त करते हुए उन्हें आसानी से बर्फ में से निकाल लिया। इस बार उसे एक और शानदार सूझ आयी।

"अरे, ठीक तो है! इस छोटे-से पेड़ को काट लेना और मुझे जैसी डाल छोड़कर, बाकी डालियाँ अलग करके एक डंडा बना लेना आसान होगा और उस डंडे को आगे बढ़ाकर अभी जैसे कर रहा हूँ वैसे ही उसके सिरे पर अपनी भारी डाल पर ठोड़ी टिकाकर, सारे शरीर का वजन उसी पर डालकर मैं अपने पैर आगे बढ़ा सकूँगा। चाल धीमी होगी? हाँ, धीमी तो जरूर होगी, मगर मैं इस कदर थकूँगा नहीं और मैं बर्फ के ढेर में बैठकर और [illegible] का इन्तजार किये बिना ही आगे बढ़ सकूँगा।"

वह उसी क्षण घुटनों के बल बैठ गया, कटार से पेड़ काट डाला, उसकी डालियाँ अलग कर दीं और बैसाखी जैसी डाल की चोटी पर रूमाल और [illegible] बांध दिया तथा तत्काल अपने प्रयोग की परीक्षा करने में जुट गया। उसने डंडा आगे बढ़ाया, अपने हाथों और ठुड्डी को उस डंडे के सिरे पर [illegible] के ऊपर टिका दिया, एक पैर आगे रखा और फिर दूसरा पैर आगे बढ़ाया; उसने फिर डंडा आगे बढ़ाया और दो कदम और बढ़ाये। और इस तरह वह कदम गिनता और अपनी प्रगति की नई [illegible] करता हुआ बढ़ता चला गया।

निस्संदेह, [illegible] का [illegible] के [illegible] इस [illegible] से

चहलक़दमी करते हुए, गहरी बर्फ़ पर घोंघे की गति से रेंगते हुए और सूर्योदय से सूर्यास्त तक पाँच किलोमीटर से अधिक न पार कर पाते हुए देखकर किसी अनजान दर्शक को आश्चर्य अवश्य होता। लेकिन इस विचित्र कार्यकलाप के एकमात्र दर्शक थे नीलकण्ठ, जो अपने को आश्वस्त करने के बाद कि यह विचित्र, तीन पैरोंवाला, बेडौल जानवर बिल्कुल नुक़सान-देह नहीं है, उसके नज़दीक आने पर उड़ नहीं जाते थे, बल्कि हठपूर्वक फुदककर उसके रास्ते से हट जाते थे, और सिर झुकाकर उसे अपनी काली-काली, जिज्ञासापूर्ण, गुरिया जैसी आंखों से व्यंग्यपूर्वक घूरते थे।

८

और इस तरह वह दो दिन तक बर्फ़ से ढकी सड़क पर, बैसाखी आगे बढ़ाकर, उसपर पूरा भार डालता और पैर घसीटता लंगड़ी चाल से चलता रहा। इस समय तक उसके पैर सुन्न पड़ गये थे और कुछ महसूस न करते थे, मगर उसका सारा शरीर हर क़दम पर दर्द से ऐंठ जाता था। अब भूख की आग भी महसूस न होती थी। पेट की मरोड़ और शूल-सा दर्द अब मंद-मंद, अनवरत पीड़ा बनकर रह गया था, मानो खाली पेट अब सख़्त हो गया है और उलटा होकर अंतड़ियों को दबा रहा है।

विश्राम के क्षणों में अलेक्सेई अपनी कटार से किसी नवविकसित सनोवर की छाल छील लेता, भोज और लाइम वृक्ष की कोंपलें चुनता और बर्फ़ के नीचे से नर्म, हरी काई भी उखाड़कर रात के पड़ाव में पानी में उबाल लेता—यही उसका भोजन बन गया था। आनन्द की चीज़ थी "चाय" जिसे वह गली हुई बर्फ़ के चकत्तों में से झांकती हुई बिलबेरी पौधे की रोग़नदार पत्तियां चुनकर तैयार करता था। इस गर्म पेय से सारे शरीर में उष्णता फैल जाती और उसे तुष्टि का भ्रम भी हो जाता। धुए और पत्तों की गंध से भरे उस गर्म पेय का घूंट लेते हुए उसे राहत मिलती और यात्रा इतनी अनन्त और भयानक न महसूस होती।

छठवें पड़ाव पर वह फिर एक घने चीड़ के हरे खेमे के अंदर लेटा और एक पुराने, गोंददार ठूंठ के इर्द-गिर्द आग जला ली, जो उसके हिसाब से सारी रात सुलगती और आग देती रहेगी। अभी भी उजाला था। ऊपर, चीड़ की चोटी की शाखाओं में कहीं एक अदृश्य गिलहरी

चीड़ के विनगोज़ों का मज़ा ले रही थी और जब-तब खाली और बचे शंकुओं को धरती पर फेंक रही थी। अलेक्सेई, जिसका दिमाग़ अब बराबर भूख की तरफ केन्द्रित था, हैरान था गिलहरी को इन विनगोज़ों में क्या मज़ा मिल रहा है। उसने एक शंकु उठाया, एक तरफ़ से उसकी एक पर्त उठा दी और उसके नीचे बाजरे के दाने के बराबर छोटा-सा बीज पाया। देखने में वह साइबेरियाई चीड़ का नन्हा-सा बीज मालूम होता था। उसने बीज को मुंह में डाल लिया, दांतों से पीस डाला और चीड़ के तेल का मधुर स्वाद महसूस किया।

फौरन उसने कुछ ताज़े चीड़ के शंकु जमा किये, जो ज़मीन पर बिखरे थे, उन्हें आग पर रखकर पांडे से झाड़-झखाड़ रख दिये, और जब आग से इन शंकुओं के मुंह खुल गये तो उनके बीजों को हाथ में हिलाया, हथेलियों से पीसकर उसका छिलका उड़ा दिया और फंकी मारकर मुंह में रख लिया।

जंगल हल्की-सी गुजार से गूंज रहा था। गोंद भरा ठूंठ सुलग रहा था और हल्का-सा सुगंधित धुआं इस तरह छोड़ रहा था कि अलेक्सेई को लोबान की याद आ गयी। छोटी-छोटी लौएं कांप उठती थीं, किसी क्षण तेज़ी से जल उठतीं तो दूसरे क्षण बुझ जातीं और इस प्रकार वे सुनहले सनोबर और रुपहले भोज वृक्षों के तनों को कभी प्रकाश के गोल घेरे से बांध देतीं तो कभी उन्हें गहरी मनहूसियत के पर्दे से ढक देतीं।

अलेक्सेई ने आग पर कुछ झाड़-झखाड़ और रख दिये और पहले की भांति कुछ और शंकुओं को भून लिया। चीड़ के तेल की सुगंध से उसके मस्तिष्क में सुंदर बचपन के भूले-बिसरे दृश्य उभर आये... सुपरिचित वस्तुओं से भरा हुआ वह छोटा-सा कमरा। छत से लटके हुए लैम्प के नीचे वह मेज़। छुट्टी के दिन की पोशाक पहने हुए उसकी मां, जो अभी गिरजाघर से लौटी थी, गम्भीरतापूर्वक सन्दूक से कागज़ का थैला निकालती है और एक कटोरे में शंकु उडेल देती है। सारा परिवार–मां, दादी उसके दो भाई और सबसे छोटा वह स्वयं–मेज़ के चारों ओर बैठे हैं: शंकु छीलने का पुनीत कार्य–छुट्टी के दिन का विनाम–प्रारम्भ हुआ। कोई एक शब्द नहीं बोलता। दादी बालों में लगनेवाले पिन से बीज निकाल रही थी और मां मामूली पिन की मदद से। वह बड़ी होशियारी से दांत के बीच शंकु रखकर उसका छिलका तोड़ती, उसके अन्दर से निकालती और मेज़ पर ढेर बनाती जाती, और जब काफ़ी ढेर जमा

हो जाता तो वह हथेली पर रखकर उन्हें किसी बच्चे के मुंह मे उडेल देती और सौभाग्यशाली बच्चा अपने होंठो पर उनके खुरदरे, सख्त काम-काज से फटे हाथो का स्पर्श अनुभव करता, जिनसे आज छुट्टी का दिन होने के कारण स्ट्रबेरी की सुगंध के साबुन की महक आती।

कमोगिन... बचपन! नगर की सीमा पर स्थित उस नन्हे-से घर मे रहना कितना आनन्ददायक था!.. लेकिन यहा, जगल के शोरगुल के बीच, एक तरफ चेहरा आग-सा तप रहा है और दूसरी तरफ पीठ मे ठंड तीर-सी बेध रही है। अंधेरे मे कही उल्लू बोल रहा है, लोमडि-यां रो रही हैं। आग के किनारे गठरी बना हुआ और बुझती हुई आग की कांपती हुई लौ को चिन्तित भाव से ताकता हुआ एक भूखा, बीमार और थकान से चूर इनसान बैठा है—इस विस्तृत और घने जगल मे केवल अकेला और उसके सामने अंधेरे मे डूबी हुई अनजानी सडक है जो न जाने कितनी अप्रत्याशित परीक्षाओं और खतरों से पूर्ण है।

"यह भी ठीक है, सब ठीक हो जायेगा!" वह व्यक्ति यकायक कह बैठा और आग की लौ की आखिरी चमक मे साफ देखा जा सकता था कि किसी रहस्यपूर्ण विचार से प्रेरित होकर उसके फटे होंठ मुसकराहट बनकर फैल गये थे।

६

अपनी यात्रा के सातवें दिन अलेक्सेई को ज्ञात हुआ कि उस अंधड़ की रात मे किसी दूरस्थ युद्ध की आहट कहा से मिली थी।

थकान से बिल्कुल चूर, हर क्षण विश्राम के लिए रुकता हुआ, वह गलती हुई बर्फ से भरी जंगल की सड़क पर अपने को घसीटे लिये जा रहा था। वसत अब दूर न था, वह अपनी उष्ण और झकझोरती हुई हवाएं लेकर इस प्रशात वन मे आ पहुंचा था; उसकी निर्मल सूर्य-रश्मिया डा-लियों से छनकर आ रही थी और टीलों और पहाड़ियो से बर्फ बुहार रही थी; वह अपने साथ लाया था साझ के समय कांव-कांव करनेवाले काले कौए, सडक की कुबडों पर मंद-मंद गम्भीर चाल से फुदकनेवाले काक, नम बर्फ जो अब मधुमक्खी के छत्ते की तरह छिद्रपूर्ण हो गयी थी, गड्ढो मे पिघली बर्फ की चमचमाती हुई पोखरिया और वह अत्यत मादक सुगंध जो हर जीव को आनन्द से अर्द्धमूर्च्छित कर देती है।

अलेक्सेई को वर्षों का यह वास बचपन से ही प्रिय था और अब भी, जब वह भूख से पीड़ित, दर्द और थकान से मूर्छित स्थिति में गड्ढों-खोखरों के बीच भारी और भीगे हुए बूटों में बंधे दुखदायी पैरों को घसीटता हुआ खोखरियों, दलदली बर्फ़ और अप्राकृतिक कीचड़ को कोसता चल रहा था, तब भी लालायित भाव से उसने नम और मादक सुगंध से फेफड़े भर लिये। अब वह ठौर-कुठौर नहीं देखता था, गड्ढों-खोखरों से बच निकलने का प्रयत्न न करता था, वह ठोकर खाता, गिर पड़ता फिर उठ बैठता, डगमगाता हुआ बैसाखी पर पूरा बोझ डालकर खड़ा हो जाता और ताक़त सजोता; और फिर जितना दूर हो सके उतना अपने डंडे को बढ़ा देता और हौले-हौले पूर्व दिशा की ओर बढ़ना जारी रखता।

यकायक एक ऐसे स्थान पर जहां वन मार्ग अकस्मात बायीं तरफ़ मुड़ गया था, वह रुक गया और टकटकी बांधे खड़ा रह गया। जिस जगह सड़क असाधारण रूप से सकरी थी, वहां दोनों तरफ़ नवजात घने देवदारों की आड़ में खड़ी हुई वही जर्मन गाड़ियां दिखाई दे रही थीं, जो कुछ दिन पहले उसके करीब से गुज़री थीं। उनका रास्ता सनोवर के दो बड़े भारी वृक्षों से रुका था। इन पेड़ों के ठीक बग़ल में, वही बख़्तरबन्द गाड़ी पड़ी थी और उसका रेडियेटर उन वृक्षों के बीच में फंसा था, मगर अब यह गाड़ी सफ़ेद चकत्तों के रंग की नहीं, जंग खाये हुए लाल रंग की हो गयी थी और अपने पहियों के रिम के बल झुकी खड़ी थी, क्योंकि उसके टायर जल गये थे। उसका टरेट एक पेड़ के नीचे बर्फ़ पर दानवाकार कुकुरमुत्ते की तरह पड़ा हुआ था। बख़्तरबंद गाड़ी के पास तीन लाशें—उसके चालकों की—काली और तेल से सनी जाकेटें और कपड़े के कनटोप पहने पड़ी हुई थीं।

दो अन्य मोटर-गाड़ियां भी जंग खाये हुए लाल रंग की पड़ गयी थीं। उनके अंदर का भाग जला हुआ था। वे मोटर-गाड़ियां उस बख़्तरबंद गाड़ी के बग़ल में पिघलती बर्फ़ पर खड़ी थीं और वहां की बर्फ़ धुएं, राख और जली लकड़ी के कारण काली पड़ गयी थी। चारों ओर, सड़क पर, सड़क के किनारे की झाड़ियों के नीचे, खाइयों में हिटलरी सिपाहियों के शव पड़े थे, और उनके चेहरों से स्पष्ट था कि वे भयभीत होकर भाग खड़े हुए थे और, अग्रगृह द्वारा खड़े किये गये सफ़ेद पर्दों के पीछे से, उनके ऊपर हर वृक्ष और हर झाड़ी की ओट से मौत टूट पड़ी थी और इसके पहले कि वे जान पाते कि क्या हो रहा है, वे काल के गाल में

खत्म कर और विजयोपहार लेकर छापेमार कभी के जा चुके होंगे–और वास्तव में इस निर्जन वीरान वन में उनके ठहरने से लाभ ही क्या था? फिर भी वह पुकार लगाता रहा, किसी चमत्कार की आशा लगाये रहा, आशा करता रहा कि जिस दाढ़ीवाले व्यक्ति के विषय में उसने इतना अधिक सुन रखा है, वह यकायक झाड़ियों के बीच से प्रगट हो जायेगा, उसे सभाल लेगा और ऐसी जगह ले जायेगा जहा पर एक दिन या एक घटे ही सही, वह आराम कर सकेगा, उसे किसी बात की चिन्ता न रहेगी और न कही पहुचने के लिए प्रयत्न करना होगा।

गूजती और कापती प्रतिध्वनि के स्वर मे सिर्फ जंगल ही जवाब दे रहा था। लेकिन यकायक, चीड की गहरी और मधुर गुजार के ऊपर उसने हल्की और वेगवती धम-धम की आवाज सुनी या कहिए कि जिस ज़ोर से कान लगाकर वह सुन रहा था, उसमे उसे जान पड़ा कि वह सुन रहा है; यह आवाज कभी बिल्कुल साफ सुनाई देती और कभी बिल्कुल हल्की और अस्पष्ट। वह इस तरह चौंक उठा मानो इस वीराने में किसी मित्रतापूर्ण आवाज ने पुकारा हो। वह अपने कानो पर विश्वास न कर सका और गर्दन लम्बी किये हुए ध्यान लगाकर देर तक बैठा रहा।

नहीं! वह भूल नही कर रहा था। पूर्व दिशा से नम पवन बह रही थी और साथ मे कही दूर पर छूटती तोपो के दगने की आवाज ला रही थी। यह गोलाबारी उन धीमी और छितरी आवाजो जैसी नही थी जो वह पिछले महीने सुना करता था, जब दोनो पक्ष सुदृढ़ रक्षा पांतों जमकर और किलेबन्दी करके एक दूसरे को परेशान करने के लिए यदा कदा गोली चला दिया करते थे। यह गोलाबारी तेज़ और लगातार थी और उसकी आवाज यों लगती थी, मानो कोई व्यक्ति पत्थर मुगरा पीट रहा हो या बन्दूक के उलटे पीपे को घूमा मारकर बजा रहा हो।

सचमुच! गोलाबारी मे जबर्दस्त द्वन्द्व चल रहा था। आवाजो से अदाज लगाने से मोर्चा कोई दस किलोमीटर दूर जान पड़ता था और वहा कोई गम्भीर घटना होती समझ पड़ती थी; कोई पक्ष हमला करने जा रहा था और दूसरा पक्ष जमकर रक्षा करने मे जुटा हुआ था। अलेक्सेई के कपोलो पर आनन्द के आसू ढुलक गये।

वह अपनी आखें पूर्व की ओर लगाये रहा। यह सच था कि जिस जगह वह बैठा था, वहा से सड़क अकस्मात दूसरी दिशा मे मुड़ गयी थी और उसने काफ़ी लम्बा चक्कर लगाना शुरू किया था, मगर उसे आमतिर कहोरिया

स्वप्न था?" उसे याद पड़ा: सिगरेट-लाइटर। किन्तु इस समय उ-
आस-पास की प्रत्येक वस्तु—कोमल बर्फ़, पेड़ों के तने और चीड़ की नुकीली
पत्तियां तक—चमक और दमक रही थी, तब सूर्य की जीवनदायिनी रश्मि-
यों की उष्णता से उद्दीप्त होकर उसे अपने दुर्भाग्य की उतनी चिन्ता न
रह गयी थी। मगर उससे बुरी बात यह थी कि जब उसने अपने सुन्न
हाथों को घुटनों पर से हटाया, तो उसने देखा कि अब उसके लिए उठना
भी असम्भव हो गया था। उठने की कई कोशिशें करने के कारण उसका
बैसाखीनुमा डंडा टूट गया और वह बोरे की तरह धम् से ज़मीन पर गिर
पड़ा। अपने सूजे हुए अंग-प्रत्यंग को राहत देने के लिए वह पीठ के बल
लुढ़क गया और चीड़ की शाखाओं के पार अनन्त नीले आकाश को निहा-
रने लगा जहां घुंघराली स्वर्ण-कोरों से सुसज्जित, सफ़ेद, रुई जैसे बादल
भागे चले जा रहे थे। शरीर किसी भांति सीधा हो गया, मगर पैरों
को न जाने क्या हो गया था। एक क्षण भी वे उसका बोझ वहन न कर
सकते थे। चीड़ का वृक्ष पकड़कर उसने एक बार फिर उठने का प्रयत्न
किया और अन्ततः सफल भी हुआ, किन्तु ज्यों ही उसने अपने पांव पेड़
की तरफ़ बढ़ाने का प्रयत्न किया, त्यों ही कमज़ोरी के कारण और पैरों
में एक नये प्रकार की भयानक पीड़ा से वशीभूत होकर वह लुढ़क गया।

क्या अन्त निकट है? क्या इस चीड़ के वृक्ष के नीचे ही उसकी मृत्यु
हो जायेगी, जहां जंगल के जीव-जन्तुओं द्वारा साफ़ की गयी उसकी हड्डि-
यों भी किसी का न मिलेंगी, कोई उन्हें न गाड़ेगा? कमज़ोरी के वशी-
भूत होकर वह धरती से चिपक गया। किन्तु दूर पर तोपें गरज उठीं।
वहां युद्ध हो रहा था और उसके अपने साथी वहां मौजूद थे। क्या इस
आठ या दस किलोमीटर दूरी पार करने की शक्ति वह न संजो सकेगा?

तोपों की गड़गड़ाहट से उसमें नयी शक्ति भर गयी, वह उसको बार-
बार आवाहन करने लगीं और इस आवाहन पर वह खुद भी कमर कस
उठा। वह चारों हाथ-पैरों के बल उठ बैठा और प्रारम्भ में [illegible]
[illegible] की भांति चलने लगा, मगर बाद में यह देखकर कि
डंडे की सहायता की अपेक्षा इस ढंग से जंगल पार कर लेना आसान है,
वह इस शैली से जानबूझकर, सचेतन भाव से चलने लगा। अब पैरों पर
बोझ न पड़ता था, इसलिए उसके पैरों में पीड़ा भी कम हुई और अपने
हाथ तथा घुटनों के बल वह अब भी तेज़ी से जा रहा था। और एक
बार फिर उसे अनुभव हुआ कि आनन्दवश उसका गला भर आया है।

क्रैनबेरी के ज़ायक़ेदार खट-मिट्ठे फलों के कारण—जो कई दिनों के बाद उसे पहली बार भोजन नाम की चीज़ के रूप में मिले थे—उसके पेट में मरोड़ होने लगी। लेकिन उसके दिमाग़ में इतनी शक्ति ही कहां थी कि वह मरोड़ शान्त हो जाने के लिए इंतज़ार कर पाता। वह पशु की तरह एक टीले से दूसरे टीले पर मुंह मारता और अपने होंठों और जीभ से मोटी और खट्टी बेरियां चुन लेता। इस प्रकार उसने कई टीले साफ़ कर दिये और उसे न तो अपने जूतों में वसन्त-ऋतु के पानी और जाने की नमी अनुभव हुई, न पैरों का जलन-भरा दर्द महसूस हुआ और न थकान मालूम पड़ी—मुंह में खट-मिट्ठे स्वाद और पेट में [illegible] भारी-पन के अलावा उसे और कुछ नहीं अनुभव हो रहा था।

उसे कै हो गयी, मगर फिर भी वह अपने को न रोक सका और बेरियों पर फिर टूट पड़ा। उसने अपने हाथों से खुद बनाये हुए "जूते" उतार दिये और अपने पुराने टिन को बेरियों से भर लिया, उसने अपने चमड़े के कनटोप को भी भर लिया, उसे एक फीते से अपनी पेटी में बांध लिया और सारे शरीर में फैलती जानेवाली ऊंघ को बड़ी मुश्किल से दबाकर वह आगे रेंग चला।

उस रात एक पुराने देवदार के तले बसेरा बनाकर उसने वहीं बेरियां खाईं, और पेड़ की छाल तथा देवदार के बीज चबाये। फिर वह सो गया मगर उसकी नींद चौकन्ने पहरेदार जैसी थी। अनेक बार उसे महसूस हुआ कि अंधेरे में कोई व्यक्ति खामोशी के साथ उसकी तरफ़ रेंगता आ रहा है। वह आंखें फाड़कर देखता, कानों पर इतना ज़ोर डालता कि उनमें सनसन होने लगती, पिस्तौल निकाल लेता और देवदार के हर [illegible] के गिरने की आवाज़, रात की [illegible] के चटखने की आवाज़ और [illegible] की लम्बी लहर-ध्वनि से चौंक-चौंक पड़ता।

[illegible] हो [illegible] पहले ही उसे गहरी नींद आ गयी। उसकी नींद [illegible] की और उस पेड़ के नीचे, जहां वह [illegible] इस [illegible] सिर और उसके बीच [illegible] हुई [illegible] की लम्बी रेखा नज़र आयी।

"[illegible] बार-बार भग की!" [illegible] ने [illegible] था, [illegible] थी। [illegible] के दिमाग़ में एक [illegible] कि वह [illegible]

झाड़ी में, जहां वह होंठों से मटमैली बेरियाँ चुग रहा था, उसे झ
हुई पत्तियों का विचित्र ढेर दिखाई दिया। उसने हाथ से यह ढेर छुआ
मगर ढेर जमा ही रहा। तब उसने पत्तियों को एक-एक कर अलग कि
या और अंत में किन्हीं सख्त-सी कांटों पर उसका हाथ पड़ा। वह तुर
भांप गया कि वह साही है। वह भारी-भरकम साही थी जो शीतकालीन नीं
पूरी करने के लिए झाड़ी में घुस आयी और अपने को गर्म रखने के लि
पतझड़ की पत्तियों में दुबक गयी। अलेक्सेई पर उन्मत्त आह्लाद छा
हो गया। इस यातनापूर्ण यात्रा भर में वह किसी पशु-पक्षी को मारने का
सपना देखता आ रहा था। कितनी ही बार उसने पिस्तौल तानी और
किसी नीलकण्ठ, सोहर या खरगोश को निशाना बनाने का इरादा किया,
लेकिन हर बार बड़ी कश-मकश के बाद वह गोली दागने की लालसा को
दबा पाया, क्योंकि उसके पास सिर्फ तीन गोलियां शेष थीं—दो शत्रु के
लिए और तीसरी आवश्यकता पड़ने पर, अपने लिए। हर बार उसने पि-
स्तौल वापस रख लेने के लिए अपने को मजबूर किया, उसे खतरा मोल
लेने का कोई अधिकार नहीं।

और अब सचमुच ही उसके हाथ गोश्त का टुकड़ा लग गया था! वह
यह बिना सोचे-विचारे कि आम विश्वास के अनुसार साही अपवित्र जंतु
समझी जाती है, उसने फौरन शेष पत्तियां भी हटा दीं। साही सोती रही,
सिमट भी गयी और कांटेदार, भारी-भरकम, अजीबोगरीब सेम जैसी
मालूम दे रही थी। अलेक्सेई ने अपनी कटार के एक वार से उसे मार
डाला, उसे खोला, उसके ऊपरी कवच को और अंदर की पीली चमड़ी
को उतार दिया और लोथ के टुकड़े-टुकड़े कर, लोलुपता के साथ, अपने
दांतों से गर्म, धूसर, लसदार मांस को नोचने लगा, जो हड्डियों से बुरी
तरह चिपका हुआ था। इस जानवर का कुछ भी न बचा। अलेक्सेई
ने छोटी-छोटी हड्डियां भी चबा डालीं, उन्हें निगल लिया और तब जाकर
उसे कुत्ते जैसी बदबूवाले उस गोश्त के बदजायके का अहसास हुआ। लेकिन
भरे पेट के मुकाबले, जिससे सारे शरीर में तृप्ति, गर्मी और मदालस
पैदा हो गया था, उस दुर्गंध की क्या बिसात थी?

उसने फिर चारों तरफ देखा, जो भी हड्डी मिली उसे उठाकर फिर
चूसा और उनींदा तथा शान्ति का उपभोग करते हुए बर्फ पर लेटा रहा।
उसे अगर झाड़ियों से निकली मोमड़ी की सतर्क गुर्राहट न सुनाई दी होती
तो शायद वह सो ही जाता। अलेक्सेई ने फिर कान लगाये और अचानक

दूर पर गरजनेवाली तोपों की आवाज के ऊपर, जिसे वह बराबर पूर्व की दिशा से आती सुन रहा था, उसने मशीनगनों व दगने की आवाज पहचानी।

भारी थकान फेंककर, लोमड़ी की बात भुलाकर और आराम की आवश्यकता भूलकर वह फिर घने जगल की गहराइयों के अंदर रेंग गया।

११

जिस दलदल को उसने पार किया था उसके बाद एक मैदान था जिसके बीच में दोहरी चहारदीवारी खिंची हुई थी, जिसमें मौसम खाये दाम सरपत और घासपात की रस्सियों से जमीन में गड़े खूटों में बंधे थे।

इन बासों के बीच जहा-तहां बर्फ के नीचे से कोई परित्यक्त निर्जन सड़क झांक रही थी। इससे पता चलता था कि आसपास कहीं आदमी का बसेरा है! अलेक्सेई का दिल उछल पड़ा। इसकी तो सभावना ही कठिन थी कि इस सुदूर स्थान में हिटलरी सिपाही कभी पहुच पाये हों, और आ भी जाएं, तो अपने आदमी भी कहीं आस-पास ही होंगे, और वे निश्चय ही एक घायल आदमी को पनाह देंगे और अवश्य ही यथासाध्य सहायता देंगे।

अपने भटकने का अंत निकट आया समझकर अलेक्सेई पूरी शक्ति से, एक क्षण भी विराम किये बिना आगे बढ़ता चला। वह रेंगता ही गया, यद्यपि सांस फूल रही थी, बर्फ पर औंधे मुह गिर पड़ता था, चूर होकर चेतना खो बैठता था, फिर भी वह उस टीले की चोटी पर पहुचने के लिए तेजी से रेंगता ही गया, क्योंकि वहां से उसे कोई ऐसा गाव दिखाई पड़ जाने की आशा थी जहां वह अपना आश्रय-स्थल बना सकेगा। किसी बस्ती तक पहुच जाने के लिए अपनी पूरी शक्ति लगा देने की आकुलता में वह यह देख पाने में असमर्थ रहा कि इस बाड़े के अलावा और उस सड़क के अतिरिक्त, जो अब बर्फ के बाहर अधिकाधिक स्पष्ट रूप में दिखाई देने लगी थी, इस क्षेत्र में और कोई चिह्न नहीं था जिससे कि आस-पास किसी इनसान के होने का बोध हो सके।

अन्ततः वह टीले की चोटी पर पहुँच ही गया। हांफते हुए, सांस के लिए तड़पते हुए अलेक्सेई ने आंखें उठायीं और फौरन नीचे झपका ली— ऐसा भयानक था वह दृश्य जिससे उसका साक्षात्कार हुआ।

इसमे कोई सन्देह नहीं कि हाल तक यहां इस वन में एक छोटा ग्राम था। बर्फ से ढंके जले-जलाये मकानों के खंडहरों के ऊपर ऊंची-ऊंची पांतों में सिर उठाये हुए चिमनियों को देखकर उस ग्राम की रूपरेखा अब ही पहचानी जा सकती थी। यहां-वहां बचे थे कुछ बगीचों के अवशेष, बेंतो की चहारदीवारें या नंगे एश वृक्ष, जो किसी की खिड़की के बाहर उग आये थे। अब निर्जीव-से और आग में जलकर स्याह बने ये सब वृक्ष बर्फ मे गड़े खड़े थे। यह बर्फ से ढंका मैदान मात्र था, जिसमें कटे हुए जंगल के ठूंठों की भांति चिमनियां खड़ी थीं और बीच मे, इस दृश्य से बिलकुल बेमेल-सी, एक कुएं की ढेंकली खड़ी थी, जिसपर पुराना, जंग की पत्ती मढ़ा लकड़ी का डोल लटक रहा था और हवा के झोंकों के साथ जंग खायी हुई जंजीर से हौले-हौले झूल रहा था। और ऊपर, गांव के प्रवेश-स्थल पर, हरे-भरे बाड़े से घिरे एक बगीचे के पास एक सुन्दर मेहराब खड़ी थी, जिस के नीचे दरवाज़े का किवाड़ जंग खायी चूलों पर हल्के-हल्के डोलता हुआ चरमरा रहा था।

कहीं कोई जीव नहीं, कोई आवाज़ नहीं, कहीं पर धुएं की रेखा नहीं। हर तरफ़ वीरानगी! कहीं भी किसी जीवित इनसान का कोई चिह्न नहीं। एक खरगोश, जिसे अलेक्सेई ने झाड़ी मे भयभीत कर दिया था, भाग खड़ा हुआ और बड़े ही मजेदार ढंग से अपनी पिछली टांगें फटकारता हुआ सीधा गांव की तरफ़ नौ-दो-ग्यारह हो गया। वह मेहराब के दरवाज़े पर रुका, अपने पिछले पैरों पर बैठ गया, उसने सामने के पंजे उठाये और एक कान तिरछा किया, किन्तु इस भारी-भरकम, अजीबोगरीब जानवर को अपनी राह पर फिर रेंग पड़ने देखकर वह खरगोश फिर जले-जलाये वीरान बगीचों के किनारे-किनारे गायब हो गया।

यान्त्रिक गति से अलेक्सेई आगे बढ़ता गया। उसके दाढ़ी-भरे कपोलों पर से बड़े-बड़े आंसू ढुलक गये और बर्फ मे विलीन हो गये। वह मेहराब के उस द्वार पर रुका जहां एक क्षण पहले खरगोश रुका था। उस दरवाज़े पर एक तख्ती के बचे-खुचे हिस्से पर "किंड..." अक्षर लिखे रह गये थे। यह समझ पाना कठिन न था कि इस हरे-भरे बाड़े के अन्दर किंडरगार्टेन का साफ-सुथरा भवन था। गांव के बढ़ई की बनायी हुई कुछ छोटी बेंचें भी मौजूद थीं। उसने बच्चों के प्रति प्रेम से प्रेरित होकर उन्हें रंदा फेरकर और काग से रगड़कर समतल और चिकना किया था। अलेक्सेई ने धक्का मारकर दरवाज़ा खोला, रेंगकर वह एक बेंच पर बैठ-

थपेड़े मारती थी, घरों में घुस आती थी, बंद खिड़कियों में से अन्दर पड़ती थी, आंखें अंधी बना जाती थी और सांस सिसकियां कर जाती थी। स्तेपी से उठनेवाले यह रेतीले बवंडर "कमीशिन वायु" के नाम से पुकारे जाते थे और कई पीढ़ियों से कमीशिन की जनता इस वायु की मार से रोकने और शुद्ध, ताज़ी हवा में सांस भर लेने का सपना देखती आ रही थी। किन्तु यह स्वप्न तो समाजवादी देश में ही पूरा हो सकता है। लोगों ने आपस में विचार-विमर्श किया और आंधी और धूल के खिलाफ़ जिहाद छेड़ दिया। हर शनिवार को सारी आबादी फावड़े और कुदालियां लेकर निकल पड़ती और शीघ्र ही नगर के बीच खाली पड़े मैदान में एक पार्क बन गया और छोटी-छोटी गलियों के दोनों ओर नये-नये लंबकाय पोपलर वृक्षों की पांतें सज गयीं। लोगों ने इतनी सावधानी से इन पेड़ों को पानी दिया और काट-छांट की मानो वे उनकी अपनी खिड़कियों पर उगनेवाली किसी बेल के फूल हों। अलेक्सेई को स्मरण हो आया कि जब वसन्तकाल में पतली-पतली नयी शाखाओं में कोंपलें निकलीं और उन्होंने हरियाली की पोशाक ओढ़ ली तो क़स्बे के सभी निवासियों ने, बच्चों से लेकर बूढ़ों तक ने, कितना आनन्द उत्सव मनाया था... यकायक उसने अपने जन्मस्थान कमीशिन की गलियों में फ़ासिस्टों के प्रवेश के दृश्य की कल्पना की। वे ईंधन जुटाने के लिए उन पेड़ों को काट रहे थे, जिन्हें लोगों ने इतने प्यार से पाला-पोसा था। उसका क़स्बा धुएं के गर्भ में समा गया और जिस स्थान पर उसका मकान था, जहां वह बड़ा हुआ और जहां उसकी मां रहती थी, वहां इसी तरह की नंगी, कालिख पुती, दानवी चिमनी रह गयी, जैसी कि यह सामने दिखाई दे रही है।

पीड़ा और मानसिक वेदना से उसका दिल फटने लगा।

इन्हें अब और आगे न बढ़ने देना चाहिए! हमें लड़ना चाहिए, लड़ना ही चाहिए, अपनी आख़िरी सांस तक उनके खिलाफ़ जूझना चाहिए—उस रूसी सिपाही की भांति, जो वन-प्रान्तर में शत्रुओं के शवों के ऊपर पड़ा हुआ था।

वृक्षों के धूसर शिखरों को सूर्य की किरणें चूमने लगी थीं।

अलेक्सेई फिर उस जगह उतरकर रेंगने लगा जो कभी गांव की सड़क थी। राख के ढेरों से सड़े शवों की दुर्गंध आ रही थी। गांव उस जंगल से भी अधिक वीरान लग रहा था। यकायक एक विचित्र स्वर सुनकर वह सतर्क हो गया। गली के बिल्कुल सिरे पर राख के एक ढेर के पास

केन्द्रीभूत प्रकाश-पुंज की भांति एक ही स्थान पर केन्द्रित थे: रेंगते चलो, खिसकते चलो, हर कीमत पर आगे बढ़ते चलो!

राह में, चेतना की घड़ियों में, वह फिर कोई साही पकड़ पाने की आशा में हर झाड़ी की छानबीन कर लेता। उसका भोजन था बर्फ़ के नीचे दबी मिल जानेवाली बेरियां और काई। एक बार उसे चीटियों की विशालकाय बांबी मिली, जो वर्षा से धुली, स्वच्छ घास-पात के ढेर की भांति खड़ी थी। चीटियां अभी भी सो रही थीं और उनका निवास-स्थान निर्जीव मालूम होता था। अलेक्सेई ने इस जमे ढेर में हाथ घुसेड़ दिया और जब हाथ बाहर निकाला तो सख्ती के साथ चमड़ी से चिपकी हुई चीटियों से वह ढंक गया था। उसने बड़े स्वाद से इन्हें खाना शुरू कर दिया और अपने सूखे, चटख रहे मुंह में उसने चीटियों के चटपटे, खट्टे अम्ल का स्वाद अनुभव किया। उसने अपना हाथ बार-बार बांबी में घुसेड़ा और इस अप्रत्याशित आक्रमण से इसके सारे निवासी जाग गये।

नन्ही चीटियों ने भयंकर रूप से आत्मरक्षा की; उन्होंने अलेक्सेई के हाथ, होंठ और जीभ को काटा; वे उसकी वर्दी में घुस गयीं और उसके शरीर में काटने लगीं। किन्तु उसकी जलन उसे सुखकर ही मालूम हुई और उनको खाने के कारण जिस अम्ल ने उसके शरीर में प्रवेश किया, उसने शक्तिवर्धक तत्व जैसा काम किया। उसे प्यास लग आयी। टीलों के बीच उसे भूरे-भूरे जंगली पानी से भरी छोटी-सी पोखरी दिखाई दी; और जब पानी के लिए वह उसपर झुका तो वह भय से एकदम पीछे हट गया; उस मटमैले पानी में से नीले आसमान के प्रतिबिम्ब की पृष्ठ-भूमि में उसकी ओर एक अजीब भयानक शक्ल घूर रही थी। वह बेहद एक कंकाल मात्र था जो स्याह चमड़ी और गंदे, घुंघराले बालों में ढका हुआ था। आंखों के गहरे गड्ढों में बड़ी-बड़ी, गोल-गोल पुतलियां भयानक रूप से चमक रही थीं और माथे पर बिखरे हुए बालों की लटें लटक रही थीं।

"क्या यही मैं हूं?" अलेक्सेई ने अपने आप से प्रश्न किया और दुबारा वह अपना चेहरा देख लेने के डर से उसने पानी नहीं पिया, बल्कि उसने [illegible] कुछ बर्फ़ मुंह में रख ली और उसी शक्तिशाली चुम्बक के आकर्षण के वशीभूत होकर, रेंगता हुआ वह पूर्व दिशा की ओर बढ़ने लगा।

उस रात उसने एक बड़े भारी बम के गड्ढे को अपना आश्रयस्थल बनाया, जो विस्फोट से उड़ी हुई गीली रेत की चहारदीवारी से घिरा

नींद टूटी तो अलेक्सेई ने असाधारण निर्बलता अनुभव की। चीड़ की छाल चूसने तक को उसका मन न हुआ, जिसका काफ़ी बड़ा भण्डार वह छाती पर अपनी वर्दी के अंदर छिपाये हुए था। बड़ी ही कठिनाई से वह अपने को जमीन से उठा सका, मानो रात में उसका शरीर वहां चिपका दिया गया हो। अपने कपड़ो, दाढ़ी और मूछ से बर्फ़ फेंके बिना उसने बम के गड्ढे से बाहर निकलने का प्रयत्न किया, मगर उसके हाथ पैर पर से फिसल गये जिसपर रात को बर्फ़ की पर्त जम गयी थी। बाहर निकलने के लिए उसने बार-बार प्रयत्न किया, मगर हर बार वह फिसलकर तली में लुढ़क जाता। उसके प्रयत्न अधिकाधिक क्षीण होते गये। और अन्ततः वह यह देखकर घबरा उठा कि वह किसी की सहायता के बिना इससे बाहर निकल न पायेगा। इस कल्पना मात्र से प्रेरित होकर उसने उस फिसलनी दीवार पर चढ़ जाने के लिए एक बार और जोर लगाया, मगर वह थोड़ा ही चढ़ पाया था कि चूर-चूर होकर, असहाय-सा फिर फिसलकर नीचे आ गिरा:

"अन्त निकट आ गया! अब क्या है!"

वह गड्ढे के तल में सिमटकर लेट गया और अनुभव करने लगा कि शिथिलता की एक भयावनी संवेदना सारे शरीर में रेंगती चढ़ रही है जिससे इच्छा-शक्ति विशृंखलित और विजड़ित हो गयी है। मुश्किल से उसने अपने कोट में जर्जर पत्र निकाले, लेकिन उन्हें पढ़ पाने की शक्ति न रह गयी थी। उसने सेलोफेन के रैपर में से एक चित्र निकाला जिसमें छींट का फ्राक पहने एक लड़की खुले मैदान में घास पर बैठी थी। करुण मुस्कान के साथ वह उससे पूछने लगा:

"क्या, सचमुच अलविदा का वक्त आ गया?" और अचानक वह चौंक उठा और हाथ में तस्वीर लिये मूर्तिवत् बैठा रह गया। उसे ऐसा महसूस हुआ कि जंगल के ऊपर कहीं बहुत ऊंचाई से ठंडी, धारदार हवा में उसे कोई सुपरिचित स्वर सुनायी दे गया है।

वह तुरन्त चौकन्ना होकर उठ बैठा। इस स्वर के विषय में कोई सन्देह नहीं था। वह इतना हल्का था कि जंगली जानवर के समान चौकन्ने कान ही बर्फ़ से लदे वृक्षों की लगातार सरसराहट के बीच उस स्वर को अलग ही पहचान पाते। किन्तु उसकी विचित्र सीटी जैसी गूंज सुनकर उसे कोई [illegible] न रह गया कि वह उसी वायुयान की आवाज़ है जिसे वह [illegible] करता था।

मगर तभी उसके पांव फिसल गये और वह ढलान तरीके से मुड़के
पर बर्फ़ पर आ गिरा और नीचे लुढ़कने लगा। उसे मन्द चोट आई
मगर वायुयान के इंजन का गुंजन अभी भी उसके कानों में गूंज रहा था
वह फिर ऊपर चढ़ा और फिर फिसलकर पेंदी में आ गिरा। तब,
गड्ढों की बारीकी के साथ परीक्षा कर उसने उन्हें और गहरा बनाना शुरू
किया और चोटी के गड्ढों के किनारे और नुकीले बना डाले, जब
काम खत्म हो गया तो सावधानी से अपनी बची-खुची शक्ति लगाता हुआ
वह फिर चढ़ने लगा।

बड़ी ही कठिनाई से वह रेतीले किनारे पर लेट सका और फिर असहाय-सा समतल धरती पर लुढ़क गया। इसके बाद वह फिर उस दिशा की तरफ रेंगने लगा जिस ओर विमान उड़ गया था और जिस ओर से बर्फ़ गलानेवाले कुहरे को दूर करता हुआ, बर्फ़ की पर्त को स्फटिक की भांति दमकाता हुआ, बाल रवि वृक्षावलि के ऊपर उग आया था।

१३

लेकिन अब उसे रेंगना भी बहुत मुश्किल लगने लगा। उसकी भुजाएं थरथराने लगीं और शरीर का बोझ संभालने के योग्य भी न रहीं। कई बार वह पिघलती बर्फ़ पर औंधे मुंह गिर पड़ा। ऐसा लगने लगा मानो धरती ने अपनी आकर्षण-शक्ति इतनी अधिक तीव्र कर दी है कि अब उसका प्रतिरोध कर पाना असम्भव है। अलेक्सेई को लेट जाने और कुछ क्षण, आध घंटे ही सही विश्राम कर लेने की अदम्य इच्छा सताने लगी, लेकिन आगे बढ़ते जाने के संकल्प ने भी आज उन्मत्त रूप धारण कर लिया था, और इसलिए वह रेंगता ही गया, बराबर रेंगता गया—कभी गिर पड़ता, तो उठ बैठता और फिर रेंगने लगता। उसे न दर्द का बोध रहा, न भूख-प्यास का, उसे कुछ नज़र नहीं आ रहा था, और तोपों तथा मशीनगनों के दगने की आवाज़ के अलावा उसे कोई स्वर नहीं सुनाई दे रहा था।

जब उसकी भुजाओं ने सहारा देने से इनकार कर दिया, तो उसने कुहनी के बल सरकना शुरू किया, लेकिन यह ढंग बहुत भौंडा साबित हुआ, इसलिए वह लेट गया और कुहनियों के बल लुढ़कने का प्रयत्न करने लगा। यह ढंग सफल सिद्ध हुआ। रेंगने की अपेक्षा इस तरह लुढ़कने चलना आसान था और इसमें ज़्यादा ज़ोर लगाने की भी ज़रूरत नहीं थी।

से क्षेत्र पर नज़र डाली। कटाई ताज़ी ही थी, और ऐसा नहीं लगता था कि कोई इसे छोड़कर चला गया है। वृक्ष हाल ही में गिराये गये थे क्योंकि नंगे पेड़ों की डालियां अभी भी ताज़ी और हरी थीं, कटे हुए तनों से शहद की तरह गोंद अभी भी रिस रही थी और चारों तरफ़ बिखरी हुई कच्ची छाल और खपच्चियों से ताज़ी सुगन्ध आ रही थी। अतः सारी कटाई अभी सजीव थी। शायद हिटलरी सिपाही अपने लिए शरणस्थल और किलेबंदी बनाने के लिए लट्ठे तैयार कर रहे थे? तब तो बेहतर हो कि वह इस स्थान से यथाशीघ्र खिसक जाये, क्योंकि लकड़ी चीरनेवाले लोग किसी भी क्षण यहां आ धमकेंगे। मगर उसका शरीर जड़ता महसूस करने लगा, भारी दर्द और टीस से जकड़ गया और उसमें हिलने-डुलने की भी शक्ति न रही।

तब क्या वह रेंग चले? वन-जीवन के इन दिनों में उसकी जो सहज प्रवृत्ति बन गयी थी, उसने उसे सतर्क कर दिया। उसे कुछ नज़र तो न आ रहा था, मगर वह यह अनुभव कर रहा था कि कोई व्यक्ति उसे ग़ौर से निरन्तर ताक रहा है। कौन है वह? जंगल में शान्ति का साम्राज्य था, कटाई के क्षेत्र में ऊपर आसमान में लवा गा रही थी, किसी कठफोड़वे की टक-टक सुनाई दे रही थी, और कटे वृक्षों की मुरझायी हुई शाखाओं पर फुदकियां एक दूसरे का पीछा करती हुई शोरपूर्वक चीख रही थीं। किन्तु इस सबके बावजूद अलेक्सेई अपने रोम-रोम से यह महसूस कर रहा था कि कोई उसे ताक रहा है। एक शाख चटखी। उसने चारों ओर देखा और नवजन्मे सनोबर वृक्षों के कुंज में, जिनके घुंघराले शीश हवा के झोंके में झूम रहे थे, उसने देखा कि कई शाखाएं स्वतंत्र रूप से हिल-डुल रही हैं—वे बाक़ी शाखाओं की ताल के साथ नहीं झूम रही हैं। और उसे ऐसा लगा कि उस कुंज से आती हुई हल्की-हल्की, मगर उत्तेजनापूर्ण कानाफूसी के स्वर—इनसानों की कानाफूसी के स्वर—उसे सुनाई दे रहे हैं। और एक बार फिर उसका रोम-रोम उसी तरह खड़ा हो गया, जैसा कि कुत्ते से मुठभेड़ के समय हुआ था।

उसने तेज़ी से अपनी पायलटवर्दी के सीने में से जंग खायी, धूल सनी पिस्तौल निकाली और उसे साध लिया, हालांकि इसके लिए उसे दोनों हाथ काम में लाने पड़े। पिस्तौल की खटक से सनोबर में छिपा हुआ कोई व्यक्ति चौंकता जान पड़ा। कई वृक्षों के शिखर बोझ से थरथरा गये,

इसी समय किसी उत्तेजित, बच्चों जैसी आवाज ने वृक्षों से पुकारा
"ए-ए! कौन हो तुम? जर्मन?"

इन अजनबी शब्दों से अलेक्सेई चौकन्ना हो गया लेकिन जिसने पुकारा था वह निस्सन्देह रूसी था और बालक था।

एक और बचकानी आवाज ने पूछा: "तुम यहां क्या कर रहे हो?"

"और तुम कौन हो?" अलेक्सेई ने प्रश्न के उत्तर में प्रश्न किया और अपनी आवाज के हल्केपन और कमजोरी पर आश्चर्यान्वित होकर रुक गया।

इस प्रश्न से वृक्षों में सनसनी फैल गयी होगी, क्योंकि वहां जो भी लोग थे, उनमें बड़ी देर तक कानाफूसी के स्वरों में सलाह-मशविरा होता रहा और निश्चय ही, यह सलाह-मशविरा उत्तेजनापूर्वक हो रहा था, क्योंकि वृक्षों की शाखाएं तेज़ी से डोल रही थीं।

"बातें न बनाओ, तुम हमें उल्लू नहीं बना सकते! मैं जर्मन को पांच मील से पहचान लेता हूं। क्या तुम जर्मन हो?"

"तुम कौन हो?"

"तुम यह क्यों जानना चाहते हो?"

"मैं रूसी हूं।"

"तुम झूठ बोल रहे हो। झूठ न बोल रहे हो तो मेरी आंखें निकाल लेना। तुम फ़ासिस्ट हो!"

"मैं रूसी हूं, रूसी! हवाबाज। जर्मनों ने मुझे नीचे गिरा दिया।"

अलेक्सेई ने अब सारी सतर्कता ताक पर रख दी। उसे विश्वास हो गया था कि उसके अपने आदमी, रूसी, सोवियत लोग ही उन वृक्षों में छिपे हैं। वे उसपर विश्वास नहीं करते। यह स्वाभाविक है। युद्ध हर एक को सावधान होना सिखा देता है। और अब, यात्रा शुरू करने के क्षण के बाद आज पहली बार, उसने महसूस किया कि वह बिल्कुल निष्प्राण हो गया है, उसने महसूस किया कि अब वह हाथ-पैर हिला भी न सकेगा, न यहां से खिसक सकेगा और न अपनी रक्षा कर सकेगा। उसके कपोलों के स्याह गड्ढों पर से आंसू लुढ़क पड़े।

"देखो, वह रो रहा है," पेड़ों के पीछे से एक आवाज आयी, "ए-हो! तुम क्यों रो रहे हो?"

"हां, मैं रूसी हूं, तुम्हारी ही तरह रूसी-हूं, विमान-चालक हूं।"

"किस हवाई अड्डे के हो?"

जेब में हाथ डालने और अपना परिचय-पत्र निकाल लेने के सिवा अलेक्सेई के सामने कोई रास्ता न रहा। साथ-साथ, अक्षरों के परिचय को देखते ही, जिसके आवरण पर सितारा अंकित था, इन बालकों पर जादू जैसा प्रभाव पड़ा। मानों उनका बचपन, जो जर्मन-अधिकार के दिनों में कहीं खो गया था, अकस्मात अपने प्यारे सोवियत विमान-चालक के प्रगट होते ही फिर वापस लौट आया है। उससे बात करने की विह्वलता के कारण वे एक दूसरे के ऊपर गुड़क पड़े।

"हां, हां, अपने ही लोग यहां हैं। यहां तीन दिन से हैं।"

"तुम्हारी हड्डी-हड्डी क्यों निकल आयी है?"

"...अपने लोगों ने उनको ऐसा मज़ा चखाया! ऐसी पिटाई लगायी! यहां बड़ी घमासान लड़ाई हुई! और उनमें से भयंकर तादाद में लोग मारे गये। भयंकर तादाद में!"

"और क्यों, वे भागे भी तो किस तरह! उनका भागना भी कैसा मज़ेदार था। उनमें से एक ने नहाने के टब में घोड़ा जोत लिया और उसमें छिपकर भाग गया। उनमें से दो घायल थे, वे भागते हुए घोड़े की पूंछ पकड़े रहे और तीसरा आदमी घोड़े पर बैठकर राजकुमार की तरह भागा। काश तुम भी देख पाते!.. तुम्हें उन्होंने कहां गिरा दिया था?"

कुछ देर बड़बड़ करने के बाद ये बालक काम में जुट गये। उन्होंने बताया कि उनके परिवार के लोग पांच किलोमीटर दूर रहते हैं। अलेक्सेई इतना कमज़ोर हो गया था कि पीठ के बल आराम से लेट जाने के लिए वह करवट भी न बदल पा रहा था। इस स्थान से, जिसे वे "जर्मन लकड़ी भण्डार" कहते थे, ईंधन ले जाने के लिए वे लड़के जो स्लेज लाये थे, वह इतनी छोटी थी कि अलेक्सेई उसमें समा नहीं सकता था। उसके अलावा, अनकुचली बर्फ़ पर स्लेज घसीटकर उसका बोझा ढो ले जाना इन बालकों के बस की बात न थी। बड़े लड़के ने जिसका नाम सेर्योन्का था, अपने भाई फेद्का से कहा कि वह जितनी तेज़ी से हो सके, दौड़कर गांव जाकर मदद लाये, तब तक वह जर्मनों से अलेक्सेई की हिफ़ाज़त करेगा—उसने कारण तो यही बताया, मगर असलियत यह थी कि वह मन-ही-मन अलेक्सेई का विश्वास न कर रहा था। वह अपने मन में सोच रहा था: "क्या भरोसा। ये फ़ासिस्ट बड़े चालाक हैं—वे मरने का बहाना कर सकते हैं और लाल फ़ौज के परिचय-पत्र भी हथिया सकते

युद्ध में बदल गयी। जर्मन बोलशेविकों तक पहुंचने में असफल रहे। बल्कि हमने भी शक्ति को दक्षिण की तरफ भगाने के लिए मजबूर हुए और इस क्षेत्र में उन्हें रक्षात्मक स्थिति ग्रहण करनी पड़ी।

प्लावनी के किसान, जो अपनी रेतीली मिट्टीवाली जमीन की कम स्वतः कम पैदावार की पूर्ति जंगल की झीलों में कामयाबी के साथ मछलियां मारकर किया करते थे, अब खैर मना रहे थे कि लड़ाई उनके सिर से टल गयी। जर्मनों का हुक्म पालन करके उन्होंने अपने सामूहिक फार्म के अध्यक्ष को मुखिया बना दिया, मगर इस आशा में कि सोवियत फौजों को ये फ़ासिस्ट हमेशा न रौंदते फिरेंगे और तूफ़ान थमने तक वे इस दूरस्थ स्थान में शान्तिपूर्वक रह सकेंगे, वे अभी भी सामूहिक खेती के ढंग से अपना जीवन बिता रहे थे। लेकिन मटमैली हरी वर्दीवाले जर्मनों के बाद काली वर्दीवाले जर्मन आ धमके जिनकी फौजी टोपियों पर क्रॉस की जगह में हड्डियों और खोपड़ी का चिह्न बना हुआ था। सख्त सजा का डर दिखाकर प्लावनी के निवासियों को जर्मनी में जाकर स्थायी काम करने के लिए पन्द्रह स्वयंसेवक चौबीस घंटे के अन्दर देने का हुक्म दिया गया। इन स्वयंसेवकों को गांव के अंतिम मकान में उपस्थित होना था जहां सामूहिक फार्म का दफ़्तर और मछली-भण्डार था; और उन्हें अपने साथ एक जोड़ कपड़े, एक चम्मच, छुरी और कांटे और दस दिन भोजन की सामग्री भी लानी थी। लेकिन निश्चित समय पर कोई भी उपस्थित न हुआ। और यह भी कहना चाहिए कि अनुभव से सीखे हुए काली वर्दीवाले जर्मनों को भी यह उम्मीद नहीं थी कि कोई उपस्थित होगा। गांव को सबक सिखाने के लिए उन्होंने सामूहिक फार्म के अध्यक्ष यानी गांव के मुखिया को, किंडरगार्टेन की प्रधान अध्यापिका वेरोनिका ग्रिगोर्येवना को, सामूहिक फार्म की टीमों के दो नेताओं को और दस अन्य किसानों को हिरासत में ले लिया और उन्हें गोली मार दी। उन्होंने हुक्म दिया कि शवों को गाड़ा न जाये और कहा कि अगर अगले दिन भी निश्चित समय पर स्वयंसेवक उपस्थित न हुए तो बाकी गांव के साथ भी यही सलूक किया जायेगा।

इस बार भी कोई उपस्थित न हुआ। अगले दिन सुबह जब एस. एस. सिपाही गांव का चक्कर लगाने गये, तो उन्होंने हर घर वीरान पाया। एक भी इनसान न था—न बच्चे, न बूढ़े। अपना घर, अपनी जमीन, वर्षों के कठोर श्रम से अर्जित सारी सम्पत्ति और लगभग सारे

भी मर गया। इस तरह अब हम तीन ही हैं... जर्मन अब वापस नहीं आयेंगे, क्यों? तुम्हारा क्या ख़्याल है? मेरे नाना, जो [illegible] अध्यक्ष हैं, वे कह रहे थे कि अब वे न आयेंगे। वे कहते हैं, 'मरनेवाले क़ब्रिस्तान से नहीं लौटा करते।' लेकिन मां, वह [illegible] भी डरती है। वह दूर भाग जाना चाहती है। वह कहती है कि वे फिर वापस आ सकते हैं... उधर देखो! नाना और फ़ेद्का।"

मैदान के छोर पर खड़ा लाल बालोंवाला फ़ेद्का अनेस्मेई को हाथ इशारा कर रहा था और उसके साथ एक लम्बा-सा, गोल कंधोंवाला बूढ़ा आदमी फटा-पुराना, घर का बुना, हल्के भूरे रंग का कोट कमर पर एक डोरी से बांधे खड़ा था और सिर पर किसी जर्मन अफ़सर की ऊंचे टोपी पहने था।

बूढ़ा आदमी, जिसे लड़कों ने मिखाईल नाना कहकर पुकारा, लम्बे, ऊंचे कंधोंवाला और दुबला-पतला व्यक्ति था। गांव की सीधी-सादी मूर्तियों में सन्त निकोलस का जैसा चेहरा होता है, उसका चेहरा भी उतना करुणामय था, बच्चों जैसी निर्मल आंखें थीं और मुलायम, विरल हल्की दाढ़ी थी जो बिल्कुल रुपहली हो चुकी थी। उसने अनेस्मेई को भेड़ की खाल के पुराने कोट में लपेटा जिसमें रंग-बिरंगी थिगलियां लगी थीं, वह आसानी से अनेस्मेई को उठाते हुए और उसके हल्के सूखे शरीर को बाह में पकड़ते हुए बड़े आश्चर्य मिश्रित संवेदन से बड़बड़ाता जा रहा था.

'बेचारा! बेचारा! अरे, तुममें बाकी ही क्या बचा है! हे भगवान, तुम तो अस्थिपंजर भर रह गये हो! यह लड़ाई भी लोगों पर कैसी-कैसी आफ़त ढा रही है! हाय... हाय!"

इतनी सावधानी से, मानो वह नवजात शिशु को उठा रहा है, उसने अनेस्मेई को [illegible] पर [illegible] स्लेज पर रख दिया, उसे रस्सी से बांध दिया, तब अपना माथा और फिर [illegible] उतारकर उसे [illegible] और अनेस्मेई के सिरहाने रख दिया। फिर स्लेज के सामने आकर उसने [illegible] में बांध दिया, और फिर दाना [illegible] को [illegible] उसने कहा, "भगवान मदद करे!" और वे [illegible] पर [illegible] और [illegible] के [illegible] चले, [illegible] की तरह [illegible] हुए [illegible] लगा।

अगले दो-तीन दिन तक अलेक्सेई को लगा मानो वह घने और गर्म कुहरे मे लिपटा है जिसके भीतर मे उसे अपने चारो तरफ चलनेवाले काम काज की धुधली तस्वीर मात्र दिखाई दे जाती थी। वास्तविकता के साथ-साथ उल्जलूल कल्पना-चित्र मिश्रित दिखाई देने लगे, और काफी समय बाद कही जाकर वह तमाम घटनाओ को उचित क्रमबद्ध करके समझ पाया।

ये भागे हुए लोग अछूते जगल के बीच रहते थे। उनकी खोहे, जिनपर सनोबर की शाखाओ का छप्पर था, अभी भी बर्फ मे ढकी थी और शायद ही दृष्टिगोचर होती हो। उनसे जो धुआ उठ रहा था, वह सीधे जमीन से निकलता लग रहा था। जिस दिन अलेक्सेई आया, उस दिन हवा बंद थी और नमी थी और धुआ काई मे चिपका-सा तथा पडो मे लहराता रह गया था, जिससे अलेक्सेई को यो महसूस हुआ मानो यह स्थान बुझती हुई दावाग्नि के धुए से भरा है।

यहा के सभी निवासियों को—उनमे मुख्यत औरतें और बच्चे थे और कुछ बूढ़े लोग थे—ज्यो ही यह पता लगा कि कोई सोवियत हवाबाज यहा आ गिरा है—पता नही कौन और कैसे—जिसे मिखाईल उठाकर ला रहा है, और जैसा फेद्का ने बताया, वह सिर्फ "हड्डियो का ढाचा भर" रह गया है, त्यो ही वे सब उनसे मिलने आ गये। जब पेडो के बीच से "गाड़ी" आती दिखाई देने लगी, तो औरतें उसकी तरफ भागी और उनके साथ जो बच्चे उमड पडे थे उन्हें खदेडकर उन्होंने स्लेज को घेर लिया और रोती चीखती हुई गाड़ी के साथ खोह तक आयी। वे सभी चिथडे पहने थी और सभी समान रूप से बूढ़ी लग रही थी। खोहो मे जल रही आग के धुएं और कालिख से उनके चेहरे स्याह पड गये थे, और जब कभी वे मुसकरा पडती थी, तब भूरी चमडी के बीच उनके चमकते हुए सफेद दात और झिलमिलाती हुई आखें देखकर ही यह भेद करना सम्भव होता था कि उनमे कौन जवान है और कौन बूढ़ी।

"औरतो! अरी औरतो! तुम सब यहां क्यो जमा हो गयी हो? तुम समझती हो यहा थियेटर लगा है? या नाटक हो रहा है?" मिखाईल नाना अपना कालर और ज़ोर से खीचते हुए चीख पडे, "भागो यहा से, भगवान के लिए! हे भगवान, मे सब तो भेड़ें जैसी हैं। बिल्कुल जाहिल!"

और औरतों के झुण्ड में अलेक्सेई ने कुछ आवाजें यह कहते हु
"आह, कितना दुबला है! यहां, सचमुच, बिल्कुल हड्डियों का
था भर है। वह जिन्दा-दुबला भी नहीं है। क्या अभी जिंदा है?"
"वह बेहोश है! उसे हो क्या गया है? हाय कितना दुबला है बे
रा, कितना दुबला है!"

और फिर अचरज-भरी बातें बंद हो गयीं। इस विमान-चालक ने
अज्ञात, मगर भयंकर मुसीबतें उठायी होंगी, उसमें महिलाएं बहुत प्र
वित हुईं, और जब जंगल के किनारे-किनारे स्लेज आ रही थी और दूर
गत गाव निकट आता जा रहा था, तब उनमें यह झगड़ा पैदा हो गय
कि उनमें से कौन अलेक्सेई को अपनी खोह में ले जायेगी।

"मेरी जगह सूखी है। रेत, सब रेत है और हवा खूब आती है...
और मेरे यहां चूल्हा भी है," एक छोटे कद की, गोल चेहरेवाली औरत
बहस कर रही थी, जिसकी हंसती हुई आंखों की सफ़ेदी इस तरह चमक
रही थी मानो जवान नीग्रो की आंखें हों।

" 'चूल्हा!' लेकिन तुम कितने लोग रहते हो? खोह की बू ही
ऐसी है कि नरक याद आ जाये! मिखाईल, उसे मेरे यहां पहुंचा दो।
लाल सेना में मेरे तीन बेटे हैं, और मेरे पास थोड़ा-सा आटा भी बच
है। मैं उसके लिए कुछ चपातियां पका दूंगी!"

"नहीं, नहीं! इसे मेरे यहां भेज दो। मेरे यहां जगह काफ़ी है।
हम दो ही तो प्राणी हैं और इतनी बड़ी जगह है। तुम चपातियां पकाकर
मेरे यहां ले आना; उसके लिए क्या फ़र्क़ पड़ेगा, वह कहीं खा लेगा।
वस्यूशा और मैं उसकी देखभाल कर लेंगे, तुम इत्मीनान रखना। मेरे
पास कुछ जमी हुई मछलियां हैं और सफ़ेद खुम्मियां भी हैं... मैं उसके
लिए कुछ मछलियों और खुम्मियों का शोरबा पका दूंगी..."

"उसका एक पैर तो कब्र में है, फिर मछली से भला उसे क्या फ़ाय-
दा होगा? नाना, इसे मेरे यहां ले चलो, हमारे पास गाय है और हम
उसे दूध पिला सकेंगे!"

लेकिन मिखाईल स्लेज अपनी खोह की तरफ़ ले गया, जो इस भूमि-
गत गांव के बीच में थी।

...अलेक्सेई को याद है कि उसे ज़मीन में खोदकर बनायी गयी छो-
टी-सी धुंधली गुफा में एक टाट पर लेटा दिया गया—रोशनी के नाम पर
वहां एक धुआं उगलती भभकती ढिबरी थी, जो दीवाल में खोंस दी गयी

वह बूढ़ी और [illegible] निकल गयी — और [illegible] हुए [illegible] मौजूद सभी लोगों पर छोड़ गयी। कोई [illegible] के [illegible] थी। [illegible] है [illegible] और [illegible] [illegible] पर [illegible] [illegible] जिसने [illegible] [illegible] की [illegible] गयी।

वेरोनिका और फेद्या आ गये। [illegible] जैसी [illegible] के [illegible] अपने सिर से कोसी टोपी उतारते हुए वेरोनिका ने कहा 'सुप्रभात' और मेज पर शक्कर के दो टुकड़े रख दिये जिनपर तम्बाकू के रेशे चिपके हुए थे।

"मां ने भेजी है। शक्कर तुम्हारे लिए फायदेमंद होगी, मां ने,' उसने कहा और मिखाईल की तरफ मुड़कर उसने बड़े आत्मविश्वास से कहा "हम आज फिर पुरानी जगह गये थे। वहां हमें एक बच्चे का बर्तन मिला, दो मुर्गियां मिलीं, जो बहुत अच्छी नहीं हैं, और कुल्हाड़ी का दस्ता मिला। हम ये चीजें ले आये हैं, हमारे काम में आ सकती हैं।"

इस बीच फेद्या अपने भाई के पीछे खड़ा हुआ, मेज पर चमकते हुए शक्कर के टुकड़ों को सोत्सुक दृष्टि से देख रहा था और उसने मुंह में भर आये पानी को इस तरह सड़ोपा कि उसकी आवाज साफ सुनाई दे गयी।

बहुत बाद में जाकर, जब अनेक्सेई ने इस सबके बारे में सोच-विचार किया, तब वह इन उपहारों का पूरा मूल्य समझ सका, जो ऐसे गांव ने दिये थे जिसके एक-तिहाई निवासी उस शीतकाल में भूख से मर गये थे, जहां एक भी परिवार ऐसा न था जिसे अपने एक या दो सदस्यों के बिछोह का शोक न सहन करना पड़ा हो।

"वाह औरतो, औरतो, तुम अमूल्य हो। सुनते हो, अनेक्सेई, मैं क्या कह रहा हूं? मैं कहता हूं, रूसी औरतें अमूल्य हैं। तुम उनका दिल छू भर लो और वे अपना सर्वस्व निछावर कर देंगी, जरूरत हो तो अपने सिर की भी बलि चढ़ा देंगी। ऐसी हैं हमारी औरतें। क्यों, ठीक नहीं है?" मिखाईल नाना अनेक्सेई के लिए इन भेंटों को स्वीकार करते हुए यह कहते जाते और फिर वे अपने काम में जुट जाते, जो उनके पास हमेशा ही बना रहता था — घोड़े के साज, पट्टे या नमदे के घिसे-फटे जूतों की मरम्मत करना। "और काम में भी हमारी औरतें मर्दों से पीछे नहीं हैं। सच कहूं, तो वे हमें दो-चार बातें सिखा सकती हैं! बस बुरी है

उनकी जबान, बस उनकी जबान बुरी है! मैं बताये देता हूँ, ये
रतें मेरी जान लेकर छोड़ेंगी, बस जान ही लेंगी! जब मेरी अनीस्या
र गयी, तो, कितना पापी हू मैं, मैंने सोचा, 'शुक्र है भगवान, अब
छ चैन तो मिलेगा!' लेकिन, तुम्ही देख लो, इसके लिए भगवान
मुझे सज़ा दे ही दी। हमारे यहां के सभी मर्द, जिन्हें फौज में नहीं
गया गया, जर्मनों से लड़ने के लिए छापेमारों में शामिल हो गये, और
हूँ कि अपने पापों के कारण औरतों का सरदार बन गया–भेड़ों के
ड़ में बकरे की तरह ... ओह-हो-हो!"

इस वनवास में अलेक्सेई ने ऐसी बहुत-सी चीजें देखीं जिनसे वह चकित
रह गया। फासिस्टों ने प्लावनी के निवासियों से उनका घर, उनकी
सम्पत्ति, उनके खेती के औज़ार, पशु, घरेलू साज-सामान और कपड़े–
हर चीज़ छीन ली थी, जिसे उन्होंने पीढ़ियों तक खून-पसीना बहाकर
हासिल किया था और आजकल ये लोग जंगल में वास कर बड़ी तकलीफें
भुगत रहे थे–उन्हें बराबर खतरा था कि फासिस्ट उनका पता न
पा लें। वे भूखे रहते, ठंड भोगते–मगर उनकी सामूहिक खेती की व्यव-
स्था न टूटी; इसके विपरीत युद्ध की भयानक विपत्ति ने इन लोगों को
और भी अधिक घनिष्ठ सूत्र में बांध दिया। वे खोहें भी सामूहिक रूप में
बनाते और उन्हें बेतरतीबी से नहीं, अपने सामूहिक खेत में जिस तरह
टीमें बनाकर काम करते थे, उन्हीं टीमों के अनुसार बसा रहे थे। जब
मिखाईल नाना का दामाद मारा गया तो उन्होंने स्वयं सामूहिक फार्म के
अध्यक्ष का काम संभाल लिया और इस जंगल में बड़ी निष्ठा के साथ सा-
मूहिक कृषि-व्यवस्था के नियमों का पालन करने लगे। और अब उनके तत्वा-
वधान में घने जंगल के बीच बसा हुआ यह भूमिगत गांव ब्रिगेडें और टीमें
बनाकर वसंत के कामों की तैयारी कर रहा था।

किसान औरतें, हालांकि खुद भूखी रह रही थीं, सामूहिक खोह में
अपना सारा अनाज–एक-एक दाना तक, सब का सब–ला रही थीं,
जिसे गांव से भागते समय वे किसी तरह बचा लायी थीं। जर्मनों से बच
गयी गायों के बछड़ों की देखभाल सबसे ज्यादा की जा रही थी। वे खुद
भूखे रहते, मगर सामूहिक सम्पत्ति की गायों को न मारते। प्राणों की
बाज़ी लगाकर गांव के लड़के अपने पुराने, जले-जलाये गांव में गये और
राख की ढेरियों में से हल निकाल लाये जो तपकर नीले पड़ गये थे। इन्हें
वे अपने भूमिगत गांव में ले आये और उनमें से काम के हलों पर लकड़ी

[illegible]

[illegible] —उसने [illegible]

और नहाने के बाद शरीर [illegible] के लिए [illegible]

[illegible] बना दिया। जब [illegible] इतनी गर्म हो गयी कि [illegible]

[illegible] [illegible] पर गर्म [illegible] पत्थर रखकर [illegible]। [illegible]

और [illegible] आवाज़ के साथ भाप का एक बादल उठकर छत में [illegible] गया, उसके नीचे फैल गया और फिर [illegible] बनकर बिखर गया। इस कुहरे में कुछ नहीं दिखाई दे रहा था, मगर अलेक्सेई को लगा कि बूढ़े के होशियार हाथ उसके कपड़े उतार रहे हैं।

वारवारा अपने श्वसुर की सहायता कर रही थी। गर्मी के कारण उसने अपना रुई-भरा कोट और सिर का रूमाल उतार दिया। उसकी घनी लटें—तार-तार रूमाल के नीचे उनके अस्तित्व की कल्पना भी कठिन था—खुलकर पीठ पर बिखर गयीं, और यकायक वह धर्मपरायण बूढ़ी औरत में बदलकर छरहरी, बड़ी-बड़ी आंखोंवाली फुर्तीली युवती के रूप में प्रकट हो गयी। यह परिवर्तन इतना आकस्मिक था कि अलेक्सेई, जिसने अभी तक उसकी ओर कोई ध्यान नहीं दिया था, यकायक अपनी नंगी अवस्था पर लजा गया।

"फ़िक्र न करो, अलेक्सेई, बेटे, कोई फ़िक्र न करो," मिखाईल नाना ने उसे आश्वस्त करते हुए कहा, "कोई चारा भी तो नहीं है। तुम्हारे लिए यह काम तो हमें करना ही पड़ेगा। मैंने सुना है कि फ़िनलैंड में मर्द-औरत साथ-साथ नहाते हैं। क्या? सच नहीं है? शायद उन्होंने मुझे झूठ बताया है। लेकिन वारवारा तो यहां, इस समय अस्पताल की नर्स के समान है, युद्ध में घायल हुए एक व्यक्ति की सेवा कर रही है, इसलिए शर्म की कोई बात नहीं है। वारवारा, संभालना इसे, तब तक मैं इसकी क़मीज़ उतार दूं। हे भगवान, यह तो बिल्कुल सड़ गयी है। चिथड़े-चिथड़े हो रही है!"

और अब अलेक्सेई ने युवती की बड़ी-बड़ी काली-काली आंखों में भय-

गया है, कोई अजनबी नहीं है, बल्कि उसका अपना मीशा है, वह [illegible] त्याशित अतिथि नहीं है, बल्कि उसका पति है जिसके साथ वह [illegible] एक वसंत बिता पायी थी—लम्बा-चौड़ा सुपुष्ट व्यक्ति, चेहरे पर चम[illegible] ली झाड़ियां, भौहें इतनी बारीक मानों हैं ही नहीं, विशालकाय शक्ति[illegible] सी हाथ, फासिस्ट दानवों ने उसकी यह हालत कर दी है; यह मीशा का ही निर्जीव-सा शरीर है जिसे वह अपनी भुजाओं में संभाले है। औ[illegible] उसका शरीर सिहर उठा, सिर घूमने लगा और केवल अपने होंठ काटक[illegible] ही वह अपने को मूर्च्छित होने से बचा सकी।

...बाद में अलेक्सेई थिगलियों-भरी मगर साफ और नर्म कमीज पहने हुए, जो मिखाईल नाना की थी, पतली-सी धारीदार तोशक पर लेटा था; वह अपने सारे शरीर में ताजगी और ताकत का अहसास कर रहा था। नहाने के बाद, जब चूल्हे के ऊपर छत में बने छेद से भाप निकल गयी, तो वारवारा ने उसे बिलबेरी की पत्तियों की गर्मा-गर्म चाय दी। शक्कर के उन दो ढेलों को, जिन्हें वे लड़के लाये थे, और जिन्हें तोड़कर वारवारा ने भोज वृक्ष की सफेद छाल के टुकड़े पर रखकर उसके सामने रख दिया था, उसने चाय में डालकर चुस्की लेना शुरू किया। और फिर वह सो गया—उस क्षण के बाद से जब उसपर विपत्ति टूट गिरी थी, यह पहली गहरी, स्वप्न-विहिन नींद थी।

ऊंचे स्वरों में होनेवाली बातचीत से उसकी नींद टूट गयी। कोठे में बिल्कुल अंधेरा हो गया था, छिपटी की मशाल मुश्किल से टिमटिमा रही थी। इस धुआं-भरे अंधेरे में उसने मिखाईल नाना की कांपती हुई, रूखी आवाज सुनी.

"वही औरतों जैसी बेवकूफी! कहां है तुम्हारा दिमाग? इस आदमी के मुंह में ग्यारह दिन से एक दाना तक तो गया नहीं है और तुम हो कि इसे इतना सख्त उबाल लायी हो! .. वाह, इतने सख्त उबले अंडों से तो वह मर ही जायेगा!" फिर वह अनुनय के स्वर में कहने लगा "उसे अभी अंडों की जरूरत नहीं है। तुम जानती हो, वसिलीसा उसके लिए क्या चीज जरूरी है? मुर्गी का थोड़ा-सा शोरबा! हां, इसकी जरूरत है उसे! इससे उसमें नयी जिंदगी पड़ जायेगी। सो, अब अगर तुम्हीं अपनी प्यारी... हूं?"

लेकिन उसकी बात उस डरी हुई बूढ़ी औरत की रुद्ध, कर्कश आवाज ने काट दी:

जब कोई फासिस्ट महाते में घुस आता तो वह अटारी में दुबक जाती और बिल्कुल चुप्पी साध लेती, मानों वह उसमें है ही नहीं। लेकिन जब कोई हमारा ही आदमी आता तो वह जरा भी परवाह न करती। यह फर्क कैसे जान जाती थी, भगवान ही जाने! और इस तरह वह बन गयी—सारे गाव में एक, अकेली..."

अलेक्सेई मेरेस्येव सुनी आंखों ही ऊंघ गया; वन-जीवन में वह इसका अभ्यस्त हो गया था। उसकी चुप्पी से मिस्राईल नाना अवश्य चिन्तित हो उठे होंगे। झोंह भर में चक्कर लगाकर और फिर मेज़ के पास बैठ कुछ काम करते हुए उन्होंने फिर उसी बात की चर्चा छेड़ दी, जिसके बारे में वे पहले बता रहे थे।

"उस औरत की निन्दा मत करना, अलेक्सेई! उसे समझने की कोशिश करो, मेरे दोस्त! वह घने जंगल के बीच पुराने भोज वृक्ष की तरह थी, जिसके चारों तरफ साथियों से बचाव मौजूद था लेकिन अब वह कटे हुए जंगल के बीच पुराने, सड़े हुए ठूंठ की तरह है, और उसका अकेला सहारा वह मुर्गी है। तुम बोलते क्यों नहीं? सो रहे हो क्या? अच्छा, सो जाओ, सो जाओ।"

अलेक्सेई सो रहा था और नहीं भी सो रहा था। वह भेड़ की खाल का कोट ओढ़े पड़ा था जिसमें रोटी की खमीरी गंध, पुराने ज़माने के किसानी घर की गंध व्याप्त थी; वह झींगुर की सुखद झनकार सुन रहा था और उसमें उंगली भी हिलाने की इच्छा न थी। उसे लग रहा था, मानो उसके शरीर से हड्डियां निकाल ली गयी हैं और गर्म रुई ठूंस दी गयी है, जिसमें खून बह रहा है और उमड़ रहा है। उसके सूजे हुए अहत पांव जल रहे थे, सख्त दर्द से फटे जा रहे थे, लेकिन उसमें करवट बदलने या हाथ-पैर हिलाने की भी ताब न थी।

अर्द्ध-मूर्च्छित अवस्था में अलेक्सेई को बाहरी दुनिया का अहसास झटकों में होता था, मानों वह वास्तविक जीवन न हो, बल्कि सिनेमा के पर्दे पर किन्हीं असम्बद्ध, और काल्पनिक दृश्यों की झलकियां हों।

वसंत आ गया था। शरणार्थी गांव अब अपनी मुसीबत के सबसे बुरे दिन भोग रहा था। ये निवासी अब अपनी आखिरी सामग्री भी खर्च कर रहे थे, जिसे उन्होंने धरती में गाड़कर किसी तरह बचा लिया था; उसे खोद निकालने के लिए वे रात में चोरी-चोरी अपने ध्वस्त गांव में जाते और इस जंगल में ले आते। बर्फ़ पिघल रही थी। जल्दबाज़ी में

बनायी गयी खोहें 'आंसू बहा रही थी', दिवारो और छतो में पानी बह निकला। इस भूमिगत गाव के पश्चिम मे, ओलेनिनो जगल मे जो आदमी छापेमार लड़ाई चला रहे थे, वे भी यहा आया करते, हालाकि दे अकेले और रात मे ही आ पाते थे, मगर युद्ध की पात आडे आ जाने से अब वे भी कट गये थे। उनका कुछ पता न था। इससे मुसीबतज़दा औरतो की हालत और भी बिगड़ गयी। और अब वसत आ गया था, बर्फ़ पिघल रही थी और उन्हें फसल के लिए जुताई करने और सागभाजी के बगीचे लगाने की फ़िक्र करनी थी।

फ़िक्र में दबी और चिड़चिढ़ी औरतें काम में लगी थी। मिखाईल नाना की खोह में जब-तब जोर-शोर के झगड़े और आपसी तू-तू मैं-मैं चल पड़ती, जिनके दौरान औरतें अपने सभी नये और पुराने, असली और हवाई दुखड़े रोने लगती। कभी-कभी तो अराजकता छा जाती, लेकिन क्रुद्ध औरतो के उस तूफान के बीच, चतुर बूढ़े ने जहा उनकी सामूहिक खेती के बारे में कुछ अमली सुझाव फूक दिये कि सारा झगड़ा फ़ौरन शान्त हो जाता, जैसे, "क्या अब बेहतर यह न होगा कि कोई पुराने गाव चला जाये और देख आये कि बर्फ़ पिघल गयी है या नही?" या, "आजकल क्या बढ़िया हवा चल रही है। बीज को हवा खिला दी जाये तो शायद ठीक रहे। जमीदोज़ खत्ती की सीली ज़मीन से वह नम हो गया है

एक दिन नाना खोह में खुश-खुश तो आये, फिर भी कुछ परेशान नजर आ रहे थे। वे अपने साथ हरी घास की पत्ती लाये थे। उसे बड़े प्यार से उन्होंने अपनी खुरदरी हथेली पर रखा और अलेक्सेई को दिखाया।

"इसे देखो," उन्होंने कहा, "मै अभी-अभी खेत से लौटा हू। धरती साफ़ होती जा रही है और शुक्र है भगवान का, जाड़े की फसल की आशा है। बर्फ़ बहुत गिरी थी। वसत की फसल से हमें एक दाना भी न मिले, तो जाड़े की फसल से हमे रोटी नसीब हो ही जायेगी। मैं जाता हू, औरतो को बता दू। इससे खिल जायेंगे बेचारियो के चहरे!"

खोह के बाहर औरतें चिड़ियों के झुण्ड की तरह चें-चें कर रही थी, खेत से लायी गयी घास की हरी पत्ती देखकर उनके अन्दर नयी आशा जाग गयी थी। शाम को मिखाईल नाना हथेलिया रगड़ते हुए आये और बोले:

"क्या समझते हो, अलेक्सेई, कि मेरे लम्बे-लम्बे बालोवाले मत्रियों

ने क्या फैसला किया है? कुछ बुरा नहीं रहेगा,- मैं कहता हूं। एक टी-
मो निचली जमीन में जुताई करेगी जहां भारी मशक्कत पड़ती है।
लोग गायें जोत लेंगे। यह नहीं कि उनमें कोई बहुत काम बन जायेगा
पूरे झुण्ड में से अब छ ही तो हमारे पास रह गयी हैं! दूसरी टीम ऊ
जमीन में काम करेगी जो तनिक सूखी है। वे लोग खुरपी और फावड़े
खुदाई करेंगे। साग-सब्जी की जमीन को तो हम इसी तरह खोदते हैं
क्यों न? तीसरी टीम पहाड़ी पर चढ़ जायेगी। वहां रेतीली मिट्टी है
उसे हम आलू के लिए तैयार करेंगे। यह काम आसान है। इस काम
हम बच्चों और कमजोर औरतों को लगा देंगे। और जल्दी ही हमें सर
कार से मदद मिल जायेगी। लेकिन अगर हमें न भी मिले, तब भी हम
काम चला लेंगे। हम यह काम अपने बल पर करेंगे, और हम एक चप्पा
जमीन बेकार न जाने देंगे, इतना भरोसा मैं तुम्हें दिला सकता हूं। शुक्र
है हमारे आदमियों का जिन्होंने यहां से फासिस्टों को भगा दिया; अब
हम जिंदा रह सकेंगे। हमारी जाति बड़ी मजबूत है और चाहे जैसी मुसी-
बत टूट पड़े, हम उसका सामना कर सकते हैं।"

नाना को बड़ी देर तक नींद न आयी। वे पुआल के बिस्तरे पर अंग-
ड़ाइयां लेते और करवट बदलते, खांसते, खुजलाते रहते और बड़बड़ाते
जाते, "हे मालिक! हे मेरे भगवान!" वे कई बार उठे, बाल्टी
तक गये, डबुआ गड़गड़ डुबोकर पानी भरा और थके हुए घोड़े के समान,
विह्वलतापूर्वक, बड़े-बड़े घूंट पी गये। आखिरकार उनसे लेटे न रहा
गया। वे उठ बैठे, उन्होंने मशाल जला ली और जाकर अलेक्सेई को
स्पर्श किया जो अर्धचेतन अवस्था में आंखें खोले पड़ा था, और बोले

"तुम सो रहे हो, अलेक्सेई? मैं लेटा था और सोच रहा था। सुनते
हो, मैं लेटा था और सोच रहा था। वहां, उस पुराने गांव में चौराहे
पर एक बलूत का वृक्ष खड़ा हुआ है। तीस वर्ष पहले, पहली बड़ी लड़ाई
के दौरान, जब ज़ार निकोलाई गद्दी पर था, इस पेड़ पर बिजली गिरी
थी, जिससे उसका शीश जल गया था। लेकिन वह मजबूत पेड़ था-ता-
कतवर जड़ें और खूब रस। वह रस भला ऊपर की तरफ़ बहा जाता,
इसलिए उसमें बगल में एक टहनी फूट पड़ी और अब तुम देखो तो कैसा
बढ़िया, हरा-भरा, घुंघराला उसका सिर है... हमारे प्लावनी की भी
यही तासीर है... अगर आसमान साफ़ रहे और जमीन जरखेज हो,
तो देखो कि अपनी सरकार, सोवियत सरकार, के बल पर हम हर चीज

को पढे नही, देखता रहे, जिनकी एक-एक बात उसे कठस्थ है और मैदान मे बैठी हुई छरहरी लडकी के उस फोटो की तरफ भी देखना रह जाये। उमने वर्दी को तरफ हाथ ले जाने का प्रयत्न किया, मगर उसका हाथ असहाय-सा चटाई पर गिर गया। एक बार फिर हर चीज, इन्द्रधनुषी धब्बो मे भरे, मटमैले अधकार मे तैरती नजर आने लगी। आगे चलकर उस अधकार मे, जहा विचित्र मर्मभेदी स्वर गूज रहे थे, उसे दो आवाजें सुनाई दी—एक तो वारवारा की और दुसरी, किसी बूढी महिला की, जो उसको परिचित लगी। वे फुसफुसाकर बातें कर रही थी।

"वह खाना कुछ नही?"

"नही, खा ही नही पाता। कल उसने रोटी का एक टुकडा—बहुत ही छोटा टुकड़ा—चूमा था और उससे उसे कै हो गयी। इसे कुछ खाना-पीना कहते है? वह थोड़ा-सा दूध पी पाता है, इसलिए हम थोडा-सा दे देते है।"

"देख, मैं कुछ शोरवा लायी हूं .. शायद बेचारा थोडा-सा चखना पसद करे।"

"वसिलीसा चाची!" वारवारा विस्मय से वोली, "तो तुमने सचमुच..."

"हा, यह मुर्गी का शोरवा है। तुम इतनी हैरान क्यों हो रही हो? इसमे ग़ैरमामूली बात कुछ नही। उसे हिलाओ, जगा दो जरा, शायद वह इसे चखना पसद करे।"

और इसके पहले कि अलेक्सेई—जो यह वार्ता सुन रहा था—आखे खोल पाता, वारवारा ने उसे जोर से, बेहिचक, झकझोर दिया और उल्लास से चिल्ला पड़ी:

"अलेक्सेई पेत्रोविच! अलेक्सेई पेत्रोविच! उठो तो! वसिलीसा चाची तुम्हारे लिए मुर्गी का शोरबा लायी है! मैं कहती हू उठ तो बैठो!"

दीवार मे गड़ी छिपटी की मशाल चटख उठी और जरा तेजी से जल उठी। धुएं-भरी, कापती हुई लौ की रोशनी मे अलेक्सेई ने एक ठिगनी सी औरत देखी—कमर झुकी हुई, नाक हुक जैसी, झुर्रीदार कर्कश चेहरा। वह मेज पर किसी बड़ी-सी चीज पर से कपड़ा हटाने मे व्यस्त थी पहले उसने बोरे का टुकड़ा हटाया, फिर कोई पुराना-सा ओरगना का कोट हटाया और फिर कागज का पन्ना अलग किया और अन्त मे एक छोटा-सा

लोहे का बर्तन निकल आया, जिसमें उस खोह में मुर्गी के गाढ़े शोरबे की ऐसी लज़ीज़ गंध फैल गयी कि अलेक्सेई को अपने खाली पेट में ऐंठन महसूस होने लगी।

वसिलीसा चाची के झुर्रीदार चेहरे ने अपना सख्त और कर्कश भाव बनाये रखा।

"देखो, तुम्हारे लिए मैं यह लायी हूं," उसने कहा, "क्या करें,

चौड़े कधे और हमेशा की तरह उसके कोट के कालर के बटन खुले हुए। वह अपना टोप हाथ मे लिये था और उसके रेडियोफ़ोन के तार [illegible] लटक रहे थे और वह कुछ "पैकेट और पार्सल" भी पकड़े था। उसके [illegible] मशाल जल रही थी और उसके सुनहले, बारीक कटे, खुरदुरे बाल [illegible] प्रभा की भाति चमक रहे थे।

देगत्यरेन्को के पीछे से मिखाईल नाना का ज़र्द, थका हुआ चेहरा [illegible] रहा था; उनकी आखें उत्तेजना से भरी थी, और उनकी बगल में [illegible] नर्स खड़ी थी—वही नुकीली नाकवाली, नटखट लेनोच्का, जो जगनो [illegible] नवर जैसे कौतूहल के साथ अधेरे मे से झांक रही थी। वह बगल में [illegible] का रेडक्रास थैला दबाये था और विचित्र से फूलों को अपनी छाती से [illegible] लगाये थी।

सभी लोग खामोश खड़े थे। देगत्यरेन्को ने व्यग्रतापूर्वक चारो ओर देखा; स्पष्ट था कि इस अंधेरे में उसे कुछ सूझ नही रहा था। एक-दो बार उसकी नजरें ऐसे ही अन्द्रेई के चेहरे पर से गुजर गयीं; और [illegible] अन्द्रेई भी अभी तक अपने को यह न समझा पाया था कि उसका [illegible] यकायक ही यहा आ सकता है और डर रहा था कि कही यह सब [illegible] सन्निपातिक स्वप्न भर न निकले।

"हे भगवान, तुम्हें वह दिखाई भी नही देता? वह इधर लेटा है," वारवारा ने मेरेस्येव के ऊपर से भेड़ की खाल का कोट उतारते हुए [illegible] घुमाकर कहा।

देगत्यरेन्को ने अन्द्रेई के चेहरे पर पुन. किंकर्तव्यविमूढ़ दृष्टि डाली।

"अन्द्रेई!" मेरेस्येव ने अपने को कुहनी के बल उठाने का प्रयत्न करते हुए क्षीण स्वर से पुकारा।

अन्द्रेई ने मेरेस्येव की ओर विस्मय से देखा और उसके लिए अपनी [illegible] सूरत छिपाना मुश्किल हो गया।

"अन्द्रेई! तुम मुझे पहचान नहीं पाये?" मेरेस्येव फुसफुसाया और उसे महसूस हुआ कि वह सिर से पैर तक कांपने लगा है।

अन्द्रेई एक निमिष और उस जीवित कंकाल को देखता रहा [illegible] [illegible], काली हुई-सी चमड़ी चढ़ी थी, और अपने मित्र की हसमुख [illegible] को पहचानने का प्रयत्न करता रहा, और सिर्फ़ उसकी बड़ी-बड़ी, [illegible] [illegible] [illegible] से उस कद लाल्टकारी और दृढ़संकल्पी मेरेस्येव का [illegible] दृष्टिगोचर हुआ जिससे वह सुपरिचित था। उसने अपने हाथ आगे [illegible]

"कामरेड कप्तान, अब रोगी को अकेला छोड दो, इसी समय!"

जिस गुलदस्ते के लिए एक दिन पहले विमान क्षेत्रीय केन्द्र गया था, और जो इस समय फिजूल साबित हो रहा था, उसे मेज पर रखकर उसने जीन का रेडक्रास थैला खोला और बाकायदा रोगी की परीक्षा करने लगी। उसने कुशलतापूर्वक अपनी ठूंठ-सी उंगलियों से अलेक्सेई के पैर टटोले और पूछा:

"दर्द होता है? ऐसा? और ऐसा?"

अब पहली बार अलेक्सेई ने अपने पैरों पर भरपूर नजर डाली। पैर बुरी तरह सूज गये थे और लगभग काले पड़ गये थे। तनिक स्पर्श भर से उसके सारे शरीर मे दर्द बिजली की तरह दौड़ जाता था। लेकिन स्पष्ट था कि लेनोच्का को जो बात जरा भी अच्छी न लगी, वह यह थी कि पैरों की उगलिया बिल्कुल काली पड़ गयी थी और बिल्कुल सुन्न हो गयी थी।

मिखाईल नाना और देगत्यरेन्को मेज के पास बैठ गये। इस अवसर की खुशी मे हवाबाज की बोतल से चोरी-चोरी दो घूट पीकर वे जोरो से गपशप मे लग गये थे। अपनी कापती हुई, ऊची आवाज मे मिखाईल नाना बताने लगे कि अलेक्सेई कैसे मिला—और जाहिर था कि वे इस बात को पहली बार नही बता रहे थे।

"हा तो, हमारे बच्चो ने उसे कटे हुए जंगल मे पड़ा पाया। जर्मनों ने अपनी बाड़बन्दी के लिए लट्ठ गिराये थे और इन बच्चो की मां ने, यानी मेरी बेटी ने उन्हें ईंधन जमा करने के लिए भेजा था। इस तरह वह मिल गया... 'आहा! उधर वह अजीब-सी चीज क्या पड़ी हुई है?' पहले तो उन्होंने सोचा कि वह घायल भालू है जो लुढ़कता फिर रहा है और वे फौरन सिर पर पैर रखकर भागे। लेकिन कौतूहल की जीत हुई और वे लौट पड़े, 'यह कैसा भालू है? यह लुढ़कता क्यों फिर रहा है? अच्छा, इसमें भी कोई मजेदार राज है?" वे बराबर उसे देखते रहे और उन्होंने इस चीज को बराबर लुढ़कते जाते और रेंगते देखा।"

"'लुढ़कता लुढ़कता' से क्या मतलब है?" देगत्यरेन्को ने [illegible] पूछा और मिखाईल नाना के सामने सिगरेट केस बढ़ा दिया। "आप पीते है?"

इन्होंने सिगरेट केस भी, अपनी जेब से अखबार का एक टुकड़ा

'हवाई जहाज़', 'हवाई जहाज़', और कुछ और भी बात थे और [illegible]
मेरेस्येव का नाम भी लिया था, तुम्हारे जैसा कोई इस नाम को जानते हो?
क्या? अच्छा तो उसकी जानकारी है। खुश रहो तुम जैसे लोग! [illegible]
तुमने, मैं क्या कहूँ? ले हवाबाज़!"

मगर देग्त्यारेन्को बड़ी खुश हो रहा था। वह इस व्यक्ति, इस [illegible]
की के लिए थे, जो मेरेस्येव के बारे में [illegible] बताता [illegible]
था. उस व्यक्ति की कल्पना कर रहा था जब वह सुन्न पैरों व
टाँगों से खिसकती हुई बर्फ़ के ऊपर, जंगलों और दलदलों को रेंगता
करता फिर रहा था, लुढ़कता फिर रहा था ताकि शत्रु से बच [illegible]
अपने लोगों तक पहुँच जाये। [illegible] के [illegible] की हैसियत से
अपने स्वयं के अनुभव से उसके खतरों से परिचित हो चुका था।
यह युद्ध में दूर पड़ता तो मौत के बारे में कभी सोचता ही नहीं, [illegible]
आनन्दमय स्फूर्ति ही अनुभव होती। मगर जंगल में बिल्कुल अकेले रह
कोई आदमी ऐसी बात कर दिखाये. .

"तुम्हें यह कब मिला था?"

"कब?" बूढ़े ने अपने होंठ हिलाये, मुँह केस में से एक और सिग
रेट ली और पहले की तरह कागज़ मोड़कर एक और सिगरेट बनाने लगा
"अच्छा तो, वह कब की बात है? हां, ठीक है। लेंट के दिनों का
वह पहला शनिवार था, यानी ठीक एक हफ़्ते पहले।"

देग्त्यारेन्को ने मन-ही-मन तारीखें गिनीं और हिसाब लगाया कि अले-
क्सेई मेरेस्येव अठारह दिन तक रेंगता रहा। कोई घायल आदमी इतने
वक़्त तक और वह भी बिना भोजन घिसटता रहे—यह बिल्कुल कल्पना-
तीत प्रतीत होता था!

"अच्छा, दादा, तुम्हें बहुत-बहुत धन्यवाद!" हवाबाज़ ने कसकर
बूढ़े का आलिंगन किया और अपने सीने से चिपटा लिया, "धन्यवाद,
भाई।"

"ऐसा न कहो। मुझे धन्यवाद देने की कौनसी बात है। कहता है
'धन्यवाद!' मैं क्या हूँ? कोई ग़ैर हूँ, विदेशी हूँ, क्या हूँ? आहा!"
और फिर वह क्रोधपूर्वक अपनी बहू पर चिल्ला उठा, जो अपनी हथेली
पर कपोल रखे किसी दुश्चिन्ता में लीन खड़ी थी... "फ़र्श पर से यह
सामान समेट लो। देखो तो कैसी बेशकीमत चीज़ें ज़मीन पर बिखेर दी
हैं! .. कहता है, 'धन्यवाद!'"

'हमारे बहू', 'हमारे बहू', और कुछ और भी कहा वे और [illegible] पोस्तर का नाम भी लिया था। मुझसे पूछा कोई इस नाम को जानते हो? जाहिर यह उसकी [illegible] है। मुझे तो [illegible] सुनते, ऐसे क्या कहा? [illegible]!"

मगर देवन्येन्को नहीं सुन रहा था। वह इस व्यक्ति, इस बूढ़े [illegible] भी के विषय में, जो रेजिमेंट से बहुत [illegible] गहरा सम्बद्ध हो था, उस स्थिति की कल्पना कर रहा था जब वह खुद दोनों [illegible] दांतों से सिसकती हुई बर्फ के ऊपर, जंगलों और दलदलों को रेंगकर पार करता फिर रहा था, भटकता फिर रहा था ताकि शत्रु से बच जाये और अपने लोगों तक पहुंच जाये। बहादुर विमान के चालक की हैसियत से वह अपने स्वयं के अनुभव से उसके खतरों से परिचित हो चुका था। जब वह युद्ध में टूट पड़ता तो मौत के बारे में कभी सोचता ही नहीं, उसे आनन्दमय स्फूर्ति ही अनुभव होती। मगर जंगल में बिल्कुल अकेले रहकर कोई आदमी ऐसी बात कर दिखाये. .

"तुम्हें यह कब मिला था?"

"कब?" बूढ़े ने अपने होंठ हिलाये, सूखे केस में से एक और सिगरेट ली और पहले की तरह कागज मोड़कर एक और सिगरेट बनाने लगा, "अच्छा तो, यह कब की बात है? हां, ठीक है। लेंट के दिनों का वह पहला शनिवार था, यानी ठीक एक हफ्ते पहले।"

देवन्येन्को ने मन-ही-मन तारीखें गिनी और हिसाब लगाया कि इसे कमेई मेरेस्येव अठारह दिन तक रेंगता रहा। कोई घायल आदमी इतने वक़्त तक और वह भी बिना भोजन घिसटता रहे—यह बिल्कुल कल्पनातीत प्रतीत होता था!

"अच्छा, दादा, तुम्हें बहुत-बहुत धन्यवाद!" हवाबाज ने कसकर बूढ़े का आलिंगन किया और अपने सीने से चिपटा लिया, "धन्यवाद, भाई।"

"ऐसा न कहो। मुझे धन्यवाद देने की कौनसी बात है। कहता है 'धन्यवाद!' मैं क्या हूं? कोई गैर हूं, विदेशी हूं, क्या हूं? आह!" और फिर वह रोषपूर्वक अपनी बहू पर चिल्ला उठा, जो अपनी हथेली पर कपोल रखे किसी दुश्चिन्ता में लीन खड़ी थी... "फ़र्श पर से यह सामान समेट लो। देखो तो कैसी बेशकीमत चीज़ें जमीन पर बिखेर दी हैं!.. कहता है, 'धन्यवाद!'"

बूढ़े की सहायता से उन्होंने कम्बलों में लिपटे अलेक्सेई को सावधानी से स्ट्रेचर पर रखा। वारवारा ने उसकी चीज़ें समेटी और एक बण्डल में बांध दी।

वारवारा बंडल के अंदर जब जर्मन सिपाही की कटार बांधने लगी तो उसे रोकते हुए अलेक्सेई ने पुकारा, "नाना!" मिखाइल मिखाइलोविच नाना अक्सर उस कटार की कौतूहलपूर्वक परीक्षा किया करते, उसे साफ़ करते, पैना किया करते और अपने अंगूठे पर फेरकर उसकी धार आज़माया करते, "इसे मेरी तरफ़ से भेंट के रूप में लीजिये।"

"खूब, धन्यवाद अलेक्सेई! धन्यवाद! यह बड़े बढ़िया किस्म का हथियार है। और देखो! इस पर कुछ लिखा है, अपनी भाषा में नहीं," उन्होंने देगत्यरेन्को को कटार दिखाते हुए कहा। देगत्यरेन्को ने फल पर जर्मन में खुदे हुए अक्षर पढ़े और अनुवाद कर दिया, "सर्वस्व जर्मनी की सेवा में।"

"सर्वस्व जर्मनी की सेवा में," अलेक्सेई ने दोहराया और उसे याद आ गया कि यह कटार कैसे उसके हाथ लगी थी।

स्ट्रेचर के एक सिरे का हैंडिल पकड़ते हुए देगत्यरेन्को चिल्लाया, "अच्छा तो बुढ़ऊ, उठा लो उसे, उठा लो।"

स्ट्रेचर खूब उठा और इतनी कठिनाई से उसे मांद के तंग दरवाज़े से निकाला जा सका कि दीवारों से मिट्टी झड़ गयी।

बाड़े में जितने भी लोग उमड़ आये थे वे सब इस असहाय व्यक्ति को विदाई देने के लिए बाहर निकल गये। अन्दर रह गयी सिर्फ़ वारवारा। उसने हौले हौले बिछावन को ठीक रख दिया और धारीदार गद्दे के पास बैठ गयी जिस पर अभी तक उस मानव-शरीर का नक्श बाकी था जो वहाँ लेटा हुआ था, और उसको थपथपाने लगी। उसकी दृष्टि [illegible] पर [illegible] जो [illegible] में वहीं छूट गया था। उसमें [illegible] की कई [illegible] थीं — [illegible] और [illegible] — इस [illegible] की ही तरह, जिसे [illegible] [illegible] हुए [illegible] सब [illegible] में गुज़ार दिया था। युवती ने अपनी [illegible] में [illegible] उठाया, और [illegible] से उन्हें चूम लिया। [illegible] [illegible] इतनी [illegible] थी कि [illegible] और [illegible] के वातावरण में उसका [illegible] [illegible] था। फिर वह [illegible] पर [illegible] आकर गिर गयी और [illegible] में फूट पड़ी।

इन पेड़ों के नीचे, जहां गर्मी और धन्ताप से लू की आंखें उं-देख न सकतीं, एक ऐसे स्थान पर उनकी कब्रें थीं, जिस जगह पर घास बहुत दिनों से सैकड़ों पैरों द्वारा कुचली जा रही थी। सदियों पुराने देवदार वृक्षों की शाखाओं पर बच्चों के झूले झूल रहे थे, छोटे मनचलों के ठूंठों पर बटन और पड़े हवा खा रहे थे, और एक प्राचीन देवदार वृक्ष के नीचे, जिसके तने पर मखमली काई की झाड़ियां सरक रही थीं उसके, विशाल तने की जड़ पर, जहां जगत के नियमों के अनुसार किसी बूढ़े जानवर को लेटे होना चाहिए था, जमीन पर एक चिथड़ी गुड़िया पड़ी हुई थी जिसके फटे मुंह पर काली पेंसिल से मासूम चेहरा-मुहरा बना हुआ था।

भीड़ आगे-आगे स्ट्रेचर लिए हुए काई की कालीन जैसी 'सड़क' पर धीरे-धीरे बढ़ रही थी।

अपने को खुली हवा में पाकर अलेक्सेई ने पहले तो स्वप्नपूर्ण पार्थिव उल्लास का उफान अनुभव किया, किन्तु उसके बाद मधुर, मूक वेदना ने उसका स्थान ले लिया।

लेनोच्का ने अपने छोटे रूमाल से उसके चेहरे पर से आंसू पोंछ दिये और अपने ही ढंग से इन आंसुओं का अर्थ लगाकर उसने स्ट्रेचर-वाहकों से तनिक आहिस्ते चलने का अनुरोध किया।

"नहीं, नहीं! और तेज चलो!" मेरेस्येव ने उन्हें शीघ्रता करने के लिए कहा।

उसे तो पहले से ही यह लग रहा था कि वे लोग बड़े धीरे-धीरे चल रहे हैं। उसे आशंका होने लगी कि वह यहां से निकल नहीं पायेगा, वह हवाई जहाज जिसे मास्को से उसके लिए भेजा गया है, उसका इंतजार किये बिना ही उड़ जायेगा, और वह उस अस्पताल तक नहीं पहुंच पायेगा जहां उसे जीवनदान प्राप्त करने की आशा थी। स्ट्रेचर-वाहकों की तेज चाल के कारण उसे जो दर्द हुआ, उससे वह हल्के-से कराह उठा, फिर भी दुहराता रहा: "और तेज भाई, और तेज!" वह उन्हें और तेज चलने के लिए ही कहता रहा, हालांकि वह मिखाईल नाना की हांफनी सुन रहा था और उन्हें फिसलते, ठोकर खाते देख चुका था। स्ट्रेचर पर बूढ़े की जगह दो औरतों ने संभाल ली, बूढ़े ने स्ट्रेचर की बगल में ही लेनोच्का के दूसरी ओर चलना जारी रखा। पसीने से गीले गंजे सिर, सुर्ख चेहरे और झुर्रीदार गर्दन को अपनी फ़ौजी टोपी से पोंछते हुए वह बड़े संतोषपूर्वक बड़बड़ाता रहा:

देख रहा था, न सुन रहा था। पेट्रोल और तेल की सुपरिचित गंध और हवाई उड़ान के आनन्द की अनुभूति के कारण वह चेतना खो बैठा और उसे होश तभी आया जब हवाई अड्डे पर पहुंचने के बाद उसके स्ट्रेचर को एक दूसरे तेज रफ़्तारवाले रेडग्रास विमान में ले जाने के लिए उतारा जा रहा था जो मास्को से वहां पहुंच गया था।

१६

जब वह अपने हवाई अड्डे पर पहुंचा तो वहां पूरी शक्ति से उड़ानों का काम चल रहा था—जैसा कि उस वसंत के दिनों में रोज ही होता था।

इंजनों की गड़गड़ाहट एक क्षण के लिए भी न रुकती थी। पेट्रोल-तेल लेने के लिए आसमान से एक स्क्वाड्रन उतरता तो दूसरा उसकी जगह आसमान में पहुंच जाता और फिर तीसरा उसकी जगह ले लेता। विमान-चालकों से लेकर तेल की टंकियों के ड्राइवर और स्टोर-कीपर तक तब तक काम करते जब तक वे थककर चूर न हो जाते। चीफ़ स्टाफ़-अफ़सर की आवाज़ बैठ गयी थी और अब वह फटे-फटे, फुसफुसाहट के स्वर में ही बात कह पाता।

लेकिन इतनी जबर्दस्त व्यस्तता और आम तनाव के बावजूद हर व्यक्ति बड़ी उत्सुकता के साथ मेरेस्येव के आगमन की प्रतीक्षा कर रहा था।

विमान उतारकर उन्हें विश्राम-स्थल तक ले जाने के पहले ही विमान-चालक अपने इंजनों की गड़गड़ाहट से भी ऊंचे स्वर में चिल्लाकर मेकेनिकों से पूछते, "क्या अभी वह नहीं आया?"

जब कोई तेलवाहक गाड़ी जमीन में गड़ी तेल-टंकियों के पास आकर रुकती तो 'तेल-मालिक' पूछ बैठते, "कुछ खबर है उसके बारे में?"

और हर आदमी कानों पर जोर लगाकर सुनने लगता कि अनन्त पार से रेजीमेंट के एंबुलेंस वायुयान की सुपरिचित आवाज़ आ रही है या नहीं।

जब अलेक्सेई को होश आया तो वह एक स्प्रिंगदार झूलते हुए स्ट्रेचर पर लेटा था। उसने अपने चारों ओर सुपरिचित चेहरों का घेरा देखा। उसने आंखें खोल लीं। भीड़ में हर्ष-ध्वनि गूंज उठी। ठीक स्ट्रेचर की बगल में उसे रेजीमेंट कमांडर का युवा, भावशून्य चेहरा दिखाई दिया जिस पर अर्थपूर्ण मुस्कान अंकित थी। उसकी बगल उसने चीफ़ स्टाफ़ अफ़सर

मैदान पार करके उसे सावधानीपूर्वक एंबुलेंस वायुयान तक ले जाया जा रहा था जो घनाच्छादित भोज वृक्षों के जंगल के किनारे छिपा खड़ा था। उधर मैकेनिक लोग उसके ठंडे इंजन को रबर के आघात-रक्षक सहारे स्टार्ट करते नज़र आ रहे थे।

मेरेस्येव ने रेजीमेंट के कमांडर की ओर मुखातिब होकर, जितने भी उच्च स्वर और दृढ़ता के साथ सम्भव हो सकता था, यकायक कहा: "कामरेड मेजर!"

कमांडर अपनी सौम्य और गूढ़ार्थ मुसकान के साथ अलेक्सेई के निकट झुक आया।

"कामरेड मेजर... मुझे इजाजत दीजिये कि मैं मास्को न जाऊं बल्कि यहीं रहूं, आप लोगों के साथ..."

कमांडर ने अपना टोप उतार दिया, जिससे सुनने में बाधा पड़ रही थी।

"मैं मास्को नहीं जाना चाहता। मैं यहीं रहना चाहता हूं, यहीं मेडिकल यूनिट में।"

मेजर ने रोएंदार दस्ताने उतार डाले, कम्बल के नीचे हाथ डालकर अलेक्सेई का हाथ टटोला और उसे दबाते हुए बोला:

"अजीब छोकरे हो! तुम्हें उचित गम्भीर चिकित्सा की आवश्यकता है।"

अलेक्सेई ने सिर हिला दिया। अब उसे आनन्द और आराम महसूस हो रहा था। उसे अब न तो वह तजुर्बा भयंकर महसूस हो रहा था, जिससे उसे गुज़रना पड़ा था, और न अपने पैरों की पीड़ा ही।

"क्या कह रहा है?" चीफ स्टाफ-अफसर ने अपनी फटी आवाज़ में पूछा।

"वह यहीं हमारे साथ रहना चाहता है," कमांडर ने मुसकराते हुए उत्तर दिया।

और इस क्षण उसकी मुसकान, हमेशा की तरह गूढ़ नहीं, मैत्रीपूर्ण और उत्तम थी।

"मूर्ख! रोमांटिक!" चीफ स्टाफ-अफसर ने सिसकारी भरी। "वे लोग खुद सेनापति के आदेशानुसार मास्को से इसके लिए वायुयान भेजकर इसका सम्मान कर रहे हैं और यह है कि... देखा इसे?.."

मेरेस्येव उत्तर देना चाहता था और कहना चाहता था कि वह ऐसा

विमान की गद्दी पर बैठा हुआ शत्रु से भिड़ने के लिए आता है।

तंग खाई के अंदर स्ट्रेचर नहीं आ रहा था। यूरा और मरुसिया च
ती थीं कि उसको बाहों में उठाकर अन्दर ले जायें, लेकिन अलेक्सेई
विरोध किया और मांग की कि जंगल के किनारे पर ही एक बड़े
वृक्ष के नीचे स्ट्रेचर रख दिया जाये। यहां लेटे-लेटे उसने सारी घट
देखीं जो इतनी तेज़ी से घट गयीं जैसे भारी सपने में हुआ करती है।
ज़मीन से आकाश-युद्ध देखने का अवसर हवाबाज़ों को कम ही मिलता है।
मेरेस्येव ने, जो युद्ध के पहले ही दिन से वायुसेना में लड़ रहा था,
ज़मीन से आकाश-युद्ध कभी न देखा था। उसे आश्चर्य हो रहा था कि
जहां वह लेटा था, वहां से आकाश-युद्ध कितना धीमा और हानि-रहित,
इन पुराने और चपटी नाकवाले लड़ाकू-वायुयानों की गति कितनी धीमी और
उनकी मशीनगनों की खटपट कितनी मासूम मालूम होती है, उसे कुछ
घरेलू चीज़ों की याद आ गयी—जैसे सिलाई की मशीन खड़खड़ाती है,
या कपड़ा जब फाड़ा जाता है तो उसमें चर्राहट होती है।

सारसों की पांत जैसी कतार में बारह जर्मन बमबारों ने हवाई अड्डे
का चक्कर लगाया और आसमान में ऊंचे चढ़ आये सूरज की चमकीली
किरणों के बीच गायब हो गये। वहां से, उन बादलों के पीछे से, जिनके
किनारे धूप से इतने चकाचौंध हो रहे थे कि उनकी तरफ देखने से आंखें
दुखने लगती थीं, विमानों के इंजनों की हल्की-सी थरथराहट भौंरों की
गुंजार की तरह सुनाई दे रही थी। जंगल में विमानभेदी तोपें पहले से
भी अधिक क्रुद्ध होकर गरज और गुर्रा रही थीं। फटनेवाले गोलों से धुआं
डैंडेलियन के रोएंदार बीज की तरह आकाश में उतराने लगता था। लेकिन
किसी लड़ाकू-विमान के पंखों की विरली चमक के अलावा और कुछ नहीं
दिखाई दे रहा था।

थोड़ी-थोड़ी देर बाद भौंरों का गुंजार कपड़े चीरने की आवाज़ में बदल
जाता था: र-रं-रं-रिप, र-रं-रं-रिप, र-रं-रं-रिप! सूर्य की किरणों की
चकाचौंध के बीच घमासान हवाई युद्ध चल रहा था, लेकिन उसमें भाग
लेनेवाले को वह जैसा दिखाई देता है, उससे वह इतना भिन्न था और
नीचे से इतना तुच्छ और नीरस जान पड़ता था कि उसे देखकर अलेक्सेई
को तनिक-सा भी रोमांच न महसूस हुआ।

यहां तक कि जब आसमान में अधिकाधिक तेज़ आवाज़ के साथ मर्मवे-

"माफ़ी मांगने से अब कोई फ़ायदा नहीं," यूरा बड़बड़ाया, उसे शर्म महसूस हो रही थी कि अपने मित्र की रक्षा के लिए वह स्वयं नहीं मौसम पर्यवेक्षण केन्द्र की यह छोकरी दौड़ पड़ी।

बड़बड़ाते हुए उसने अपने कानों में धुन आती, अलेक्सेई कुतूहल और आश्चर्य से गिर पड़े भोज वृक्ष को देखने लगा, जिसका तना पारदर्शी रस से बुरी तरह भीग रहा था। घायल वृक्ष का रस, धूप में झिलमिलाता, धारीदार छाल पर बह रहा था और धरती पर टपक रहा था–स्वच्छ और पारदर्शी आंसुओं की तरह।

"देखो! पेड़ रो रहा है।" अनोच्का बोली, जो इस खतरे के बीच भी अपना पुरजोश कौतूहल बनाये हुए थी।

"तुम भी रोओगी!" यूरा ने उदास भाव से जवाब दिया। "और, तमाशा खत्म हुआ। चलो चलें। एम्बुलेंस विमान को कोई क्षति तो नहीं पहुंची है, क्यों?"

वृक्ष के खंडित तने को, उससे ज़मीन पर टपकती हुई चमचमाती पारदर्शी रस की बूंदों को और अपने से काफ़ी बड़ा ग्रेटकोट पहने, चपटी नाकवाली 'मौसमी सार्जेन्ट' को, जिसका नाम भी अलेक्सेई को न मालूम था, निहारता वह बोल उठा: "वसन्त आ गया!"

बमों से बने गड्ढों के बीच, जिनसे अभी भी धुआं उठ रहा था और जिनमें पिघलती हुई बर्फ़ से पानी झरकर भर रहा था, वे तीनों–यूरा आगे से और दोनों लड़कियां पीछे से–अलेक्सेई को उठाकर टेढ़ा-मेढ़ा रास्ता बनाते हवाई जहाज़ की तरफ़ बढ़ रहे थे, तब उसने उन नन्हें-नन्हें सशक्त हाथों पर कौतूहलपूर्वक कनखियों से दृष्टि डाली जो ग्रेटकोट की खुरदरी आस्तीनों से निकल आये थे और स्ट्रेचर की मूठ कसकर पकड़े थे। इस लड़की को क्या हो गया था? या अलेक्सेई को भयभीत अवस्था में इसके मुंह से वे शब्द सुनने का भ्रम हो गया था?

उस दिन, जो अलेक्सेई मेरेस्येव के लिए बड़ा शुभ दिन था, उसने एक और घटना देखी। वह रुपहला हवाई जहाज़, जिसके पंखों और डैनों पर रेडक्रास के निशान बने थे और जिसके चारों ओर विमान-मेकेनिक सिर हिलाता चक्कर लगा रहा था और देख रहा था कि बम के किसी विस्फोट या टुकड़े से उसे कोई नुकसान तो नहीं पहुंचा है–यह सब अलेक्सेई को दृष्टिगोचर होने लगा था, तभी एक के बाद एक लड़ाकू-विमान वापस लौटकर ज़मीन पर उतरने लगे। वे जंगल के ऊपर से झपटे, हवा-

जत है। शायद 'नम्बर नौ' को जमीन से इस तरह का हुक्म मिल भी चुका था, फिर भी वह हठपूर्वक चक्कर लगाता जा रहा था।

यूरा कभी हवाई जहाज की ओर और कभी घड़ी की ओर देखता रहा। हर बार जब उसे लगता कि इंजन धीमा पड़ गया है, तो नीचे झुक जाता और सिर दूसरी तरफ़ मोड़ लेता, "क्या वह हवाई जहाज बचाने की बात सोच रहा है?" हर आदमी मन-ही-मन चिल्ला रहा था: "कूद पड़ो! कूद पड़ो, भाई!"

एक लड़ाकू जहाज, जिस पर नम्बर "एक" लिखा था, ह अड्डे से बाहर निकला, झपट्टा मारकर हवा में उड़ गया और एक चा लगाकर, होशियारी से घायल "नम्बर नौ" के पास पहुंच गया। ि धैर्य और कुशलता से वह जहाज चलाया जा रहा था, उससे अनेक भांप गया कि उसे रेजीमेंटल कमांडर ख़ुद चला रहा है। स्पष्ट था, समझकर कि कुकूश्किन का रेडियो-सेट बिगड़ गया है या चालक का हे दुरुस्त नहीं है, वह उसकी सहायता के लिए दौड़ पड़ा था। अपने पं से इशारा करते हुए, "जैसा मैं करूं, वैसा करो," वह उसकी बग में जा पहुंचा और फिर ऊंचा उठ गया। उसने कुकूश्किन को आदेश दि कि वह निकल आये और कूद पड़े। लेकिन उसी क्षण कुकूश्किन ने स्पी कम कर दी और उतरने की तैयारी करने लगा। टूटे पंखवाला उसका विमान ठीक अलेक्सेई के सिर के ऊपर से झपट्टा मारकर निकला और शीघ्रता से धरती के नजदीक पहुंच गया। ठीक धरती की सतह पर पहुंच-कर वह यकायक बायीं ओर झुक गया और अपनी सही-सलामत 'टांग' के बल उतर आया; कुछ दूर एक ही पहिए पर दौड़ते हुए, उसने चाल हल्की की, दाहिनी ओर झोंका खाया, अपने अशक्त पंख के बल जमीन पकड़कर अपनी धुरी पर चक्कर काटने लगा, जिससे बर्फ़ के बादल उठने लगे।

आखिरी क्षण में वह ग़ायब हो गया। जब बर्फ़ के बादल बिखर गये तो क्षत-विक्षत झुके हुए वायुयान के पास एक स्याह-सी चीज पड़ी दिखाई दी। इस स्याह वस्तु की ओर लोग दौड़ पड़े और भड़ी बजाती हुई एम्बुलेंस मोटर भी उसी तरफ़ भागी।

"उसने हवाई जहाज बचा लिया! कितना होशियार आदमी है कुकूश्किन भी! यह कला उसने कब सीखी?" मेरेस्येव ने स्ट्रेचर पर लेटे-लेटे सोचा और अपने साथी से ईर्ष्या अनुभव की।

भाई दिये थे। वह भ्रम न था, और इस विश्वास के बाद अब वह अ-सम बताने का साहस न कर सका।

"ये मेरी विवाहित बहिन ने भेजे हैं। उसका कुलनाम अब दूसरा है" उसने उत्तर दिया और अपने आपसे घृणा अनुभव कर उठा।

इंजन की घरघराहट के बीच उसे कुछ स्वर सुनाई दिये। केबिन का दरवाजा खुला और एक अजनबी सर्जन ने वायुयान में पैर रखा, जो अपने ग्रेटकोट के ऊपर एक सफ़ेद लबादा पहने था।

"एक रोगी तो पहले से ही आ गया है? ठीक!" उसने मेकेनिक की ओर देखकर कहा। 'दूसरे को भी अन्दर ले आओ! एक मिनट में ही हम रवाना हो जायेंगे। और मैडम, आप यहाँ क्या कर रही हैं?" उसने भाव से घूमने वाले चश्मे के भीतर से "मौसमी सार्जेन्ट" की ओर घूरकर पूछा, जो यूरा के पीछे छिपने का प्रयत्न कर रही थी। "कृपया जाइये, हम मिनट भर में ही चल देंगे। ए, स्ट्रेचर अन्दर लगाओ!"

"लिखना, भगवान के लिए मुझे चिट्ठी लिखना, मैं इन्तज़ार करूँगी!" अलेक्सेई ने उस लड़की की फुसफुसाहट सुनी।

यूरा की सहायता से सर्जन ने हवाई जहाज में एक और स्ट्रेचर चढ़ाया जिस पर कोई हल्के-से कराह रहा था। उसे जब लगाया जा रहा था, तब वह चादर खिसक पड़ी जिससे वह ढका था और मेरेस्येव ने कुकुश्किन का चेहरा देखा—दर्द से ऐंठा हुआ। सर्जन ने हाथ मले, केबिन में चारों तरफ़ नज़र डाली और मेरेस्येव का पेट थपथपाते हुए बोला:

"बढ़िया! बहुत बढ़िया! तुम्हारा साथ देने के लिए एक साथी यात्री है, नौजवान! क्या? और अब जिन लोगों को इसपर सफ़र नहीं करना है, वे उतर जायें, कृपया जल्दी! अच्छा तो सार्जेन्टी बिल्लेवाली परी चली गयी, एह? ठीक! अब चलो!.."

यूरा को उतरने की मंशा न दिखाई दे रही थी। आख़िरकार सर्जन ने उसे ज़बर्दस्ती बाहर किया। दरवाज़ा बंद कर दिया गया, विमान काँपा, चला, फुदका और फिर शान्त भाव से, स्वाभाविक गति से इंजन की नियमित धड़कनों के साथ उड़ चला। सर्जन दीवार के सहारे मेरेस्येव के पास गया।

"कैसे हो?" उसने पूछा। "लाओ तुम्हारी नाड़ी देखूँ।" उसने कौतूहल से मेरेस्येव की ओर देखा, सिर हिलाया और बड़बड़ाया: "ठीक! मज़बूत आदमी हो।" और फिर मेरेस्येव से बोला: "तुम्हारे दोस्त लोग

कामों की ऐसी कहानियाँ सुनाते हैं कि जो बिल्कुल अद्भुत
ा की कहानी की तरह।"

सीट पर बैठ गया, उसने अपने को आराम से जमाया,
हो गया और ऊंघने लगा। स्पष्ट था कि ढलती उम्रवाला
व्यक्ति थककर निर्जीव हो गया है।

इन की कहानी की तरह," मेरेस्येव ने सोचा और सुदूर
स्मृतियाँ, उस व्यक्ति की स्मृतियाँ, जो हिम जड़ित पैरों से
में रेंग रहा था और एक बीमार और भूखा भेड़िया उसका
रहा था, उसके मस्तिष्क पर छा गयीं। वह इंजनों की लगातार
उनींदा हो गया; हर चीज़ तैरने लगी, अपनी रूपरेखा खोने
और अलेक्सेई के मस्तिष्क के सामने से जो अंतिम दृश्य गुज़रा,
क अब युद्ध नहीं, बमबारी नहीं, पैरों में अनवरत पीड़ा नहीं,
े और भागता हुआ कोई वायुयान नहीं, और यह सब घटनाएँ
द्भुत पुस्तक का अध्याय मात्र थी जिसे उसने सुदूर कमीशिन
अपने बचपन में पढ़ा था।

[illegible] सर्जनों और नर्स-परिचारिकाओं की भीड़ के साथ वार्डों का चक्कर ल
गा कर हर नये मरीज के केस-पत्रों का निरीक्षण करते और मरीज जवा
[illegible] देते।

इन मारकाट दिनों में मुझे अस्पताल के अन्दर का भी काफी कम ध्
यान रहता था मगर वे फिर भी सारे अस्पताल और भीड़ का [illegible]
इस अव्यवस्थित संस्थान का निरीक्षण करने के लिए समय निकाल ही ले
कोई कमजोरी देखकर जब वे अस्पताल के किसी कर्मचारी को झिड़
और वह काम वे हमेशा बड़े प्रभाव ढंग से, बहुत धर्मोपदेश, 'अस्प
के स्थान पर ही करते—तो वे हमेशा जोर देते कि इस युद्धकालीन, अ
मनोर, खतरनाक-भरा हालातों में भी इस चिकित्सालय को एक घड़ी की
के रूप में काम जारी रखना चाहिए—सिपाहियों और रोगियों को यही उत्तम
जवाब होगा, ये युद्धकालीन कठिनाइयों के नाम पर कोई बहाना न सु
और कहें कि आरामतलब और कामचोर यहाँ से तशरीफ ले जायें, मु
खुशी तो यही होगी कि आज जब कठिनाइयाँ हैं, तब इस स्थान पर सु
व्यवस्था हो। उन्होंने घड़ी की इतनी पाबंदी के साथ वार्डों का चक्कर
लगाने के लिए माना जाने लगा कि पहले की ही तरह परिचारिकाएँ उनके
आगमन को देखकर वार्ड की घड़ियाँ मिला लेती। हवाई हमलों में भी इस
व्यक्ति की पाबन्दी नहीं टूटी। यही कारण था कि कल्पनातीत कठिनाइयों
के बीच भी सारे कर्मचारी चमत्कार दिखाते रहे और युद्धपूर्व जैसी व्यव
स्था सुरक्षित रखते रहे।

एक सुबह वार्ड में चक्कर लगाते समय प्रधान ने—हम उन्हें वसीली वसील्येविच कहेंगे—दूसरी मंजिल पर सीढ़ियों के पास दो चारपाइयाँ एक दूसरे के साथ पड़ी देखीं।

"यह क्या नुमाइश है?" वे चिल्ला पड़े और अपनी घनी भौंहों के नीचे से हाउस सर्जन की तरफ उन्होंने ऐसी भयावनी दृष्टि से देखा कि वह लम्बे कद का, गोल कन्धोंवाला व्यक्ति—जो अब जवान न रह गया था, मगर देखने में रोबदार था—स्कूली लड़के की तरह सीधा 'अटेंशन' खड़ा रह गया और बोला

"कल रात ही आये हैं... ये हवाबाज। इस व्यक्ति की जाँघ और दाहिने हाथ की हड्डियाँ टूट गयी हैं। स्थिति सामान्य है। लेकिन इस व्यक्ति की"—उसने अनिश्चित आयु की दुबली-पतली आकृति की ओर इशारा किया जो आँखें बंद किये निस्पन्द पड़ी थी—"हालत बहुत खराब है। पैरों

निगाह डाली और हवाबाज़ की बड़ी-बड़ी आँखों में, जिनसे दुख और चिन्ता टपक रही थी, अपनी आँखें डालकर मुंहफट ढंग से कहा:

'तुम जैसे आदमी को धोखा देना ग़लत होगा। हाँ, गैंगरीन हो गया है। लेकिन हौसला ऊँचा रखो। जैसे कोई भी परिस्थिति निराशाजनक नहीं होती, ऐसे ही कोई भी रोग असाध्य नहीं होता। समझे तुम? ठीक है!"

और वह लम्बे-लम्बे, तेज़ क़दम बढ़ाते हुए, गलियारे के शीशेदार दरवाज़े को पार कर अकड़ के साथ चले गये, और उनकी दुरंगी-भरी आवाज़ की गूंज दूर पर सुनाई दी।

"बूढ़ा मज़ेदार है," अपनी भारी आँखों से जाती हुई आकृति का पीछा करते हुए मेरेस्येव ने कहा।

"उसका दिमाग़ ख़राब है। सुनीं उसकी बातें? हमें बना रहा है। ये मामूली बातें हमें ख़ूब मालूम हैं," कुकुश्किन ने शैतानी से मुस्कराकर जवाब दिया, "तो हमें 'कर्नल वार्ड' में रहने की इज़्ज़त बख़्शी जा रही है।"

"गैंगरीन," मेरेस्येव ने आहिस्ते से कहा और दुखी भाव से दोहराया, "गैंगरीन"।

२

तथाकथित 'कर्नल वार्ड' पहली मंज़िल के गलियारे के अन्त में था। उसकी खिड़कियों का मुंह दक्षिण और पूर्व की ओर था, इसलिए उसमें सारे दिन सूरज का प्रकाश रहता और उसकी किरणें एक चारपाई से दूसरी चारपाई तक सरकती रहतीं। यह छोटा वार्ड था। लकड़ी के फ़र्श पर स्याह धब्बे पड़े देखकर यह अनुमान हो जाता है कि पहले यहाँ दो कैबिनेट थीं, उनके किनारे दो छोटी अलमारियाँ थीं और बीच में एक मेज़ रही थी। अब कमरे में चार शैय्याएँ थीं। एक पर पट्टियों में लिपटा कोई व्यक्ति पड़ा था, जो नवजात शिशु की भाँति गठरी-सा बना था। वह पीठ के बल पड़ा रहने और पट्टियों की दरारों में से शून्य, निष्प्राण आँखों से छत की तरफ़ ताकते रहने के अलावा कुछ नहीं करता था। इस चारपाई की बग़ल में एक चारपाई पर एक उदार, बातूनी और फुर्तीला व्यक्ति पड़ा था—झुर्रियोंदार, चेचक-मुंह सिपाहियाना चेहरा और सफ़ेद-सफ़ेद मूंछें।

निगाह डाली और इन्तज़ार की बड़ी-बड़ी आँखों में, जिनमें दुख के चिह्न टपक रही थी, अपनी आँखें डालकर मुँहफट ढंग से कहा:

'तुम जैसे आदमी को धोखा देना बेकार होगा। हाँ, गैंग्रीन हो गया है। लेकिन हौसला ऊँचा रखो। जैसे कोई भी परिस्थिति निराशाजनक नहीं होती, ऐसे ही कोई भी रोग असाध्य नहीं होता। समझे तुम? ठीक है!'

और वह लम्बे-लम्बे, तेज़ कदम बढ़ाते हुए, गलियारे के शीशेदार दरवाज़े को पार कर धड़ाके के साथ चले गये, और उनकी भर्राहट-भरी आवाज़ की गूंज दूर तक सुनाई दी।

"बुरा मरीज़ है," अपनी भारी आँखों से जाती हुई आकृति का पीछा करते हुए मेरेस्येव ने कहा।

"उसका दिमाग ख़राब है। सुनीं उसकी बातें? हमें बता रहा है! ये मामूली बातें हमें ख़ूब मालूम हैं," कुकूश्किन ने शैतानी से मुस्कराकर जवाब दिया, "तो हमें 'कर्नल वार्ड' में रहने की इज़्ज़त बख्शी जा रही है।"

"गैंग्रीन," मेरेस्येव ने आहिस्ते से कहा और दुखी भाव से दोहराया, "गैंग्रीन"।

२

तथाकथित 'कर्नल वार्ड' पहली मंज़िल के गलियारे के अन्त में था। उसकी खिड़कियों का मुँह दक्षिण और पूर्व की ओर था इसलिए उसमें सारे दिन सूरज का प्रकाश रहता और उसकी किरणें एक चारपाई से दूसरी चारपाई तक सरकती रहतीं। यह छोटा वार्ड था। लकड़ी के फ़र्श पर स्याह चकत्ते पड़े देखकर यह अनुमान हो जाता है कि पहले यहाँ दो शैय्याएँ थीं, उनके किनारे दो छोटी अलमारियाँ थीं और बीच में एक गोल मेज़ थी। अब कमरे में चार शैय्याएँ थीं। एक पर पट्टियों में लिपटा कोई घायल व्यक्ति पड़ा था, जो नवजात शिशु की भाँति गठरी-सा पड़ा था। वह पीठ के बल पड़ा रहने और पट्टियों की दरारों में से शून्य, निस्पन्द आँखों से छत की तरफ़ ताकते रहने के अलावा कुछ नहीं करता था। अंगीठी की बग़ल में एक चारपाई पर एक उदार, बातूनी और फुर्तीला व्यक्ति पड़ा था—मुरिंदार, चेचक-मुँह सिपाहियाना चेहरा और पतली-बारीक मूँछें।

ग्रस्पताल में लोग दोस्त जल्दी बन जाते हैं। शाम तक ग्रलेक्सेई को मालूम हो गया कि बेचक-मुँह व्यक्ति साइबेरियाई है—एक सामूहिक फार्म का ग्रध्यक्ष और शिकारी था—ग्रौर फौज में स्नाइपर है, ग्रौर बड़ा ही कुशल स्नाइपर। येल्ना के पास के युद्ध से लगाकर, जहाँ ग्रपनी साइबेरियाई डिवीजन के साथ, जिसमें उसके दो बेटे ग्रौर दामाद भी हैं, उसने लड़ाई में प्रवेश किया था, ग्रब तक वह सत्तर फासिस्टों का नाम—जैसा कि वह कहा करता है—"काट चुका था"। वह सोवियत संघ के वीर की उपाधि प्राप्त कर चुका है, ग्रौर जब उसने ग्रलेक्सेई को ग्रपना नाम बताया तो इस ग्राकर्षणरहित व्यक्ति की ग्रोर ग्रलेक्सेई कौतुकतापूर्वक ताकता रह गया। उस समय यह नाम फौज में व्यापक रूप से विख्यात था ग्रौर उसके विषय में प्रमुख पत्रों ने ग्रग्रलेख लिखे थे। ग्रस्पताल में प्रत्येक व्यक्ति—नर्सें, हाउस सर्जन ग्रौर स्वयं वसीली वसील्येविच—उसे सम्मानपूर्वक स्तेपान इवानोविच कहकर पुकारते थे।

वार्ड में चौथे साथी ने, जिसका ग्रंग-ग्रंग पट्टियों में लिपटा था, सारे दिन ग्रपने विषय में कुछ नहीं कहा, दरग्रसल, उसने एक शब्द भी नहीं कहा। लेकिन स्तेपान इवानोविच ने, जिसे दुनिया की हर बात का ज्ञान था, मेरेस्येव को उसकी सारी कहानी सुना दी। उसका नाम ग्रिगोरी ग्वोज्देव था। वह टैंक सेना में लेफ्टीनेंट था ग्रौर उसे भी सोवियत संघ के वीर की उपाधि प्राप्त हुई थी। टैंक-स्कूल से परीक्षा पास करके वह फौज में भरती हो गया ग्रौर प्रारम्भ से ही युद्ध में भाग ले रहा था। उसने सीमा पर, ब्रेस्त-लितोव्स्क की गढ़ी के ग्रास-पास कहीं पहली मुठभेड़ में भाग लिया था। बेलोस्तोक के पास प्रसिद्ध टैंक-युद्ध में उसका टैंक चूर चूर हो गया था, लेकिन उसने फौरन ही दूसरा टैंक सभाल लिया जिसका कमांडर मारा जा चुका था, ग्रौर बची-खुची टैंक डिवीजन लेकर उसने स्मोलेन्स्क की तरफ पीछे हटती हुई सेनाग्रों को ग्राड़ दी थी। बूग के पास युद्ध में उसका टैंक फिर ध्वस्त हो गया ग्रौर वह स्वयं भी घायल हो गया। उसने फिर एक ग्रौर टैंक ले लिया जिसका कमांडर मारा जा चुका था ग्रौर कम्पनी की कमान खुद संभाल ली। बाद में शत्रु की पांतों के पीछे रह जाने पर उसने तीन टैंकों का घूमता-फिरता दस्ता बना लिया, ग्रौर एक महीने तक जर्मन पांत के पीछे दूर तक शत्रु के यातायात को ग्रौर फौजी दस्तों को परेशान करता घूमता रहा। वह ताजे युद्ध क्षेत्रों में ग्रपने

टैंकों के लिए पेट्रोल, गोला-बारूद और फ़ालतू पुर्ज़े जुटा लेता था। सड़कों के किनारे हरे-भरे खड्डों में, जंगलों में और दलदलों में हर तरह के टूटे-फूटे टैंक कितने ही पड़े मिल जाते थे।

वह स्मोलेन्स्क प्रदेश के दोरोगोबुज के पास एक स्थान का निवासी था। जब उसे सोवियत सूचना केन्द्र की विज्ञप्तियों से, जिन्हें टैंक-चालक कमांड के टैंक में लगे रेडियो पर सुनते थे, पता चला कि युद्ध का मोर्चा उसके निवासस्थान के निकट पहुँच गया है, तो वह अपने को रोक न सका और अपने तीनों टैंकों को बारूद से उड़ा देने के बाद अपने आठ बचे-खुचे आदमियों सहित, अपने गाँव की ओर जंगल पार करता हुआ चल चला।

युद्ध छिड़ने के ठीक पहले ग्वोज्देव छुट्टी लेकर अपने गाँव गया था, जो मैदानों में टेढ़ी-मेढ़ी बहनेवाली एक छोटी-सी नदी के किनारे बसा था। उसकी माँ, जो ग्रामीण अध्यापिका थी, सख़्त बीमार पड़ गयी थी, और उसके पिता ने, जो वयोवृद्ध कृषि विशेषज्ञ थे और मेहनतकश जनता के प्रतिनिधियों की क्षेत्रीय सोवियत के सदस्य थे, उसे तार देकर घर बुलाया था।

ग्वोज्देव की आँखों के सामने साकार हो गया वह स्कूल के पास ही लट्ठों से बना छोटा-सा घर, अपनी माँ, पुराने कोच पर असहाय पड़ी हुई छोटी-सी दुबली औरत, और अपने पिता, पुराने किस्म की कामकाजी जाकेट पहने, माँ के सिरहाने खाँसते और चिन्ता से अपनी छोटी-सी दाढ़ी नोचते खड़े हुए और अपनी तीन नन्ही, काले केशोंवाली बहिनें, जिनकी शक्लें माँ से मिलती-जुलती थीं। उसे अपने गाँव की डाक्टरनी—छरहरी, नीली आँखोंवाली झेन्या—भी याद आयी, जो उसे विदा करने के लिए उसके साथ घोड़ा-गाड़ी पर स्टेशन तक आयी थी और जिससे उसने हर रोज़ पत्र लिखने का वायदा किया था। बेलोरूस के रौंदे हुए खेतों और जले हुए वीरान गाँवों में जंगली जानवर की तरह भटकते हुए, सड़कों और बस्तियों से बचते हुए वह अपने दिल के दर्द को दबाकर यह अनुमान करने का प्रयत्न करता कि अपने गाँव में जाकर उसे क्या देखने को मिलेगा, क्या उसके परिवार के लोग बच निकलने में सफल हो गये और अगर नहीं तो उनका क्या हाल हुआ।

अपने गाँव पहुँचकर उसने जो कुछ आँखों से देखा, वह उसकी भयानक कल्पनाओं से भी भयंकर था। उसे न अपना मकान मिला, न घर

हो गये। अगस्त मे उसे एक नया टैंक दिया गया—प्रसिद्ध 'टी-३४', और शीतकाल से पहले ही वह 'असीम साहसी व्यक्ति' के नाम से बटालियन में प्रसिद्ध हो गया। उसके बारे में ऐसी कहानियाँ कही और लिखी जाती थी, जो अविश्वसनीय मालूम होती थीं, मगर थीं सत्य। एक रात जब उसे गश्त पर भेजा गया तो वह पूरे वेग से जर्मन किलेबन्दी चीरता गुजर गया, उनके सुरंग क्षेत्र को भी उसने सुरक्षित ढंग से पार कर लिया और अपनी तोपें चलाते हुए शत्रु की पांत में भगदड़ मचाता, वह उस कस्बे से निकल गया जो लाल सेना से आधा घिरा था, और दूसरी तरफ जाकर अपनी पांत में फिर शामिल हो गया। शत्रु की पांतों में कोई कम घबराहट नही फैली। एक दूसरे अवसर पर, जर्मन पांतों के पीछे एक घूमते-फिरते दल को लेकर वह घात लगाकर जर्मन यातायात दस्तों पर टूट पड़ा, और अपने टैंकों से उनके सिपाहियों, घोड़ों और गाड़ियों को रौंद डाला।

शीतकाल में एक छोटे-से टैंक दल का नेतृत्व करते हुए उसने [illegible] के निकट किलेबंद गाव की रक्षक सेना पर धावा कर दिया, जहां शत्रु का आपरेशनल कार्यालय था। गाव की सरहद पर, जब उसके टैंक रक्षा-मोर्चा पार कर रहे थे, तब खुद उसके टैंक पर दाहक द्रव की बोतल आ गिरी। धुआँ उगलती दमघोटू लपटों से सारा टैंक ढक गया, लेकिन टैंक-चालक लड़ते ही रहे। बड़ी-भारी मशाल की तरह वह टैंक गांव भर मे दौड़ लगाता रहा, अपनी अगल-बग़ल की तोपों से गोले बरसाता रहा, [illegible] सेना और भागते हुए जर्मन सिपाहियो का पीछा करता और उन्हें रौंदता रहा। [illegible] और उसके साथी टैंक-चालक, जिन्हें उसने अपने साथ शत्रु के घेरे मे निकलनेवालो मे से चुना था, यह जानते थे कि किसी भी क्षण पेट्रोल की टंकी या गोला-बारूद के भण्डार मे आग लग जाने पर उनके उड़ जाने की सम्भावना थी, धुएँ से उनका दम घुट रहा था, टैंक की गर्म लाल दीवारों मे टकराकर उनके अंग जल गये थे, उनके कपड़े भी सुलगने लगे थे, फिर भी वे लड़ते रहे। टैंक के नीचे किसी भारी [illegible] के [illegible] जाने से टैंक उलट गया और या तो विस्फोट के धमाके मे या उसमें धुएं और गर्द का जो बादल छा गया उसके कारण, लपटें बुझ गयीं।

[illegible] का टैंक से निकाला गया तो वह बुरी तरह जला हुआ था। [illegible] [illegible] [illegible] की [illegible] में मिला, जिसका स्थान उसने [illegible] [illegible] था।

एक महीने से टैंक-चालक, चंगे होने की आशा बिना, जीवन और मृत्यु के बीच जूझ रहा था, वह किसी बात में कोई दिलचस्पी न लेता था और कभी-कभी कई दिनों तक एक शब्द भी न बोलता था।

संगीन रूप से घायल लोगों की दुनिया अक्सर अस्पताल के वार्ड की चहारदीवारी तक ही सीमित रहती है। उन दीवारों के पार कहीं घमासान युद्ध छिड़ा हुआ है, बड़े और छोटे महत्त्व की घटनाएँ घट रही हैं, उत्तेजना अपने शिखर पर है और प्रत्येक दिन हर व्यक्ति की आत्मा पर कोई एक ताज़ा चिह्न छोड़ जाता है। लेकिन बाहरी दुनिया की जिन्दगी की हवा भी 'संगीन रूप से घायलों' के वार्ड में आने नहीं दी जाती, और अस्पताल की दीवारों के बाहर जो तूफ़ान घहरा रहा है, उसकी दूरागत, दबी हुई गूज मात्र यहाँ आ पाती है। वार्ड की ज़िन्दगी सिर्फ अपनी ही छोटी-मोटी दिलचस्पियों तक सीमित रहती है। धूप से उष्ण खिड़की के शीशे पर किसी उनींदी, धूल-सनी मक्खी का आ बैठना ही यहाँ एक घटना है। वार्ड की इनचार्ज नर्स क्लावदिया मिखाइलोव्ना का नये, ऊँची एड़ीवाले जूते पहनकर आना, क्योंकि वह अस्पताल से सीधे थियेटर जाना चाहती है, एक खबर है। भोजन के तीसरे दौर में खूबानी की जेली के बजाय, जिससे हर आदमी ऊब गया है, उबले हुए बेरों का परोसा जाना, बातचीत का विषय होता है।

लेकिन 'संगीन रूप से घायल' आदमी के यातनापूर्ण लम्बे-लम्बे दिनों पर जो चीज़ सदा छायी रहती है, जिस चीज़ पर उसका सारा चिन्तन केन्द्रित रहता है, वह होता है उसका घाव, जिसने उसे योद्धाओं की पांत से, युद्ध के जोशीले जीवन से अलग कर दिया और इस मुलायम और आरामदेह चारपाई पर ला पटका जिससे उसे उसी क्षण से नफरत है जिस क्षण उसपर लेटाया गया था। वह अपने घाव, सूजन या टूटी हुई हड्डी के बारे में सोचते-विचारते सो जाता, अपनी नींद में भी वह उसी को देखता और जब जागता तो यह जानने का प्रयत्न करता कि सूजन कम हुई या नहीं, दाह घटा या नहीं, बुखार कम हुआ या बढ़ा। और जिस प्रकार रात में चौकन्ने कान प्रत्येक आहट को बढ़ा-चढ़ाकर सुनते हैं, इसी प्रकार यहाँ अपनी पंगु अवस्था पर मस्तिष्क बराबर केन्द्रित रहने के कारण घाव की पीर और तेज़ हो जाती है, और अत्यन्त पराक्रमी और मनस्वी व्यक्ति तक, जो युद्ध क्षेत्र में शान्तिपूर्वक मृत्यु से आँखें चार

कर लेता है, यहाँ प्रोफ़ेसर के स्वर के उतार-चढ़ाव को भयभीत भाव से सुनने के लिए विवश होता है और धड़कते दिल से उनके चेहरे के भाव पढ़कर यह अनुमान लगाने का प्रयत्न करता है कि उसकी बीमारी कैसा रुख ले रही है।

कुकूश्किन बराबर गुर्रा रहा था और बड़बड़ा रहा था। उसका ख्याल था कि उसकी टूटी हड्डियों पर खपच्ची ठीक तरह से नहीं बांधी गयी थी, वह बहुत सख्त कसी थी और इसके फलस्वरूप हड्डियां ठीक से नहीं जुड़ीं और उन्हें फिर से तोड़ना पड़ेगा। किन्तु नैराश्यपूर्ण अर्द्धमूर्च्छा में डूबा हुआ ग्रिगोरी ग्वोज्देव कुछ नहीं बोला। लेकिन जब क्लावदिया मिखाइलोव्ना ने उसकी पट्टियाँ बदलते वक्त उसके घावों में मुट्ठियां भर बेनसीन भरी तो वह किस अधीरता के साथ अपने सूजे हुए शरीर और झुर्रीदार चमड़ी को देख रहा था, और सर्जनों के आपसी सलाह-मशविरे को कितने ध्यानपूर्वक सुन रहा था, यह समझना आसान था। वार्ड में स्तेपान इवानोविच ही एकमात्र ऐसा व्यक्ति था जो चल-फिर सकता था-यह ठीक है कि वह झुककर लगभग दुहरा हो जाता, और चारपाई की पट्टियां पकड़कर 'उस बेवकूफ बम' को जिसने उसे धराशायी किया था और इस 'कमबख्त रेडिकुलाइटिस' को, जो उसके आघात के कारण उसे हो गया था, बराबर कोसता रहता।

मेरेस्येव ने अपने भाव छिपाने की सख्त कोशिश की और यह बहाना करने का प्रयत्न किया कि सर्जन आपस में जो बातें कर रहे हैं, उनसे उसे कोई दिलचस्पी नहीं है। लेकिन हर बार जब विद्युत्-चिकित्सा के लिए उसके पैरों पर पट्टियां खोली जातीं, और वह देखता कि अभागी लाल सूजन, धीरे-धीरे मगर लगातार, पैरों पर बढ़ती जा रही है तो वह भयभीत होकर आंखें फाड़े रह जाता।

वह बेचैन और निराश हो उठा। किसी साथी रोगी के किसी भद्दे मज़ाक पर, चादर पर तनिक-सी सिकुड़न देखकर, या वार्ड की बूढ़ी परिचारिका के हाथों से झाड़ू के गिर भर जाने पर वह क्रोध से उबल पड़ता और उसे बड़ी मुश्किल से दबा पाता। यह ठीक है कि सख्त पथ्य की के साथ, धीरे-धीरे बढ़ते जानेवाले बढ़िया मसालेदार भोजन से उसकी शक्ति तेज़ी से वापस लौट आयी थी, और जब पट्टियाँ बदली जातीं या उसे विद्युत्-चिकित्सा के लिए बैठाया जाता तो कृशकाय शरीर को देखकर प्रशिक्षण पानेवाली युवा छात्राओं की निगाहों में अब भय का भाव न दि-

खाई देता था। लेकिन जितना ही उसका शरीर मजबूत होता जाता, उतनी ही उसके पैरों की हालत खराब होती जाती। अब उसके पैरों के समस्त अग्रभाग पर सूजन छा गयी थी और टखनों से ऊपर की तरफ बढ़ रही थी। पैरों की उँगलियाँ बिल्कुल सुन्न पड़ गयी थीं, सर्जन ने उनमें सुइयाँ चुभोयीं, मांस में गहराई तक, मगर अलेक्सेई को कोई दर्द न महसूस हुआ। वे एक नयी विधि से, जिसका अजीब-सा नाम था 'अवरोधन', सूजन रोकने में सफल तो हो गये मगर उसके पैरों में दर्द बढ़ गया। वह बिल्कुल असह्य हो उठा। दिन में अलेक्सेई तकिये में मुंह दबाये चुपचाप पड़ा रहता। रात में क्लावदिया मिखाइलोव्ना उसे मार्फिया देती।

आपसी सलाह-मशविरे में सर्जन लोग, अधिकाधिक बार, भयानक शब्द 'अंग-विच्छेद' का नाम लेने लगे। कभी-कभी वसीली वसील्येविच मेरेस्येव की शैय्या के पास रुकते और पूछते

"अच्छा तो, हमारे घसीटे महाशय के क्या हाल-चाल हैं? शायद हम अंग-विच्छेद करेंगे, एह? बस, चिक—और अलग हो जायेंगे।"

अलेक्सेई ठंडा पड़ जाता और कांपने लगता। अपने को चिल्ला उठने से रोकने के लिए वह बत्तीसी भींच लेता और सिर्फ सिर हिला देता, और प्रोफ़ेसर महोदय गुर्राते

"अच्छा, सड़े जाओ, सड़े जाओ—यह तुम्हारा मामला है! हम देखते हैं, इससे क्या होता है," और वह कोई नया इलाज लिख जाते।

उनके पीछे दरवाजा बंद हो गया, गलियारे में उनकी पगध्वनि भी विलीन हो गयी, लेकिन मेरेस्येव आँखें बन्द किये हुए शैय्या पर पड़ा था और सोच रहा था 'मेरे पैर, मेरे पैर, मेरे पैर!' " क्या उसके पैर नहीं रहेंगे और क्या पंगु बनकर उसे अपने कमीशिन के मांझी अरकाशा की तरह लकड़ी के पैरों के बल चलना पड़ेगा? क्या उस बूढ़े की ही तरह उसे भी नहाने के लिए नदी किनारे अपने पांव उतारकर छोड़ देने होंगे और बंदर की तरह चार पैरों से रेंगकर पानी में घुसना होगा?

ये सोचे विचार एक और बात से गहरे हो गये। अस्पताल में पहुंचने के पहले ही दिन उसने कमीशिन से आये अपने पत्र पढ़ डाले थे। छोटी-सी तिकोनी चिट्ठियां उसकी माँ की थीं जो हमेशा की तरह संक्षिप्त थीं और जिनमें आधे से अधिक हिस्से में रिश्तेदारों की सलाम-दुआएँ लिखी

थी और यह आश्वासन था कि भगवान का शुक्र है, वे सब सकुशल हैं और यह कि वह, अलेक्सेई, उनकी चिन्ता न करे, और अन्त में यह अनुरोध होता था कि वह ठीक से अपनी देखभाल करे, ठंड न खाये, पांव गीले न होने पायें, किसी खतरे में न कूदे और जर्मनों की चालाकियों से होशियार रहे जिनके बारे में उसने अपने पड़ोसियों से बहुत कुछ सुन रखा था। इन सभी पत्रों का भाव एक ही था। सिर्फ एक में उसने यह सूचना भेजी थी कि अलेक्सेई के कुशल-मंगल के लिए गिरजाघर में दुआ मांगने का अनुरोध उसने अपनी एक पड़ोसिन से किया—इसलिए नहीं कि वह खुद धार्मिक अंधविश्वासों में विश्वास करती है, बल्कि इसलिए कि ऊपर शायद वहीं कोई हो तो वह भी क्यों रह जाये। एक पत्र में उसने लिखा था कि वह उसके बड़े भाइयों के बारे में चिन्तित है, जो दक्षिण में कहीं लड़ रहे हैं और बहुत दिनों से उनका कोई पत्र नहीं आया है, और आखिरी पत्र में उसने लिखा था कि उसने सपना देखा था कि वोल्गा की वसंतकालीन बाढ़ के दौर मे उसके सभी बेटे वापस लौट आये हैं और वे सब अपने पिता के साथ—जो मर चुके हैं—मछली का शिकार करके लौटे हैं और उनके लिए उसने उनकी रुचि की कचौड़ी पकायी है; और पड़ोसिनों ने इस स्वप्न का फल यह बताया है कि उसका एक बेटा अवश्य मोर्चे से वापस आ जायेगा। इसलिए उसने अलेक्सेई से प्रार्थना की थी कि वह अपने अफ़सर से घर जाने के लिए, चाहे एक ही दिन के लिए, इजाज़त मांगे।

नीले लिफाफों में, जिनपर पते बड़ी-बड़ी, गोल-गोल, स्कूली लड़कियों जैसी लिखावट मे लिखे हुए थे, उस लड़की के पत्र थे जो फ़ैक्टरी के प्रशिक्षण विद्यालय में उसकी सहपाठिनी थी। उसका नाम ओल्या था। वह अब कमीशिन की लकड़ी चीरने की मिल में टेकनीशियन थी, जहाँ वह खुद भी किशोरावस्था मे टर्नर की हैसियत से काम कर चुका है। यह लड़की बचपन की मित्र से अधिक-सी कुछ थी और उसके पत्र भी असाधारण थे। कोई आश्चर्य नही कि उसने हर पत्र को कई बार पढ़ा, वह उन्हें बार-बार उठाता और बिलकुल सीधी-सादी पंक्तियों को भी इस भांति पढ़ता कि उनमे शायद कोई और सुखद, अप्रकट भाव निकल आये, हालांकि वह कौनसा अर्थ खोजना चाहता था, यह बात साफ़-साफ़ वह खुद भी नही जानता था।

उसने लिखा था कि वह नाक तक अपने काम मे डूबी हुई है; वह

गया कि उसकी माँ उसे देखने के लिए बेचैन है, अपनी सारी उम्मीदें
उसी पर टिकाये हुए है, और वह यह भी समझ गया कि वह जिस दुर्घ-
टना का शिकार हो गया है, उसके बारे में अगर वह माँ को या ओल्गा
को लिखेगा तो उन्हें कैसा भयानक धक्का लगेगा। वह बहुत देर तक सोच-
ता रहा कि क्या किया जाये और उसे पत्र लिखने तथा सच्चाई प्रकट करने
का साहस न हुआ। उसने यह समाचार कुछ दिनों के लिए और रोके
का फ़ैसला किया और निश्चय किया कि वह दोनों को सूचित करेगा
वह सकुशल है और एक शान्त क्षेत्र में उसका तबादला कर दिया गया
अपना पता बदल जाने का कारण समझा देने और उसे सच्चा बनाने के
लिए उसने लिखा कि वह पृष्ठ प्रदेश में विशेष काम पर नियुक्त
टुकड़ी में काम कर रहा है, जहाँ उसे शायद बहुत दिनों तक रहना
पड़ेगा।

और अब, जब कि उसकी शैय्या के पास सर्जनों के आपसी परामर्श
के बीच 'अंग-विच्छेद' शब्द अधिकाधिक सुनाई देने लगा तो एक डर
का भाव उभरकर छा गया। यह अंग-भंग लेकर वह अपने घर कैसे लौटे-
गा? ओल्गा को वह अपने लकड़ी के पैर कैसे दिखायेगा? अपनी उस
माँ को, जिसके और सब बेटे लड़ाई की बलि चढ़ गये और अब जो
आख़िरी बेटे का इन्तज़ार कर रही है, कितना बड़ा सदमा पहुँचेगा!
अलेक्सेई के मस्तिष्क में यही विचार चक्कर काट रहे थे, जब वह वार्ड
के कोने में, कमज़ोर मौन के बीच लेटे हुए, कुकुश्किन के बेचैन शरीर के
भार से चरमराती शैय्या के स्प्रिंगों के कुछ स्वर, ख़ामोश टैंक-कमाण्डर
की आहें और उस स्तेपान इवानोविच की बातें सुन रहा था, जो [illegible]
[illegible] मुड़कर खिड़की के पास खड़ा था—वहीं पर वह खिड़कियों के शीशों
पर नाक टेका हुआ सारे दिन खड़ा रहता था।

"अंग-विच्छेद? नहीं! और कुछ भी हो, पर यह नहीं होगा!
इससे तो मौत बेहतर ... कितना दाहक और भयानक है यह शब्द 'अंग-
विच्छेद'—ऐसा लगता है जैसे किसी ने छुरा भोंक दिया हो। अंग-विच्छेद
कभी नहीं। यह नहीं होगा!" अलेक्सेई ने सोचा। इस भयानक शब्द
को उसने सपने में एक अपरिचित आकृति की इस्पाती सख़्ती के रूप में
[illegible]

एक सप्ताह तक तो वार्ड नम्बर बयालीस के वासियों की संख्या चार रही। लेकिन एक दिन क्लावदिया मिख़ाइलोव्ना परेशान-सी दो अर्दलियों के साथ ग्रायी ग्रौर उनसे बोली कि उन्हें थोड़ा-थोड़ा खिसकना पड़ेगा। स्तेपान इवानोविच की चारपाई बिल्कुल खिड़की तक खिसका दी गयी, जिससे वह बहुत खुश हुआ। स्तेपान इवानोविच की बग़ल मे ही कोने की तरफ़ कुकूश्किन की चारपाई लगा दी गयी ग्रौर उसकी जगह पर एक बढ़िया-सी नीची चारपाई लगा दी गयी जिसपर स्प्रिंगदार गद्दा था।

उस पर कुकूश्किन बिगड़ खड़ा हुआ। उसका चेहरा पीला पड़ गया, उसने ग्रपनी चारपाई की बग़ल मे खड़ी ग्रलमारी पर घूसा जमाया ग्रौर चीखती हुई ऊँची ग्रावाज़ मे नर्स को, ग्रस्पताल को ग्रौर वसीली वसील्येविच तक को गाली दे डाली, इस-उस से शिकायत कर देने की धमकी दी। वह इस तरह ग्रापे से बाहर हो गया कि बेचारी क्लावदिया मिख़ाइलोव्ना के ऊपर एक मग फेंकने के लिए तैयार हो गया ग्रौर ग्रगर ग्रलेक्सेई जिप्सी जैसी भयानक रूप से कौंधती ग्रांखो से उसकी तरफ़ घूरकर उसको सख्ती से डाट न देता तो वह मार ही देता।

तभी पाचवां रोगी भी वहाँ ले ग्राया गया।

वह बहुत भारी रहा होगा, क्योंकि स्ट्रेचर चरमर्र बोल रहा था ग्रौर स्ट्रेचर-वाहकों के कदमों की ताल पर बोझ से झुक-झुक जाता था। एक गोल, मुड़ा हुआ सिर ग्रसहाय भाव से तकिये पर इधर-उधर लुढक रहा था। चौड़ा, सूजा हुआ, मोम जैसा चेहरा निर्जीव दिखाई दे रहा था। मोटे-मोटे, पीले होंठो पर पीड़ा का स्थिर भाव ग्रंकित था।

ऐसा लगता था मानों नया मरीज ग्रचेत है, मगर ज्यों स्ट्रेचर फ़र्श पर रखा गया उसने ग्रांखें खोल दीं; वह कुहनी के बल उठ बैठा, कौतूहलतापूर्वक उसने वार्ड मे चारो तरफ़ नज़र डाली ग्रौर किसी कारण स्तेपान इवानोविच की तरफ़ ग्रांख मार दी, मानों कह रहा हो: "कैसी कट रही है, कुछ बुरी नही?" ग्रौर ज़ोर से खास उठा। स्पष्ट था कि उसके शरीर को बड़ी चोट लगी थी ग्रौर उसे बहुत पीड़ा हो रही थी। पहली नज़र मे, पता नही क्यो, मेरेस्येव को यह भारी-भरकम सूजी हुई ग्रकृति पसंद नही ग्रायी, ग्रौर वह बडी उपेक्षापूर्ण दृष्टि से दो ग्रर्दलियो, दो परिचारिकाग्रों ग्रौर नर्स को उसे स्ट्रेचर से उठाते ग्रौर चारपाई पर

रखने देखता रहा। चारपाई पर लेटाने के साथ उन लोगों ने उसके सख्त, लट्ठे जैसे पैर को भोंडे तरीक़े से मोड़ दिया। अलेक्सेई ने देखा कि नये मरीज़ का चेहरा यकायक और फीका पड़ गया और पसीने की बूँदें छलक आयी, उसके होंटों पर से दर्द की थिरकन गुज़र गयी। लेकिन मरीज़ ने तनिक भी आवाज़ न की; सिर्फ़ दात भींचकर रह गया।

ज्यों ही उसने अपने को चारपाई पर पाया, उसने अपने कम्बल और चादर को ठीक किया, अपने/साथ जो किताबें-कापियाँ लाया था, उ चारपाई की बगल में खड़ी अलमारी मे करीने से सजा दिया, नीचे खाने में सावधानी से टूथपेस्ट और ब्रश, यू-डी-कोलोन, दाढ़ी बनाने का सामान और साबुनदानी लगा दी, फिर अपनी सारी कारगुज़ारी पर आलोचनात्मक नज़र डाली और मानों अब पूरी तरह आराम से जम गया है, उसने अपनी गहरी, गूँजती आवाज़ में कहा:

"अच्छा, तो अब हम लोग परिचित हो लें। मैं हूँ रेजीमेंटल कमिसार सेम्योन वोरोब्योव। ठीक। सिगरेट नही पीता। कृपया, मुझे अपना सदस्य बनाइये।"

उसने वार्ड के अपने साथियों पर शान्त दिलचस्पी के साथ नज़र डाली और उसकी कटीली, छोटी-सी सुनहली आँखों की तीव्र, सूक्ष्मान्वेषी दृष्टि से मेरेस्येव ने अपनी दृष्टि मिला दी।

"मैं आप लोगो के बीच अधिक नही रहूँगा। दूसरो के बारे में मैं नहीं जानता, लेकिन यहाँ पड़े रहने के लिए मेरे पास अधिक समय नहीं है। मेरे घुड़सवार दस्ते के लोग मेरा इन्तज़ार कर रहे हैं। जब बर्फ़ गल जायेगी और सड़कें सूख जायेंगी, तब तक मैं भी निकल जाऊँगा। 'लाल सेना के हम विशाल घुड़सवार सिपाही और हमारा...' क्या?" वह अपनी प्रफुल्ल, गूँजती हुई मंद आवाज़ से वार्ड को भरता हुआ कहता चला गया।

"हममें से कोई भी यहाँ बहुत दिन न रहेगा। जब बर्फ़ पिघलेगी—तो हम सब चले जायेंगे वार्ड नम्बर पचास में, आगे की तरफ़ पैर करके"—कुकुश्किन ने उसकी बात काट दी और यकायक दीवार की तरफ़ मुँह फेर लिया।

अस्पताल में पचास नम्बर का कोई वार्ड न था। मरीज़ों ने यह नाम मुर्दाघर को दे दिया था। कमिसार ने यह बात पहले भी सुनी थी या नहीं, इसमें सदेह है, मगर इस मज़ाक के पीछे भयानक अर्थ को वह

लेता, जैसा कि पहले किसी की बात सुनकर किया करता था। पट्टी की वजह से उसका चेहरा तो न दिखाई देता, लेकिन समर्थन में उसका सिर हिलता दिखाई दे जाता। कुकूश्किन को कमिसार ने जहाँ शतरंज खेलने का निमंत्रण दिया तो उसका गुस्सा भी हंसी-खुशी में बदल गया। शतरंज का पट कुकूश्किन की चारपाई पर रखा गया और कमिसार ने 'अंधी' शतरंज खेलना शुरू किया—अपनी चारपाई पर ही आँखें बंद किये लेटे रहकर। उसने खीझते-बड़बड़ाते लेफ़्टीनेंट को मात दे दी और इस प्रकार वह लेफ़्टीनेंट कुकूश्किन की नज़रों में भी बहुत ऊँचा उठ गया।

कमिसार का वार्ड में आ जाना, मास्को के नवागत वसंत की हरी और नम हवा के आ जाने के समान था, जो हर सुबह परिचारिकाओं द्वारा खिड़कियों के खोले जाने पर वार्ड में घुस आती थी और तब रोगियों के कमरे की दमघोंटू ख़ामोशी सड़क की आवाज़ों के हमले से छिन्न भिन्न हो जाती थी। आनन्द का वातावरण पैदा करने में कमिसार को कोई मेहनत भी न करनी पड़ती थी। वह तो जीवन से—आनन्द विह्वल, छलकते हुए जीवन रस से—भरपूर था, और अपनी व्याधि से उत्पन्न यंत्रणाओं को भूल गया था या भुलाने के लिए अपने को विवश कर रहा था।

सुबह जब वह जाग उठता तो चारपाई पर बैठ जाता और कसरत करता—सिर के ऊपर दोनों बाहें फैलाता, अपने शरीर को पहले एक तरफ़ झुकाता और फिर दूसरी तरफ़, और बड़े ताल के साथ सिर को झुकाना और इधर-उधर मोड़ना। हाथ-मुँह धोने के लिए जब पानी आता तो वह जितना भी ठंडा हो सके, उतना ठंडा पानी लाने पर ज़ोर देता। चिलमची के ऊपर मुँह करके बड़ी देर तक छींटे मारता और फिर तौलिये से इतनी ज़ोर से रगड़कर बदन पोंछता कि उसका सूजा हुआ शरीर लाल पड़ जाता, और उसे ऐसा करते देखकर अन्य मरीज़ों की भी इच्छा होती कि काश, वे भी यह सब कर पाते। जब अख़बार आते तो वह उन्हें उत्सुकतापूर्वक नर्स के हाथ से छीन लेता और तेज़ी से सोवियत सूचना विभाग की विज्ञप्ति पढ़ जाता और उसके बाद शान्तिपूर्वक, धीरे धीरे सब [illegible] शब्दों के युद्ध-संवाददाताओं की रिपोर्टें पढ़ना शुरू करता। पढ़ने का भी उसका अपना ही तरीक़ा था जिसे "सक्रिय पाठ" कहा जा सकता है। जिस समय वह किसी रिपोर्ट का कोई अंश जो उसे पसंद आता, पढ़ [illegible] न पाता और वह उठता: "ठीक है," और उस अंश पर निशान लगा देता, कभी वह अचानक चिल्ला उठता "वाह हूँ [illegible]

कमिसार की चारपाई की पाटी पर बैठा स्तेपान इवानोविच यह उत्तर देना चाहता था और बात तर्कसंगत भी थी कि इस समय तो युद्ध पा मास्को के पास ही है और जर्मन लड़कियों तक पहुँचने के लिए तो अभी बहुत रास्ता तय करना होगा, लेकिन कमिसार की आवाज़ में ऐसे सुदृ आत्मविश्वास की गूंज थी कि पुराने योद्धा ने गला साफ करके गम्भीरतापू र्वक उत्तर दिया:

"नहीं, सचमुच, रूसी मे नहीं। लेकिन, फिर भी कामरेड कमिसार तुम्हें जो मुसीबत भोगनी पड़ी है, उसके बाद तो तुम्हें अपनी फिक्र कर चाहिए।"

"मोटा घोड़ा पहले लुढ़के। क्या पहले नहीं सुनी यह कहावत? बुरी सलाह है जो तुम मुझे दे रहे हो, दाढ़ीवाले।"

वार्ड में किसी मरीज़ के दाढ़ी न थी, फिर भी पता नहीं क्यों कमिसार सभी को 'दाढ़ीवाले' कहकर पुकारता था, लेकिन वह जिस ढ से कहता था, उसमें अपमानजनक कोई बात न होती थी, उलटे, उस प्यारे मज़ाक़ से मरीज़ों को राहत महसूस होती थी।

अलेक्सेई लगातार कई दिन तक कमिसार को जाचता रहा और उसकी अनन्त प्रफुल्लता का स्रोत खोजने का प्रयत्न करता रहा। इसमें तो कोई सन्देह नहीं था कि वह भयानक पीड़ा झेल रहा था। ज्यों ही वह सो जा- ता और अपने आप पर काबू खो बैठता, त्यों ही वह कराहने लगता, हाथ- पाँव फेंकने लगता और दांत पीसने लगता और उसका चेहरा भी दर्द से विकृत हो उठता। स्पष्ट था कि इस बात को वह ख़ुद भी जानता था और इसी लिए वह दिन मे न सोने की कोशिश करता और कुछ काम खोज निकालता। जागृत अवस्था मे वह हमेशा शान्त और यहां तक कि सर्वमित्र भी रहता, मानों उसे ज़रा भी दर्द न हो। वह बड़े आराम के साथ अफ़सरों से बातें करता। जब वे उसके चोट खाये अंगों को ठोंक-बजाकर जाच करते तो वह हंसी-मज़ाक़ करने लगता, और सिर्फ़ जिस तरह उसके हाथ चादर को मुट्ठी मे जकड़ लेते और नाक पर जिस प्रकार पसीने की बूंदें झलक आतीं, उसी से यह भांपना सम्भव था कि अपने को क़ाबू मे रखने मे उसे कितनी कठिनाई हो रही है। विमान-चालक यह न समझ पाता कि इतने भयानक दर्द को यह व्यक्ति कैसे दबा लेता है और इतनी शक्ति, इतनी ज़िन्दादिली और इतनी स्फूर्ति कहाँ से जुटा लेता है। अलेक्सेई इस पहेली को हल करने के लिए इसलिए और भी उत्सुक था कि दवा की

व्यक्ति का मन भारी हो गया। स्तेपान इवानोविच कराहता-हांफता चारपाई से उठ बैठा, उसने अपना चोग़ा पहन लिया और अपने बंधे हुए पैरों को घसीटता, चारपाई की पाटी के सहारे अलेक्सेई की चारपाई की तरफ़ बढ़ने लगा, मगर कमिसार ने चेतावनी देने के लिए उंगली से इशारा किया, मानों कह रहा हो, मत छेड़ो, ख़ूब रो लेने दो उसे!"

और सचमुच उसके बाद अलेक्सेई ने अपने को बेहतर महसूस किया। शीघ्र ही वह शान्त हो गया, और जैसे आदमी बहुत दिनों से सतानेवाली समस्या को आख़िरकार हल कर लेने के बाद राहत महसूस करता है वैसी ही राहत भी उसे महसूस होने लगी। शाम तक, जब अर्दली लोग उसे उठाकर आपरेशन कक्ष में न ले गये, तब तक वह एक शब्द भी न बोला। उस चकाचौंध सफ़ेद कमरे में भी वह एक शब्द न बोला। यहां तक कि जब उससे कहा गया कि उसके दिल की हालत के कारण उसे सुलाया नहीं जा सकता और इसलिए स्थल विशेष को चेतनाशून्य करके आपरेशन किया जायेगा तब भी उसने सिर हिलाकर स्वीकृति दी। आपरेशन के दौरान उसने न एक चीख निकाली और न एक कराह। कई बार वसीली वसील्येविच, जो यह सीधा-सादा आपरेशन ख़ुद कर रहे थे और हमेशा की भांति नर्सों और सहकारियों पर गुस्से से गुर्रा रहे थे, बार-बार चिन्तापूर्वक उस सहकारी पर नज़र डालते जो अलेक्सेई की नब्ज़ देख रहा था।

जब हड्डियां रेतकर काटी जाने लगीं तो भयंकर दर्द हुआ, मगर अलेक्सेई अब दर्द सहने का अभ्यस्त हो गया था, और वह यह भी न समझ पा रहा था कि सफ़ेद पोशाकें पहने और सफ़ेद जाली की नक़ाबें चेहरे पर लगाये हुए ये लोग उसके पैरों के साथ क्या कर रहे हैं। लेकिन जब उसे वार्ड में वापस ले जाया जा रहा था, तब वह अचेत हो गया।

जब उसे होश आया तो जो पहली चीज़ उसे देखने को मिली, वह था क्लावदिया मिख़ाइलोव्ना का सहानुभूतिपूर्ण चेहरा। बड़े आश्चर्य की बात थी कि उसे कुछ याद नहीं पड़ रहा था और वह हैरान हो उठा कि इस सुन्दर, दयालुहृदया, सुनहरे बालोंवाली महिला के मुख पर चिन्ता और जिज्ञासा का भाव क्यों है। यह देखकर कि उसने आंखें खोल दी हैं, नर्स का चेहरा खिल उठा और उसने कम्बल के नीचे हाथ डालकर कोमलतापूर्वक उसका हाथ दबाया।

गुप्तचर यह बात बतायी है कि रेजीमेंट को "लाल झण्डे का पदक" प्रदान करने की सिफारिश की गयी है, इवानचुक को एक साथ दो पुरस्कार प्राप्त हुए हैं, यागिन शिकार करने गया था और एक लोमड़ी मारकर लाया जो किसी कारण बिना पूंछ की निकली, लेफ़्टिनेंट रोगोव को फोड़ा हो गया और इस कारण नेनोच्का के साथ उसके प्रेमालाप में खलल पड़ गया—ये सभी खबरें उसके लिए समान रूप से दिलचस्प थीं। एक क्षण को उसका मस्तिष्क उसे जंगल में छिपे हुए और झीलों से घिरे हुए उस हवाई अड्डे पर ले गया जिसकी जमीन भरोसे की न होने के कारण उसे विमान-चालक कोसते रहते हैं, मगर वही इस समय अलेक्सेई को दुनिया का सर्वश्रेष्ठ स्थल लगने लगा।

चिट्ठियों की बातें पढ़ने में वह ऐसा व्यस्त था कि वह न तो उनकी भिन्न-भिन्न तारीखें देख सका और न कमिसार को नर्स की तरफ आंख मारते और कानाफूसी के स्वर में यह कहते देख पाया, "तुम्हारी सारी बारबिटलों और वेरोननों के मुकाबले मेरी दवा बेहतर है।" अलेक्सेई यह कभी न जान सका कि इस असाधारण परिस्थिति को पहले से भांपकर कमिसार ने उसे कुछ पत्र देने से रोक लिये थे, ताकि अपने प्यारे हवाई अड्डे से प्राप्त इन मैत्रीपूर्ण संदेशों और समाचारों को पढ़ाकर इस प्रचण्ड आघात की वेदना को कम किया जा सके। कमिसार पुराना सिपाही था। वह जल्दबाजी और असावधानी से लिखे गये इन कागज के टुकड़ों का मूल्य जानता था। ये मोर्चे पर कभी-कभी दवाओं और रोटियों से भी अधिक मूल्यवान सिद्ध होते हैं।

अन्द्रेई देगत्यरेन्को के पत्र में, जो खुद उसी की तरह सीधा-सादा और रूखा था, बारीक घुंघराली लिखावट में लिखा गया और विस्मय-सूचक चिह्नों से भरपूर, छोटा-सा पुरज़ा था। वह यों था:

"कामरेड सीनियर लेफ़्टीनेंट! यह बहुत बुरी बात है कि आपने अपना वायदा नहीं पूरा किया!!! रेजीमेंट में आपको बड़ा याद किया जाता है, मैं झूठ नहीं कह रही हूँ, वे लोग बातें करते हैं तो आपके बारे में। अभी थोड़ी देर पहले रेजीमेंटल कमांडर ने मैस में कहा था, 'हां, अलेक्सेई मेरेस्येव, आदमी तो वही है!!!' आप खुद जानते हैं कि वह सबसे उत्तम आदमी के बारे में ही ऐसा कहता है। जल्दी लौट आइये, हर आदमी आपका इंतजार कर रहा है!!! मैस की भारी-भरकम ल्योल्या मुझसे यह लिखने को कह रही है कि वह आपसे अब ज़रा भी झगड़ा

है; उष्ण धरती, ताजी नमी और धोड़ों की लीद की गंध फैल गयी है। एक ऐसे ही दिन वह और ग्रोल्या वोल्गा के ऊँचे कगार पर खड़े थे और उनके पास से नदी के अनन्त प्रसार में सहज भाव से तैरती हुई बर्फ़ बही चली जा रही थी, गम्भीर मौन के बीच, जो सवा पक्षी की घंटी जैसी, मधुर स्वर-लहरी से ही कभी-कभी भंग हो जाता था। और ऐसा महसूस होता था कि धारा के साथ बर्फ़ नहीं, वह और ग्रोल्या ही तैर रहे हैं और नीरवतापूर्वक तैरते-उतराते किसी तूफ़ानी, सर्पाकार नदी में मिलने बढ़े जा रहे हैं। वे वहाँ मौन खड़े थे, भविष्य के सुख के सपनों में इस तरह मग्न कि उस स्थान पर जहाँ सामने वोल्गा का सुविस्तृत प्रसार था और वसंती पवन के झोंके उन्मुक्त रूप में बह रहे थे, उन्हें साँस लेने के लिए भी हवा कम पड़ रही थी। वे सपने अब कभी सच न होंगे। वह उससे विमुख हो जायेगी। और अगर न भी हो, तो क्या वह इतनी कुर्बानी स्वीकार कर सकता है, क्या वह यह सहन कर सकता है कि जब वह ठूठ जैसे पांवों के बल घसिटता चले तो उसके साथ बगल में हो वह शोख, सुन्दर और सुकोमल युवती?.. और उसने नर्स से प्रार्थना की कि उसकी चारपाई के पास से वसन्त के इन नादान दूतों को हटा दे।

बेंत की टहनियाँ हटा दी गयी, लेकिन वह अपनी कटु स्मृतियों से इतनी आसानी से छुटकारा न पा सका, अगर ग्रोल्या को पता चल गया कि उसके पैर कट गये है तो वह क्या सोचेगी? क्या वह उसे त्याग देगी, अपने जीवन से बहिष्कृत कर देगी? नहीं! वह इस तरह की नहीं है। वह उसे ठुकरायेगी नहीं, उससे मुख न मोड़ेगी! लेकिन यह तो और भी बुरी बात होगी। उसने अपनी आँखों के सामने चित्र बनाया कि अपने उदात्त हृदय की प्रेरणावश ग्रोल्या ने उससे विवाह कर लिया है, एक पंगु से विवाह कर लिया है और उसकी खातिर उसने इंजीनियरी की शिक्षा प्राप्त करने का सपना त्याग दिया है, और स्वयं अपना, अपने पंगु पति का, और क्या जाने, शायद बच्चों तक का भरण-पोषण करने के लिए दफ़्तर के कोल्हू में अपने आपको जोत चुकी है।

इतनी कुर्बानी स्वीकार करने का क्या उसको अधिकार है? वे अभी एक दूसरे से बंधे नहीं हैं, उनकी सिर्फ़ सगाई हुई है, लेकिन वे अभी पति-पत्नी नहीं हैं। वह उसे प्यार करता है, दिल से प्यार करता है, और इसलिए उसने निश्चय किया कि उसे ऐसा करने का कोई अधिकार नहीं

है, उसे खुद ही फौरन, एकबारगी, आपसी सम्बन्ध तोड़ लेना चाहिए, ताकि वह उसे न केवल कठिन भविष्य से बचा सके, वरन् अंतर्द्वंद्व की यातना से भी मुक्त कर सके।

लेकिन इसी समय पत्र आ पहुँचे जिनपर कमीशिन की डाक मुहर थी और इससे उसके ये सारे संकल्प अस्त-व्यस्त हो गये। एक पत्र ओल्गा का था और हर पंक्ति में चिन्ता झलकती थी। मानों किसी विपत्ति की भविष्यवाणी से व्यथित होकर उसने लिखा था कि उसे चाहे कुछ हो जाये, वह सदा उसी के साथ रहेगी; वह सिर्फ उसी के लिए जीवित है, हर क्षण वह अलेक्सेई का ही चिन्तन करती है। इसी चिन्तन से उसे युद्ध-काल की सारी कठिनाइयाँ सहने, मिल की निद्राविहीन रातें काटने, छुट्टी के दिनों और रातों में खाइयाँ और टैंक-रोक खदकें खोदने, और क्यों छिपाया जाये, अधभूखे पेट जिन्दगी बिताने में सहायता मिलती है। "तुमने जो अंतिम फोटो भेजा था—कुत्ते के साथ पेड़ के नीचे बैठे हुए और मुसकराते हुए—वह सदा मेरे साथ रहता है। मैंने उसे माँ के लाकेट में रख लिया है और सदा गले में पहने रहती हूँ। जब मैं अनमना महसूस करती हूँ तो मैं लाकेट खोलती हूँ और तुम्हें देख लेती हूँ .. मेरा विश्वास है कि जब तक हम एक दूसरे को प्यार करते रहेंगे, तब तक किसी चीज से भय खाने की आवश्यकता नहीं।" उसने यह भी लिखा था कि इधर कुछ दिनों से अलेक्सेई की माँ बड़ी चिन्तित रहती है और उसने फिर अनुरोध किया था कि बुढ़िया को और जल्दी-जल्दी पत्र लिखा करो, लेकिन कोई बुरी खबर देकर उसे दुखी मत करना।

घर से पत्र प्राप्त करना सदा आनन्द का अवसर होता था। इसी से उसके हृदय को लड़ाई के मोर्चे की जिन्दगी की कठिनाइयों के बीच एक दीर्घ काल तक शान्ति प्राप्त होती रही। लेकिन अब, पहली बार, उसे कोई आनन्द नहीं प्राप्त हुआ। उनसे उसका हृदय और बोझिल हो गया और यही उसने ऐसी ग़लती कर डाली जिससे उसे बाद में इतनी यातना सहन करनी पड़ी: वह घर को यह लिखने का साहस न कर सका कि उसके पैर काट दिये गये हैं।

वह अपने दुर्भाग्य के विषय में विस्तारपूर्वक किसी को लिख सका तो मौसम पर्यवेक्षण केन्द्र की उस लड़की को। वे मुश्किल से ही परिचित थे और इसलिए उसको इन चीजों के बारे में लिखना आसान था। उसका नाम न जानने के कारण उसने पत्र पर यों पता लिखा: "फील्ड पोस्ट

वह जानता था कि मोर्चे पर चिट्ठियों को क्या महत्त्व दिया जाता है, इसलिए देर-सवेर इस अजीब पते पर भी यह पत्र पहुँच ही जायेगा। और अगर न भी पहुँचे, तो कोई बात नहीं; वह सिर्फ़ अपनी भावनाओं को व्यक्त करना चाहता था।

अस्पताल में अलेक्सेई मेरेस्येव ने अपने दिन बड़े कटु चिन्तन में काटे। और यद्यपि उसके फ़ौलादी जिस्म ने कुशलतापूर्वक किये गये अंग-विच्छेद को आसानी से सहन कर लिया था और घाव भी जल्दी भर गये थे, फिर भी वह स्पष्ट रूप में निर्बलतर हो गया था और इसकी रोकथाम के लिए तमाम उपाय किये जाने के बावजूद हर व्यक्ति देख रहा था कि वह घुनता जा रहा है और दिन-प्रतिदिन क्षीण होता जा रहा है।

७

और बाहर वसंत लहरा रहा था।

वह इस वार्ड नम्बर बयालीस में, इस कमरे में, भी घुस आया था जिसमें आइडोफ़ार्म की गंध छायी रहती थी। वह खिड़की से होकर आया और अपने साथ लाया पिघलती हुई बर्फ़ की नम सांस, गोरैयों की उत्तेजनापूर्ण चहक, मोड़ पर मुड़ती हुई ट्रामों की गूंजती हुई घरघराहट, बर्फ़ से मुक्त तारकोली सड़क पर पैरों की प्रतिध्वनि और शाम को किसी अकार्डियन की मंद-मंद एकरस स्वर-लहरी। वह बगल की खिड़की से झांक उठा, जिसमें से पोपलर के वृक्ष की धूप से आलोकित एक शाखा दिखाई देती थी जिस पर पीली-सी गोंद से ढकी लम्बी-लम्बी कलियां फूल रही थीं। वसंत आया तो क्लावदिया मिखाइलोव्ना के पीले-से, उदार चेहरे पर सुनहरी झाइयां बनकर, जो हर तरह के पाउडर की अवहेलना कर देती थीं और नर्स को कोई कम परेशान न करती थीं। वह खिड़कियों के बाहर टीन से ढंकी देहरी पर नमी की भारी बूंदें टपकाकर उल्लासपूर्वक ताल देता हुआ सबका ध्यान बराबर आकर्षित करता था।

सदा की भांति वसंत ने दिलों को मुलायम कर दिया और यादों को उकसा दिया।

"काश! ऐसे में किसी वनस्थली में बंदूक लिये बैठे होते तो कितना बड़ा अच्छा! क्यों स्तेपान इवानोविच?" भावनापूर्वक कमिसार ने स्तेपा-

आविष्कार स्तेपान इवानोविच ने किया था। उसके लिए निठल्ले बैठना सम्भव नहीं था और वह अपने कमज़ोर और बेचैन हाथों से कुछ न कुछ किया ही करता था। एक दिन उसने सुझाव दिया कि भोजन के बाद बचे हुए टुकड़ों को चिड़ियों के वास्ते खिड़की की देहरी पर बिखर दिया जाये। यह भी एक रिवाज बन गया और अब सिर्फ बचे-खुचे भोजन को ही वे खिड़की से बाहर न फेंकते, बल्कि वे जानबूझकर रोटियों के टुकड़े छोड़ देते और उन्हें मसलकर चूरा बना लेते ताकि, जैसा कि स्तेपान इवानोविच ने अभिव्यक्त किया था, गौरैयों का पूरा गिरोह "राशन की सूची में" शामिल हो सके। वे छोटे-छोटे, शोर मचानेवाले जीव किसी बड़े टुकड़े पर चोंच मारने, चहचहाने और आपस में झगड़ने, और खिड़की की देहरी साफ करने के बाद पोपलर की शाखाओं पर आसन जमा लेते और चोंच से अपने पंख साफ करने और फिर पंख झाड़कर अपने-अपने कारोबार सभालने उड़ जाते। यह सब देखकर वार्ड के निवासियों को असीम आनन्द प्राप्त होता। ये मरीज़ कुछ चिड़ियों को पहचानने लगे और कुछेक को उन्होंने नाम भी दे दिये। इनमें सबसे प्रिय थी एक पूंछ-कटी, लापरवाह, फुर्तीली चिड़िया जिसने शायद अपनी झगड़ालू आदत की वजह से अपनी पूंछ खो दी थी। स्तेपान इवानोविच ने इसका नाम 'टामी गनर' रख दिया था।

यह दिलचस्प बात है कि इस शोरगुल मचानेवाले जीवों के साथ मनोरंजन का कार्यक्रम ही था कि जिसने टैंक-चालक को मौन स्थिति से उबार लिया। जब उसने पहली बार स्तेपान इवानोविच को बैसाखियों के सहारे उठने और खुली खिड़की तक पहुंचने के लिए हीटिंग नलियों के ऊपर चढ़ने की कोशिश करने में लगभग दुहरे हो जाते देखा, तो वह उसे बड़ी उदासीनता और बिना किसी तरह की दिलचस्पी के ताकता रहा। लेकिन अगले दिन जब गौरैयां उड़ती हुई खिड़की पर आयी, तो वह इन नन्हें-से चंचल जीवों का दृश्य भली-भांति देखने के लिए चारपाई पर उठकर बैठ तक गया, हालांकि वह दर्द से तिलमिला उठा। अगले दिन तो उसने अपने भोजन में से रोटी का अच्छा-खासा टुकड़ा बचा लिया—स्पष्ट ही यह सोचकर कि उन उपद्रवी भिक्षुकों को अस्पताली भोजन के ये टुकड़े विशेष रूप से पसन्द आयेंगे। एक दिन 'टामी गनर' नहीं आयी और कुकुश्किन ने अनुमान लगाया कि किसी बिल्ली ने उसे चटकर लिया है, और यह बात उसे जच गयी। उदासीन टैंक-चालक इसपर आग-बबूला हो गया और

अधिक उसको-परेशान महसूस होता। लेकिन एक दिन कलावदिया मिखा-इलोव्ना दरवाज़े पर प्रकट हुई तो उसका चेहरा हमेशा से भी अधिक प्रफुल्ल था। कमिसार की तरफ से आँखें दूर रखने की कोशिश करते हुए उसने शीघ्रतापूर्वक कहा.

"अच्छा तो, आज कौन नाचनेवाला है?"

उसने टैंक-चालक की चारपाई पर नज़र डाली और उसके उदार चेहरे पर व्यापक मुस्कान की आभा फैल गयी। सभी ने अनुभव किया कि कोई असाधारण बात हो गयी है। वार्ड में उत्सुकतापूर्ण सन्नाटा छा गया

"लेफ्टीनेंट ग्वोज़्देव, आज आपके नाचने की बारी है। अच्छा, अब उठ तो बैठो।"

मेरेस्येव ने देखा कि ग्वोज़्देव चौंक उठा और उसने तेज़ी में गर्दन मा-ड़ी, और उसने पट्टियों की दरारों में उसकी आँखें कौंधती देखीं। लेकिन ग्वोज़्देव ने तुरन्त अपने को संभाल लिया और काँपती हुई आवाज़ में बोला, जिसमें उसने उपेक्षा का भाव भरने का प्रयत्न किया

"कोई ग़लती हो गयी है। अगले वार्ड में कोई और ग्वोज़्देव होगा," लेकिन उसकी आँखें उत्सुकता से लालसापूर्वक उन तीन चिट्ठियों को निहार रही थीं, जिन्हें झण्डे की तरह नर्स ऊँचा उठाये हुए थी।

"नहीं! कोई ग़लती नहीं है," नर्स ने कहा। "देखो! लेफ्टीनेंट जी. एम. ग्वोज़्देव और वार्ड का नम्बर भी लिखा है बयालीस! अब बोलो?"

पट्टियों में लिपटा हुआ एक हाथ कम्बल के नीचे से झपटा। लेफ्टीनेंट ने एक लिफ़ाफ़े को दाँतों से पकड़कर अपने हाथ से नोंच-नोचकर खोल लिया। उत्तेजना से उसकी आँखें दमकने लगीं। आश्चर्य था, तीन युवती सहेलियों ने, जो एक ही विश्वविद्यालय में डाक्टरी की एक ही कक्षा की छात्राएँ थीं, भिन्न-भिन्न लिखावट और भिन्न-भिन्न भाषा में लगभग एक ही बात लिखी थी। यह समाचार सुनकर कि वीर टैंक-चालक ग्वोज़्देव घायल स्थिति में मास्को में पड़ा है, उन्होंने उसके साथ पत्र-व्यवहार करने का फ़ैसला किया था। उन्होंने लिखा था कि अगर उनका आग्रह लेफ्टी-नेंट को बुरा न लगे तो क्या वह उन्हें पत्र न लिखेगा और यह न बतायेगा कि उसकी हालत कैसी चल रही है: और उनमें से एक ने, जिसने अपना नाम अन्यूता लिखा था, पूछा था कि क्या वह किसी रूप में उसकी सहा-यता कर सकती है, क्या उसे अच्छी किताबें चाहिए, और अगर उसे कि-

कर दे।

सारे दिन लेफ्टीनेंट उन्हीं पत्रों को बार-बार उलटता-पलटता रहा, उनके पते पढ़ता रहा और लिखावट की परीक्षा करता रहा। वास्तव में वह जानता था कि इस तरह का पत्र-व्यवहार तो चलता ही रहता है, और एक बार स्वयं उसने भी एक अपरिचित से पत्र-व्यवहार चलाया था जिसके हाथ का लिखा स्नेह-संदेश उसे एक ऊनी दस्तानों के जोड़े में पड़ा मिला था, जो उसे त्यौहार के उपहार के रूप में प्राप्त हुए थे। लेकिन जब उसके साथ पत्र-व्यवहार करनेवाली ने पुरमजाक चिट्ठी के साथ स्वयं अपना—वह एक प्रौढ़ा थी—और अपने चार बच्चों का चित्र भेज दिया था तो उसके बाद वह पत्र-व्यवहार अपने आप समाप्त हो गया था। लेकिन यह पत्र-व्यवहार भिन्न प्रकार का था। उसे हैरानी और अचरज सिर्फ़ इस बात से था कि इन पत्रों का आगमन अप्रत्याशित था, और वे एक ही साथ आये थे। वह एक और बात भी नहीं समझ पा रहा था: इन मेडिकल छात्राओं को उसके युद्ध-सम्बन्धी कामों के बारे में जानकारी कैसे प्राप्त हुई? सारा वार्ड इसपर आश्चर्य प्रकट कर रहा था और सबसे अधिक वह कमिसार। लेकिन जिस अर्थपूर्ण ढंग से स्तेपान इवानोविच और नर्स के साथ कमिसार आँखें मिला रहा था, उन नज़रों को मेरेस्येव ने पकड़ लिया और वह समझ गया कि इस में कमिसार का ही हाथ है।

जो भी हो, अगले दिन सुबह ग्वोज्देव ने कमिसार से कुछ काग़ज़ माँगा और इजाज़त का इंतज़ार किये बिना उसने अपने दाहिने हाथ की पट्टियाँ खोल डालीं और शाम तक लिखता रहा—कभी पंक्तियाँ काट देता, कभी कागज़ मरोड़कर फेंक देता और कभी फिर नयी पंक्ति लिखता और इस प्रकार, अन्ततः, उसने अपने अपरिचित पत्र-प्रेषकों के नाम उत्तर रच ही डाले।

दो लड़कियों ने पत्र लिखना शीघ्र ही बंद कर दिया, किन्तु सहृदय अन्यूता तीनों के लिए लिखती रही। ग्वोज्देव खुले दिल का आदमी था और अब सारे वार्ड को मालूम होने लगा कि विश्वविद्यालय के चिकित्सा विभाग की तृतीय वर्ष की कक्षा में क्या हो रहा है, प्राणिविज्ञान कितना रोचक विषय है, लेकिन अजैविक रसायन विज्ञान कितना नीरस विषय है, प्रोफ़ेसर की आवाज़ कितनी बढ़िया है और कितनी अच्छी तरह वह अपना विषय प्रस्तुत करता है, क्या-क्या अध्यापक

से कुरुश्किन और ग्वोल्देव को उनके जवाब लिखाता। एक दिन किसी चिकित्सा के बाद मेरेस्येव ऊंघ रहा था, तभी वह कमिसार की आवाज़ की गरज से चौंक गया।

उनके सिरहाने तारों से बनी चौकी पर उनके डिवीज़न के अख़बार की एक प्रति पड़ी थी, जिसपर यद्यपि इस आदेश की मुहर लगी थी: "यूनिट से बाहर ले जाना वर्जित है," फिर भी कोई व्यक्ति उसे बराबर कमिसार के पास भेज देता था।

"रक्षात्मक रहते-रहते क्या वे लोग पागल हो गये हैं या कुछ और?" वह गरज उठा, "ऋबत्सोव नौकरशाह बन गया? फ़ौज का सर्वोत्तम पशुचिकित्सक और नौकरशाह? क्लिमोरी! लो, फ़ौरन लिख डालो।"

और उसने ग्वोल्देव से फ़ौजी कौंसिल के एक सदस्य के नाम एक क्रोधपूर्ण पत्र लिखवाया और अनुरोध किया कि इस "अख़बारवाले" पर लगाम लगायी जाये जिसने एक बढ़िया और उत्साही अफ़सर पर अनुचित आक्षेप लगाये। यह पत्र डाक में रवाना करने के लिए नर्स को देने के बाद भी वह "ऐसे पत्रकारों" को झिड़कता रहा, और एक ऐसे व्यक्ति के मुंह से, जो तकिये पर अपना सिर भी नहीं घुमा पाता था, इतने भावावेशपूर्ण शब्द सुनकर हैरानी होती थी।

उस शाम एक और भी विलक्षण घटना हुई। उन नीरव घड़ियों में, जब कमरे के कोनों में साये गहरे होने लगे थे और अभी रोशनियां जलायी न गयी थीं, तब स्तेपान इवानोविच खिड़की के पास बैठा, विचारों में खोया हुआ दूर किनारे की ओर ताक रहा था। जीन के लबादे पहने हुए कुछ औरतें नदी पर बर्फ़ काट रही थीं। वे बर्फ़ में चौकोर, स्याह छेद के किनारों पर लोहे की छड़ें लगाकर बर्फ़ की बड़ी-बड़ी पट्टियां उखाड़ रही थीं, इन पट्टियों को वे छड़ों की दो-एक चोट से तोड़ लेती थीं और फिर अंकुड़ों की सहायता से इन टुकड़ों को लकड़ी के तख़्तों के ऊपर घसीटकर पानी से बाहर निकाल लेती थीं। बर्फ़ के ये टुकड़े–नीचे की तरफ़ हरे-हरे पारदर्शी और ऊपर की तरफ़ पीले और कटे-फटे–पातों में रखे थे। बर्फ़ पर चलनेवाली स्लेज गाड़ियों की एक लम्बी क़तार, एक दूसरे से बंधी हुई, नदी के किनारे-किनारे उस जगह आ रही थी, जहां बर्फ़ कट रही थी। एक बूढ़ा जो कनटोपी, रूई-भरी पतलून और उसी तरह का कोट कमर पर पेटी कसे पहने हुए था, जिससे एक कुल्हाड़ी लटक रही

रास काट दो!" कमिसार चिल्लाया, मानो नदी तट पर खड़ा
उसकी आवाज सुन ही लेगा।

स्तेपान इवानोविच ने अपने हाथों का भोंपू बनाया और रोशनदान में मे चीखकर उसने कमिसार की सलाह सड़क के पार भेजी, "ए! बुड्ढ़े! रासें काट दो। तुम्हारी कमर की पेटी में कुल्हाड़ी बंधी है–रासें काट दो और घोड़े को छोड़ दो!"

बूढ़े ने यह आवाज़ सुन ली जो उसे किसी आकाशवाणी की सलाह मालूम हुई। उसने अपनी पेटी से कुल्हाड़ी खींच ली और दो चोटों से रासें काट दी। जुए से छुटकारा पाकर घोड़ा फौरन बर्फ़ पर चढ़ गया, बर्फ़ में बने छेद से दूर जा खड़ा हुआ और हांफता हुआ कुत्ते की भांति कांपता रहा।

"यह क्या हो रहा है?" इसी क्षण एक आवाज़ ने सवाल किया। वसीली वसील्येविच अपने बटन-खुले लबादे में और सिर पर टोपी बिना, जिसे वे अक्सर पहने रहते थे, दरवाज़े पर खड़े थे। वे आग-बबूला हो उठे, पैर पटकने लगे और कोई सफ़ाई सुनने के लिए तैयार न थे। वे बोले कि वार्ड भर पागल हो गया है; वे एक-एक को यहाँ से जहन्नुम भेज देंगे, और बिना यह पता लगाये कि क्या हुआ है, वे हांफते हुए और हर एक को झिड़कते हुए बाहर निकल गये। थोड़ी देर बाद क्लावदिया मिख़ाइलोव्ना ने प्रवेश किया–चेहरा आंसुओं से तर था और वह बड़ी ही परेशान दिखाई दे रही थी। वसीली वसील्येविच ने उसे अभी बड़ी फटकार सुनायी थी, मगर उसकी नज़र कमिसार के स्याह और निर्जीव चेहरे पर पड़ते ही, जो आंखें बंद किये गतिहीन लेटा हुआ था, वह उसकी तरफ़ दौड़ पड़ी।

शाम को कमिसार की हालत बहुत बुरी हो गयी। उन्होंने उसे कैम्फ़र का इंजेक्शन दिया, ऑक्सीजन दिया, मगर वह बड़ी देर तक अचेत पड़ा रहा। मगर जब उसे होश आया तो उसने क्लावदिया मिख़ाइलोव्ना की तरफ़ देखकर मुसकराने की कोशिश की जो ऑक्सीजन का थैला लिये उसके ऊपर झुकी खड़ी थी, और मज़ाक करने लगा।

"नर्स, फ़िक्र न करना, मैं जहन्नुम में भी वह चीज़ लेकर लौट आऊँगा जिसको जिन्न अपनी झाइयाँ दूर करने के लिए इस्तेमाल करते हैं।"

अपनी व्याधि से जूझते हुए यह भारी-भरकम, शक्तिशाली व्यक्ति जिस प्रकार दिन प्रतिदिन क्षीणतर होता जा रहा था, यह देखा न जाता था।

और वह स्तेपी मैदान के ऊपर धीरे-धीरे फिसलती हुई स्तालिनग्राद की तरफ़ बढ़ी जा रही थी।

उसी क्षण से हवाबाज़ बनने का स्वप्न उसे कभी नहीं छोड़ सका। स्कूल में पढ़ते समय और बाद में लेथ पर काम करते समय उसके मस्तिष्क में यही सपना रहता था। रात में जब सब लोग सो जाते थे, तब वह और प्रसिद्ध हवाबाज़ ल्यापिदेव्स्की, चेल्यूस्किन के अनुसंधान-यात्रियों को खोज निकालते और बचा लेते, वोदोप्यानोव के साथ वह उत्तरी ध्रुव की सख़्त बर्फ़ के ऊपर भारी हवाई जहाज़ उतारता तथा च्कालोव के साथ उत्तरी ध्रुव होकर अमरीका तक पहुँचने का अज्ञात रास्ता निकाल लेता।

युवक कम्युनिस्ट लीग ने उसे सुदूर पूर्व भेजा और वहाँ ताइगा में उसने युवकों के नगर कोम्सोमोल्स्क-आन-अमूर के निर्माण में भाग लिया किन्तु उस सुदूर स्थान तक भी वह विमान-संचालन का अपना सपना साथ लिये गया। नगर के निर्माणकर्त्ताओं में उसे अपनी ही तरह के अनेक युवक-युवतियां मिले जो विमान-चालक के गौरवशाली पेशे मे प्रवेश करने का स्वप्न देख रहे थे, और यद्यपि उस नगर मे, जिसका अस्तित्व अभी सिर्फ़ नक़्शे पर ही था, यह विश्वास करना कठिन था, फिर भी उन्होंने अपने हाथों से अपने उड्डयन क्लब के लिए एक हवाई अड्डा तैयार किया था। जब शाम आती और विस्तृत निर्माणक्षेत्र कुहरे से ढंक जाता, तो सारे निर्माणकर्त्ता अपनी बैरकों मे घुस जाते, खिड़कियाँ बन्द कर लेते और दरवाज़े के बाहर नम टहनियां जलाते, ताकि उसके धुएं से डास-मच्छरों के झुण्ड भगाये जा सकें जिनकी मनहूस और ज़ोरदार भन-भन से सारा वातावरण भर जाता। उसी क्षण, जब सारे निर्माणकर्त्ता दिन के परिश्रम से चूर होकर आराम करते, तब अलेक्सेई की अगुआई मे उड्डयन क्लब के सदस्य अपने शरीरों पर मिट्टी का तेल मलकर—समझा जाता था कि इससे डास-मच्छर दूर रहते हैं—कुल्हाड़ियां, गेंतियां, आरियाँ, खुरपियाँ और विस्फोटक लेकर ताइगा मे चले जाते थे और वहाँ वे पेड़ गिराते, ठूँठों को उड़ा देते, ज़मीन को समतल बनाते ताकि हवाई अड्डे के लिए ताइगा से कुछ ज़मीन निकाल सकें। और अपने ही हाथों से अछूते जंगलों को साफ कर उन्होंने अपने हवाई अड्डे के लिए कई किलोमीटर भूमि जीत ली।

यही अड्डा था जहाँ से पहली बार अलेक्सेई ने एक प्रशिक्षण विमान मे चढ़कर हवा मे उड़ान भरी थी और आखिरकार अपने बचपन के सपने को सफल बना पाया था।

बाद में वह फौजी उड्डयन स्कूल में गया और इस कला में पारंगत बन गया तथा अनेक नवागतों को सिखाने लगा। जब युद्ध छिड़ा, तब वह इसी स्कूल में था। स्कूल अधिकारियों के विरोध के बावजूद उसने शिक्षक का पद त्याग दिया और सक्रिय सैनिक के रूप में फौज में शामिल हो गया। उसके जीवन के सारे लक्ष्य, भविष्य के लिए उसकी सारी योजनाएँ, आनन्द और दिलचस्पियाँ और वास्तविक रूप में प्राप्त सफलताएँ, सभी उड्डयन विद्या से बंधी थी. .

और ये लोग उससे विल्यम्स की बातें करते हैं।

"लेकिन विल्यम्स तो हवाबाज़ नहीं था," अलेक्सेई ने कहा और दीवार की ओर मुंह फेर लिया।

लेकिन उसके मन की "गांठें खोलने" के लिए कमिसार ने अपने प्रयत्न जारी रखे। एक दिन, जब अलेक्सेई हमेशा की तरह अपने चारों ओर की दुनिया से उदासीन पड़ा था, उसने कमिसार को यह कहते सुना:

"अलेक्सेई, पढ़ो तो इसे। यह तुम्हारे बारे में है।"

कमिसार जो पत्रिका पढ़ रहा था, उसे मेरेस्येव को देने के लिए स्तेपान इवानोविच झपट पड़ा। उसमें एक छोटा-सा लेख था जिसपर पेंसिल से निशान बना था। अलेक्सेई ने अपना नाम खोजने के लिए लेख को ऊपर से नीचे तक छान डाला, मगर कहीं न मिला। यह लेख प्रथम युद्धकाल के एक रूसी हवाबाज़ के बारे में था। पत्रिका के पृष्ठ में से एक अज्ञात युवक अफ़सर का चेहरा उसकी ओर घूर रहा था—उस चेहरे पर पैनी ऐंठी हुई छोटी मूछें थी और सिर पर चालक की टोपी, जिसमें सफ़ेद बिल्ला लगा हुआ था, कान को छू रही थी।

"पढ़ लो, पढ़ डालो, यह तुम्हारे लिए ही लिखा गया है," कमिसार ने अनुरोध किया।

मेरेस्येव ने लेख पढ़ डाला। वह एक रूसी फौजी विमान-चालक, लेफ़्टीनेंट वलेरियान अरकादियेविच कर्पोविच के विषय में था, जिसके पैर में शत्रु की पांतों पर उड़ते समय एक जर्मन डमडम गोली लग गयी थी। पैर का कचूमर निकल जाने के बावजूद वह अपने 'फ़रमान' विमान को शत्रु की पांतों से निकाल लाया और अपने अड्डे पर उतर आया। पैर कट चुका था, मगर युवक अफ़सर को फौज से रिटायर होने की कोई इच्छा न थी। उसने अपने ही डिज़ाइन के अनुसार एक कृत्रिम पैर बनवाया। दीर्घकाल तक और धैर्यपूर्वक वह जिमनास्टिक करता रहा और अपने को अभ्यस्त करता रहा, जिसके फलस्वरूप वह युद्ध के अंतिम दिनों में फिर अपने काम पर वापस लौट आया। वह एक फौजी उड्डयन स्कूल में निरीक्षक नियुक्त कर दिया गया और जैसा कि लेख में बताया गया था, "कभी-कभी वह अपने विमान में उड़ान करने का ख़तरा मोल लिया करता था।" उसे अफ़सरोंवाला सेंट जार्ज क्रास का पुरस्कार दिया गया और अपनी मृत्यु तक —जो विमान के गिरकर चूर हो जाने के कारण हुई —वह रूसी वायुसेना की सफलतापूर्वक सेवा करता रहा।

पीजता हन्ने-से कराह भर उठता था। लेकिन अलेक्सेई को कुछ न सुनाई दे रहा था। बार-बार अपने तकिये के नीचे से वह पत्रिका निकाल लेता और नाइट-लैम्प की रोशनी में लेफ़्टीनेंट के मुसकराते हुए चेहरे की तरफ देखने लगता और मानो उससे बातें कर रहा हो, इस भाव से बुदबुदा उठता: "तुम्हारी मुसीबत थी, मगर तुम निभा ले गये। मेरी तो दस गुना अधिक है, मगर मैं भी निभा लूंगा, तुम देख लेना!"

आधी रात को यकायक कमिसार बिल्कुल शान्त हो गया। अलेक्सेई कुहनी के बल उठा और उसने कमिसार को पीला और ठंडा पडा देखा, मानो वह साम भी न ले रहा हो। उसने उन्मत्त भाव से घंटी बजा दी। क्लावदिया मिखाइलोव्ना वार्ड में दौडी हुई आयी – नंगे सिर, उनींदी आँखें और पीठ पर उसकी लटें लटकी हुईं। कुछ क्षण बाद हाउस सर्जन भी बुलाया गया। उसने कमिसार की नब्ज़ देखी, उसे कैम्फर का इंजेक्शन दिया और ऑक्सीजन के थैले की टोंटी उसके मुँह से लगा दी। सर्जन और नर्स कोई एक घंटे तक मरीज़ से जूझते रहे और ऐसा लगता था मानो परिश्रम व्यर्थ हो रहा था। आख़िरकार कमिसार ने आँखें खोलीं, वह क्लावदिया मिखाइलोव्ना की ओर देखकर आहिस्ते से, लगभग अगोचर रूप में मुस्कराया और धीमे से बोला

"खेद है, मैंने तुम्हें व्यर्थ ही कष्ट दिया। मैं नरक तक नहीं पहुँच पाया और तुम्हारी झाड़ियों की दवा न ला पाया। इसलिए, प्रिये, अभी तो तुम्हें ये बरदाश्त करनी पड़ेंगी। कुछ नहीं किया जा सकता।"

यह मज़ाक सुनकर हर व्यक्ति ने सतोष की साँस ली। यह व्यक्ति मज़बूत बलूत वृक्ष के समान है, जो किसी भी आंधी-तूफ़ान का सामना कर सकता है। हाउस सर्जन चला गया, उसके जूतों की चरमराहट गलियारे में धीरे-धीरे खो गयी, वार्ड परिचारिकाएँ भी चली गयीं और सिर्फ क्लावदिया मिखाइलोव्ना रह गयी जो कमिसार की चारपाई की पाटी पर बैठी थी। मरीज़ फिर सो गये सिर्फ मेरेस्येव को छोडकर, जो आँखें बंद किये पड़ा था और कल्पना कर रहा था कि उसके हवाई जहाज़ के पैडलों के साथ बनावटी पाँव लगाये जा सकते हैं, चाहे, फिर उन्हें तस्मों से ही क्यों न बाँधना पड़े। उसे याद पड़ा कि जब वह उड्डयन क्लब में था, तब शिक्षक ने गृह-युद्ध काल के एक हवाबाज़ की चर्चा की थी, जिसकी टाँगें छोटी थीं और इसलिए उसने अपने हवाई जहाज़ के पैडलों में लकड़ी के साँचे लगा लिये थे, ताकि उसके पैर वहाँ तक पहुँच सकें।

"मैं तुमसे पीछे नहीं रहूँगा, भाई," वह क्पोविच को विश्वास दिलाता रहा। और "मैं उड़ूँगा, मैं उड़ूँगा," ये शब्द मस्तिष्क में बराबर गूंजते और गाते रहे, और उसकी नींद भगाते रहे। वह अपनी आँखें बन्द किये खामोश पड़ा रहा। उसे देखकर यही भ्रम होता कि वह सो गया है और नींद में मुसकरा रहा है।

और इस प्रकार लेटे-लेटे उसने एक वार्तालाप सुना, जिसे बाद में वह अपने जीवन की कठिन घड़ियों में अनेक बार स्मरण करता रहा।

"ओह, मगर तुम इस तरह व्यवहार क्यों करते हो? जब तुम्हें इतना दर्द सता रहा है, तब इस तरह तुम्हारा हंसना और मज़ाक़ करना कितना भयानक है। तुम कैसी यंत्रणा भोग रहे हो, यह देखकर मेरा दिल बैठ जाता है। तुम अलग वार्ड में जाने से इनकार क्यों करते हो?"

ऐसा लगता था मानों यह उदार और सुन्दर, मगर ऊपर से रागअनुरागविहीन दिखाई देनेवाली नर्स क्लावदिया मिख़ाइलोवना नहीं, एक नारी बोल रही है—उत्तेजित और अप्रसन्न, उसके स्वर से वेदना टपक रही थी और शायद कोई और भाव भी। मेरेस्येव ने आंख खोली। नाइट-लैम्प की रोशनी में, जिसपर रुमाल पड़ा था, उसने तकिये पर कमिसार का पीला और सूजा हुआ चेहरा और सुहृदय चमकती हुई आँखें, तथा नर्स की कोमल आकृति देखी। उसके सिर के पीछे से पड़ती हुई रोशनी में उसके मुलायम और सुन्दर केश दैवी प्रभा के समान चमक रहे थे, और मेरेस्येव, यद्यपि यह समझता था कि इस प्रकार देखना उचित नहीं है, फिर भी वह अपनी आँखें उधर से हटा न पाया।

"लो, देखो, नन्ही मिस्टर, इस तरह तुम्हें नहीं रोना चाहिए। क्या तुम्हें कुछ ब्रोमाइड पिलाया जाये?" कमिसार ने कहा, मानों वह किसी नन्ही लड़की से बातें कर रहा हो।

"देखो! तुम फिर मज़ाक़ करने लगे! कैसे आदमी हो तुम! यह कितनी भयानक बात है, सचमुच कितनी भयानक बात है कि जब रोना चाहिए तो कोई हंसता हो, जब तुम्हारा अपना शरीर दर्द से फटा जा रहा है, तो तुम दूसरों को राहत देने की कोशिश करते हो। मेरे प्यारे, तुम अब कभी—सुनते हो—तुम अब कभी इस तरह का व्यवहार करने की कोशिश न करना!"

उसने सिर झुका लिया और खामोशी के साथ रोती रही, और कमिसार उसके दुबले-पतले, सफ़ेद पोशाक में सजे, कांपते हुए कंधों को अपने वेदनापूर्ण सुहृदय आँखों से निहारता रहा।

"चौथे दिन, जब हम नगर से सिर्फ़ पंद्रह किलोमीटर दूर रह गये थे, सभी आदमी पूरी तरह चकनाचूर हो गये। हम इस तरह लड़खड़ा रहे थे मानों पिये हुए हों और हम जो पदचिह्न छोड़ते जा रहे थे, वे इस तरह थे मानों किसी घायल जानवर के चिह्न हों। यकायक कमिसार ने एक गीत शुरू कर दिया। उसका स्वर बड़ा भोंडा और बारीक था और गीत भी जो छेड़ा था, वह बेमिरपैर था—वह प्रयाण-गीत था जो पुरानी फ़ौज में गाया जाता था। मगर हम सब सुर मिलाकर गाने लगे। मैंने हुक्म दिया: 'पात बनाओ!' और क़दम मिलवाने लगा: 'बायां! दायां! बायां! दायां!' और तुम्हें यक़ीन न होगा कि रास्ता आसान हो गया।"

"इस गीत के बाद हमने दूसरा गीत गाया, और फिर तीसरा गीत गाया। तुम कल्पना कर सकती हो, नन्ही छोकरी? हम सूखे, चटखे हुए गलों से गा रहे थे और ऐसी आग-सी गर्मी में! हमें जितने भी गीत याद थे, सब गा डाले और अंत में रेगिस्तान में एक भी आदमी छोड़े बिना हम अपनी मंज़िल पर पहुँच गये ... इसके बारे में क्या ख़्याल है तुम्हारा?"

"कमिसार का क्या हुआ?"

"उसका क्या होता? वह अभी भी जीवित है और सकुशल है। वह पुरातत्वशास्त्र का प्रोफ़ेसर है। प्रागैतिहासिक बस्तियों को ज़मीन से खोद निकालता है। यह सच है कि उस अभियान के बाद वह अपनी आवाज़ खो बैठा। उसकी आवाज़ फट गयी है। लेकिन वह आवाज़ का क्या करेगा? अच्छा, आज की रात अब और कोई कहानी नहीं। जाओ, छोकरी, मैं घुड़सवार सैनिक की हैसियत से तुम्हें आश्वासन देता हूँ कि अब आज की रात मैं नहीं मरूँगा।"

आख़िरकार मेरेस्येव गहरी नींद में सो गया और उसने स्वप्न में एक रेतीला रेगिस्तान देखा, जिसे उसने अपने जीवन में कभी न देखा था; उसने फटे हुए, ख़ून से लथपथ होंठों को गीतों की धार उगलते देखा, उसने कमिसार वोलोदिन को देखा, जो पता नहीं क्यों स्वप्न में कमिसार वोरोब्योव से मिलता-जुलता था!

वह देर से उठा; तब तक सूर्य की किरणें चादरें के बीच अठखेलियाँ करने लगी थीं, जिससे पता चलता था कि दोपहर हो गयी है; और अपने हृदय में उल्लास का भाव सजोये उठा। स्वप्न? कौनसा स्वप्न?

सकी नज़र उस पत्रिका पर पड़ी जिसे वह सोते समय अपने हाथों में ज़ोर जकड़े हुए था; सिकुड़े हुए पृष्ठ से लेफ़्टीनेंट कर्पोविच वही संयमित, न्तु वीरतापूर्ण मुस्कान बिखेर रहा था। मेरेस्येव ने पत्रिका को आहिस्ते सीधा किया और लेफ़्टीनेंट की तरफ़ आँख मार दी।

कमिसार हाथ-मुह धो चुका और बाल काढ़ चुका था और लेटे-लेटे स्कराते हुए अलेक्सेई को निहार रहा था।

"उसकी तरफ़ तुम आँख क्यों मार रहे हो?" उसने आनन्द अनुभव रते हुए पूछ डाला।

"हम फिर उड़ने जा रहे हैं," अलेक्सेई ने जवाब दिया।

"कैसे? उसने एक ही पैर गंवाया था, मगर तुम तो दोनो गंवा ठे हो।"

"मगर मैं हूँ सोवियत, रूसी!" अलेक्सेई ने जवाब दिया।

उसने यह शब्द इस अंदाज़ और विश्वास के साथ कहे थे कि जैसे वह लेफ़्टीनेंट कर्पोविच से भी एक बात में बाज़ी मार ले जायेगा और दोनो पावों बिना विमान उड़ा सकेगा।

भोजन के समय वार्ड परिचारिका जो कुछ भी लायी थी उसने सब खा डाला, आश्चर्य से अपनी खाली तश्तरी की तरफ़ देखने लगा और कुछ और माग बैठा। वह स्नायविक उत्तेजना की स्थिति में था; वह गीत गा उठा, सीटी बजाने की कोशिश करने लगा, और ज़ोर-ज़ोर से अपने आपसे बहस करने लगा। जब प्रोफ़ेसर अपने नित्य के चक्कर पर आये तो उनके विशेष व्यवहार का लाभ उठाकर अलेक्सेई ने प्रश्नो की झड़ी लगा दी कि उसे अपने शीघ्र स्वास्थ्य-लाभ के लिए क्या-क्या करना चाहिए। प्रोफ़ेसर ने जवाब दिया कि उसे अधिक खाना और अधिक सोना चाहिए। इसके बाद अलेक्सेई ने भोजन के दूसरे दौर मे दो बार परोसने की माग की और अपने को चार कटलेट पूरे खाने के लिए मजबूर किया।

सुखानुभूति मनुष्य को अहंकारी बना देती है। प्रोफ़ेसर पर प्रश्नो की झड़ी लगाते समय अलेक्सेई वह बात न देख सका जिसकी तरफ़ सारे वार्ड का ध्यान आकर्षित हुआ था। वसीली वसील्येविच सदा की भांति वार्ड में उसी सुनिश्चित समय पर आये थे जब सूर्य की किरणें वार्ड के सारे फ़र्श को पार कर उस स्थान को छूने लगती हैं, जहाँ फर्श की एक तख़्ती ग़ायब थी। हमेशा की तरह प्रोफ़ेसर हर एक की ओर ध्यान दे रहे थे मगर सभी ने आज उनके चेहरे पर ऐसा विरक्ति का भाव देखा जो उनके

मेरी रक्षा दूसरे लोग करें," मेग्येव चारपाई से ही चिल्ला पड़ा क्योंकि वह अपने को न रोक पाया।

स्तेपान इवानोविच ने अपराधी जैसी दृष्टि से उसकी ओर देखा। कमिसार ने भौंहें सिकोड़ी और बोला:

"मैं तुम्हें क्या सलाह दे सकता हूँ, स्तेपान इवानोविच, तुम अपने दिल से पूछो। तुम्हारा दिल रूसी है। जो सलाह तुम्हें चाहिए, वह तुम्हें उसी से प्राप्त हो जायेगी।"

अगले दिन स्तेपान इवानोविच को अस्पताल से छुट्टी मिल गयी। विदा लेने के लिए वह फौजी वर्दी पहनकर वार्ड में आया। अपनी पुरानी, उड़े रंग की वर्दी पहने हुए, जो धुल-धुलकर सफ़ेद हो गयी थी, कमर पर कस-कर पेटी बांधे हुए और वर्दी को पीठ पर इतने बढ़िया ढंग से खींचे हुए कि सामने एक भी सिकुड़न न थी, वह नाटा व्यक्ति जितनी उम्र का था, उससे भी पन्द्रह वर्ष छोटा नज़र आ रहा था। अपने वक्ष पर वह सोने का 'सोवियत संघ का वीर' का सितारा लगाये था, जिसपर इस क़दर पालिश की गयी थी कि वह दमक रहा था, वह लेनिन पदक और 'वीरता के सम्मान' में प्राप्त पदक भी लगाये हुए था। सफ़ेद चोग़ा वह अपने कंधे पर बरसाती की तरह डाले था, लेकिन उसमें फौजी शान नहीं ढंक पायी थी। और वह सर्वांग रूप से, अपने पुराने फ़ौजी बूटों की नोक से लेकर मोम लगी मूछों की नोकों तक, जो 'सूजे' की तरह ऐंठी हुई लहरा रही थी, उस बहादुर रूसी सिपाही की भांति लगता था, जिसकी तस्वीर १९१४ के युद्ध-कालीन क्रिसमस कार्डों पर बनी रहती थी।

यह सिपाही विदा लेने के लिए अपने वार्ड के साथियों में से प्रत्येक की चारपाई तक गया। वह उनके फ़ौजी पदों से उन्हें पुकारता और इतनी फुर्ती से एड़िया मारता कि उसकी ओर देखने से भी आनन्द मिलता था।

वह जब आखिरी चारपाई के पास पहुँचा तो असाधारण नम्रता के साथ बोल उठा, "मुझे विदा दीजिये, कामरेड रेजीमेंटल कमिसार।"

"अलविदा स्तेपान। यात्रा सकुशल हो," कमिसार ने जवाब दिया और अपने दर्द को दबाते हुए सिपाही की ओर मुड़ा।

सिपाही घुटनों के बल बैठ गया और कमिसार का भारी-भरकम सिर अपने हाथों में लेकर, पुराने रूसी रिवाज के अनुसार उन्होंने एक दूसरे का तीन बार चुम्बन किया।

"अच्छे हो जाओ, सेम्योन वसील्येविच! भगवान करें, स्वस्थ बनाये

इस चेहरे की परीक्षा करता। धुंधुटे में प्रयता वार्ड की कम रोशनी में वह इतना बुरा न मालूम होता, वास्तव में अच्छा ही लगता था; नख-शिख सुन्दर था—ऊँचा मस्तक और छोटी-सी सीधी नाक, छोटी-सी काली मूँछें जो अस्पताल में उग आयी थीं और ताजगी तथा यौवन से पूर्ण दृढ़ होंठ। किन्तु उज्ज्वल प्रकाश में यह दिखाई देने लगता था कि उसके चेहरे पर घावों के चिह्न हैं जिनके आस-पास चमड़ी सख्ती से तनी हुई है। जब कभी वह उत्तेजित हो उठता या स्नान-चिकित्सा से ताजा होकर लौटता तो ये चिह्न उसकी आकृति को भयावना बना देते और इन क्षणों में वह शीशे के सामने जब अपनी परीक्षा करता तो उसे रोना आ जाता। उसे सान्त्वना देने का प्रयत्न करते हुए मेरेस्येव ने कहा:

"क्या बातें हो रहे हो? तुम्हें कोई फ़िल्म अभिनेता तो बनना नहीं है? अगर तुम्हारी वह लड़की सच्ची होगी, तो उसके लिए कोई फ़र्क नहीं पड़ेगा। और फ़र्क पड़ता है, तो इसका मतलब है कि वह मूर्ख है। ऐसी सूरत में, उसपर लानत भेजो। उससे छुटकारा भला। तुम्हें कोई दूसरी अच्छी मिल जायेगी।"

"सब औरतें एक-सी होती हैं," कुकूश्किन बीच में बोल पड़ा।

"आपकी माँ भी?" कमिसार ने पूछा। उसने "तुम" के बजाय "आप" का सम्बोधन किया। वार्ड में कुकूश्किन ही एक ऐसा व्यक्ति था जिसको वह इतने तकल्लुफ़ाना ढंग से सम्बोधित करता था।

इस शान्त प्रश्न से लेफ़्टीनेंट पर क्या प्रभाव पड़ा, यह वर्णन करना कठिन था। वह चारपाई पर उछल पड़ा, उसकी आँखें भयानक रूप से चमक उठीं और उसका चेहरा चादर से भी अधिक सफ़ेद पड़ गया।

"अब आप माने! तो आप देख लीजिये कि दुनिया में कुछ अच्छी औरतें भी हैं," कमिसार ने समझौते के स्वर में कहा। "आप क्यों समझते हैं कि ग्रिगोरी भाग्यशाली नहीं है? जिन खोजा तिन पाइयाँ: ज़िन्दगी में यही होता है।"

संक्षेप में सारा वार्ड पुनः प्रफुल्ल हो उठा। कमिसार ही एक व्यक्ति था जिसकी हालत बिगड़ती जा रही थी। उसे मार्फ़िया और कैम्फ़र से ज़िन्दा रखा जा रहा था और कभी-कभी इसके फलस्वरूप वह सारे दिन दवा के नशे में चारपाई पर बेचैनी के साथ सुड़कता रहता। स्तेपान इवानोविच के चले जाने के बाद तो वह और भी तेज़ी से डूबता नज़र आने लगा। मेरेस्येव ने अनुरोध किया कि उसकी चारपाई कमिसार के और

निकट सरका दी जाये ताकि आवश्यकता पड़ने पर वह उसकी सहायता कर सके। इस व्यक्ति की ओर वह अधिकाधिक आकर्षित होता महसूस कर रहा था।

अलेक्सेई जानता था कि पैरों के बिना उसका जीवन अन्य लोगों की अपेक्षा अधिक कठिन और जटिल होगा, और इसलिए वह अन्तर्प्रेरणावश इस व्यक्ति की ओर आकृष्ट हो गया था जो हर बात के बावजूद असली ज़िंदगी जीना जानता था और जो अपनी रुग्णावस्था के बावजूद लोगों को चुम्बक की तरह आकर्षित कर लेता था। कमिसार अब शायद कभी ही अपनी अर्धचेतन अवस्था से उभर पाता था, मगर जब उसे बिल्कुल होश आ जाता तो वह फिर हमेशा की तरह हो जाता था।

एक बार, काफ़ी शाम गये, जब अस्पताल का कोलाहल शान्त हो गया और खामोशी का साम्राज्य सिर्फ़ वार्डों से आनेवाले हल्के-से कठिनाई ही से कर्णगोचर खर्राटों, कराहों और सन्निपात के प्रलापों से कभी-कभी भंग हो जाता, गलियारे में सुपरिचित कदमों की ज़ोरदार और भारी आहट सुनाई दी। दरवाज़े के काच के शीशों से मेरेस्येव हल्की-सी रोशनी से आलोकित पूरे गलियारे की लम्बाई देख सकता था, जिसके अंत में

एक मेज के सामने न जाने कब से जागकर झुकी हुई एक नर्स बैठी थी। गलियारे के छोर पर वसीली वसील्येविच की भारी पदचाप सुनाई दी— हाथ पीछे बांधे धीमे-धीमे चलते हुए। उनके आते ही नर्स उठ पड़ी, मगर उन्होंने अप्रसन्नता का भाव प्रगट कर उसे एक तरफ हो जाने का इशारा किया। उनके कोट के बटन खुले थे, सिर नंगा था और उनके मोटे, सफेद बालों की कुछ लटें भौंहों पर लटक आयी थीं।

"वसीली वसील्येविच आ रहे हैं," मेरेस्येव कमिसार की ओर फुसफुसाया, जिसे वह कृत्रिम पैरों के विशेष डिजाइन के बारे में बता रहा था।

वसीली वसील्येविच रुक गये, मानो राह में कोई रुकावट आ गयी हो। उन्होंने अपने को दीवार का सहारा दिया, कुछ बड़बड़ाये और फिर दीवार से अलग हो गये और वार्ड नम्बर बयालीस में प्रवेश किया। वे अपना माथा रगड़ते हुए कमरे के मध्य में रुक गये, मानो कोई बात याद करने का प्रयत्न कर रहे हों। कीटाणुनाशक स्पिरिट की गन्ध उनके चारों ओर मंडरा रही थी।

"एक मिनट बैठ जाइये, वसीली वसील्येविच। आइये हम थोड़ी-सी गपशप कर लें," कमिसार बोला।

प्रोफेसर अपने पैर घसीटते हुए चारपाई के निकट आये, इतने बोझिल ढंग से चारपाई के किनारे बैठ गये कि स्प्रिंग कराह उठी, और उन्होंने अपनी कनपटियां रगड़ीं। पहले भी वे युद्ध की गतिविधि के विषय में बात करने के लिए कमिसार की चारपाई के पास रुक जाते थे। स्पष्ट था कि उन्होंने अपने तमाम रोगियों में कमिसार को ही छांटा है और इसलिए आज इतनी रात गये उनका आना कोई आश्चर्यजनक न था। लेकिन मेरेस्येव को महसूस हुआ कि ये दोनों कुछ ऐसी बातें करना चाहते हैं, जो किसी तीसरे के कानों के लिए नहीं हैं, इसलिए उसने आंखें बंद कर लीं और सोने का बहाना कर लिया।

"आज उनतीस अप्रैल है—उसका जन्म-दिन। वह आज छब्बीस वर्ष का हो गया—नहीं, हो गया होता," प्रोफेसर ने धीमे स्वर में कहा।

बड़ी ही कठिनाई से कमिसार ने कम्बल के नीचे से अपना सूजा हुआ हाथ निकाला और वसीली वसील्येविच के हाथ पर रख दिया। एक कल्पनातीत घटना घट गयी: प्रोफेसर फूट-फूटकर रो पड़े। इतने विशाल और शक्तिशाली हृदयवाले व्यक्ति को इस तरह रोते देखना बड़ा पीड़ाजनक

योगी कार्य करते होते। उसमें वास्तविक प्रतिभा थी—स्फूर्तिवान, दृढ़, बुद्धिमान। वह सोवियत चिकित्सा विज्ञान का गौरव बन सकता था—अगर उस दिन मैंने टेलीफोन कर दिया होता!"

"क्या आपको अफसोस है कि आपने टेलीफोन नहीं किया?"

"क्या कहते हो? आह, हां... मैं नहीं जानता। मैं नहीं जानता।"

"मान लो आज फिर ऐसी परिस्थिति पैदा हो तो क्या आप पहले से भिन्न कार्य करेंगे?"

खामोशी छा गयी। रोगियों की निरन्तर सांसें सुनाई दे रही थीं। चारपाई बड़े तान के साथ चरमरा उठी—स्पष्ट था कि प्रोफेसर गहन चिन्तन में लीन होकर अपने शरीर को इधर-उधर हिला-डुला रहे थे—और हीटिंग नलियों में पानी खुद-खुद बोल रहा था।

"फिर?" कमिसार ने ऐसे स्वर में पूछा जिसमें गहरी सहानुभूति और सद्भावना गूंज उठी।

"मैं नहीं जानता . तुम्हारे सवाल का कोई तैयारशुदा जवाब नहीं हो सकता। मैं नहीं जानता। मेरा ख्याल है कि अगर फिर वही बात दोहरायी जायेगी, मैं फिर उसी ढंग से व्यवहार करूंगा। मैं दूसरे पिताओं से किसी तरह बेहतर नहीं हूं, तो बुरा भी नहीं हूं... युद्ध कितनी भयानक चीज है..."

"और यकीन मानिये कि ऐसे भयानक समाचार को बर्दाश्त करना दूसरे पिताओं के लिए भी इतना ही आसान नहीं है जितना कि आपके लिए। तनिक भी आसान नहीं।"

वसीली वसील्येविच बड़ी देर तक खामोश बैठे रहे। वे क्या सोच रहे थे, मंद गति से बीतती चली जानेवाली उन घड़ियों में उनके ऊंचे गुर्दे-दार मस्तक के पीछे कौनसे विचार चक्कर काट रहे थे? अंत में वे बोले:

"हां, तुम ठीक कहते हो। उसके लिए भी वह कोई आसान न था, फिर भी उसने दूसरे बेटे को भेज दिया... धन्यवाद, प्यारे दोस्त, धन्यवाद, भाई! हमें इसे बर्दाश्त करना ही होगा..."

वह चारपाई से उठ बैठे, आहिस्ते से उन्होंने कमिसार का हाथ कम्बल के नीचे कर दिया; उसके कंधों तक कम्बल खींच दिया और खामोशी के साथ कमरे से बाहर हो गये।

बहुत रात बीते कमिसार की हालत बिगड़ गयी। अचेत अवस्था में वह बिस्तर पर लुढ़कने लगा—दांत पीसते हुए और जोर से कराहते हुए।

मेरेस्येव हवाई जहाज चलाने का और वह भी लड़ाकू विमान चलाने इरादा कर रहा था। लड़ाकू विमान चलाने के लिए और वह भी हाश-युद्ध की कौध मे, जब हर बात का हिसाब एक सेकंड के भी हि- करके लगाया जाता है और सारी गति का अत्यंत तीव्र और सहज ना आवश्यक होता है, तब पैरो को कार्य-सचालन मे इतना सूक्ष्म, ना कुशल और सबसे बडी बात यह कि इतना वेगवान होना चाहिए तना कि हाथ होते हैं। उसे अपने को इस हद तक अभ्यासी बनाना हो- कि उसकी टागो के ठूठ से जुडी लकडी और चमड़ा इस प्रकार क्रिया- ल हों, मानो वे शरीर के सजीव अग हो।

उडान की कला से परिचित व्यक्ति को यह बात असम्भव मालूम हो- ी, मगर अलेक्सेई को अब विश्वास हो गया था कि यह बात मानवीय प से सम्भव है और ऐसी स्थिति में वह इस कार्य में निस्सदेह सफल होगा। और इसलिए वह अपनी योजना पूरी करने में जुट गया। वह अपने लिए निर्धारित सभी इलाजो और दवाओ को इतनी नियमबद्धता से ग्रहण करता कि इसपर उसे स्वयं ही आश्चर्य होने लगा था। वह खूब खाता और विशेष भूख न भी मालूम होती तब भी दूसरी बार परोसने की माग करता। चाहे कोई भी सूरत पैदा हो जाये, वह अपने को निर्धारित घटो तक सोने के लिए मजबूर करता और भोजन के बाद थोडी देर ऊघ लेने तक के लिए उसने अपने को अभ्यस्त बना डाला, हालाकि उस जैसे क्रियाशील और स्फूर्तिवान प्रकृति के व्यक्ति के लिए यह घृणास्पद था।

अपने को खाने, सोने और दवा पीने के लिए मजबूर करना उसके लिए कठिन नही था। मगर जिमनास्टिक की बात और ही थी। उसने पहले कभी नियमपूर्वक जो कसरतें की थी, वे एक पैर-विहीन, चारपाई से लगे व्यक्ति के लिए अनुपयुक्त थीं। इसलिए उसने नयी कसरतो का आविष्कार किया: वह घंटो तक कमर पर हाथ रखकर अपने शरीर को आगे, पीछे और अगल-बगल, दायें से बायें और बायें से दायें झुकाता रहता और वह अपने सिर को इधर-उधर इतनी तेजी और फुर्ती से घुमाता कि रीढ़ की हड्डी तडकने लगती। वार्ड के साथी इन कसरतो के बारे मे उसके साथ मजाक करते और कुकूश्किन उसे व्यंग्यपूर्वक बधाई देता और उसे ज्नामेन्स्की बन्धुओ, लेदोमेग या अन्य सुप्रसिद्ध धावको के नाम से पुकारता। कुकूश्किन को इन कसरतो से नफरत थी और वह इन्हें भी सहज

थी, अधिकाधिक परिपक्व होता जा रहा था। वह उन पंक्तियों को बड़ी विरहातुरता और उद्विग्नता के साथ पढ़ता, क्योंकि वह समझता था कि उसे उनका उसी प्रकार प्रत्युत्तर देने का कोई अधिकार नहीं है।

लकड़ी के कारखाने के प्रशिक्षण विद्यालय में जिन महपाठियों ने साथ-साथ पढ़ा था और रोमानी भावनाओं को संजोया था, जिसकी उन्होंने बड़ों की नकल उतारकर प्रेम कह डाला था, वे सहपाठी बाद में छ-सात साल के लिए बिछुड़ गये। पहले तो लड़की तकनिकल स्कूल में पढ़ने चली गयी। जब वह लौटी और कारखाने में मेकेनिक की हैसियत से काम करने लगी, तब तक अलेक्सेई कस्बा छोड़ चुका था और उड्डयन विद्यालय में अध्ययन करने लगा था। वे फिर मिले युद्ध छिड़ने के ठीक पहले। इस मिलन की आकांक्षा उन दोनों में किसी ने न की थी और शायद वे एक दूसरे को भूल भी चुके थे—उनके विछोह के बाद न जाने कितना पानी बह चुका था। लेकिन एक वसंती शाम अलेक्सेई अपनी मां के साथ कहीं जा रहा था, तभी उलटी दिशा से कोई लड़की आती दिखायी दी। उसने उस लड़की की ओर कोई ध्यान नहीं दिया, सिर्फ यह देख पाया कि उसकी टांगें सुडौल थीं।

"उस लड़की को तुमने अभिवादन क्यों नहीं किया? वह ओल्या थी!" उसकी मां ने उसे झिड़क दिया और लड़की का कुलनाम बताया।

अलेक्सेई ने मुड़कर देखा। लड़की भी पीछे देखने के लिए घूम गयी थी। उनकी आंखें मिलीं और अलेक्सेई को लगा कि उसका हृदय उछलने लगा है। मां को छोड़कर वह उस लड़की की ओर दौड़ा जो एक नये पोपलर वृक्ष के तले रुक गयी थी।

"तुम?" उसने आश्चर्य से संबोधन किया और उस लड़की की ओर इस भांति देखने लगा कि मानो यह अनुपम सुन्दरी समुद्रपार से आयी है, और किसी विचित्र संयोग से इस वसंती शाम को शान्त और कीचड़-भरी सड़क पर निकल आयी हो।

"अलेक्सेई?" लड़की ने भी उसी विस्मय और अविश्वास के स्वर में सम्बोधित किया।

छः या सात साल के विछोह के बाद वे पहली बार एक दूसरे को निहारते रहे। अलेक्सेई ने अपनी आंखों के सामने सूक्ष्माकार लड़की को देखा—सुन्दर, गोल, लड़कों जैसा चेहरा, लावण्यमयी और कोमल आकृति, नाक के ऊपर कुछ सुनहरी झाइयां। उस लड़की ने उसकी ओर काली

बड़ी-बड़ी, भूरी, दमकती हुई आखो से, हल्की रेखांकित भौहो को किंचित उठाकर देखा जिसकी कोरें कुछ घनी थी। प्रशिक्षण विद्यालय मे जब वे आखिरी बार मिले थे, तब वह जैसी थी–हृष्ट-पुष्ट, गोल चेहरा, गुलाबी कपोल, किंचित झगड़ालू बालिका, जो अपने पिता की चिकनी जाकेट पहने और उसकी बाहें मोड़े हुए गर्व से चलती थी–उस बालिका के चिह्न इस नवयौवना, लावण्यमयी लड़की मे बहुत कम थे।

मा की सुधि भूलकर अलेक्सेई इस लड़की को निहारता खड़ा रहा और उसे ऐसा लगा कि इन वर्षों मे कभी भी वह इसे भुला नही पाया है और इस मिलन का स्वप्न देखता रहा है।

"अच्छा तो तुम अब ऐसी लगने लगी हो!" आखिरकार वह बोल पड़ा।

"कैसी?" उसने गूजते हुए स्वर मे पूछा और यह स्वर भी उससे बिलकुल भिन्न था जो उसने तब सुना था, जब वे स्कूल मे साथ-साथ थे।

गली के मोड़ से हवा का एक झोका आया और पोपलर की नगी शाखाओं से गुजरकर सीटी बजा उठा। लड़की के सुगठित पैरो से लिपटता-फड़फड़ाता उसका फ्राक उड़ने लगा। हंसी की लहरियो की गूज के साथ वह झुकी और बड़ी सहज और स्वभावत: सौन्दर्यपूर्ण गति से उसने अपना फ्राक सभाल लिया।

"बस उसी तरह!" अलेक्सेई ने जवाब दिया और वह प्रशसा के भाव को अब छिपाये न रह सका।

"तो किस तरह?" लड़की ने फिर हसते हुए पूछा।

मा ने एक क्षण युवा जोड़ी की ओर देखा, किंचित दुखित भाव से मुसकरायी और अपनी राह चली गयी। लेकिन वे एक दूसरे को सराहते हुए खडे रहे, उत्साहपूर्वक बातें करते रहे–वे एक दूसरे की बात काट देते और वार्तालाप मे इस तरह के विस्मयो की भरमार कर रहे थे जैसे "तुम्हें याद है?", "तुम्हें पता है?", "कहा है वह?", "क्या हो गया है उसे?.."

वे बड़ी देर तक इसी प्रकार बातचीत करते खडे रहे–अत मे ओल्गा ने पड़ोस के मकानो की खिड़कियो की तरफ इशारा किया जहा जिरेनियम के गमलों और देवदारो की शाखाओं के पीछे से उत्सुक चेहरे झाकते नज़र आ रहे थे।
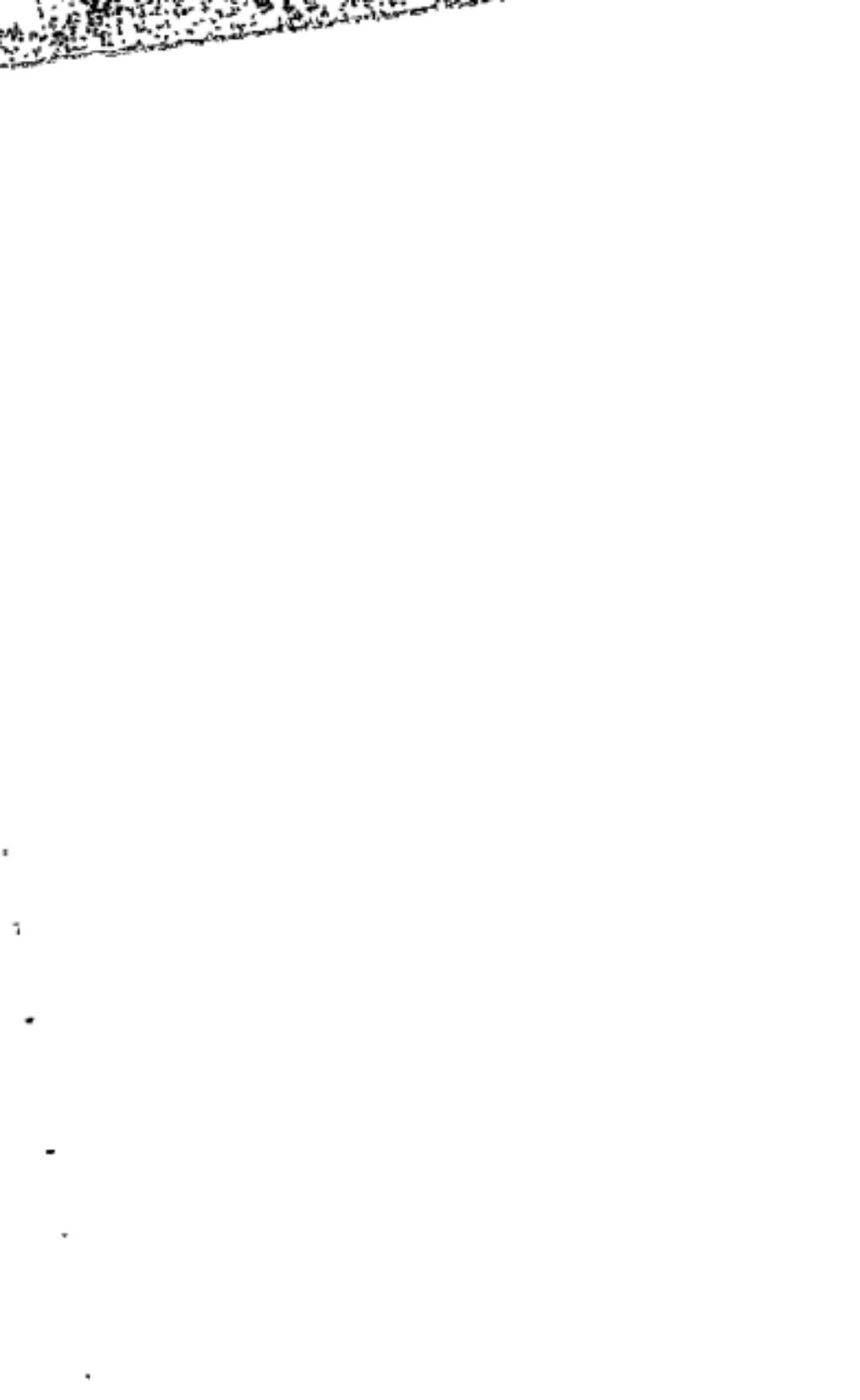
धोने चली जाती और वहीं सफेद सिल्क की ब्लाउज पहने, जिसे वह छुट्टी के दिन पहनती थी, वह ताजगी, गुलाबी कपोल और गीले केश लिये वापस लौट आती।

और फिर वे सिनेमा, सर्कस या पार्क की सैर के लिए चले जाते। वे कहां जाते है, इससे अलेक्सेई के लिए कोई अंतर नही पडता था। वह सिनेमा के पर्दे को, सर्कस के रिंग को या इधर-उधर घूमते हुए लोगों को न देख पाता, वह सिर्फ उसी की तरफ निहारता और उसी की ओर देखता हुआ सोचता रह जाता, "बस, आज की रात घर की तरफ लौटने समय राह में ही मुझे प्रस्ताव रख देना चाहिए।" लेकिन राह भी खत्म हो जाती और वह साहस न जुटा पाता।

एक रविवार की सुबह वे वोल्गा के दूसरे किनारे के उपवन मे सैर करने के लिए निकले। वह जब उसके घर उसे लेने गया तो वह अपनी दूध जैसी सफेद पतलून और खुले कालर की कमीज पहने था, जो उसकी मा के कथनानुसार उसके ताम्रवर्ण, चौड़े चेहरे के साथ खूब फबती थी। जब वह पहुंचा तो ओल्गा तैयार थी। उसने एक रूमाल मे लिपटा पार्सल अलेक्सेई को थमा दिया और वे दोनो नदी की ओर चल दिये। बूढे, पैर-विहीन मल्लाह ने—पहले विश्वयुद्ध का पंगु वीर, अड़ोस-पड़ोस के बच्चों का परमप्रिय, जिसने अलेक्सेई को बचपन मे सिखाया था कि छिछले पानी मे मछली कैसे पकड़ी जाती है—लकड़ी के ठूंठो के बल फुदकते हुए भारी नाव को धकेला और पतवार की हल्की-हल्की चोटो से खेने लगा। धारा को तिरछे काटती हुई, हल्के-से हिचकोले खाती हुई नाव ने दूसरी तरफ स्थित निचले साफ हरे रग के किनारे तक पहुंचने के लिए नदी पार करना शुरू किया। लड़की नाव के किनारे पर हाथ रखे, गहन चिन्तन मे लीन, जड़-सी बैठी थी और अपनी उगलियों पर से पानी को बह जाने दे रही थी।

"चाचा अरकादी, क्या तुम्हें हमारी याद नही?" अलेक्सेई ने पूछा।

मल्लाह ने इन युवा चेहरो की ओर उपेक्षा से देखा और कहा:

"नही तो।"

"क्यों, यह क्या बात? मैं हू अलेक्सेई मेरेस्येव। तुमने मुझे सिखाया था कि छिछले पानी में काटे से मछली कैसे पकड़ते हैं।"

"शायद सिखाया हो। तुम जैसे यहां बहुत से छोकरे खेलते-फिरते थे। मैं उन सबको नही याद रख सकता।"

के प्रति उसकी भावनाएं ठंडी पड़ गयी थीं या वे एक दूसरे को भूलते जा रहे थे। नहीं। वह अधीरतापूर्वक गोल-गोल स्कूली लड़कियों जैसी लिखावट में लिखे गये पत्रों की प्रतीक्षा करता, उन्हें हमेशा जेब में रखता और जब अकेला होता तो उन्हें बार-बार पढ़ता। यही पत्र थे जिन्हें उस विस्तिकाल में जब वह जंगल में मारा-मारा घूम रहा था, अपने हृदय से चिपकाये रहता था और निहारा करता था। लेकिन इन दो प्रेमियों के सम्बन्ध इतने आकस्मिक रूप से और इतनी अनिश्चित अवस्था में टूट गये थे कि जो पत्र वे लिखते, उनमें वे पुराने, घनिष्ठ मित्रों की तरह एक दूसरे से आदान-प्रदान करते और वह बही बात लिखने से डरते जो अंततः अनकही रह गयी थी।

और अब अपने को अस्पताल में पाकर वह बड़ी हैरानी के साथ देखता, और ओल्गा का नया पत्र पाकर यह घबराहट और बढ़ती जाती, कि ओल्गा अब स्वयं उससे मिलने के लिए आगे बढ़ रही है, कि अब वह अपने पत्रों में बिल्कुल स्पष्ट रूप से अपनी आकांक्षाएं व्यक्त करने लगी है; वह अफ़सोस प्रकट करती कि उस शाम चाचा अरकादी उसी घास क्षण में आ गये और अलेक्सेई को विश्वास दिलाती कि उसे चाहे कुछ भी हो जाये, एक व्यक्ति है जिसपर वह हमेशा विश्वास कर सकता है और उससे प्रार्थना करती कि परदेस में घूमते हुए वह याद रखे कि एक घर है जिसे वह हमेशा अपना समझ सकता है और युद्ध जब खत्म हो जाये तो वहीं लौट सकता है। ऐसा लगता कि ये पत्र जो लिख रही है वह एक नयी, भिन्न ओल्गा है। जब कभी वह उसके फ़ोटो की ओर देखता तो वह हमेशा सोचता कि अगर हवा का झोंका आये तो फूलोंवाली फ्राक समेत वह डैंडेलियन के पक्के बीजों की छतरी की भांति उड़ जायेगी। लेकिन ये पत्र लिख रही थी एक महिला—एक भली प्रेममयी महिला जो अपने प्रियतम की कामना और प्रतीक्षा कर रही थी। इससे उसे सुख भी होता और दुख भी; सुख होता अपने आपको रोकने के बावजूद और दुख होता इसलिए कि वह सोचता उसे ऐसा प्रेम प्राप्त करने का कोई अधिकार नहीं है और वह ऐसी स्वीकृतोक्तियों के योग्य नहीं है। यही देखो, उसे कभी यह लिखने का भी साहस नहीं हुआ कि अब वह वही स्फूर्तिवान, धूप में तपा ताम्रवर्ण युवक नहीं रहा जिससे कि वह परिचित थी, बल्कि वह चाचा अरकादी की तरह पंगु व्यक्ति है। इस भय से कि इससे उसकी बीमार मां मर जायेगी वह सत्य लिखने का साहस न कर सका, इसलिए

अब ओल्गा को धोखा देने के लिए विवश हो गया, और जो भी पत्र वह लिखता था, उससे वह इस प्रवंचना में अधिकाधिक फंसता जाता था।

यही कारण है कि कमोशिन में उसे जो पत्र मिलते, उनसे उसके हृदय में इतनी अन्तर्विरोधी भावनाएं जागृत होतीं—आनन्द और दुख, आशा और उद्विग्नता—वे उसे एक ही साथ हर्षित करतीं और यंत्रणा देतीं। एक बार झूठ बोलने के बाद वह दूसरे झूठ भी गढ़ने के लिए मजबूर होता चला जा रहा था, लेकिन इस काम में उसका हाथ सधा न था और इसी लिए ओल्गा को उसके उत्तर संक्षिप्त और शुष्क होते थे।

"मौसमी मार्जेन्ट" को सब बातें लिखना उसे आसान मालूम होता था। उसकी आत्मा मग्न और अनुरागपूर्ण थी। आपरेशन के बाद मामूली की हालत में जब उसे दुख किसी को सुनाने की आवश्यकता थी, उसने उसको एक लम्बा और निराशापूर्ण पत्र लिखा था। कुछ दिनों बाद उसे किसी कापी से फाड़े गये पन्ने पर टेढ़ी-मेढ़ी लिखावट में लिखा गया एक पत्र मिला, जिसमें जगह-जगह विस्मयादिबोधक चिह्न बिखरे थे जो ऐसे दिखाई देते थे मानो मोटी रोटी के ऊपर अजमोद के दाने बिखरे हों, और सारा पत्र आंसुओं के धब्बों से अलंकृत था। लड़की ने लिखा था कि अगर फौजी अनुशासन का ध्यान न होता तो वह सब काम फौरन छोड़ देती और फौरन उसकी देखभाल करने तथा 'दुख बंटाने' चली आती। उसने और जल्दी-जल्दी पत्र लिखने का अनुरोध किया था। इस उत्तर हुए पत्र में इतनी खुशी और दर्द बढ़ानेवाली भावनाएं व्यक्त की गयी थीं कि उससे अलेक्सेई को दुख महसूस हुआ और वह अपने आपको कोसने लगा कि जब उस लड़की ने ओल्गा के पत्र दिये थे, तब उसने यह क्यों कह दिया कि ओल्गा उसकी शादीशुदा बहिन है। ऐसी लड़की को कभी धोखा नहीं देना चाहिए। और इसलिए उसने उसको स्पष्ट रूप में लिख दिया और बता दिया कि कमोशिन में उसकी मंगेतर है और वह अभी तक यह साहस नहीं कर सका कि उसको या अपनी मां को अपने दुर्भाग्य के विषय में सच-सच बता सके।

"मौसमी मार्जेन्ट" के पास से इस बार उत्तर इतनी जल्दी आया कि जिसकी उन दिनों आशा नहीं की जा सकती थी। लड़की ने लिखा था कि इस पत्र को वह एक मेजर के हाथों भेज रही है, जो उस रेजीमेंट में घर पर और उसकी ओर आकर्षित हुआ था, और निस्संदेह, जिसकी उसने ... ली थी, यद्यपि वह भला और विलक्षण आदमी था। वह ...

लेकिन उसने निष्ठाभाव से संकल्प किया कि वह आंल्गा को अपने ं
के बारे में तभी बतायेगा जब उसके सपने सच हो जायेंगे, वह पु
युद्ध करने की शक्ति प्राप्त कर लेगा और फिर योद्धाओं की पांत में प
जायेगा। और इससे उसका वह उत्साह और भी पुष्ट हो गया जिस उस
के साथ वह अपना लक्ष्य प्राप्त करने का प्रयत्न कर रहा था।

११

पहली मई को कमिसार की मृत्यु हो गयी।

अकस्मात ही उसका देहावसान हो गया। सुबह जब उसे नहलाया-धुला
या जा चुका और बाल काढ़े जा चुके, तो उसने महिला हज्जाम से, जं
उसकी दाढ़ी बना रही थी, मौसम के बारे में और इस त्योहार के दि
मास्को कैसा लग रहा है, उसके बारे में विस्तार से पूछा। उसे यह सुन
कर प्रसन्नता हुई कि सड़कों पर से मोर्चेबंदी हटायी जा रही है, औ
इस बात पर उसने अफसोस प्रगट किया कि बसंत के इस गौरवशाली दि
को कोई प्रदर्शन न होगा, उसने क्लावदिया मिखाइलोव्ना को विदा
भी, जिसने आज के त्योहार के अवसर पर अपने चेहरे की झाइयों को
पाउडर पोतकर छिपाने का ज़ोरदार प्रयत्न किया था। वह कुछ बेहतर
लग रहा था, और हर व्यक्ति को आशा होने लगी कि अब वह ब
गया है और शायद अब स्वास्थ्य-लाभ की राह पर बढ़ रहा है।

कुछ दिनों से, चूंकि वह अखबार नहीं पढ़ पाता था, उसकी चारपाई
के पास रेडियो का हेडफोन लगा दिया गया था। मूल रूप में इसे कान
में लगाकर इस्तेमाल किया जाता था, लेकिन स्तोउदेव ने, जो रेडियो
के बारे में थोड़ा बहुत जानता था, उसमें कुछ सुधार किया जिससे रिसी-
वर कुछ लाउडस्पीकर जैसा हो गया और अब उसमें सारी वार्ता और
संगीत पूरे वार्ड में सुनाई देने लगा था। नौ बजे अनाउन्सर, जिसकी
आवाज़ उन दिनों सारी दुनिया में परिचित थी और बड़े ध्यान से सुनी
जाती थी, रक्षा-मंत्री का संदेश पढ़कर सुनाने लगा। हर व्यक्ति दीवार
से लटकी हुई उन दो काली टिकलियों की तरफ सारस जैसी गर्दनें लम्बी
कर बिल्कुल खामोश हो गया—इस भय से कि कहीं कोई शब्द छूट न
जाये। जब ये शब्द भी सुना दिये गये: "महान लेनिन की अजेय पताका
के नीचे, विजय की ओर आगे बढ़ो!" तब भी वार्ड में गहरी शान्ति
छायी रही।

"अब कृपया, मुझे यह समझाइये, कामरेड रेजीमेंटल कमिसार..." त्कूकिन ने कहना शुरू किया और एकायक भयग्रस्त होकर चीख उठा, 'कामरेड कमिसार!"

हर व्यक्ति ने घूमकर देखा। कमिसार अपने बिस्तर पर सीधा, दृढ़, तना हुआ पड़ा था और छत मे एक स्थान पर निस्पंद आंखों से घूर रहा था। उसके दुबले-पतले, पीले चेहरे पर एक शान्त पवित्र और गौरवपूर्ण भाव था।

"वह चल बसा!" कुकूश्किन चीख उठा और उसकी चारपाई के पास घुटनों के बल गिर पड़ा। "चल बसा!"

किंकर्तव्यविमूढ़ परिचारिकाएं अन्दर और बाहर की तरफ दौड़ पड़ीं, नर्सें भागी-भागी फिर रही थीं, हाउस सर्जन अभी भी अपने सफ़ेद चोगे के बटन लगाता दौड़ा आ रहा था। किसी की तरफ कोई ध्यान न देकर वह चिड़चिड़ा, गैरमिलनसार लेफ्टीनेंट कोस्तांतीन कुकूश्किन मृतक के शव पर औंधा पड़ा हुआ था और बच्चे की तरह कम्बल में मुंह गड़ाये हुए रो रहा था, सिसक रहा था – कंधे उठ-गिर रहे थे, सारा शरीर कांप रहा था...

उसी शाम, वार्ड नम्बर बयालीस मे एक नया मरीज लाया गया। वह था मास्को हवाई सुरक्षा डिवीजन की एक टुकड़ी का मेजर पावेल इवानोविच स्त्रुच्कोव। फासिस्टों ने त्यौहार के दिन मास्को पर बड़ा भारी हवाई हमला करने का निश्चय किया था, मगर कई टुकड़ियों मे उड़कर आनेवाली उनकी वायुसेना को बीच मे ही रोक लिया गया, और भयंकर युद्ध के बाद, वहीं पोद्सोलेन्च्नाया क्षेत्र मे उनका सफ़ाया कर दिया गया। सिर्फ़ एक 'जंकर्स' बमवार घेरा तोड़ने में सफल हुआ और वह बहुत ऊंचाई पर चढ़कर मास्को की ओर बढ़ चला। स्पष्ट था कि उसका चालक मास्को के समारोह को भंग करने के लिए हर कीमत पर अपना काम पूरा करने का संकल्प कर चुका था। युद्ध की सरगर्मी मे स्त्रुच्कोव ने इस 'जंकर्स' को देख ही लिया था और इसलिए वह फ़ौरन उसके पीछे दौड़ा। वह शानदार सोवियत हवाई जहाज चला रहा था, जिनसे उस समय लड़ाकू वायुसेना को सुसज्जित किया जाने लगा था। ज़मीन से छ: किलोमीटर पर, आसमान मे बहुत ऊंचाई पर, उसने जर्मन विमान को पकड़ ही लिया जब कि वह मास्को के बाहरी क्षेत्र के ऊपर आ गया था। वह कुशलतापूर्वक शत्रु के पीछे पहुंच गया, उसपर स्पष्ट रूप मे निशाना साधा

सवाल ने मुझे जाने की आज्ञा कर रहा है। आखिरकार मानूमी की सांस भरकर, उसने धीरे-धीरे दरवाजे की ओर बढ़ते हुए कहा:

"अच्छा तो सलाम! इनके इस्तेमाल में तुम्हारी कामयाबी चाहता हूं।"

लेकिन उसके दरवाजे तक पहुंचने के पहले ल्यूबांव ने पुकारा:

"ऐ बुड्ढ़े! यह लेते जाओ और बादशाहों के काबिल पैर बनाने की खुशी में कुछ पी-पिला लेना!" इतना कहकर उसने रूबलों के नोटों की एक गड्डी उसे थमा दी।

"धन्यवाद! तुम्हें बहुत-बहुत धन्यवाद! यह मौका सचमुच पीने-पिलाने का है।" बूढ़े ने जवाब दिया और लबादे के अग्रभाग को इस तरह मोड़ते हुए, मानो वह किसी दस्तकार का पेशबंद हो, उसने गर्व से सिर तानकर नोटों को कमर की जेब में खिसका दिया। "धन्यवाद! मैं जरूर खुशी मनाऊंगा। और जहां तक इन पैरों का सवाल है, मैं बनाने वेर हू, इनके बनाने में मैंने जान लड़ा दी है। वसीली वसील्येविच ने मुझ से कहा था, 'जूयेव, यह एक खास केस है। इसमें कोई गलती न होने पाये,' लेकिन क्या जूयेव कभी गलती करता है? अगर वसीली वसील्येविच से तुम्हारी भेंट हो, तो बता देना कि इस काम से तुम खुश हो।"

इतना कहकर सिर झुकाता और अपने आप बड़बड़ाता हुआ बूढ़ा वार्ड से बाहर हो गया। चारपाई के पास फर्श पर खड़े अपने नये पैरों को निहारते हुए मेरेस्येव लेटा था, और जितनी ही अधिक देर तक वह उन्हें देखता रहा, उतना हो अधिक उनका कलापूर्ण डिजायन, उनके रूपरंग की सुगढ़ता और उनका हलकापन उसे भाता गया। "साइकिल पर चढ़ो, पोल्का नाचो, हवाई जहाज उड़ाओ, सीधे भगवान के यहां सातवें आसमान तक। हां, मैं करूंगा, मैं यह सब करूंगा," वह सोच रहा था।

उस दिन उसने ओल्गा को एक लम्बा और प्रसन्नतापूर्ण पत्र भेजा जिसमे उसने सूचना दी कि नये वायुयान मिलने के उसके काम की घड़ी अब करीब आ गयी है, और उसे आशा है कि शरद में या कम-से-कम जाड़ों तक, उसके उच्चाधिकारी उसे मोर्चे के पीछे के इस नीरस काम से छुटकारा देने की प्रार्थना स्वीकार कर लेंगे, जिससे अब वह बिल्कुल ऊब गया है, और मोर्चे पर उसको अपनी ही रेजीमेंट में भेज देंगे, जहां के साथियों ने उसे भुलाया नहीं है—वास्तव में वे उसके वापस लौटने का इन-

शिक रूप से या पूरी तरह—सिर्फ़ आत्मीयतापूर्ण स्थल छोड़ दिये जाते थे, और संयोग से जैसे-जैसे पत्र-व्यवहार आगे चला, इस तरह के स्थल अधि-काधिक प्रगट होने लगे।

चिकित्सा विज्ञान के तृतीय वर्ष के सभी छात्र वॉर ग्लोंदेल से प्रेम करने लगे थे, रूखे कुरूशिन को नापसंद करते थे, मेरेम्येव के प्रत्य उत्साह की प्रशंसा करते थे और कसिमार की मृत्यु से तो उन्हें अपने आत्मीय का विछोह महसूस हुआ, क्योंकि उसके विषय में ग्लोंदेल का कवित्वपूर्ण वर्णन पढ़कर वे सभी उसकी यथायोग्य सराहना और उससे प्रेम करने लगे थे। जब उन्होंने सुना कि उस विशाल हृदय, उत्साहपूर्ण व्यक्तित्व की इहलीला समाप्त हो गयी तो उनमें से अनेक अपने आंसू न रोक सके थे।

अस्पताल और विश्वविद्यालय के बीच पत्रों का आदान-प्रदान अधिकाधिक बढ़ता गया। वे युवक-युवतियां साधारण डाक से सन्तुष्ट न होते थे, क्योंकि वह उन दिनों बड़ी धीमी थी। एक पत्र में ग्लोंदेल ने कमिसार की यह उक्ति लिखी थी कि आज चिट्ठियां अपने स्थान पर इस तरह पहुंचती हैं जैसे सुदूर तारिकाओं की रोशनी। पत्र-लेखक की ज़िन्दगी की रोशनी बुझ भी जायेगी, मगर उसका पत्र मंद गति से ही जायेगा और अंततः प्राप्तकर्त्ता के पास पहुंचकर उस व्यक्ति के बारे में बतायेगा जो बहुत दिनों पहले मर चुका होगा। व्यावहारिक और चतुर मस्यूता ने पत्र-व्यवहार का और भी विश्वस्त उपाय खोजने का प्रयत्न किया और एक बुड्ढी नर्स को ढूंढ़ निकाला जो विश्वविद्यालय के क्लिनिकालय और क्लोनी वर्मोन्येविच के अस्पताल में, दोनों ही जगह काम करती थी।

इसके बाद से तो विश्वविद्यालय को वार्ड बत्तालीस की घटनाओं की जानकारी दूसरे ही दिन और बहुत देर हुई तो तीसरे दिन तक होने लगी, और शीघ्र ही जवाब भी दिया जाने लगा। मैस में "बादशाह के दोस्त कृत्रिम पैरों" के सिलसिले में विवाद यह पैदा हुआ कि मेरेस्येव हवाई जहाज चला सकेगा या नहीं। यह विवाद जवानी के जोश से भरपूर था, जिसमें दोनों ही पक्ष मेरेस्येव से सहानुभूति रखते थे। लड़ाकू विमान चलाने के काम की जटिलता को दृष्टिगत करके निराशावादी दावा करते थे कि वह कभी नहीं उड़ सकेगा। किन्तु आशावादी यह तर्क देते थे कि जो व्यक्ति शत्रु से बच निकलने के लिए हाथ-पैर चारों के बल एक पखवारे तक घोर जंगल में रेंग सकता है—भगवान जाने कितने किलोमीटर तक—उसके

जैसे उनका परिचय बढ़ता गया, देशभक्तिपूर्ण युद्ध के एक वीर की प्रकट आकृति के स्थान पर उसके मस्तिष्क में एक वास्तविक, सजीव युवक का चित्र उभरने लगा और इस युवक में उसकी दिलचस्पी अधिकाधिक बढ़ने लगी। उसने अनुभव किया कि उसके पास से जब कोई पत्र नहीं आता है तो वह चिन्तित और उदास हो उठती है। यह एक नयी बात थी और इससे वह आनन्दित हुई और भयभीत भी। क्या यह प्रेम था? एक ऐसे व्यक्ति को, जिसको कभी देखा नहीं, जिसकी आवाज कभी सुनी नहीं, जिसको तुम सिर्फ पत्रों से जानते हो, उसको प्यार करना क्या सम्भव है? टैंक-चालक के पत्रों में अधिकाधिक ऐसे स्थल आने लगे जिन्हें वह साथिन छात्राओं को पढ़कर न सुना पाती थी। स्वोल्देव ने जब अपने एक पत्र में यह स्वीकार किया कि वह "पत्र-व्यवहार के द्वारा प्रेम में पड़ गया है"—उसने इसी तरह अभिव्यक्त किया था—तो उसके बाद अन्यूता को भी महसूस हुआ कि वह भी प्रेम करने लगी है—स्कूली लड़कियों जैसा प्रेम नहीं, वास्तविक प्रेम। उसने महसूस किया कि अगर उसे वे पत्र प्राप्त होना बंद हो गये, जिनकी अब वह इतनी अधीरता से प्रतीक्षा करती है, तो उसके लिए जीवन की सार्थकता समाप्त हो जायेगी।

और इस लिए उन दोनों ने, कभी मिले बिना ही, एक दूसरे से प्रेम स्वीकार कर लिया, किन्तु इसके बाद स्वोल्देव के साथ जरूर कोई विचित्र बात घट गयी होगी। उसके पत्र भीरु, अशान्त और अस्पष्ट हो उठे। बाद में उसने अन्यूता को यह लिखने का साहस कर ही लिया कि बिना मिले ही एक दूसरे के प्रति अपना प्रेम स्वीकार कर उन्होंने गलती की, शायद अन्यूता को यह पता नहीं कि उसका चेहरा कितने भयंकर रूप से विकृत हो गया है और आज वह उस पुराने फोटोग्राफ जैसा बिल्कुल नहीं है, जो उसने भेज दिया था। उसने लिखा था कि वह उसको धोखा नहीं देना चाहता और इसलिए यह अनुरोध किया था कि उसके प्रति अपनी भावनाओं को प्रगट करना तब तक बंद रखे, जब तक वह स्वयं अपनी आंखों से न देख ले कि वह कौन है जिसे वह प्यार कर रही है।

यह पढ़कर अन्यूता को पहले तो क्रोध आया और फिर भय भी अनुभव हुआ। उसने जेब से वह फोटोग्राफ निकाला। उसमें से एक दुबला-पतला, युवा मुखमण्डल झांक उठा, जिसपर दृढ़ता के भाव थे—सुन्दर, सीधी नाक, छोटी-छोटी मूछें और सुगढ़ मुख। "और अब? अब तुम कैसे लगते हो, मेरे प्यारे प्रियतम?" वह उस फ़ोटोग्राफ़ की तरफ़ निहारती हुई बुद-

बार वह शीशे में कभी दूर खड़े होकर आँखें दौड़ाते हुए सरसरी नज़र डालता और कभी अपना चेहरा शीशे से बिल्कुल सटा लेता; वह दाग़ों की मालिश करता और घंटों तक चेहरे को थपथपाता रहता।

उसकी प्रार्थना पर वनावदिया मिखाइलोव्ना उसके लिए फेस-पाउडर और क्रीम खरीद लायी। शीघ्र ही उसे विश्वास हो गया कि चेहरे के दोष को कोई प्रसाधन सामग्री ठीक नहीं कर सकती। फिर भी रात को जब सारे लोग सो जाते, तो वह चुपके से टट्टी में घुस जाता और बड़ी देर तक दागों की मालिश करता, उनपर पाउडर लगाता रहता और फिर मालिश करता और फिर बड़ी आशाएं संजोकर शीशे में देखता। दूर से वह रोबदार व्यक्ति लगता था: हृष्ट-पुष्ट आकृति, चौड़े कंधे और सीधी, पुष्ट टांगों पर पतली-सी कमर। लेकिन नज़दीक से! कपोलों और ठोड़ी पर लाल-लाल दाग और तनी हुई, सिकुड़नदार खाल देखकर वह निराशा में डूब जाता। "इसे वह देखेगी तो क्या सोचेगी?" वह अपने मन से पूछता। वह डर जायेगी। वह उचटती नज़र डालेगी, मुंह फेर लेगी और अपने बड़े उत्साह [illegible] वापस चली जायेगी। या—जो और भी बुरा होगा—वह सौजन्यवश एक-आध घंटे बात करेगी और फिर कोई रस्मी और [illegible] बात कह बैठेगी—और फिर अलविदा। वह क्रोध से इस तरह पीला पड़ जाता, मानो यह बात अभी ही उसके साथ घट गयी हो।

कभी वह अपने लबादे की जेब से फोटोग्राफ निकाल लेता और उस [illegible] लड़की के नखशिख को आलोचनात्मक दृष्टि से परखने लगता—[illegible] और बारीक, मगर घनी [illegible] ऊंचे मस्तक पर [illegible] की धार [illegible] हुई, [illegible], ऊपर की ओर कुछ मुड़ी हुई, [illegible] और कोमल, शिशुसुलभ अधर। ऊपर के होंठ पर एक तिल मुश्किल से ही दिखाई देता था। यह निष्कलंक, मधुर मुखमण्डल, [illegible] उसकी [illegible] हर्षातिरेक और लालसा से नाच रही थी।

'[illegible] तुम कैसी हो? तुम डर तो नहीं जाओगी? तुम [illegible]? क्या तुम्हारे पास यह देख सकने का कलेजा है कि मैं कितना कुरूप हूँ?' इस [illegible] की तरफ [illegible] देखते हुए वह पूछता।

[illegible] हुए और [illegible] हुए, सीनियर लेफ्टिनेंट [illegible] उसके पास से गुज़रता, [illegible] के ऊपर से ऊपर और ऊपर

[illegible]

[illegible]

[illegible]

१८

जिलोरी ग्लोरोव ने जून के मध्य में अस्पताल छोड़ दिया।

जाने से एक-दो दिन पहले उसने येवगेनी से लम्बी, सच्ची बातचीत की। इस बात से कि जिन्दगी में वे एक दूसरे के साथी रहे और उनकी व्यक्तिगत सम्पत्ति समान रूप से अर्जित थी, वे एक दूसरे के नजदीक खिंच आये थे और जैसा कि ऐसे मामलों में होता है, उन्होंने एक दूसरे के सामने अपने दिल खोलकर रख दिये थे, भविष्य के प्रति अपनी-अपनी आशाओं के विषय में एक दूसरे को साफ-साफ बता दिया था और वह सब भार उतार दिया था, जिसे बरदाश्त करना उन दोनों के लिए बड़ा कठिन था, क्योंकि स्वाभिमानवश वे अपनी-अपनी स्थिति को दूसरों से बता नहीं पाते थे। दोनों ने एक दूसरे को अपनी मित्र लड़कियों के चित्र दिखाये।

अलेक्सेई के पास ओल्गा का सिकिन खिंचा हुआ और धुंधला फोटोग्राफ था जो उसने जून के उस निर्मल-उज्ज्वल दिन स्वयं खींचा था जब उन्होंने वोल्गा के दूसरे तट पर फूलों से भरे स्तेपी मैदान में घास पर दौड़ लगायी थी। छरहरी लड़की, चटकीली सूती छींट की फ्राक पहने हुए, पैर समेटे बैठी थी और जंगली फूल उसकी गोद में उन्मुक्त रूप से खेल रहे थे। पूर्ण रूप से विकसित बाबूने के पुष्पों के बीच घास पर बैठी हुई वह स्वयं प्रातःकालीन ओस से भीगे बाबूने की भांति सफेद और निर्मल लग रही थी। विचारलीन-सी वह अपना सिर एक ओर झुकाये हुए थी और उसकी आंखें विस्फारित और आनन्द-विह्वल थीं, मानो वह इस ऐश्वर्य-पूर्ण संसार को जीवन में पहली बार देख रही है।

राहट के साथ ग्वोरदेव से बोली कि उसे कोई लेने आया है। बंजरे विस्तर से इस प्रकार उछल पड़ा मानों वह हवा के झोंके से उड़ गया हो इतनी बुरी तरह लजाते हुए कि उसके चेहरे के निशान पहले से भी अधिक प्रत्यक्ष रूप में उभर आये, वह जल्दी-जल्दी अपनी चीजें समेटने लगा।

"वह बड़ी भली लड़की है, और इतनी गम्भीर दिखाई देती है," नर्स ने ग्वोरदेव को जल्दी-जल्दी जाने की तैयारी करते देखकर मुस्कराते हुए कहा।

ग्वोरदेव का चेहरा आनन्द से दमक रहा था।

"क्या कह रही हो? तुम्हें वह पसंद है? वह भली लड़की है, क्यों नहीं?" उसने पूछा, और उत्तेजनावश, दुआ-सलाम करना भूलकर वह वार्ड के बाहर भाग गया।

"बच्चा है। इसी तरह के लोग जाल में फंस जाते हैं," मेजर स्त्रुचकोव बड़बड़ाया।

इस उन्मत्त व्यक्ति को पिछले कुछ दिनों में न जाने क्या हो गया था। वह चिड़चिड़ा हो गया था, अक्सर बिना बात क्रोध से भड़क उठता था, और आजकल चूंकि विस्तर पर बैठने योग्य हो गया था, इसलिए वह अपनी मुट्ठी पर कपोल टिकाये दिन भर खिड़की के बाहर ताकता रहता था और कोई बोले तो जवाब तक नहीं देता था।

सारा वार्ड—उदास मेजर, मेरेस्येव और दो नये मरीज—अपने वार्ड के भूतपूर्व साथी के सड़क पर प्रगट होने देखने के लिए खिड़कियों के बाहर झांक रहा था। दिन तनिक गर्म था। दीप्तमान, सुनहरी कोरों से सजे, हल्के-हल्के तरंगित बादल आसमान में तेजी से तिर रहे थे और बरस रहे थे। उसी समय एक छोटी-सी, स्याह पूनी-पूनी बदली तेजी से नदी के ऊपर से गुजर रही थी और बूंदें बिखेर रही थी जो धूप में चमक उठती थीं। इससे किनारे की पथरीली दीवारें इस प्रकार चमक उठी थीं, मानों उनपर पालिश कर दी गयी हो; कोलतार की सड़क पर धब्बे, सफ़ेद जैसे चकत्ते पड़ गये थे, और उससे ऐसी बढ़िया गंध आ रही थी कि वर्षा की इन आनन्ददायक बूदों को पकड़ने के लिए सिर खिड़की से बाहर निकालने को जी चाहता था।

"वह आ रहा है," मेरेस्येव फुसफुसाया।

प्रवेश द्वार के भारी, बलूत की लकड़ी के दरवाजे धीरे-धीरे खुले और उनमें दो व्यक्ति प्रगट हुए: एक तो किंचित स्थूलकाय युवती, गले सिर,

नहीं बन सकता।' मैंने उससे सीधे-सीधे कहा, 'मैं देखता हूं कि मे
शक्ल-सूरत तुम्हारी मनपसन्द नहीं है। बात ठीक है। मैं समझता हूं
मुझे बुरा नहीं लगा।' वह आंसुओं में फूट पड़ी, मगर मैंने उससे कहा
'रोओ मत। तुम भली लड़की हो। तुम से कोई भी व्यक्ति प्रेम
सकता है। तुम अपनी ज़िंदगी बरबाद क्यों करो?' फिर मैंने उससे कहा
'अब तुमने देख ही लिया कि मैं कितना सुन्दर हूं। विचार कर देख
मैं अपनी सेना को लौट जाऊंगा और अपना पता भेज दूंगा। अगर
अपना इरादा न बदलो तो मुझे लिखना।' और मैंने उससे यह भी कहा
'अपने को किसी ऐसी बात के लिए मजबूर न करना जिसे तुम्हारा
न चाहता हो। मैं आज जीवित हूं, मगर कल मर भी सकता हूं—
लोग लड़ाई के मैदान में हैं।' और सच, वह कहती ही रही, '
नहीं-नहीं।' और रोती रही। इसी वक़्त कम्बख़्त ख़तरे का भोंपू
लगा, 'अलर्ट!' वह बाहर चली गयी और मैं इस हलचल का
उठाकर भिमक आया और सीधा अफ़सरों के हेडक्वार्टर गया। उ
मुझे फ़ौरन तैनाती दे दी। अब सब ठीक हो गया है। मैं रेल-टिक
चुका हूं और शीघ्र ही रवाना हो जाऊंगा। मगर मैं तुमसे कहूंगा,
कसेई, मैं उससे पहले से भी अधिक प्यार करने लगा हूं और उसके
मैं कैसे ज़िंदा रहूंगा, मैं नहीं कह सकता।"

अपने मित्र का पत्र पढ़कर अलेक्सेई को लगा कि वह स्वयं अपने
व्य की ओर निहार रहा है। निस्सन्देह यही उसके साथ भी बीतेगी।
लगा उसे अस्वीकार नहीं करेगी, उससे मुंह नहीं मोड़ेगी, वह भी
प्रकार गौरवपूर्ण त्याग करना चाहेगी, वह उसके प्रति उदारता बरते
आंसुओं के बीच मुसकरायेगी और अपने घृणाभाव को दबाने का
करेगी।

"नहीं! नहीं! मैं यह नहीं चाहता," वह ज़ोर से बोल उठा।

वह लंगड़ाता हुआ वार्ड में वापस लौट आया, मेज़ के पास बैठ
और मोटे-मोटे अक्षरों में पत्र लिखने लगा—सलिल, रूखा,
वह सत्य प्रकट करने का साहस न कर सका। क्यों लिखे? उसकी
बीमार है और उसके दुख को वह और क्यों बढ़ाये? उसने
लिया कि अपने भावी सम्बन्धों के बारे में उसने काफ़ी विचार कि
और इस परिणाम पर पहुंचा कि ओल्गा के लिए प्रतीक्षा करना बड़ा
हुआ। कोई नहीं जानता युद्ध कितने समय और चलेगा, मगर बस

ानी बीते जा रहे हैं। युद्ध ऐसी चीज़ है कि इंतज़ार करना व्यर्थ भी सकता है। वह मारा जा सकता है और वह बिना उसकी पत्नी बने धवा हो जायेगी, या वह और भी बुरा होगा कि वह पंगु हो जाये ार उसे एक लंगड़े-लूले आदमी से विवाह करना पड़े। उससे क्या लाभ गा? इसलिए वह अपना यौवन बरबाद न करे और जितना शीघ्र हो के उसे भूल जाये। इस पत्र का उत्तर देने की आवश्यकता नहीं, अगर ह उत्तर न देगी तो उसे कुछ बुरा नहीं लगेगा। वह उसकी स्थिति सम-ता है—यद्यपि यह सब मान लेना उसके लिए कोई आसान नहीं है। लेकिन अच्छा यही होगा।

पत्र से मानों उसके हाथ जल रहे थे। उसे फिर पढ़े बिना ही उसने लिफ़ाफ़े में बन्द कर दिया और जल्दी ही उस नीली पत्र-पेटिका में डाल आया जो वायलर के पीछे टंगी हुई थी।

वह वार्ड में लौट आया और फिर मेज़ के किनारे बैठ गया। अपना दुख वह किससे बाटे? अपनी मां से नहीं। ग्वोरदेव से? वह, सचमुच, उसका दुख समझ सकेगा, मगर वह कहा होगा? युद्ध मोर्चे की ओर जानेवाली सड़कों की भूलभुलैयां में वह उसका पता कैसे पा सकेगा? क्या अपनी रेजीमेंट के नाम लिखा जाये? लेकिन उन सौभाग्यशाली व्यक्तियों को अपनी दैनिक युद्ध-व्यस्तता के बीच क्या उसकी चिन्ता करने का समय मिलता होगा? "मौसमी सार्जेन्ट" को? हां, सिर्फ़ उसी को! वह फ़ौरन लिखने बैठ गया और शब्द बड़ी स्वतंत्रतापूर्वक उमड़ने लगे, उतने ही उन्मुक्त भाव से जिस प्रकार किसी मित्र के आलिंगन में आंसू उमड़ पड़ते हैं। यकायक वह एक वाक्य के बीच में रुक गया, एक क्षण कुछ सोचा और कागज़ को मसलकर, फाड़कर फेंक दिया।

"रचना के जन्म की पीर से बड़ी कोई पीर नहीं होती," स्तुच्कोव ने अपनी आदत के अनुसार व्यंग्यात्मक स्वर में कहा।

वह अपने बिस्तर पर ग्वोरदेव का पत्र लिए बैठा था जिसे उसने बेतकल्लुफ़ी के साथ अलेक्सेई की अलमारी से उठा लिया था और पढ़ रहा था।

"आजकल आदमियों को क्या हो गया है?.. और ग्वोरदेव भी! वाह रे गधे! किसी लड़की ने ज़रा नाक सिकोड़ी और वह आंसुओं में सराबोर हो गया। मनोवैज्ञानिक विश्लेषण... यह पत्र पढ़ लेने के कारण तुम मुझसे नाराज़ तो नहीं हो, क्यों? हम मोर्चे के सिपाहियों के बीच कोई राज़ की क्या बात हो सकती है?"

मनेरगोई नाराज नहीं था। वह सोच रहा था, "अगर इलिना ने
याद करने आयेगा, तो मुझे आदर उसका इंतज़ार करना चाहिए, ...
चिट्ठी मालग से लेनी चाहिए?"

उस रात मनेरगोई को अच्छी तरह नींद नहीं आयी। पहले उसने ...
ने देखा कि वह एक बर्फ से ढंके हवाई अड्डे पर है, जहाँ एक '...
किस्म का लड़ाकू हवाई जहाज़ बड़े ही विचित्र आकार-प्रकार का ...
पहियों की जगह उसके चिड़ियों जैसे पंजे हैं। मैकेनिक धूम कॉकपिट ...
सीढ़ी पर चढ़ गया और बोला, "मनेरगोई के दिन बीत गये," और ...
उसमें उड़ने की बारी है। फिर उसने मानो देखा कि वह गुमान के ...
स्तर पर लेटा हुआ है और मिखाईल नाना सफ़ेद कमोज और मोती ...
पहने मनेरगोई के शरीर को भाप दे रहे हैं और हंसते हुए कह रहे हैं, ...
"विवाह के पहले तुम्हें आवश्यक है भाप-स्नान।" और भोर से ...
पहले उसने मोल्गा को सपने में देखा। वह अपनी बलिष्ठ, धूप से ...
टांगें पानी में लटकाये एक उलटी नाव पर बैठी है—हल्की-फुल्की, ...
सी, और उद्दीप्त। वह एक हाथ में आंखों के ऊपर धूप से छाया ...
हुए है और हंस रही है, और दूसरे हाथ के इशारे से उसे बुला रही है ...
वह उसकी तरफ़ तैरने लगा, लेकिन धारा बड़ी तेज़ और तूफ़ानी थी ...
वह उसे तट से और लड़की से दूर बहा ले गयी। उसने अपनी बाँहें ...
टांगों और अपने शरीर के प्रत्येक पुट्ठे से तीव्र से तीव्रतर परिश्रम ...
और उसके निकटतर पहुंच गया; उसकी हवा में उड़ती हुई केश-...
और धूप से भूरी टांगों पर पानी की चमकती हुई बूंदें उसे साफ़ दि-
खने लगी थीं...

इतने ही में वह स्फूर्ति और सुख अनुभव करता हुआ जाग गया। ...
बड़ी देर तक आंखें बन्द किये लेटा रहा और उस सुखद स्वप्न को ...
देखने की आशा में वह फिर सोने का प्रयत्न करने लगा। लेकिन वह ...
सिर्फ़ बचपन ही में होता है। स्वप्न में उस कृशकाय, धूप से भूरी ...
की मूर्ति मानो हर वस्तु को आलोकित कर गयी थी। उसे चिन्ता ...
उद्विग्न होने की कोई आवश्यकता नहीं, बल्कि उसे मोल्गा की ओर ...
बढ़ना चाहिए, धारा के विरुद्ध लड़ना चाहिए, हर क़ीमत पर आगे ...
चाहिए, एक-एक रत्ती शक्ति लगा देना चाहिए और उस युवती के ...
पहुंच जाना चाहिए। लेकिन पत्र का क्या करे? वह चाहने लगा कि ...
पेटिका के पास जाकर बैठे और डाकिये का इंतज़ार करे, लेकिन ...

प्टना से अभी तक वह अपरिचित था, और अभी तक ऐसी प्रवृत्ति भी विकार-क्रिया नहीं बना पाया था कि चलने के अनुक्रम में पैरों की स्थिति बदल सके, कदम उठाने में शरीर का बोझ एड़ी से हटाकर आगे उंगलियों पर और अगला डग भरने में उंगलियों से हटाकर एड़ी पर डाल सके और पैरों को एक दूसरे के समानान्तर न रखकर, पैरों के पंजे बाहर की तरफ़ किये हुए ऐसे कोण पर रखे कि चलने-फिरने समय शरीर को अधिक स्थिरता प्राप्त हो सके।

आदमी जब बचपन में मां की देख-रेख में अपने नन्हे-नन्हे, कमज़ोर पैरों के बल पहले टेढ़े-मेढ़े कदम उठाता है, तो वह ये सभी बातें सीख लेता है। वह ये आदतें शेष जीवन भर के लिए प्राप्त कर लेता है और वे उसकी स्वाभाविक प्रवृत्ति बन जाती हैं। लेकिन जब मनुष्य कृत्रिम अंग धारण करने के लिए विवश हो जाता और शरीर का प्राकृतिक सन्तुलन भंग हो जाता है, तो बचपन में अवगत ये प्रवृत्तियां, सहायता करने के बजाय, उसकी गति में बाधक बन जाती हैं। नयी आदतें सीखने में उसे पुरानी प्रवृत्तियों से संघर्ष करना पड़ता है। अनेक व्यक्ति, जो अपने पैर खो बैठे हैं, अगर उनमें इच्छा-शक्ति का अभाव है, तो वे चलने-फिरने की वही कला फिर कभी नहीं सीख सकेंगे, जिसे बचपन में हम इतनी आसानी से सीख लेते हैं।

लेकिन मेरेस्येव सख़्त धातु का बना था। एक बार कोई लक्ष्य बना लिया तो फिर उसे वह प्राप्त करके ही रहता था। अपनी पहली कोशिश की गलतियां समझकर उसने फिर प्रयत्न किया। इस बार उसने अपने कृत्रिम पैर का अग्रभाग बाहर की तरफ़ मोड़ लिया, एड़ी पर बोझ टिकाया और फिर पैर के पंजे पर शरीर का बोझ डाल दिया। चमड़ा बुरी तरह चर्रा उठा। जिस क्षण बोझ पैर के अग्रभाग पर डाला गया तभी अलेक्सेई ने दूसरा पैर फ़र्श से उठाया और उसे आगे फेंक दिया। एड़ी एक ज़ोर की थप के साथ फ़र्श से लगी। अब वह बाहें फैलाकर अपने शरीर को संतुलित करते हुए दीवार से अलग हो गया, मगर अगला डग भरने का साहस न कर पा रहा था। और वहीं वह खड़ा रह गया, शरीर डगमगा रहा था, वह संतुलन क़ायम रखने का प्रयत्न कर रहा था और नाक पर ठंडा पसीना छूटता महसूस कर रहा था।

वह इस मुद्रा में था कि उसपर वसीली वसील्येविच की नज़र पड़ गयी।

की एक बांह अलग हो गयी है, मेरे भाई, ऐसे लोग चढ़ाइयों में फ़ौजी टुकड़ियों की रहनुमाई कर रहे हैं, घातक रूप से घायल लोग मशीनगनें चलाते हैं; शत्रु की मशीनगनों के मुंह लोग अपने शरीर से बन्द कर देते हैं... सिर्फ़ मृतक व्यक्ति नहीं लड़ रहे हैं।" बूढ़े के चेहरे पर एक छाया आयी और चली गयी और वह सांस भरकर बोले, "मगर मृतक व्यक्ति भी लड़ रहे हैं... अपने गौरव से। हां... अब, नौजवान! उठो, अब फिर शुरू करें।"

जब मेरेस्येव वार्ड का दूसरा चक्कर लगाकर आराम करने के लिए

तूफान के पहले की खामोशी जल्दी खिंच गयी। सर्दियों में इस महत्व के मोर्चों और पहाड़ी दर्रों के बीच मुठभेड़ों के समाचार आते थे अस्पताल में अब पहले से थोड़े मरीज थे, और इसलिए प्रधान ने हुक्म दिया कि वार्ड बटालियन की खाली चारपाइयां हटा दी जायें। इस प्रकार पूरा वार्ड मेरेस्येव और मेजर स्त्रुच्कोव के हवाले रह गया था; मेरेस्येव की चारपाई दायीं तरफ और मेजर की चारपाई बायीं तरफ बड़ी सी मोरवाली खिड़की के पास लगी थी।

पहाड़ी दर्रों के बीच मुठभेड़ें ! मेरेस्येव और स्त्रुच्कोव अनुभवी सिपाही थे और वे जानते थे कि यह शान्ति जितनी ही देर रहेगी, जितनी ही देर यह तनातनी की खामोशी कायम रहेगी, उतना ही भयंकर होगा वह तूफान, जो उसके बाद आयेगा।

एक दिन विज्ञप्ति में "सोवियत संघ के वीर" पद से विभूषित स्क्वैड्रन कैप्टेन ईवुश्किन का हवाला आया, जिसने कहीं दक्षिणी मोर्चे पर पचीस जर्मनों को गिरा दिया था और इस प्रकार शत्रु के मारने की अपनी संख्या दो सौ तक पहुंचा दी थी। ग्वोज्देव का एक पत्र आया। उसने यह तो नहीं बताया कि वह कहां है या क्या कर रहा है, मगर इतना बताया था कि वह अपने भूतपूर्व कमांडर, पावेल अलेक्सेयेविच रोतमिस्त्रोव, के स्थान पर पहुंच गया है और वहां के जीवन से संतुष्ट है, वहां चेरी के वृक्ष बहुत हैं और वह स्वयं तथा अन्य छोकरे उनको जी भरकर खा रहे हैं; और उसने अलेक्सेई से अनुरोध किया था कि अगर यह पत्र मिल जाये तो एक पंक्ति अन्यूता को लिख दे। ग्वोज्देव ने लिखा था कि उसने अन्यूता को भी पत्र लिखा है, मगर पता नहीं उसके पत्र अन्यूता तक पहुंच रहे हैं या नहीं क्योंकि वह हमेशा मार्च पर रहता है और उसका पता अस्थायी है।

किसी फौजी को यह बताने के लिए ये दो सूचनाएं काफी थीं कि तूफान वहीं दक्षिण में फूटनेवाला है। कहने की आवश्यकता नहीं कि अलेक्सेई ने अन्यूता को लिख दिया था और ग्वोज्देव को दाढ़ी बढ़ाने के विषय में प्रोफेसर की सलाह भेज दी थी; लेकिन अलेक्सेई जानता था कि ग्वोज्देव किसी युद्ध की आशा से उत्तेजित अवस्था में होगा जिससे हर सिपाही को कितनी वेदना होती है और फिर भी कितना आनन्द होता है, और

ताकि फौरन स्वस्थ हो जाये और टहलने तथा जिमनास्टिक करने की धुन न निकल जाये।

इस खास मौके पर इतना टहलने के बाद कि उसका सिर चक्कर खाने लगा वह अपने सामने कुछ न देख पाने के कारण रास्ता टटोलता वार्ड में गया और चारपाई पर लुढ़क गया। थोड़ा स्वस्थ होने पर उसे वार्ड में कुछ आवाजें सुनने की चेतना हुई: क्लावदिया मिखाइलोव्ना का शान्त और किंचित व्यंग्यपूर्ण स्वर तथा स्त्रुच्कोव का उत्तेजित और विनयपूर्ण स्वर। वे दोनों अपनी बातचीत में इतने मशगूल थे कि मेरेस्येव का वार्ड में आना नहीं देख सके।

"मुझपर विश्वास करो, मैं गम्भीरतापूर्वक कह रहा हूं। इतना भी नहीं समझ सकती? तुम औरत हो या नहीं?"

"हां, मैं औरत तो जरूर हूं, मगर मैं समझ नहीं पाती, और तुम इस विषय पर गम्भीरतापूर्वक बात भी नहीं कर सकते। इसके अलावा, मुझे तुम्हारी गम्भीरता की जरूरत भी नहीं है।"

इस पर स्त्रुच्कोव आपे से बाहर हो गया और झिड़कते हुए स्वर में चिल्लाया:

"जहन्नुम में जाये, मैं तुम्हें प्यार करता हूं। तुम औरत नहीं हो, तुम हो लकड़ी की मूरत, जो समझ नहीं पायी। अब समझ गयी तुम?" इतना कहकर उसने मुंह फेर लिया और खिड़की के दरवाजे पर उंगलियों से ताल देने लगा।

नर्सों जैसे अभ्यस्त कोमल, सावधान पग धरती हुई क्लावदिया मिखाइलोव्ना दरवाजे की ओर बढ़ी।

"तुम किधर चल दी? तुम्हारा क्या जवाब है?"

"इस पर बात करने की न तो यह जगह है और न वक्त है। मैं ड्यूटी पर हूं।"

"तुम साफ-साफ बात क्यों नहीं कहती? तुम मुझे यातना क्यों दे रही हो? जवाब दो," मेजर की आवाज में वेदना की ध्वनि थी।

क्लावदिया मिखाइलोव्ना दरवाजे पर रुक गयी, उसकी छरहरी, सुघड़ आकृति अंधेरे गलियारे की पृष्ठभूमि में उभर उठी। मेरेस्येव ने कभी अनुमान भी नहीं किया था कि यह शांत नर्स, जो अब जवान नहीं रह गयी थी, इतने स्त्रैण रूप में दृढ़ और आकर्षक हो सकती है। वह दरवाजे

मेजर स्त्रुच्कोव को भी इसी जगह भेजा गया था। उन्हें स्वास्थ्य-गृह ले जाने के लिए कार भेजी गयी थी, लेकिन मेरेस्येव ने अस्पताल के अधिकारियों को बताया कि मास्को में उसके कुछ रिश्तेदार हैं और उनसे मिले बिना वह वहाँ नहीं जा सकता। उसने अपना सामान स्त्रुच्कोव के साथ भेज दिया था और अब अस्पताल से पैदल रवाना हो गया था, उसने वायदा किया था कि शाम को लोकल ट्रेन से वह स्वास्थ्य-गृह पहुँच जायेगा।

मास्को में उसका कोई रिश्तेदार नहीं था, लेकिन उसे राजधानी को घूमकर देखने की बड़ी आकांक्षा थी, वह बिना सहायता चल-फिरकर अपनी ताकत आज़माने के लिए उत्सुक था, और उस कोलाहलपूर्ण भीड़ में मिल जाना चाहता था जिसे उसके बारे में कोई चिन्ता न थी। उसने अन्यूता को फोन कर दिया था और पूछा था कि वह बारह बजे के क़रीब उससे मिल सकेगी या नहीं। कहाँ? अच्छा, चलो पुश्किन स्मारक के क़रीब... और अब वह ग्रेनाइट पत्थर के तट से बंधी हुई शानदार नदी के किनारे-किनारे चला जा रहा था जिसका उद्वेलित धरातल धूप में चमचम हो रहा था। ग्रीष्म के उष्ण वायुमण्डल में, जो सुपरिचित सुगन्ध से पूरित था, वह लम्बी सांसें भरता चला जा रहा था।

चारों ओर वातावरण कितना मनोहर था!

उसके पास से जितनी भी महिलाएँ गुज़रती, वे सभी उसे सुन्दर दिखाई दे रही थीं और हरे-भरे वृक्ष आश्चर्यजनक रूप से उज्ज्वल प्रतीत हो रहे थे। पवन इतना मदमाता था कि उसका सिर इस तरह उन्मत्त हो उठा मानों कोई आसव पी डाला हो और वायुमण्डल इतना साफ़ था कि उसे दूर-अदूर के अन्तर की संवेदना न रही और उसे ऐसा प्रतीत होने लगा कि क्रेमलिन की कंगूरेदार दीवारों को, जिन्हें वह पहली बार अपनी आंखों से देख रहा था, और इवान महान के घण्टागार के गुम्बद को तथा नदी के ऊपर टंगे पुल की विशालकाय नीची मेहराब को छूने के लिए सिर्फ़ हाथ बढ़ाने की आवश्यकता है। नगर पर जो मधुर, मस्त बनानेवाली सुगंध मंडरा रही थी, उससे उसको अपने बचपन की याद हो आयी। वह कहाँ से आया है? उसका हृदय इतनी तेज़ी से क्यों धड़क रहा है और उसे अपनी माँ की–आज की झुर्रीदार बूढ़ी महिला की नहीं, बल्कि जवान सुन्दर केशोंवाली ऊँचे कद की युवती की–याद क्यों आ रही ? उसके साथ वह मास्को कभी नहीं आया था।

असाधारण बात शायद न दिखाई दी हो। उसे अगर कोई बात देखकर आश्चर्य हुआ होगा तो, "तास" समाचार एजेंसी द्वारा दीवारों और दूकानों की खिड़कियों पर मायकोव्स्की की शैली में बनायी गयी तस्वीरों के स्टैंडों और कुछ मकानों के सामनेवाले हिस्सों को ऐसे विचित्र ढंग से रंगे हुए देखकर, जिनसे भविष्यवादी चित्रकारों द्वारा अंकित किसी ऊटपटांग चित्र की याद आ जाती थी।

मेरेस्येव जो इस समय तक काफी थक गया था, बूट घसीटते हुए और अपनी छड़ी का और भी बोझिल ढंग से सहारा लेते हुए गोर्की स्ट्रीट में घुस गया और चारों ओर बमों के गड्ढों, टूटी-फूटी इमारतों, मुंह बाये हुए ख़ाली जगहों और चकनाचूर खिड़कियों को तलाश करने लगा और उन्हें न पाकर चकित रह गया। चूंकि वह सबसे पश्चिमी हवाई अड्डों में से एक पर तैनात था, इसलिए वह लगभग हर रात अपनी खोहों के ऊपर से एक के बाद एक उड़कर पूर्व की ओर जानेवाले जर्मन बममार जहाज़ों की टुकड़ियों की आवाज़ सुनने का आदी था। एक लहर की गूंज ख़त्म भी न हो पाती थी कि दूसरी आवाज़ उमड़ती चली आती थी, और कभी-कभी तो सारी रात आसमान गरजता रहता था। हवाबाज़ जानते थे कि ये फ़ासिस्ट मास्को की तरफ़ जा रहे हैं, और इसलिए वे अपने मन में चित्र बनाया करते थे कि मास्को में नारकीय ज्वाला धधक रही होगी।

और अब युद्धकालीन मास्को में घूमते-फिरते हुए मेरेस्येव हवाई हमले के चिह्न खोज रहा था, मगर उसे कोई न मिल रहा था। आस्फाल्ट की सड़कें चिकनी थीं, इमारतों की अटूट पांतें वैसी की वैसी खड़ी थीं। खिड़कियां भी, जिन पर काग़ज़ की आड़ी-तिरछी पट्टियां चिपकी थीं, कुछ अपवादों को छोड़कर, सभी सुरक्षित थीं। लेकिन मोर्चे की पांत निकट ही थी, और इस बात को यहां के निवासियों के चिन्तापूर्ण चेहरे देखकर समझा जा सकता था, जिनमें से आधे लोग सिपाही थे, जो धूल भरे बूट पहने रहते थे, जिनकी वर्दियां पसीने से बग़लों पर चिपक जाती थीं और जिनकी पीठ पर सामान के थैले लटके नज़र आते थे। धूल से सनी मोटर-ट्रकों का एक लम्बा दस्ता, जिनके मडगार्ड टूटे-फूटे थे और सामने के शीशे गोलियों से चकनाचूर हो चुके थे, अचानक एक बगल की गली से घूम के पश्चिमी मुख्य सड़क पर प्रकट हुआ। इन ट्रकों के सिपाही, जिनके बरसाती लबादे हवा में उड़ रहे थे, चारों ओर कौतूहलपूर्वक देख रहे थे। ट्रालीबसों, कारों और ट्रामों को पीछे छोड़ते हुए

नहीं है। लालसापूर्ण दृष्टि से मेरेस्येव उस बस [illegible]
ता रहा: अगर इन धूल सनी ट्रकों में से किसी एक पर वह उछलकर
चढ़ जाये तो वह शाम तक मोर्चे पर अपने हवाई अड्डे तक पहुँच जायेगा।
उसने मन-ही-मन उस खोह की कल्पना की, जहाँ वह देग्त्यरेन्को के साथ
रहता था: देवदार के लट्ठों के ढांचों से बनी चारपाइयाँ, राल, चीड
और गोले के खोल को चपटाकर बनाये गये आदिम लैम्प में जलनेवाले
पेट्रोल की तीखी गंध; इंजनों की घड़घड़ाहट जो हर सुबह ज़ोर पकड़
लेती थी, और सिर के ऊपर चीड़ वृक्षों के झूमने की गूँज, जो रात हो
या दिन, कभी बंद न होती थी। वह खोह उसे वास्तविक, शान्तिपूर्ण,
आरामदेह घर जैसी लगने लगी। काश, वह शीघ्र ही वहाँ पहुँच सकता,
उस दलदली स्थल पर पुन: पहुँच सकता जिसकी नमी को, फिसलनी
ज़मीन को और मच्छरों की लगातार भनभनाहट को सारे हवाबाज़ कोसा
करते थे।

वह बड़ी कठिनाई से पैर घसीटता पुश्किन स्मारक तक पहुँचा। रास्ते
में वह कई बार अपनी छड़ी पर दोनों हाथ टेककर खड़े हो करके और दूकानों
की खिड़कियों में प्रदर्शित मामूली चीज़ों की जांच करने का बहाना करके
आराम करने के लिए रुका। स्मारक के पास हरी, सूरज से तपी हुई
बेंच पर वह कितनी राहत के साथ बैठ गया था कहो कि गिर पड़ा और
पैर फैला लिये, जिनमें कृत्रिम पैरों की रुपेटियों से दर्द और जलन मच
रही थी। यद्यपि वह थका था, उल्लास की भावना ने उसका साथ न
छोड़ा। वह निर्मल, खुला हुआ दिन कितना सुन्दर था। नुक्कड़ की इमा-
रत की छत पर खड़ी महिला की मूर्ति के ऊपर फैला आसमान अनन्त
प्रतीत होता था। सड़क के किनारे लगे लाइम वृक्षों की ताज़ी, मधुर
गंध लेकर हवा का एक झोंका आया। ट्रामगाड़ियों की घड़घड़ाहट प्यारी
लग रही थी और उन पीले और दुबले-पतले बच्चों की हंसी भी उल्लास-
पूर्ण थी, जो स्मारक के नीचे उष्ण, सूखी बालू में घरौंदे बनाने में व्यस्त
थे। उधर सड़क पर और आगे, रस्सियों के बैरियर के पीछे, जहाँ
गुलाबी कपोलोंवाली दो लड़कियाँ चुस्त फौजी वर्दियाँ पहने चौकसी कर
रही थीं, एक विशाल सिगार जैसा रुपहले ढांचे का गुब्बारा नज़र आ
रहा था और मेरेस्येव को यह युद्ध-साधन मास्को के आसमान में स्थित
रात्रिकालीन प्रहरी जैसा नहीं, एक विशालकाय, सुप्रकृति के पशु की भा-

ति लगा जो मानों किसी चिड़ियाघर से निकल भागा हो और अब पेड़ों की ठंडी छाह में ऊंघ रहा हो।

मेरेस्येव ने आँखें बंद कर लीं और अपना मुस्कराता हुआ चेहरा सूरज की ओर मोड़ लिया।

शुरू में बच्चों ने हवाबाज की ओर कोई ध्यान नहीं दिया। उन्हें देखकर मेरेस्येव को वार्ड नम्बर बयालीस की खिड़की की पटिया पर आ जुटनेवाली गौरैयों का स्मरण हो आया और उनकी चहक की गूंज के बीच वह सूरज की उष्णता तथा सड़क के शोरगुल को अपने अंग-अंग में सोख लेने में व्यस्त हो गया। लेकिन एक छोटा-सा छोकरा, अपने साथियों से अलग भागकर अलेक्सेई के फैले हुए पैरों से टकरा गया और रेत में पछाड़ खाकर गिर पड़ा।

उस नन्हे छोकरे का चेहरा एक क्षण तो आंसू-भरी पीड़ा से विकृत हो उठा, मगर दूसरे ही क्षण उसपर हैरानी का भाव आ गया और फिर भय-ग्रस्तता छा गयी। डर के मारे बालक चीख उठा और भाग खड़ा हुआ। बच्चों का झुण्ड उसके चारों तरफ जमा हो गया और कुछ देर तक हवाबाज पर कनखियों से नज़रें डालते हुए घबराहट के साथ चहकता-बहकता रहा। फिर वे धीरे-धीरे, चोरी-चोरी उसकी ओर बढ़ने लगे।

अपने विचारों में लीन रहने के कारण मेरेस्येव यह दृश्य न देख सका। उसने आँखें खोलीं और छोकरों को अपनी ओर आश्चर्य और भय से ताकते देखा, तभी उसे होश आया कि ये बालक क्या कह रहे हैं।

"तू झूठ बोल रहा है, विटैमिन! वह असली हवाबाज है, सीनियर लेफ्टीनेंट," एक दस वर्ष के पीले-दुबले लड़के ने गम्भीरतापूर्वक कहा।

"मैं झूठ नहीं कह रहा हूँ," विटैमिन ने विरोध किया। "मैं मर जाऊँ, अगर झूठ बोलूँ। सच मानो, वे लकड़ी के हैं! असली नहीं, लकड़ी के हैं, मैं कहे देता हूँ।"

मेरेस्येव के कलेजे में तीर-सा लगा और दिन की उज्ज्वलता यकायक उसके लिए मंद पड़ गयी। उसने आँखें उठायीं और उसकी नज़र पड़ी ही, बालक अभी भी उसके पैरों की ओर देखते हुए पीछे हट गये।

अपने साथी के अविश्वास से क्रुद्ध होकर विटैमिन ने उसे चुनौती देते हुए कहा:

"तुम चाहो तो मैं उसी से पूछ लूँ। क्या समझते हो, मैं डरता हूँ? आओ, शर्त बद लो!"

इतना कहकर वह लड़कों के झुंड से निकलकर धीरे-धीरे, सावधानी से, अस्पताल की खिड़की की दहलीज पर फुदकनेवाले "टामी-गनर" की भांति, पलक मारते ही रफूचक्कर होने के लिए तैयार-सा, वह मेरेस्येव की तरफ़ बढ़ा। अंत में, दौड़ के लिए तैयार खिलाड़ी की भांति कमर झुकाकर, तत्परतापूर्वक खड़े होकर उसने पूछने का साहस किया

"चाचा, आपके पैर कैसे हैं, सच्चे हैं या लकड़ी के? क्या आप पंगु हैं?"

गौरैया जैसे छोकरे ने हवाबाज की आँखों में आँसू भर आते देखे। अगर मेरेस्येव उछल पड़ता, उसपर चीख पड़ता और अपनी विचित्र छड़ी लेकर उसके ऊपर झपट पड़ता, तो उस बालक को कोई आश्चर्य न होता, लेकिन वायुसेना का एक लेफ़्टीनेंट रो रहा था। उसने समझा तो नहीं, मगर अपने नन्हे-से दिल में वह दर्द महसूस किया जो उसने "पंगु" कहकर हवाबाज को चोट पहुँचाकर पैदा किया था। वह बच्चों के झुण्ड में खामोशी से वापस लौट गया, और झुण्ड भी गायब हो गया मानो वह उष्ण वायु में घुल गया हो जिसमें शहद और तप्त अलकतरे की गंध छायी हुई थी।

अलेक्सेई ने अपना नाम पुकारे जाते सुना। वह उछलकर खड़ा हो गया। सामने अन्यूता खड़ी थी। वह उसे फौरन पहचान गया—यद्यपि वह उतनी सुन्दर नहीं थी, जितनी कि फोटो में दिखाई देती थी। उसका चेहरा पीला और थका हुआ दिखाई दे रहा था, और वह अर्ध-फौजी पोशाक पहने थी—सिपाहियों जैसी छोटी कमीज तथा घुटने तक के जूते और एक पुरानी, रंग उड़ी टोपी सिर पर जमाये हुए। लेकिन उसकी हरी-सी किंचित उभरी हुई आँखें मेरेस्येव की ओर इस निर्मलता और सादगी से देख रही थी, उनमें से ऐसा मैत्री भाव आलोकित हो रहा था, कि वह लड़की जो उसके लिए अजनबी थी, उसे पुरानी परिचित जान पड़ी मानो बचपन में वे दोनों साथ-साथ इसी अहाते में खेलते रहे हों।

एक क्षण उन्होंने मौन भाव से एक दूसरे की परीक्षा की। अंत में वह बोली:

"मैंने आपकी कल्पना बिल्कुल भिन्न रूप में की थी।"

"कैसी कल्पना की थी?" मेरेस्येव ने पूछा और अपने चेहरे पर उमड़ आयी मुस्कान को, जो उसे कुछ उपयुक्त नहीं महसूस हो रही थी, बहुत कोशिश करने पर भी दूर नहीं कर सका।

"मैं क्या बताऊँ? समझ लीजिये, वीरों जैसा, ऊँचे क़द का, हृष्ट-पुष्ट। हाँ, ऐसा ही कुछ था, और भारी जबड़ा, इस तरह का, और सचमुच, मुँह में एक पाइप... ग्रिगोरी ने आपके बारे में इतना कुछ लिखा था।"

"आपका ग्रिगोरी, वह है वीर!" अलेक्सेई ने बीच में ही उसकी बात काट दी और यह देखकर कि इस बात से लड़की खिन्न हुई है, उसने इसी तर्ज़ से बात जारी रखते हुए और "आपका" शब्द पर ज़ोर देते हुए कहा: "आपका ग्रिगोरी तो असली इनसान है। मैं क्या हूँ? लेकिन आपका ग्रिगोरी... मेरा ख़्याल है, उसने अपने बारे में आपको कुछ नहीं बताया..."

"अच्छा, अलेक्सेई, मैं आपको अलेक्सेई कहकर पुकारूँगी इजाज़त होगी? उसके पत्रों से मैं इस नाम की अभ्यस्त हो चुकी हूँ। मास्को में आपको और कोई काम नहीं है, क्या? तो मेरे घर चलिये मैं अपनी ड्यूटी पूरी कर चुकी हूँ और इसलिए अब सारा दिन फ़ुर्सत में रहूँगी। चलें! मेरे घर कुछ वोद्का भी है। आपको वोद्का पसन्द है? मैं आपको कुछ पिलाऊँगी।"

तत्क्षण, स्मृति के गर्भ से, अलेक्सेई की आँखों के सामने मेजर स्त्रुच्कोव का शरारत-भरा चेहरा कौंध गया और उसे लगा कि वह आँखें मचकाता हुआ कह रहा है: "लो, देख लो! देखते हो, यह कैसी है? अकेली रहती है। वोद्का! आहा!" लेकिन स्त्रुच्कोव नज़र से इतना गिर चुका था कि वह उसकी बातों पर अब किसी क़ीमत पर यक़ीन नहीं कर सकता। शाम होने को अभी बड़ी देर थी, इसलिए वे पेड़ों की छाँह तले सड़क के किनारे-किनारे पुराने मित्रों की तरह बातें करने चल दो। उसे यह देखकर आनन्द प्राप्त हो रहा था कि जब उसने बताया कि युद्ध शुरू होने पर ग्वार्देत्स किस दुर्भाग्य का शिकार हो गया था तो अपने आँसू रोकने के लिए उसने अपने होंठ काट लिये। जब उसने मोर्चे पर ग्वार्देत्स के बहादुरी कामों का वर्णन किया तो उसकी हरी-सी आँखें चमकने लगीं। वह उसपर कितना गर्व करती है! और अधिक विस्तृत विवरण पाने के लिए वह किस बारीकी से सवाल पूछ रही थी। और उस समय वह कितनी रुष्ट हो उठी जब उसने स्वयं बताया कि ग्वार्देत्स ने अकारण ही उसके नाम अपनी तलाक़नामे का कागज भेज दिया था। और वह अकारण क्यों भेजा था? न कोई बेवफ़ाई, न कोई संदेह और न कोई गम ही

आ रही थी, ऊपर की मंजिल पर पहुँचे। लड़की ने कुंजी लगाकर दरवाजा खोला। तंग रास्ते में पड़े हुए सामान-भरे थैलों, टीन के कुछ तसलों और कनस्तरों को लांघते हुए वे एक अंधेरे और वीरान रसोईघर में पहुँचे, फिर एक छोटा-सा गलियारा पार किया और एक छोटे-से दरवाजे तक पहुँचे। एक नाटी, दुबली-पतली वृद्धा ने सामने के दरवाजे से अपना सिर निकाला।

"आन्ना दनीलोव्ना, तुम्हारे लिए एक चिट्ठी है," उसने कहा और फिर उन युवा व्यक्तियों को जिज्ञासापूर्वक तब तक देखती रही, जब तक वे कमरे में घुस न गये और फिर गायब हो गयी।

अन्यूता के पिता एक संस्थान में प्राध्यापक थे। जब संस्थान यहाँ से अन्यत्र ले जाया गया तो अन्यूता के माता-पिता भी साथ ही चले गये और किसी पुरानी वस्तुओं के भण्डार की भांति कपड़े से ढके-मुंदे फ़र्नीचर से भरे ये दो छोटे-से कमरे इस लड़की की देखभाल में छोड़ गये। सारे फ़र्नीचर, दरवाज़े और खिड़कियों के पुराने परदों, दीवारों की तस्वीरों और शिलफों पर रखी हुई मूर्तियों और गुलदस्तों से सीलन और वीरानगी की गंध आ रही थी।

"इस जगह की यह हालत देखकर क्षमा करना। मैं सैनिक की भांति रहती हूँ और अस्पताल से सीधे विश्वविद्यालय चली जाती हूँ। इस जगह तो मैं कभी-कभी आती हूँ," अन्यूता ने लजाते हुए कहा और कूड़ा-करकट समेत मेज़पोश को जल्दी से मेज़ से हटा दिया।

वह कमरे से बाहर चली गयी और लौटकर उसने मेज़पोश को मेज़ पर फिर से बिछा दिया और सावधानी से उसके किनारे ठीक कर दिये।

"और जब कभी घर आने का मौक़ा भी मिलता है, तो मैं इतनी थकी हुई होती हूँ कि आने को मुश्किल से शाम तक घसीटकर ले आती हूँ और कपड़े उतारे बिना ही सो जाती हूँ। इसलिए सफ़ाई के लिए कोई वक़्त नहीं मिलता!"

कुछ क्षण बाद बिजली की केतली गुनगुनाने लगी; चीनी के पुराने प्याले, जिनके किनारे घिस गये थे, मेज़ पर चमक रहे थे; एक तश्तरी पर रूई की पावरोटी के पतले टुकड़े रखे हुए थे, और शक्कर के डले के बजाय चीनी के छोटे-छोटे टुकड़े रखे थे। फूलदार टीकोज़ी – यह भी [illegible] की चीज़ थी – के नीचे रखे हुए टीपाट से कमरे में ऐसी सुगन्ध आ रही थी कि युद्ध से पहले का ज़माना याद आ जाता था, और

ख़ाली कर दिया और फ़ौरन खांसने लगी। उसका चेहरा सुर्ख़ पड़ गया; वह बड़ी कठिनाई से सांस ले पा रही थी।

वोद्‌का बहुत दिनों से न चखी थी, इसलिए मेरेस्येव को नशा चढ़ता महसूस हुआ और अपने शरीर में उष्ण सिहरन उमड़ती जान पड़ी। उसने पुनः गिलास भर दिये, लेकिन अन्यूता ने दृढ़तापूर्वक सिर हिलाकर मना कर दिया।

"नहीं, नहीं ! मैं नहीं पीती। तुमने देख तो लिया कि मुझे क्या हो जाता है।"

"लेकिन क्या तुम मेरे शुभ के लिए नहीं पियोगी?" अलेक्सेई ने अनुरोध किया, "काश, तुम्हें मालूम होता, अन्यूता, कि मुझे शुभकामनाओं की कितनी आवश्यकता है!"

लड़की ने उसकी ओर बड़ी गम्भीरतापूर्वक देखा, अपना जाम उठाया और मुस्कराकर उसकी ओर सिर हिलाकर शुभकामना प्रगट की और कुहनी से उसकी कुहनी दबाकर फिर जाम ख़ाली कर गयी, मगर इस बार फिर खांसी आयी।

"मैं कर क्या रही हूं ?" आख़िरकार जब उसकी सांस फूलना बन्द हुई तो वह बोली, "और वह भी चौबीस घंटे ड्यूटी करने के बाद। मैं सिर्फ़ तुम्हारे वास्ते इतना कर रही हूं, अलेक्सेई ! तुम हो... ग्वोज्देव ने तुम्हारे बारे में मुझे बहुत कुछ लिखा था... मैं तुम्हारे लिए भी शुभकामना करती हूं, मेरी हृदय से बहुत-बहुत शुभकामना है। और मुझे विश्वास है, तुम्हारी कामनाएं भी पूरी होंगी। सुन रहे हो, मैं क्या कह रही हूं, मुझे विश्वास है," और आनन्दपूर्ण खिलखिलाहट के साथ हंस पड़ी, "लेकिन तुम खा नहीं रहे हो! कुछ पावरोटी खा लो। तकल्लुफ़ न करो। मेरे पास अभी और है। यह तो कल की है। आज का राशन तो मुझे अभी मिला नहीं है।" उसने चीनी की वह प्लेट जिसमें काग़ज़ की पर्त सरीखी बारीक कटी पावरोटी रखी थी, उसकी ओर खिसका दी, "खाओ, खा भी लो, नादान न बनो, वरना तुम्हें नशा चढ़ जायेगा, तो फिर मैं क्या करूंगी?"

अलेक्सेई ने तश्तरी अलग खिसका दी और अन्यूता की हरी-सी आंखों में सीधे-सीधे आंखें डालकर और फिर उसके नन्हे-नन्हे भरे हुए, सुर्ख़ होंठों पर नज़र डालकर उसने मंद स्वर में कहा:

"अगर मैं तुम्हें चूम लूं, तो तुम क्या करोगी?"

से बताये देती हूँ, जैसे मैं अपने पिता जी को बताती: पहले तो उसके चेहरे पर प्यार के चिह्नों को देखना भर भी मैं बर्दाश्त नहीं कर सकी। नहीं, बर्दाश्त नहीं, यह सही शब्द नहीं होगा। मेरा मतलब है–घबरा गयी। नहीं! यह भी सही शब्द नहीं है। मैं कैसे बताऊँ, समझ में नहीं आता। तुम मेरी बात समझ गये? शायद मेरा यह व्यवहार सही नहीं था, लेकिन इसमें कोई कर ही क्या सकता है? लेकिन मेरे पास से उसका भाग जाना! मूर्ख लड़का! हे भगवान, कितना मूर्ख लड़का है! अगर तुम उसे पत्र लिखो, तो उसे बता देना कि मुझे उसके व्यवहार से ठेस लगी है, बहुत ठेस लगी है।"

विशाल स्टेशन लगभग पूरी तरह सिपाहियों से भरा था, कुछ लोग सुनिश्चित कार्यवश भाग-दौड़ कर रहे थे और कुछ लोग भौंहें चढ़ाये हुए चिन्ताग्रस्त चेहरे तनाये दीवारों के किनारे बेंचों पर, या अपने सामान के थैलों पर या फ़र्श पर आसन जमाये खामोशी से बैठे थे और ऐसा लगता था कि उनका दिमाग़ किसी एक ही बात पर केन्द्रित है। किसी समय यह लाइन पश्चिमी यूरोप से मुख्य सम्बन्ध स्थापित करती थी, शत्रु ने अब मास्को से पश्चिम में लगभग ८० किलोमीटर की दूरी पर रेलवे लाइन काट दी थी। बाकी लाइन पर अब सिर्फ़ फ़ौजी ट्रेनें ही दौड़ती थीं, और राजधानी से सफ़र कर, दो ही घंटे में अब सिपाही लोग सीधे अपनी-अपनी डिवीजनों के पिछले हिस्सों तक पहुँच जाते थे, जो यहाँ रक्षा-पांत सभाले हुए थी। और हर आधे घंटे पर कोई बिजली ट्रेन प्लेटफ़ार्म पर मजदूरों की भारी भीड़ को, जो बाहरी क्षेत्रों में रहते हैं, और दूध, फल, और साग-सब्ज़ियाँ लानेवाली किसान औरतों को उतार जाती थी। एक क्षण मानवता के इस कोलाहलपूर्ण समूह से स्टेशन पर बाढ़ आ जाती थी, लेकिन शीघ्र ही वे सड़कों पर बह जाती थी, और एक बार फिर स्टेशन को केवल फ़ौजियों के अधिकार में छोड़ जाते थे।

मुख्य हाल में सोवियत-जर्मन मोर्चे का एक बड़ा भारी, फ़र्श से ठीक छत तक ऊँचा नक़्शा टंगा था। एक मोटी-सी, गुलाबी कपोलोंवाली फ़ौजी वर्दीधारी लड़की एक अख़बार थामे, जिसमें सोवियत सूचना-विभाग की ताज़ी विज्ञप्ति थी, सीढ़ी लगाये खड़ी थी और नक़्शे पर पिनों में लगे हुए डोरे को खिसकाकर मोर्चे की पांत को अंकित कर रही थी।

नक़्शे के निचले हिस्से में डोरा दाहिनी तरफ बड़े भारी कोण पर मुड़ा हुआ था। जर्मन दक्षिण में हमला कर रहे थे। उनकी छठवीं फ़ौज ने

नक्शे जड़ दिये गये थे; वह हरे-भरे जंगलों से झाँकते हुए बंगलों, छोटी-सी मुड़ी हुई नदियों के पन्ने जैसे हरे किनारों, और वृक्षों के मोम-बत्तीनुमा तनों को जो डूबते हुए सूर्य की रोशनी में सुनहरे बरछों की भाँति चमक रहे थे, और गोधूलि बेला में जंगलों के पार नीचे [illegible] प्रसार को निहार रहा था।

" नहीं, मगर तुम तो फौजी आदमी हो, मुझे बताओ, यह [illegible] ठीक है? एक वर्ष से ऊपर हम फासिज्म के खिलाफ अकेले [illegible] पा रहे हैं। इसके बारे में तुम्हारा क्या ख्याल है? और हमारे मित्र [illegible] कहाँ हैं? और कहाँ है उनका दूसरा मोर्चा? ज़रा तुम अपने दिमाग [illegible] यह तस्वीर खींचो: डाकू लोग ऐसे आदमी पर हमला कर देते हैं, [illegible] नि [illegible] में अपना पसीना बहाता हुआ काम-काज में लगा [illegible] था। लेकिन यह आदमी बुद्धि नहीं खोता। वह उन डाकुओं से भिड़ [illegible] है और बराबर लड़ता रहता है। वह घावों से लहू-लुहान हो जाता है मगर फिर भी जो भी हथियार हाथ लगता है, उससे लड़ता रहता है [illegible] अकेले के खिलाफ एक, वे लोग हथियारबंद हैं और बहुत दिनों से उस [illegible] घात में बैठे थे। हाँ। और उस आदमी के पड़ोसी इस लड़ाई का तमाशा देखते रह जाते हैं। वे अपने दरवाज़े पर खड़े होते हैं: 'शाबाश भाई, उन्हें सबक सिखा दो! उन्हें खूब मज़ा चखा दो!' और उसकी मदद के लिए आने के बजाय वे उसे तालियाँ और नमस्कार देते हैं और कहते हैं 'ले लो! इससे उनकी मरम्मत करो! अच्छी तरह मरम्मत कर दो!' लेकिन इस लड़ाई से वे खुद अपने को अलग रखते हैं। हमारे मित्र राष्ट्र इसी तरह व्यवहार कर रहे हैं। मुसाफिर... [illegible] भी इसी तरह के हैं "

[illegible] और बूढ़े की तरफ उसने दिलचस्पी से देखा। [illegible] भी उन्हीं की तरफ देख रहे थे और हर तरफ [illegible]

"हाँ, [illegible] ठीक [illegible] कहा है! हम [illegible] रहे हैं। [illegible] कहाँ हैं?"

"[illegible] नहीं! हम [illegible] और [illegible] ही [illegible] तब तक नहीं, जब सब कुछ [illegible] हो जायेगा, [illegible] दूसरा [illegible] जायेगा।"

[illegible]

"ये लोग भी क्या आदमी हैं! ए उधर टोपवाली! बैठी ऐसे है, जैसे कोई राजकुमारी जी हैं! युद्ध आया, फिर भी लगता उसे सभी म ता! छड़ीवाले कमांडर को सीट तो दे दो! यहाँ आ जाओ कामरेड कमांडर, तुम मेरी सीट पर बैठ जाओ। भगवान के लिए, जरा रास्ता तो छोड़ो और कमांडर को इधर निकल आने दो!"

अलेक्सेई ने अनसुनी कर दी। जो मनोरंजन उसने महसूस किया वह भी विलीन हो गया। इसी क्षण कंडक्टर ने उस स्टेशन का नाम रा जिस पर अलेक्सेई को उतरना था और ट्रेन धीरे-धीरे खड़ी हो वह भीड़ चीरता हुआ दरवाजे की ओर बढ़ रहा था कि उसे वह पहले बूढ़ा मिल गया। बूढ़े ने सिर हिलाकर इस तरह अभिवादन मानो वे पुराने परिचित हों और फिर कानाफूसी के स्वर पूछा:

"कहो, तुम्हारा क्या ख़्याल है, शायद आखिरकार वे लोग दू मोर्चा खोल ही देंगे?"

"अगर वे नहीं खोलते तब भी हम अपना काम ख़ुद पूरा कर लें अलेक्सेई ने लकड़ी के प्लेटफ़ार्म पर पैर रखते हुए जवाब दिया।

पहिये धड़धड़ाती और जोर से सीटी बजाती हुई, बारीक-सा धु छोड़कर ट्रेन मोड़ पर ग़ायब हो गयी। प्लेटफ़ार्म जिस पर थोड़े-से य रह गये थे, शीघ्र ही सुहावनी सांझ की शान्ति से आच्छादित हो ग युद्ध के पहले यह सुन्दर, आरामदेह स्थान रहा होगा। स्टेशन को हुए चीड़ के वन में वृक्षों के शिखर शान्तिदायक तान के साथ मर्मर ध्व कर रहे थे। निस्सन्देह दो वर्ष पहले इसी प्रकार की सुन्दर संध्याओं लोगों की भीड़—ग्रीष्मकालीन हल्की-सी टाउदार फ़्राकें पहने महिलाएं, शो मचाते हुए आनन्द-विह्वल बच्चे और सामान के थैले तथा शराब की बो तलें दबाये हुए शहर से लौटते हुए मर्द स्टेशन से उमड़ पड़ते होंगे और बस्तियों और पगडंडियों से छायादार जंगलों को पार करते हुए अपने बंग लों की ओर जाते होंगे। आज की ट्रेन से जो थोड़े-से यात्री उतरे थे, वे अपनी गठरियां, तसलियां और कुदालियां तथा बागवानी का दूसरा सामान लिये हुए शीघ्र ही प्लेटफ़ार्म से विदा हो गये और अपनी-अपनी दिशाओं में चलते हुए गम्भीरतापूर्वक वनप्रदेश में घुस गये। अकेला मेरेस्येव अपनी छड़ी लिये—वह छुट्टियां काटनेवाले की भांति दिखाई दे रहा था—शाम के सौंदर्य की सराहना करने के लिए रुक गया, उसने सुगन्धित

और उसे जो थोड़े बहुत चिह्न बताये गये थे, उनके सहारे ... ...
ही, सच्चे सिपाही की भांति, उस जगह का रास्ता खोज लिया। स्टेशन से कोई दस मिनट का रास्ता था—छोटी-सी, शांत झील के किनारे तक। क्रान्ति से पहले कभी किसी रूसी करोड़पति ने यहाँ बेजोड़ ग्रीष्म-भवन बनाने का निश्चय किया था। उसने अपने शिल्पकार से कहा था कि वह किसी बिल्कुल मौलिक चीज़ का निर्माण करे, पैसे की कोई परवाह न करे। और इसलिए, अपने ग्राहक की रुचि के अनुसार, शिल्पकार ने इस झील के किनारे ईंटों का विशाल भवन तैयार किया जिसमें बारीक जाली की खिड़कियाँ, कंगूरे और मीनारें बनायी, ऊँचे-ऊँचे स्तम्भ खड़े किये और भूलभुलैयांदार रास्तों का निर्माण किया। यह ऊलजलूल ढांचा विशिष्ट रूसी प्राकृतिक दृश्य में सरकंडों से भरपूर झील के ऊपर एक भौंडा-सा धब्बा लगता था। वैसे यहाँ बड़ा सुन्दर दृश्य था! शान्त मौसम में शीशे की तरह निर्मल रहनेवाले पानी के किनारे नये एस्प वृक्षों की पंक्तियां थिरक रही थीं, यहां-वहां हरे कुञ्जों से ऊपर सिर उठाये भोज वृक्षों के चितकबरे तने खड़े थे, और खुद झील भी प्राचीनतम वन की विस्तृत दांतेदार, नीली-सी अंगूठी में जड़ी-सी दिखाई देती थी। और यह सारा दृश्य पानी की शीतल, शान्त नील सतह में उलटा प्रतिबिम्बित दिखाई देता था।

इस स्थान पर, जिसका स्वामी सारे रूस में अपने आतिथ्य के लिए प्रसिद्ध था, अनेक विख्यात चित्रकार आकर दीर्घकाल तक रहते रहे, और यह दृश्यस्थली रूसी प्राकृतिक दृश्य के प्रभावशाली और मार्मिक सौंदर्य के रूप में, सर्वांग या आंशिक रूप से आगामी पीढ़ियों के लिए अंकित की जाती रही।

यही स्थान अब सोवियत वायुसेना के लिए स्वास्थ्य-गृह की भांति उपयोग में आ रहा था। शान्ति-काल में विमान-चालक यहाँ अपनी पत्नी और बच्चों तक को लेकर आते थे। युद्ध-काल में घायल विमान-चालकों को स्वास्थ्य-लाभ के लिए अस्पताल से यहाँ भेजा जाता। अलेक्सेई यहाँ चक्करदार, भोज वृक्ष की पांतों से सुसज्जित, अलकतरे की चौड़ी सड़क से नहीं, जंगल से गुजरनेवाली पगडंडी से आया था, जो स्टेशन से सीधे

झील की तरफ जाती है। यानी वह पीछे से आया और अनदेखे ही भागी, कोलाहलपूर्ण भीड़ में मिल गया जो मुख्य द्वार पर खड़ी हुई दो टसाठस-भरी मोटरबसों को घेरे जमा थी।

बातचीत, विदाई की दुआ-सलाम और शुभकामनाओं की चर्चा से अलेक्सेई समझ गया कि ये लोग विमान-चालकों को विदा कर रहे हैं जो स्वास्थ्य-गृह से सीधे मोर्चे पर जा रहे थे। जानेवाले विमान-चालक प्रफुल्ल और उत्तेजित थे मानों वे ऐसी जगह नहीं जा रहे हैं जहाँ हर बा-दल के पीछे मौत घात लगाये बैठी रहती है, बल्कि अपने शान्तिकालीन फौजी केन्द्रों को जा रहे हैं। जो लोग उन्हें विदा कर रहे थे, उनके मुँ उदासी और अधीरता का भाव अभिव्यक्त कर रहे थे। अलेक्सेई उ भावना को समझ गया। जबर्दस्त संग्राम के आरम्भ से ही, जो दक्षि में छिड़ा हुआ था, अलेक्सेई स्वयं भी उसी प्रकार का अदम्य आक अनुभव कर रहा था, और जैसे-जैसे मोर्चे पर स्थिति अधिकाधिक गम्भ होती गयी तैसे ही वह आकर्षण और भी शक्तिशाली होता जा रहा था और अब फ़ौजी क्षेत्रों में "स्तालिनग्राद" शब्द का उल्लेख – अभी चुप चुपके और सावधानी से – होने लगा तो इस भावना ने अनन्त आतुर का रूप धारण कर लिया और अस्पताल की अनुशासित अकर्मण्यता उ असह्य हो उठी थी।

चुस्त मोटरबसों की खिड़कियों से धूप खाये हुए ताम्रवर्ण उत्तेजित चेहरे ताक रहे थे। स्वास्थ्य-गृह में आनेवाले हर दल में जिस प्रकार विनोदी व्यक्ति और स्वेच्छित विदूषक साधारणतया होते हैं, उसी चाल-ढाल का एक नाटा-सा, लंगड़ा आर्मीनियाई, जो धारीदार पोशाक पहने था और जिसके सिर पर गंजेपन का थिगड़ा-सा था, बसों के चारों ओर फुदक रहा था, अपनी छड़ी हिलाते हुए चिल्ल-पों मचा रहा था और अपनी ओर से विदाई की शुभकामनाएं देता फिर रहा था:

"फ़ेद्या! फ़ासिस्टों को आसमान में मेरी ओर से भी सलाम कर लेना! तुम्हें उन लोगों ने चादनी स्नान की चिकित्सा पूरी नहीं करने दी, इसके लिए उन्हें मजा चखा देना! फ़ेद्या! फ़ेद्या! उन्हें होश करा देना कि सोवियत विमान-चालकों को चादनी स्नान से रोकना बड़ी बद-तमीज़ी है!"

ताम्रवर्ण और गोल सिरवाला लड़का, फ़ेद्या, जिसके ऊंचे माथे पर एक तरफ़ से दूसरी तरफ तक घाव का लम्बा चिन्ह था, खिड़की से बा-

हर मुक्का और चिल्लाकर बोला कि चांद कमेटी को विश्वास रहे कि वह अपने कर्त्तव्य का पालन करेगा।

भीड़ और बसों में हंसी फूट पड़ी और इस हंसी के बीच बसे चल दीं और धीरे-धीरे दरवाज़े की ओर बढ़ चलीं।

"यात्रा शुभ हो!" शुभकामनाएं भीड़ की ओर से प्रगट की जा रही थीं।

"फेद्या! फेद्या! जितनी जल्दी हो सके, अपने पोस्ट आफ़िस का नम्बर भेज देना! ज़ीनोच्का रजिस्ट्री डाक से तुम्हारा दिल पार्सल कर भेज देगी..."

सड़क के मोड़ के पीछे बसें गायब हो गयीं। डूबते हुए सूरज के प्रकाश में जो धूल सुनहरी चमक रही थी, वह भी उतर आयी। धारीदार काड़े या लबादे पहने स्वास्थ्य-गृह के निवासी तितर-बितर हो गये और पार्क में टहलने लगे। मेरेस्येव प्रवेशकक्ष में घुसा, जहां हुकों पर विमान-चालकों की नीली पट्टियोंवाली टोपियां टंगी थीं और स्किटिल, गेंदें, क्रोकेट खेल के बल्ले, टेनिस के रैकेट फ़र्श पर पड़े थे। लंगड़ा अर्दोनियाई उसे कार्यालय तक ले गया। नजदीक से जाचने से पता चला कि उसका चेहरा गम्भीर तथा चतुरतापूर्ण और आंखें सुन्दर, बड़ी-बड़ी और वेदना-पूर्ण थीं। रास्ते में उसने मज़ाक में अपने को चांद कमेटी का अध्यक्ष कहकर अपना परिचय दिया और सिद्ध करने लगा कि हर प्रकार के घावों को अच्छा करने का सर्वोत्तम उपाय है चांदनी-स्नान, जैसे कि चिकित्सा-विज्ञान ने सिद्ध कर दिया, और चांदनी-स्नान के इलाज में वह सख्त नियम-पालन और अनुशासन पर ज़ोर देता है तथा चांदनी में टहलने की व्यवस्था वह व्यक्तिगत रूप से स्वयं करता है। वह बड़े सहज भाव से मज़ाक करता महसूस होता था, मगर मज़ाक करते समय उसकी आंखों में गम्भीरता का भाव बना ही रहता था और वह बड़ी तीक्ष्ण दृष्टि से जिज्ञासापूर्वक अपने श्रोता के चेहरे की ओर ताकता रहता था।

कार्यालय में एक श्वेत वस्त्रधारी लड़की ने मेरेस्येव का स्वागत किया जिसके बाल इतने लाल थे कि उसका सिर लपटों से भरा प्रतीत होता था।

"मेरेस्येव?" लड़की ने किताब अलग रखते हुए, जिसे वह पढ़ रही थी, सख्ती से पूछा। "मेरेस्येव अलेक्सेई पैत्रोविच?" उसने रजिस्टर देखा और फिर विमान-चालक पर आलोचनात्मक दृष्टि डालकर कहा:

"मुझसे कोई चालबाज़ी चलने की कोशिश न करो! मेरे पास तुम्हारा परिचय यों लिखा है: 'मेरेस्येव, सीनियर लेफ़्टीनेंट, प्रस्पताल से, पैर कटे हुए!..' लेकिन तुम..."

तभी प्रलेक्सेई को उसका गोल सफ़ेद चेहरा, जैसा कि सात वेशोल्ली लड़कियों का होता है, दिखाई दे गया, जो ज्वालाओं मदृश केशों के बीच छिपा हुआ था। उसकी कोमल त्वचा पर निर्मल लालिमा फैली हुई थी। उसने अपनी उज्ज्वल, गोल, धृष्ट प्रांखों से प्रलेक्सेई की ओर विस्मय से देखा।

"फिर भी, मैं ही प्रलेक्सेई मेरेस्येव हूँ। ये मेरे कागज़ात। तुम क्या ल्योल्या हो?"

"नहीं! यह तुम्हें कहाँ से पता चला? मैं ज़ीनोच्का हूँ।" सदिग्ध दृष्टि से प्रलेक्सेई के पैरों की ओर देखा और आगे कहा: "तुम्हें इतने बढ़िया कृत्रिम पैर मिल गये हैं या और कोई बात है"

"हाँ, कृत्रिम पैर हैं। तो तुम वही ज़ीनोच्का हो जिस पर [illegible] ने दिल निसार कर दिया था?"

"अच्छा, मेजर बरनाज़ियन ने तुम्हें भी यह बता देने का मौका पाया किया। ओह, उससे मुझे कितनी नफ़रत है! यह हर व्यक्ति मज़ाक बनाता है। मैंने फेद्या को नाचना सिखाया। इसमें कोई बात नहीं थी, कि है?"

"और अब तुम मुझे नाचना सिखाओगी, ठीक? बरनाज़ियन ने [illegible] डी-स्नान के लिए मेरा नाम भी लिख लेने का वायदा किया है।"

लड़की ने प्रलेक्सेई की ओर देखा और आश्चर्य से पूछा:

"क्या मतलब है, नाच? बिना पावों के? वाहियात बात! [illegible] कारण है, तुम भी सब का मज़ाक बनाना पसंद करते हो!"

तभी मेजर स्त्रुच्कोव कमरे में दौड़ता हुआ आया और उसने प्रले[illegible] को बाहों में भर लिया।

"ज़ीनोच्का!" उसने लड़की से कहा, तय रहा, क्या नहीं? [illegible] सिर्फ़ सार्जेन्ट मेरे कमरे में रहेगा।"

[illegible] में जो लोग बहुत दिनों तक साथ रहते हैं, वे बाद में [illegible] की तरह मिलते हैं। मेजर को देखकर प्रलेक्सेई इतना [illegible] कि उसे यह समझ बैठा कि वह वर्षों से उससे नहीं मिला है। [illegible] ने अपना सामान [illegible] में जमा किया था और काफ़ी [illegible]

दम घुटने लगा और उसे लगा कि उसके दिल की धड़कन बन्द हो रही है, उसने एक आखिरी प्रयत्न किया और न जाने क्यों उसके सामने, ज्वालाओं जैसे केशों के समूह के बीच ज़ीनोच्का का हंसता हुआ चेहरा और धृष्ट, जिज्ञासापूर्ण नेत्र कौंध गये।

अलेक्सेई अवर्णनीय घबराहट की भावनाओं से ओत-प्रोत होकर जाग उठा। खामोशी का राज्य था, मेजर सो रहा था, आहिस्ते से खर्राटे भर रहा था। प्रेत की भांति चांदनी की एक किरण कमरे में घुस आयी थी और फर्श पर आ टिकी थी। वे भयानक क्षण आज क्यों फिर लौट आये? उनको तो वह याद भी भूल गया था, और जब कभी वह उन्हें याद करने की कोशिश भी करता था, तो वह कोई कपोल-कल्पित कहानी मालूम होती थी। रात के ठंडे और सुगंधित पवन के साथ एक हल्की-सी उनीदी तालमयी ध्वनि उज्ज्वल चांदनी से आलोकित खुली हुई खिड़की से उमड़ी चली आ रही थी, कभी वह उत्तेजित ऊँची उठ जाती, कभी कहीं दूर पर हो जाती और कभी ऐसे ऊँचे स्वर पर स्थिर रह जाती मानों किसी खतरे के कारण रुकी रह गयी है। यह वनप्रान्तर का स्वर था।

विमान-चालक बिस्तर पर बैठ गया और बड़ी देर तक चीड़ वृक्षों की रहस्यात्मक मर्मर ध्वनि सुनता रहा। उसने ज़ोर से सिर हिलाया मानों वह किसी जादू को दूर कर रहा हो, और पुनः प्रफुल्ल शक्ति से भर गया। स्वास्थ्य-गृह में उसे अट्ठाईस दिन तक रहना था, और उसके बाद यह तय होना था कि उसे विमान चलाना, लड़ना, ज़िन्दा रहना है, या हमेशा के लिए लोगों की [हमदर्दी-भरी] नज़रों का और बसों में एक सीट दिये जाने का मुहताज रहना है। इसलिए उसे इन लम्बे, मगर थोड़े से अट्ठाईस दिनों का एक-एक क्षण असली इनसान बनने के लिए संघर्ष में लगा देना होगा।

मेजर के खर्राटों के बीच नीलगूं-सी चांदनी में बिस्तर पर बैठे-बैठे अलेक्सेई ने अपने दिमाग में कसरतों की योजना बनायी। इसमें सुबह-शाम जिमनास्टिक करना, टहलना, दौड़ना, पैरों की विशेष कुशलता विकसित करना शामिल था, और जिस बात ने उसे सबसे अधिक आकर्षित किया और जिसमें उसे अपने पैरों के सर्वतोमुखी विकास की सम्भावना दिखाई दी, वह विचार उसके दिमाग में उस समय आया जब वह ज़ीनोच्का से बातें कर रहा था।

उसने नृत्य सीखने का निश्चय किया।

और बिना एक शब्द कहे, विचित्र लुढ़कती हुई चाल से जंगल में चला गया।

"क्या है यह आदमी, सरकस का खिलाड़ी है या पागल है?" वरनाजियन ने आश्चर्य से पूछा।

मेजर स्त्रुच्कोव ने, जो इस समय तक अपनी ऊँघ से जाग गया था, उन्हें समझाया :

"उसके पैर नहीं है। वह कृत्रिम पैरों से अभ्यास कर रहा है। वह फिर लड़ाकू विमान में वापस जाना चाहता है।"

इन अलसाये हुए व्यक्तियों पर इन शब्दों ने ठंडे पानी की फुहार जैसा काम किया। फौरन वे सब बातें करने लगे। सभी को आश्चर्य हो रहा था कि जिस लड़के में उन्होंने कभी कोई अनोखी बात नहीं देखी थी, सिवाय इसके कि वह कुछ विचित्र चाल से चलता था, उसके पांव ही नहीं हैं। और यद्यपि उसके पैर नहीं हैं, फिर भी उसका लड़ाकू विमान उड़ाने का इरादा उन्हें निराधार, अविश्वसनीय और पाखण्ड तक मालूम हुआ। उन्होंने स्मरण किया कि बीसियों आदमी मामूली-सी बातों—दो उंगलियां कट जाने, स्नायुओं की कमजोरी होने और पैरों में जड़ता तक के लक्षण प्रगट होने—पर वायुसेना से अलहदा किये जा रहे हैं। हमेशा ही युद्धकाल तक में, सभी विमान-चालकों से जिस शारीरिक क्षमता के स्तर की मांग की जाती है, वह फौज के अन्य सभी विभागों की अपेक्षा उच्चतर होती है। और अंतिम बात यह उनकी राय में किसी कृत्रिम पैरवाले व्यक्ति के लिए यह नितान्त असम्भव है कि वह लड़ाकू विमान जैसी जटिल और संवेदनशील मशीन को चला सके।

निश्चय ही, वे सभी सहमत थे कि मेरेस्येव का विचार एक सनक है, फिर भी उसने उनका मन मोह लिया।

"तुम्हारा दोस्त दो में से एक है, या तो जड़ मूर्ख या महान व्यक्ति," वरनाजियन इस नतीजे पर पहुँचा।

यह समाचार कि स्वास्थ्य-गृह में एक बिना पैरोंवाला व्यक्ति है, जो लड़ाकू विमान उड़ाने का सपना देख रहा है, क्षण भर में बिजली की तरह सभी वार्डों में फैल गया। दोपहर के खाने के समय तक अलेक्सेई सबके मनोयोग का विषय बन गया—यद्यपि उसे स्वयं इसका भान नहीं हो पाया था। और वे सभी जो उसे गौर से देख रहे थे, जो उसे मेज के चारों ओर बैठे हुए पड़ोसियों के साथ हार्दिक रूप से हंसते हुए, और

और जब उसे सुपरिचित लिफाफे दिये जाते तो वह प्रसन्न होता और मज़ाक करने लगता।

मगर उसकी हर विनय को वह ठुकरा देती, उसे कोई प्रोत्साहन न देती, उसके लिए दुख तक न प्रगट करती। उसने लिखा कि वह किसी और से प्रेम करती थी, जिसके लिए आज भी वह शोक मना रही है और मैत्रीभाव से मेजर स्वुच्कोव को सलाह देती, कि वह उसका पीछा छोड़ दे, उसे भूल जाये, उसके लिए कोई कष्ट न उठाये और उस पर बेकार समय बरबाद न करे। यही मैत्रीपूर्ण और यथातथ्य भाव, जो प्रेमालाप में सबसे अधिक अपमानजनक होता है, मेजर को इतना व्यथित कर रहा था।

अलेक्सेई उस समय कूटनीतिक भाव से चुपचाप कम्बल में पाँव फैलाये पड़ा था, जब मेजर खिड़की से हटकर अलेक्सेई की चारपाई की तरफ झपटा, उसे कंधों से पकड़कर झकझोरने लगा और उसके ऊपर झुककर चिल्लाने लगा:

"यह क्या चाहती है? बताओ तो, आखिर मैं हूँ क्या? कोई धूमकेतू हूँ? क्या मैं कुरूप, बूढ़ा, सिर्फ़ कूड़ा-करकट भर हूँ? उसकी जगह कोई दूसरी होती तो... लेकिन क्या फ़ायदा है यह सब कहने से!"

उसने अपने को आरामकुर्सी पर लुढ़का दिया, हाथों में मस्तक थाम लिया और इतनी बुरी तरह आगे-पीछे हिलने-डुलने लगा कि आरामकुर्सी कराह उठी।

"वह औरत नहीं है? उसे कम-से-कम मेरे बारे में जिज्ञासा तो होनी ही चाहिए थी। मैं उससे प्रेम करता हूँ और किस तरह! अलेक्सेई! तुम जानते ही हो उस व्यक्ति को... बताओ, वह मुझसे किस बात में बेहतर था? उसमें उसे क्या खास बात दिखाई दी थी? क्या वह अधिक चतुर था? देखने-सुनने में अच्छा था? वह ऐसा भी कौनसा वीर था?"

अलेक्सेई को याद आ गया कमिसार वोरोब्योव, उसका भारी-भरकम सूजा शरीर, तकिये पर पड़ा हुआ मोम जैसा चेहरा, उसके सामने नारी-सौंदर्य की अनन्त प्रतीक-सी मूर्तिवत खड़ी हुई वह महिला, और रेगिस्तान के बीच मार्च करते हुए लाल फ़ौज के सिपाहियों की वह दर्पपूर्ण कथा।

"वह असली इनसान था, मेजर, एक वास्तविक वीर। भगवान करे, हम सब उसकी तरह हों।"

एक समाचार, जो बेबुनियाद लगता था, स्वास्थ्य-गृह भर में फैल गया: पैरविहीन विमान-चालक नृत्य सीख रहा है।

जब कार्यालय से ज़ीनोच्का अपनी ड्यूटी ख़त्म करके निकलती तो उसे अपना शिष्य गलियारे में उसका इंतज़ार करता मिलता। वह उसके लिए जंगली स्ट्राबेरी का एक गुच्छा लाता था या कोई चाकलेट, या नारंगी लाता जिसे वह अपने भोजन में से बचा लेता था। ज़ीनोच्का गम्भीरतापूर्वक उसकी बाह पकड़ती और वे दोनों *मनोरंजन-कक्ष* की ओर चल पड़ते, जो ग्रीष्मकालीन दोपहर में खाली रहता था और जहाँ परिश्रमी शिष्य ने पहले से ही ताश की मेज़ें और पिंग-पांग की मेज़ दीवार से सटाकर रख दी होती। ज़ीनोच्का सौंदर्यपूर्ण ढंग से उसके सामने कोई नयी मुद्रा प्रदर्शित करती। भौंहें सिकोड़कर विमान-चालक उन जटिल मुद्राओं को देखता जिन्हें वह अपने नन्हे-से सुकुमार चरणों से फ़र्श पर अंकित कर देती थी। फिर चेहरे पर गम्भीर भाव धारण कर वह लड़की अपने हाथों से तालियाँ बजाती और गिनने लगती:

"एक, दो, तीन—एक, दो, तीन, विसर्पण, ज़रा दायीं तरफ़... एक, दो, तीन—एक, दो, तीन, विसर्पण, बायीं तरफ़ ... घूमो! हाँ, ठीक! एक, दो, तीन... अब लहरियाँ! आओ, अब हम दोनों एक साथ करें!"

शायद इसलिए कि यह एक पैरविहीन व्यक्ति को नृत्य सिखाने का काम था, ऐसा काम जिसे न तो बोव गोरोखोव ने और न स्वयं पाल सुदाकोव्स्की ने कभी किया था, या शायद इसलिए कि इस ताम्रवर्ण, घुंघराले बाल और हंसती हुई आँखोंवाले शिष्य को वह पसन्द करने लगी थी, या शायद दोनों ही कारण होंगे—कारण कुछ भी हो, वह इस काम में अपनी फ़ुर्सत का सारा समय और अपनी पूरी शक्ति लगा रही थी।

शाम को जब नदी के रेतीले किनारे, वालीबाल का मैदान और स्किटिल खेल का मैदान वीरान होते और नृत्य ही मरीज़ों का परमप्रिय मनोरंजन बन जाता, तो अलेक्सेई आनन्द क्रीड़ाओं में निरपवाद रूप से भाग लेता। वह भली-भाँति नाचता, एक भी नृत्य न छोड़ता, और अनेक बार उसकी शिक्षिका को खेद होता कि उसने व्यर्थ ही उसे इतनी सख़्त शर्तों में बांध दिया है। अकार्डियन की धुन के साथ जोड़े कमरे का चक्कर

मैं किसी दुर्घटना का शिकार हो जाऊँ और पंगु हो जाऊँ, तो क्या तुम मुझे ठुकरा दोगे? क्या तुम्हें याद है, जब हम प्रशिक्षण विद्यालय में पढ़ते थे, तब हम बीजगणित के सवालों को प्रतिस्थापन की पद्धति से हल करते थे? तो अब तुम अपनी जगह मुझे रख लो और सोचो। अगर यह करोगे, तो तुमने जो कुछ लिखा है, उसके लिए तुम्हें खुद शर्म आयेगी..."

मेरेस्येव इस पत्र के बारे में सोचता हुआ बड़ी देर तक बैठा रहा। स्याह पानी में चकाचौंध के साथ प्रतिबिम्बित सूरज आग की तरह दर्द था, सरकंडे की झाड़ियाँ खड़खड़ा रही थी और नीले व्याघ्र-पतंग दलदली घास के एक गुच्छ से दूसरे गुच्छ पर मंडराते घूम रहे थे। अपनी लम्बी-लम्बी, पतली टांगों पर पानी की मक्खियों के झुण्ड जल की सतह पर इधर-उधर दौड़ लगा रहे थे और सपाट सतह पर फ़ीते जैसी लकीरें छोड़ जाते थे। नन्हीं-नन्ही लहरें खामोशी से रेतीले किनारे को चूम रही थीं।

"यह सब क्या है?" अलेक्सेई सोचने लगा, "पूर्वबोध? भविष्यवाणी की देन?" उसकी माँ कहा करती थी, "दिल स्वयं एक भविष्यवक्ता है।" या क्या खाई की सख्त ज़िंदगी ने लड़की को ज्ञान प्रदान किया है और उस बात को वह अन्तर्ज्ञान के बल पर समझ गयी है, जिसे बताने का साहस वह स्वयं न जुटा सका था? उसने एक बार फिर पत्र पढ़ डाला। नहीं, ऐसी कोई बात नहीं। यह कोई अन्तर्ज्ञान नहीं है। यह तो सीधा-सादा जवाब है उन्हीं बातों का, जो उसने लिखी थीं। और कितना उपयुक्त था यह उत्तर!

अलेक्सेई ने निश्वास खींची, धीरे-धीरे कपड़े उतार डाले और पत्थर पर उनका ढेर लगा लिया। वह हमेशा इस छोटी-सी वीरान खाड़ी में नहाता था जिससे सिर्फ़ वह अकेला परिचित था और जो रेतीले किनारे से दूर, खड़खड़ाती हुई झाड़ियों की दीवार के पीछे छिपी थी। अपने कृत्रिम पैरों के तस्मे खोलकर वह आहिस्ते से चट्टान पर से खिसका और यद्यपि नंगे ठूठों के बल बालू पर चलना बड़ा पीडाजनक था, तब भी उसने चारों हाथ-पैरों का सहारा नहीं लिया। दर्द से चिहुकते हुए वह झील मे उतरा और ठंडे, घने पानी में लुढ़क गया। वह किनारे से कुछ दूर तक तैरता हुआ गया और पीठ के बल उलटा हो गया और चुपचाप पड़ा रहा। वह नीले, अनन्त आकाश को ताकता रहा। छोटे-छोटे बादल एक दूसरे से टकराते हुए तेज़ी से उसे पार करते जा रहे थे। वह फिर उलट

था और जब कोई आदमी अंदर से बाहर आता तो बड़ी उदासीनतापूर्वक, मानो उसे कोई विशेष दिलचस्पी नहीं है, वह पूछता:

"कहो, तुम्हारे साथ कैसी बीती?"

"मैं पास हो गया हूँ!" वह व्यक्ति अपने कोट का बटन लगाते हुए या पेटी कसते हुए प्रसन्नतापूर्वक जवाब देता।

मेरेस्येव के पहले बरनाज़ियन गया। वह अपनी छड़ी बाहर, दरवाज़े पर छोड़ता गया और अपने शरीर को लहराने और छोटी टांग के कारण लंगड़ाने से रोकने का प्रयत्न करता कमरे में घुस गया। उसे बड़ी देर तक अन्दर रखा गया। अंत में, खुली खिड़कियों से कोधपूर्ण आवाज़ें अलेक्सेई के कानों तक आयी, दरवाज़ा खुला और बरनाज़ियन बड़ा गरम दिखता बाहर झपटा। उसने अलेक्सेई पर क्रुद्ध दृष्टि डाली और फिर सामने देखता और यह चिल्लाता हुआ पार्क में घुस गया:

"नौकरशाह! मक्खन-रोटी उड़ानेवाले! ये क्या जानें विमान-कला को? क्या समझते हैं कि यह कोई बैले नृत्य है?.. छोटी टांग है!.. नाश हों ये एनीमा और सुइयाँ, उन्हें तो यही आता है!"

अलेक्सेई ने महसूस किया कि उसके पेट के अन्दर कहीं ठंड घर कर गयी है। फिर भी वह कमरे में तेज़ी से क़दम रखता, प्रसन्न भाव से मुसकराता हुआ घुसा। कमीशन एक लम्बी मेज पर बैठा था। बीच में गोश्त के एक पहाड़ की भांति ऊँचे से प्रथम श्रेणी के फ़ौजी डाक्टर मिरोवोल्स्की थे। बग़ल की मेज पर चिकित्सा सम्बन्धी कार्डों के ढेर के सामने ज़ीनोच्का गुड़िया की तरह सफ़ेद, कलफ़दार पोशाक पहने बैठी थी। उसके सिर पर बधे जालीदार रूमाल से लाल केशों की एक लट बड़े नाज़ से झांक रही थी। उसने अलेक्सेई को उसका कार्ड दिया और देने के साथ-साथ हल्के से उसका हाथ दबा दिया।

"हाँ, नौजवान, कमर तक कपड़े उतार डालो," सर्जन ने अपनी आँखें घुमाते हुए कहा।

मेरेस्येव ने अपनी कसरतें व्यर्थ ही नहीं की थी। सर्जन उसके सुन्दर; सुविकसित शरीर की सराहना किये बिना न रह सका जिसका एक-एक पुट्ठा ताम्रवर्ण त्वचा में से उभर रहा था।

"तुम तो डेविड की मूर्ति बनाने के लिए माडल का काम दे सकते हो," कमीशन के एक सदस्य ने ज्ञान बघारते हुए कहा।

मेरेस्येव सभी परीक्षाओं में पास हो गया। उसके हाथों की पकड़ सा-

कोई अधिकार नहीं है कि मैं किसी यूनिट में तुम्हें नियुक्त करूँ, मगर मैं तुम्हें नियुक्ति-विभाग के लिए एक प्रमाण-पत्र दूँगा। मैं प्रमाणित करूँगा कि उचित प्रशिक्षण के बाद तुम हवाई जहाज चलाने के योग्य हो जाओगे। हर सूरत मे तुम मेरे वोट का भरोसा कर सकते हो।"

स्वास्थ्य-गृह के प्रधान की बाँह में बाँह डाले मिरोवोल्स्की कमरे से बाहर चले गये—स्वास्थ्य-गृह का प्रधान भी काफ़ी अनुभवी सर्जन था। दोनों ही आश्चर्य और सराहना कर रहे थे। सोने से पहले वे बड़ी देर तक बैठे रहे, धूम्रपान करते रहे और बात करते रहे कि सोवियत नागरिक जब सचमुच कमर कस लेते हैं तो क्या कर दिखाते हैं ...

इस बीच, जब संगीत अभी भी गूँज रहा था और खुली खिड़कियों से आनेवाली रोशनी मे नर्तकों की छायाएँ अभी भी धरती पर आ-जा रही थीं, तब अलेक्सेई मेरेस्येव ऊपर की मंजिल के स्नानागार में बंद था। ठंडे पानी मे उसकी टाँगें डूबी हुई थी और वह होठ इतने जोर से दबा था कि उनसे खून बह उठा था। दर्द से लगभग बेहोश-सी हालत में नीले खूनी धट्टों को और कृत्रिम पैरों की भयंकर रगड़ से उत्पन्न घावो को पानी से धो रहा था।

एक घंटे बाद, जब मेजर स्त्रुच्कोव ने कमरे में प्रवेश किया, तब मेरेस्येव नहा-धोकर तरोताजा शीशे के सामने बैठा था और अपने झीने घुघराले बालो को काढ़ रहा था।

"जीनोच्का तुम्हें खोज रही है। तुम्हें उसे विदाई के पहले आखिरी बार टहलाने ले जाना चाहिए था। इस लड़की पर मुझे तो तरस आता है।"

"चलो, हम साथ चलें!" मेरेस्येव ने उत्सुकतापूर्वक जवाब दिया, "जरूर चलो, पावेल इवानोविच, तुम्हारा इसमें क्या जायेगा?" उसने विनती की।

उस भली नन्ही-सी लड़की के साथ, जिसने उसे नृत्य सिखाने में इतना कष्ट उठाया था, अकेले रहने के विचार मात्र से उसे बेचैनी महसूस हो रही थी; ओल्या का पत्र आ जाने के बाद से उसकी उपस्थिति में उसे बड़ी व्यग्रता अनुभव होने लगती थी। इसलिए वह साथ चलने के लिए स्त्रुच्कोव से बराबर अनुरोध करता रहा कि आखिर मे हारकर स्त्रुच्कोव ने बड़बड़ाते हुए टोपी उठा ली।

फूलों को नोचती हुई जीनोच्का बरामदे में इंतजार कर रही थी;

दी तो आश्चर्यवश वे पीछे हट गये। पास में एक छोटा-सा घाट था और उससे आगे एक डोंगी की काली छायाकृति दिखाई दे रही थी। जीनोच्का कुहरे में विलीन हो गयी और पतवारों का जोड़ा लेकर लौटी। उन्होंने डाँडे का कांटा लगाया, अनेक्सेई ने पतवारें संभाल लीं और जीनोच्का तथा मेजर डोंगी के पिछले हिस्से में बैठ गये। डोंगी धीरे-धीरे निश्चल जल पर फिसलने लगी, कभी वह कुहरे में डूब जाती और सूने पानी में प्रगट हो जाती, जिसकी काली-सी पालिशदार सतह पर चांदनी ने उदारतापूर्वक कलई कर दी थी। कोई नहीं बोला, सभी अपने-अपने विचारों में लीन थे। रात शान्त थी, पतवारों से पानी पारे की बूंदों की तरह टपक रहा था और वैसा ही बोझिल मालूम होता था। पतवारों के कांटे हल्के से खटक रहे थे, कहीं कोई पक्षी कर्कश स्वर में गा रहा था और दूर से पानी के विस्तार को पार करते हुए उल्लू का वेदनापूर्ण स्वर आ रहा था, जो कठिनाई से ही कर्णगोचर था।

"मुश्किल से ही विश्वास होता है कि कहीं पास ही में घमासान युद्ध छिड़ा हुआ है," जीनोच्का ने आहिस्ते से कहा। "क्यों, साथियो, तु[illegible] लोग मुझे चिट्ठियां लिखा करोगे, क्यों, अनेक्सेई पेत्रोविच, तुम लिखो[illegible] या नहीं? छोटा-सा संदेश ही सही। मैं तुम्हें साथ ले जाने के लिए कु[illegible] पते लिखे कार्ड दे दूंगी, क्या दे दूं? तुम लोग लिख देना: 'जिन्दा और सकुशल हूं। अभिवादन,' और किसी लैटर-बक्स में डाल देना, ठीक?.."

"मैं तुम्हें बता नहीं सकता कि जाते हुए मुझे कितना आनंद हो रहा है। काफी झख मार ली। काम संभालो! काम संभालो!" स्त्रुच्कोव चिल्ला उठा।

वे फिर खामोश पड़ गये। नन्ही-सी लहरें हौले-हौले नाव को थपथपा रही थी, उसकी पेंदी का पानी उनींदा-सा गल-गल कर रहा था और नाव के पिछले हिस्से से टकराकर चमकदार कोण बनाता फैल जाता था। कुहरा छिन्न-भिन्न हो गया और एक उद्विग्न, नीली-सी चंद्र-किरण किनारे से पानी के आर-पार फैल गयी और कुमुदिनी की पत्तियों के चकत्तों को आलोक से भर गयी।

"आओ, हम लोग गायें," जीनोच्का ने सुझाव दिया और जवाब का इंतजार किये बिना उसने एश वृक्ष सम्बन्धी गीत शुरू कर दिया।

उसने पहला बंद शोकार्त्त स्वर में अकेले ही गाया, मगर अगली पंक्ति को मेजर स्त्रुचकोव ने मनहर, गहरे स्वर में पकड़ लिया। इसके पहले

र इतना सुन्दर और मधुर है। इस गीत की वेदना और भावावेगपूर्ण
रियाँ समतल जल के ऊपर घुमड़ने लगीं; दो ताज़े स्वर, एक नर
दूसरा नारी का, अपनी उत्कंठाओं को व्यक्त करने में एक दूसरे
साथ देने लगे। अलेक्सेई को अपने कमरे की खिड़की के बाहर खड़े
, बेरी के एकमात्र गुच्छे समेत कृशकाय एश वृक्ष और भूमिगत ग्राम
बड़ी-बड़ी आँखोवाली वारवारा की याद आ गयी। फिर हर वस्तु वि-
न हो गयी—झील, मनहर चांदनी, नाव और गायक—और रुपहले
रे मे उसने कमीशिन की लड़की देखी, मगर वह ओल्या नहीं जो वा-
ा पल्लवित मैदान में खींचे गये फ़ोटो में बैठी थी, एक दूसरी ही अप-
चित लड़की देखी जो थकी हुई दिखाई दे रही थी, जिसके धूप से तप्त
पोलों पर स्याह धब्बे थे, होंठ फटे हुए थे, फौजी वर्दी पर पसीने के
ग थे और स्तालिनग्राद के पास स्तेपी मे कहीं फावड़ा चला रही थी।
उसने पतवारें छोड़ दीं और गीत का आख़िरी बंद उन तीनों ने मिल-
र गाया।

६

अगले दिन बड़े भोर ही स्वास्थ्य-गृह के द्वार से मोटर-बसों की एक लम्बी पात गुज़रने लगी। वे लोग जब पोर्च के पास ही थे, तभी मेजर स्त्रुच्कोव ने, जो एक बस के फ़ुटबोर्ड पर बैठा था, एश वृक्ष के विषय में अपने परमप्रिय गीत की लहरी छेड़ दी थी। अन्य बसों मे बैठे लोगो ने गीत की कड़ियां पकड़ ली थी और विदाई के समय के अभिवादन, मंगल-कामनाएं, वरनाजियन के हंसी-मज़ाक, बस की खिड़की में से ज़ीनोच्का अलेक्सेई को विदाई के समय जो सलाहें दे रही थी, वे सब बातें इस पुराने गीत के सीधे-सादे मगर अर्थपूर्ण शब्दो मे डूब गयी। उसे बहुत दिनों पहले भुला दिया गया था, मगर अब फिर उसका पुनरुद्धार हो गया था और महान देशभक्तिपूर्ण युद्ध के काल में वह लोकप्रिय हो गया था।

इस तरह बसें अपने साथ इस मधुर स्वर की गहरी, सुरीली लहरियां लेकर फाटक से गुज़र गयी। जब गीत समाप्त हुआ तो गायक मौन हो गये और जब तक नगर के बाहरी क्षेत्र मे स्थित फैक्टरियां और श्रमिक

बस्तियां खिड़कियों के बाहर न दिखाई देने लगीं, तब तक कोई एक शब्द भी न बोला।

मेजर स्तुच्कोव अभी भी अपनी बस के फुटबोर्ड पर अपने कोट के बटन खोले हुए बैठा था और मुसकराता हुआ दृश्य को सराह रहा था। वह सबसे अधिक प्रसन्नचित था। यह चिरातन यायावर सिपाही फिर चल पड़ा था, एक जगह से दूसरी जगह सफ़र करते हुए, और उसे अपनी सजीवता का बोध होने लगा था। उसे वायुसेना की किसी टुकड़ी में भेजा जा रहा था, इसका अभी पता नहीं था कि किसमें, लेकिन कोई भी हो, उसके लिए वह घर की ही तरह होगी। मेरेस्येव मौन और उद्विग्न बैठा था। वह महसूस कर रहा था कि अभी आगे उसे और भी विकटतर कठिनाइयों का सामना करना होगा और कौन कह सकता है कि वह उन बाधाओं को पार कर पायेगा या नहीं?

बस से सीधे ही, कहीं और गये बिना रात के रहने तक के लिए कोई ठिकाना बनाने का कष्ट उठाये बग़ैर, वह मिरोवोल्स्की से भेंट करने चला गया। यहा उसे अपने दुर्भाग्य की पहली चोट का सामना करना पड़ा। उसका शुभ-चिन्तक, जिसे वह इतनी कठिनाई से जीत सका था, कहीं बाहर गया हुआ था, वह किसी फ़ौरी सरकारी कार्य से चला गया था और कुछ दिनों न आनेवाला था। जिस अफ़सर से अलेक्सेई की बातचीत हुई, उसने उससे बाज़ाब्ता दरख़ास्त देने को कहा। वह वहीं खिड़की के पास बैठ गया, एक दरख़ास्त लिख डाली और कृशकाय, नाटे-से, भारी आखोंवाले अफ़सर के हाथ में थमा दी। अफ़सर ने वायदा किया कि वह जितना भी कर सकता है, उतना ज़रूर करेगा और अलेक्सेई को दो दिन के अन्दर फिर आने की सलाह दी। अलेक्सेई ने तर्क उपस्थित किया, प्रार्थना की, धमकी तक दी, मगर सब निष्फल हुआ। अफ़सर ने अपनी छोटी-सी हड्डीदार मुट्ठी अपने वक्ष से दबाते हुए कहा कि नियम हो ऐसे हैं और उनका उल्लंघन करने का उसे कोई अधिकार नहीं है। बहुत संभव है कि इस मामले पर शीघ्र कार्रवाई करने का उसे कोई अधिकार न हो। मेरेस्येव असन्तोष प्रगट करते चला गया।

और इस प्रकार उसका एक सैनिक विभाग से दूसरे विभाग तक भटकना शुरू हुआ। उसकी कठिनाई इस बात से और भी बढ़ गयी कि जिस जल्दी में उसे अस्पताल लाया गया था, उसके कारण उसके काग़ज़, राशन और भत्ते के काग़ज़ात रह गये थे और इन्हें प्राप्त करने के लिए अब तक

उसने कोई कष्ट भी नहीं किया था। उसके पास छुट्टी तक का प्रमाणपत्र नहीं था यद्यपि इस विभाग के कृपालु और अनुग्रही अफ़सर ने उसके रेजीमेंट हेडक्वार्टर को फ़ोन करने का और उनसे आवश्यक कागज़ात फ़ौरन भेजने का अनुरोध करने का वायदा किया था, फिर भी मेरेस्येव जानता था कि हर बात कितने धीरे-धीरे होती है और समझ गया कि कुछ समय उसे रुपये-पैसे बिना, निवास-स्थान बिना, और राशन बिना, इस युद्ध-ग्रस्त मास्को में रहना पड़ेगा जहां रोटी का हर किलोग्राम और शक्कर का हर ग्राम अत्यन्त बहुमूल्य था।

उसने अन्यूता को उस अस्पताल में फ़ोन किया जहां वह काम करती थी। उसके स्वर से स्पष्ट था कि वह किसी बात से चिन्तित या व्यस्त थी, मगर वह बड़ी प्रसन्न थी कि वह आ गया है और ज़ोर देने लगी कि इन चंद दिनों तक अलेक्सेई उसी के यहां ठहरे इसलिए और भी कि उसे अस्पताल में फ़ौजी स्थिति पर रहना पड़ता है और उसका मकान अलेक्सेई स्वयं अपने उपयोग में रख सकता है।

स्वास्थ्य-गृह से जानेवाले प्रत्येक मरीज़ को यात्रा के लिए पांच दिन का सूखा राशन दिया गया था, और इसलिए दोबारा सोचे बिना अलेक्सेई उस सुपरिचित टूटे-फूटे छोटे-से घर की ओर रवाना हो गया जो ऊंची-ऊंची नयी इमारतों के पिछवाड़ों में एक बाड़े के बीच में स्थित था। सिर पर छप्पर हो गया था और खाने को कुछ भोजन भी था, इसलिए अब वह प्रतीक्षा कर सकता था। वह सुपरिचित अंधकारपूर्ण घुमावदार सीढ़ियों पर चढ़ गया जहां अभी भी बिल्लियों, मिट्टी के तेल और कपड़े धोने की नमी की गंध आ रही थी, उसने अंधेरे में दरवाज़ा टटोला और ज़ोर से दस्तक दी।

दरवाज़ा खुला मगर दो मज़बूत ज़ंजीरें पड़ी होने के कारण वह अध-खुला रह गया। नाटी-सी बुढ़िया ने तंग दरार में से कृशकाय चेहरा निकाला, अलेक्सेई की ओर सदेह की दृष्टि से, सूक्ष्म भाव से देखा और पूछा कि वह कौन है, किसे चाहता है और उसका नाम क्या है। इतने होने के बाद कहीं ज़ंजीरें खड़कीं और दरवाज़ा पूरी तरह खुल गया।

"अन्यूता घर पर नहीं है; लेकिन उसने आपके बारे में फोन कर दिया था। अन्दर आइये और मैं आपको उसका कमरा बता दूंगी," बुढ़िया ने उसका चेहरा, उसकी वर्दी और विशेषकर उसके सामान के बैग भी

बनियारे में जाकर कहा— पहले जिस तरह स्निग्ध स्वर में बोली थी, अब यह स्वर नहीं था:

"अच्छा, अगर आपको गर्म पानी की जरूरत हो तो मिट्टी के तेल-वाले नीले स्टोव पर आप खुद उबाल लीजियेगा।"

अन्यूता अस्पताल में बहुत व्यस्त रहा करती होगी। शरद के इन मन-हूस दिनों को मकान बिल्कुल उपेक्षित पड़ा रहा था। हर चीज पर धूल की मोटी तह थी और खिड़की के ढांचे पर और तिपाइयों पर रखे गमलों के फूल पीले पड़ गये थे और मुरझा गये थे, मानों उनमें बहुत दिनों से पानी दिया ही न गया हो। मेज पर रोटी के टुकड़े पड़े थे जो हरी फफूंद से ढके थे और केतली कभी हटायी ही न गयी थी। पियानो भी धूल की गर्म, रुपहली तह से ढंका था और एक बड़ी-सी मक्खी, मानों बंद हवा में उसका दम घुट रहा हो, निराश स्वर में भनभना रही थी और एक खिड़की के पीले-से धुंधले शीशे से बार-बार टकरा रही थी।

मेरेस्येव ने खिड़कियां खोल दीं, जहां से एक छतनार बागीचा दिखाई देता था जिसे अब साग-सब्जी का खेत बना दिया गया था। कमरे में ताजी हवा के झोंके ने प्रवेश किया और एकत्र धूल को इतनी जोर से उड़ा गया कि कुहरा-सा छा गया। इस समय अलेक्सेई के दिमाग में एक खुशनुमा ख्याल पैदा हुआ... कमरे को साफ कर दिया जाये और अगर अन्यूता अस्पताल से किसी तरह छुट्टी पाकर शाम को उसमें मिलने चली आये, तो उसे आनन्द और विस्मय से विभोर कर दिया जाये। उसने बूढ़ी से बाल्टी, झाड़न और झाड़ू मांग ली और वह काम में जुट गया जिसे मर्द सदियों से हिकारत की नजर से देखता रहा है। कोई डेढ़ घंटे तक वह आनन्द के साथ रगड़ता-खरोंचता रहा और धूल साफ करता रहा।

शाम को वह उस पुल तक गया, जहां इस घर की ओर आते समय उसने लड़कियों को बड़े-बड़े, खिले हुए शरदकालीन गेंदे के रंगबिरंगे फूल बेचते देखा था। उसने एक गुच्छा खरीदा और पियानो तथा मेज पर रखे गुलदानों में उन्हें सजा दिया और हरी आरामकुर्सी में आराम से बैठ गया। सारे शरीर में मीठी थकान की अनुभूतिवश वह भोजन की गंध को लालसापूर्वक सूंघने लगा जिसे रसोईघर में बुढ़िया उसके द्वारा लाये गये सामान से पका रही थी।

लेकिन अन्यूता इतनी थकी हुई आयी कि मुश्किल से नमस्कार भर करके वह कोच पर लुढ़क गयी और यह भी ध्यान नहीं दे सकी कि कमरा

कितना बढ़िया और प्यार-दुलारा है। जब वह थोड़ी देर आराम कर चुकी और कुछ ठंडी भी हवा, तब अचानक उसने अलक्सेई से कनी काट कर हँसी और समझ गयी कि क्या हो गया है। बड़ी ही मुस्कान भरकर और हास्यपूर्वक अलेक्सेई की कुहनी दबाते हुए वह बोली:

"कोई ताज्जुब नहीं कि ग्रिगोरी तुम्हें इतना प्यार करता है कि मुझे ईर्ष्या होने लगती है। क्या वह तुम्हें लिखता है, अलेक्सेई, कुछ तुम्हें? तुम बड़े बढ़िया आदमी हो। ग्रिगोरी का कोई समाचार मिला तुम्हें? अभी कुछ दिन पहले मुझे एक चिट्ठी मिली थी, छोटी-सी, टेढ़ी-मेढ़ी पंक्ति की। वह स्तालिनग्राद में है और जानते हो, वह मूर्खानंद क्या कर रहा है? दाढ़ी बढ़ा रहा है! ऐसे जमाने में क्या बढ़िया काम संभाला है! कहो कैसा लगता है, क्या नहीं? बताओ, अलेक्सेई, लगता तो नहीं है? स्तालिनग्राद के बारे में लोग ऐसी भयानक बातें करते हैं।"

"वहां जबर्दस्त लड़ाई चल रही है।"

अलेक्सेई ने भौंहें चढ़ायीं और आह भरी। उसे उन सबसे ईर्ष्या थी, जो वहां, वोल्गा पर हैं, जहां ऐसा घमासान संग्राम छिड़ा हुआ है, जिसकी चर्चा हर कोई कर रहा है।

वे सारी शाम बातें करते रहे। डिव्बाबंद गोश्त के भोजन का उन्होंने पूरी तरह आनन्द लिया, और चूंकि दूसरा कमरा बंद था, इसलिए वे साथियों की तरह एक ही कमरे में लेट गये—अन्यूता चारपाई पर और अलेक्सेई कोच पर—और फौरन गहरी नींद में खो गये।

जब अलेक्सेई जागा और उठकर कोच पर बैठ गया तब तक कमरे में सूरज की धूल-भरी किरणें तिरछी पड़ने लगी थीं। अन्यूता चली गयी थी। उसने अपने कोच की पीठ पर एक पुर्जी लगी देखी: "अस्पताल के लिए जल्दी ही रवाना हो रही हूं। मेज पर चाय है और अलमारी में पावरोटी, मेरे पास शक्कर नहीं है। शनिवार से पहले छुट्टी न पा सकूंगी। अ।"

इन दिनों अलेक्सेई घर से कभी ही बाहर निकला होगा। काम कुछ न होने के कारण उसने बुढ़िया का प्राइमस स्टोव, मिट्टी के तेल का स्टोव, कड़ाई और बिजली की स्विचें ठीक कर दीं, और उसकी प्रार्थना पर उसने उस दुष्ट अलेक्तीना अरकादियेव्ना का कॉफ़ी पीसने का यंत्र भी ठीक कर दिया जिसने तामचीनी का दूधदान अब तक नहीं लौटाया था। इस प्रकार वह उस बुढ़िया की नजरों में भला बन गया और उसके पति ने भी भला मान लिया जो इमारती ट्रस्ट में काम करता था, वह हवाई

दफ्तर में भी गर्दिश था और कई-कई रात और दिन घर से ग़ायब रहता था। बूढ़े पति-पत्नी इस नतीजे पर पहुँचे कि सचमुच टैंक-चालक तो बाँके आदमी होते ही हैं मगर हवाबाज़ भी उनसे किसी प्रकार कम नहीं होते और यहाँ उनसे घनिष्ठता बढ़ जाये तब तो वे बड़े ही गम्भीर, परवाहवाले जीव निकलते हैं, हालाँकि उनका ऐसा दिखाई होता है।

आखिर वह दिन आ गया जब अलेक्सेई को अपना फ़ैसला लेने नियुक्ति-विभाग जाना था। पिछली रात उसने आँखें खोले हुए कोच पर ही काट दी थी। सुबह वह उठा, दाढ़ी बनायी, हाथ-मुँह धो लिया, ठीक वक्त पर दफ़्तर पहुँच गया और जो उसके भाग्य का फ़ैसला करनेवाला था, प्रशासन विभाग के उस मेजर के पास पहुँचनेवाला वह पहला व्यक्ति था। मेजर को देखते ही न जाने क्यों उसे घृणा हो गयी। अलेक्सेई की ओर आँखें उठाये बिना, मानो उसे आते उसने देखा ही न हो, वह मेज पर अपने काम में व्यस्त रहा—फ़ाइलें निकालीं और लगायीं, विभिन्न लोगों को फ़ोन किया, क्लर्कों को बड़ी देर तक समझाता रहा कि फ़ाइलों पर नम्बर किस तरह लगाये जाते हैं, और फिर बाहर चला गया और बड़ी देर तक न आया। इस समय तक मेरेस्येव उसके लम्बे चेहरे, लम्बी नाक, सपाट गालों, दमकते हुए होंठों और ढलवाँ माथे से, जो अप्रिय भाव से चमकती हुई गंजी खोपड़ी से जाकर मिल गया था, पूरी तरह नफ़रत करने लगा था। अन्ततः मेजर वापस लौटा, बैठ गया, अपने कैलेण्डर का पन्ना पलटा और तब जाकर अलेक्सेई की ओर ध्यान दिया।

"आप मुझसे मिलना चाहते हैं, कामरेड सीनियर लेफ़्टिनेंट?" उसने रोबदार, आत्मविश्वासी, भारी आवाज़ में पूछा।

मेरेस्येव ने उसे अपना नाम बता दिया। मेजर ने क्लर्क से अलेक्सेई के काग़ज़ात लाने के लिए कहा और उनका इन्तज़ार करते हुए वह टाँगें फैलाकर बैठ गया और बड़ी ही तल्लीनता से अपने दाँतों को दाँत-खोदनी से कुरेदने लगा, जिसे शालीनतावश वह अपनी हथेली से ढके हुए था। जब काग़ज़ात आ गये तो वह मेरेस्येव के 'केस' पर ग़ौर करने लगा। यकायक उसने हाथ हिलाया और एक कुर्सी की तरफ़ इशारा करते हुए तशरीफ़ रखने का अनुरोध किया; स्पष्ट था कि वह उस हिस्से को पढ़ गया था जहाँ उसके पैर कटे होने की बात लिखी थी। उसने पढ़ना जारी रखा और आखिरी पृष्ठ ख़त्म करने के बाद आँखें ऊपर उठायीं और पूछने लगा:

"तो आप मुझसे क्या चाहते हैं?"

"मैं किसी लड़ाकू विमान रेजीमेंट में नियुक्ति चाहता हूं।"

मेजर बोझिल ढंग से कुर्सी में पीछे झुक गया और इस हवाबाज की ओर आश्चर्य से देखने लगा जो अभी भी उसके सामने खड़ा था, और फिर उसके लिए खुद अपने हाथ से एक कुर्सी खींच दी। उसकी घनी भौंहें उसके चिकने और चमकदार माथे पर और ऊंचे चढ़ गयी। उसने कहा:

"लेकिन आप विमान नहीं चला सकते।"

"चला सकता हूं और चलाऊंगा! आप परीक्षा के लिए मुझे किसी ट्रेनिंग स्कूल में भेज दीजिये," मेरेस्येव ने लगभग चीखते हुए कहा और उसके स्वर से ऐसा अदम्य संकल्प व्यक्त हुआ कि कमरे में अन्य मेजों के अफसरों ने जिज्ञासापूर्वक ऊपर देखा कि यह ताम्रवर्ण, सुन्दर लेफ्टिनेंट किस बात को इतने हठपूर्वक पूछ रहा है।

मेजर को यकीन हो गया था कि सामने जो व्यक्ति खड़ा है, वह या तो हठधर्मी है या पागल। अनेस्मेई के क्रुद्ध चेहरे और कौंधती हुई "जंगली" आंखों की ओर कनखियों से नजर डालकर उसने विनम्र स्वर में बोलने का प्रयत्न करते हुए कहा:

"लेकिन देखिये! पैरों के बिना हवाई जहाज चलाना कैसे मुमकिन है? और आप ही सोचिये, आपको कौन इसकी इजाजत देगा? यह बिल्कुल हास्यास्पद बात है! पहले किसी ने ऐसा नहीं किया!"

"पहले किसी ने नहीं किया। खैर, तो अब कर दिखाया जायेगा," मेरेस्येव ने हठधर्मी से जवाब दिया। उसने अपनी जेब से नोटबुक निकाली, उससे पत्रिका की कतरन निकाली, उसपर चढ़ी हुई सेलोफेन उतारी और उसे मेजर के सामने मेज पर रख दिया।

अन्य मेजों पर बैठे हुए अफसरों ने अपना काम बंद कर दिया और ध्यान से इस वार्तालाप को सुनने लगे। उनमें से एक अपनी जगह से उठा और मेजर के पास पहुंचा, मानों वह किसी काम के बारे में पूछने आया हो, उसने सिगरेट जलाने के लिए माचिस मांगी और मेरेस्येव के चेहरे पर नजर डाली। मेजर ने कतरन पर आंखें दौड़ायीं और अंत में कहा:

"हम इसे नहीं मान सकते। यह कोई सरकारी आदेश नहीं है। हमारे पास हिदायतें हैं जिनमें वायुसेना के लिए शारीरिक क्षमता की भिन्न-भिन्न श्रेणियों की अलग-अलग व्याख्या की गयी है। जो पैरों की चोट की, कमर या उंगलियों की कम होती, तो मैं आपको किसी हवाई जहाज का

चार्ज लेने की इजाज़त न देता। अपनी पत्रिका रख लीजिये, यह कोई सबूत नहीं है। मैं आपके साहस की सराहना करता हूं, पर..."

मेरेस्येव क्रोध से उबल रहा था और उसकी इच्छा हुई कि मेजर की मेज़ से कलमदान उठाये और उसकी गंजी, चमकदार खोपड़ी पर दे मारे। रुंधे हुए स्वर में वह बोला:

"और इसके बारे में आप क्या कहते हैं?"

इतना कहकर उसने अपना आख़िरी पत्ता मेज़ पर रख दिया–यह था प्रथम श्रेणी के फ़ौजी डाक्टर मिरोवोल्स्की का प्रमाणपत्र। मेजर ने संदिग्ध भाव से उसे उठा लिया। वह बाज़ाब्ता था और उसपर फ़ौजी चिकित्सा विभाग की मुहर भी लगी थी, और एक ऐसे सर्जन के दस्तख़त थे जिसका वायुसेना में बड़ा सम्मान था। मेजर ने प्रमाणपत्र पढ़ा और उसका रुख़ और भी मैत्रीपूर्ण हो गया। सामने खड़ा व्यक्ति पागल नहीं था। यह असाधारण नवयुवक गम्भीरतापूर्वक विमान चलाना चाहता है, हालांकि उसके पैर नहीं हैं। उसने एक संजीदा फ़ौजी सर्जन को, जो काफ़ी अधिकारसम्पन्न है, यह विश्वास दिलाने में सफलता प्राप्त कर ली कि वह उड़ान कर सकता है। मेजर ने निश्वास खींचकर मेरेस्येव के "केस" को उठाकर बग़ल में रख दिया और कहा:

"मैं कितना ही क्यों न चाहूं मगर आपके लिए कुछ नहीं कर सकता। प्रथम श्रेणी के फ़ौजी डाक्टर जो जी चाहे, लिख सकते हैं, लेकिन हमारे पास स्पष्ट और निश्चित आदेश हैं, जिनका उल्लंघन नहीं होना चाहि ... अगर मैं उनका उल्लंघन करूंगा, तो उसका जवाब कौन देगा? डाक्टर?"

हृष्ट-पुष्ट, आत्मविश्वासी, शान्त और विनम्र अफ़सर की ओर, उसके चुस्त कोट के स्वच्छ कालर की ओर, उसके रोमिल हाथों की ओर और गहराई से कटे हुए बड़े-बड़े भोंड़े नाख़ूनों की ओर मेरेस्येव ने तीव्र घृणा से दृष्टि डाली। इसे कैसे बताया जाये? क्या वह समझ सकेगा? क्या वह जानता है कि आकाश-युद्ध क्या होता है? शायद उसने अपने जीवन में गोली दग़ने की आवाज भी न सुनी हो। पूरी शक्ति से अपने ऊपर क़ाबू पाते हुए उसने मंद स्वर में पूछा:

"तो फिर मैं क्या करूं?"

मेजर ने कंधे उचकाये और जवाब दिया:

"अगर आप ज़ोर देते हैं तो मैं आपको संगठन विभाग के कमीशन के

ना, छोटे भाई-बहिन की भांति अपनी पावरोटी को आपस में बांटते इसलिए वह बड़ी प्रसन्नतापूर्वक उनसे कह देता था कि पकाने की त से बचने के लिए अब वह अफ़सरों के मैस में खाना खाने लगा है।

शनिवार आया, जिस दिन अन्यूता को ड्यूटी से छुट्टी मिलेगी—वैसे वह : शाम उसको फ़ोन कर बता देता था कि स्थिति असतोषजनक है। उने आखिरी क़दम उठाने का फ़ैसला कर दिया। उसके सामान के बैग अभी भी उसके पिता का पुराना, चांदी का सिगरेट केस पड़ा था, सपर काले रंग की मीनाकारी से तीन दौड़ते हुए घोड़ों द्वारा खींची जा-वाली स्लेज गाड़ी अंकित थी, और अंदर आलेख था: "रजत-परिणय अवसर पर मित्रों की ओर से।" अलेक्सेई सिगरेट नहीं पीता था, फर भी जब वह मोर्चे पर जा रहा था, तब मां ने परिवार के इस अमू-र स्मृति-चिह्न को अपने प्रिय पुत्र की जेब में डाल दिया था, और वह स भारी, ऊटपटांग चीज को हमेशा अपने साथ लिये घूमता रहा और ब उड़ान पर जाता तो उसे "कुशल-मंगल" के लिए अपनी जेब में डाल ता था। उसने अपने बैग से यह सिगरेट केस खोज निकाला और उसे मीशन स्टोर ले गया।

एक दुबली-पतली स्त्री ने जिससे नेफ़थलीन की बू आ रही थी, सिग-रेट केस को हाथों में उलट-पलटकर देखा और अपनी सूखी हुई उंगली से आलेख की तरफ़ इशारा किया और बोली कि सरनामेवाली चीज़ें बेचने के लिए नहीं ली जातीं।

"लेकिन मैं उसके लिए बहुत ज्यादा नहीं मांग रहा हूं। तुम खुद बताओ क्या दे सकती हो।"

"नहीं, नहीं। इसके अलावा, कामरेड अफ़सर, जैसे कि मुझे लगा अभी तुम्हारी उमर इतनी बड़ी नहीं है कि तुम अपनी शादी की पच्चीसवीं वर्षगांठ पर उपहार लेने के लायक हो," नेफ़थलीन की बू मारती हुई स्त्री ने अलेक्सेई को सिर से पैर तक अमैत्रीपूर्ण बेरंग आंखों से घूरते हुए तीखे स्वर में कहा।

अलेक्सेई का चेहरा लाल हो गया। उसने काउन्टर से सिगरेट केस झपट लिया और दरवाज़े की ओर चल दिया। किसी ने उसका हाथ पकड़-कर उसे रोक लिया और उसके कान के पास शराब में बसी हुई भारी-भारी सांस की गरमी महसूस हुई।

"बड़ी ख़ूबसूरत-सी चीज़ है यह। महंगी तो नहीं?" एक मोटे चेहरे-

वाले आदमी ने पूछा। उसकी दाढ़ी और मूँछें बढ़ी हुई थीं। उसकी नाक नीली थी। उसने अपना कांपता हुआ मगदार हाथ सिगरेट केस की तरफ बढ़ाया। "जोरदार। चूंकि तुम देशभक्तिपूर्ण युद्ध के वीर हो इसलिए मैं इसके लिए पांच कागज़ दे दूंगा।"

अलेक्सेई ने मोल नहीं किया। उसने पांच सौ रूबल के नोट लिए और कबाड़ की इस बदबूदार दुनिया से निकलकर बाहर साफ़ हवा में आसपास और निकटतम बाज़ार का रास्ता ले लिया। इस पैसे से उसने कुछ गोश्त, बैंकरैंट, एक पावरोटी, कुछ आलू और प्याज खरीदा और अजमोद की कुछ जड़ें खरीदना भी न भूला। इस तरह लदकर, रास्ते में बैंकरैंट का एक टुकड़ा चूसते हुए वह "घर" लौटा —उसे वह "घर" कहने लगा था।

जब वह घर वापिस आया तो उसने अपनी खरीद का सामान रसोईघर की मेज पर रख दिया और बात बनाकर बुढ़िया से कहने लगा:

"मैंने अपना राशन ले डालने का और अपना भोजन खुद पकाने का फ़ैसला कर लिया है। मैस में जैसा खाना मिलता है, वह तो भयंकर होता है।"

उस दिन दोपहर में अन्यूता के लिए शानदार भोजन इंतज़ार कर रहा था। गोश्त के साथ पकाये गये आलुओं का शोरवा जिसकी भूरी-सी सतह पर अजमोद के टुकड़े तैर रहे थे, प्याज़ के साथ भुना गोश्त और क्रेनबेरी की जेली तक, जिसे बुढ़िया ने आलुओं के माड़ से बनाया था। लड़की थकी हुई और पीली-सी घर लौटी। उसने अपने को नहाने के लिए मजबूर किया और बड़ा ज़ोर लगाकर कपड़े बदले। पहली परोस को और फिर दूसरी परोस को जल्दी से खाकर वह पुरानी जादुई कुर्सी पर पाव फैलाकर लेट गयी, जिसने उसे अपनी गुदगुदी भुजाओं में पुराने मित्र की तरह भर लिया और उसके कानों में मधुर स्वप्न फूंकने लगी, और इस तरह वह जेली का इंतज़ार किये बिना, जो पाकशास्त्र के नियमों के अनुसार एक कटोरदान में बंद, नल के बहते पानी के नीचे ठंडी की जा रही थी, वह ऊंघ गयी।

थोड़ी-सी नींद के बाद जब उसने आंखें खोलीं तो उस नन्हेसे, अब साफ़-सुथरे कमरे में, जिसमें आरामदेह और पुराना फ़र्नीचर तमाम भरा पड़ा था, सांझ की धूमिल छायाएं उतर आयी थीं। भोजन की मेज़ पर पुराने लैम्प के साये में अलेक्सेई अपने हाथों के बीच सिर दबाये बैठा था,

उसे इतने ज़ोर से दबा रहा था, मानों वह उसका कचूमर ही निकाल ना चाहता हो। वह उसका चेहरा न देख सकी, मगर जिस तरह वह था, उससे यह स्पष्ट था कि वह निराशा की गहराई मे तड़प रहा उसके हृदय मे इस शक्तिशाली और हठी व्यक्ति के लिए दया का उमड़ पड़ा। वह आहिस्ते से उठ बैठी, उसकी ओर बढ़ी, उसका ी-भरकम सिर अपने हाथों में लिया और उसके सख्त बालों मे अपनी लियां फेरती हुई, सिर थपथपाने लगी। उसने उसका हाथ पकड़ा, की हथेली चूमी, प्रसन्नचित मुसकराते हुए उछल पड़ा और बोला:

"क्रैनबेरी जेली लोगी? तुम भी क्या बढ़िया हो। मैं तो उसे ठीक र पर लाने के लिए नल के नीचे ठंडा करने मे जुटा हुआ था, और हो कि सो गयी। रसोइया यह कैसे बरदाश्त करेगा?"

दोनों ने उस "सर्वश्रेष्ठ" जेली की एक-एक प्लेट खायी जो सिरके सी खट्टी हो गयी थी; वे लोग आनन्दपूर्वक इधर-उधर की बातें करते हे, सिर्फ दो विषयों—म्योज्देव और मेरेस्येव —को छोड़कर, मानों इन-र बात न करने का आपसी समझौता कर लिया हो, और फिर अपने-पने सोने का प्रबंध करने लग गये। अन्यूता गलियारे मे चली गयी और ब फर्श पर अलेक्सेई द्वारा कृत्रिम पैरो के रखने की टाप सुनाई दी, तब ह अन्दर आयी, लैम्प बुझा दिया और कपड़े उतारकर लेट गयी। कमरे अंधेरा था, वे दोनो मौन थे, मगर चादरो की सर्सराहट और चारपाई ी स्प्रिंगों की चू-चू सुनकर वह समझ गयी कि वह जाग रहा है। आ-खिरकार अन्यूता ने पूछा:

"नींद नही आ रही, अलेक्सेई?"

"नही।"

"सोच-विचार कर रहे हो?"

"हा। और तुम?"

"मैं भी ऐसे ही सोच रही हूं।"

वे फिर चुप हो गये। सड़क पर कोई ट्राम-गाड़ी मोड़ पर घूमते वक्त खिच् बोली। एक क्षण उसकी ट्राली से बिजली की चिनगारी कौंध गयी और उस क्षण उन्होंने एक दूसरे का चेहरा देखा। दोनो आखें फाड़े पड़े थे।

अलेक्सेई ने अपने निष्फल भटकाव के बारे मे अन्यूता से एक शब्द भी नही कहा था, लेकिन वह भाप गयी थी कि उसका काम बन नही रहा

है और शायद उसकी अदम्य आत्मा निराशा से जर्जर हो गयी है। उसके नारी-सुलभ अन्तर्बोध ने उसे बता दिया कि यह आदमी कितनी यातना सह रहा है, लेकिन उसी सहज बोध ने उसे यह भी जता दिया कि इस क्षण यातना कितनी ही कठिन क्यों न हो, सहानुभूति के दो शब्दों से उस की पीड़ा और बढ़ जायेगी और करुणा दिखाने से उसे ठेस लगेगी।

उधर वह अपने हाथों पर सिर टिकाये पीठ के बल लेटा हुआ था और उस सुन्दर लड़की के बारे में सोच रहा था, जो उसकी अपनी शैय्या से कुछ ही कदम दूर लेटी हुई थी—उसके मित्र की प्रेयसी और एक बढ़िया साथिन। उस तक पहुंचने के लिए उसे अंधेरे कमरे में सिर्फ चंद क़दम ही बढ़ाने पड़ेंगे, लेकिन दुनिया मे कोई शक्ति उसे ये चंद कदम उठाने का प्रलोभन नहीं दे सकती, मानो वह लड़की, जिसे वह बहुत थोड़ा जानता था, मगर जिसने उसे शरण दे रखी थी, उसकी अपनी बहन हो। मेजर स्त्रुच्कोव शायद उसका मजाक बनाये, और अगर उसे यह बात बतायी जाये तो शायद विश्वास भी न करे। लेकिन कौन वह सकता है? शायद, अब वही उसे सबसे अधिक अच्छी तरह समझ सकेगा... और अन्यूता कितनी बढ़िया लड़की है! बेचारी, कितनी थक जाती है, और फिर भी उस सदर अस्पताल मे अपने काम के प्रति उसमे कितना अधिक उत्साह रहता है!

"अलेक्सेई!" अन्यूता ने धीमे से पुकारा।

मेरेस्येव की कोच से नियमित सांस लेने की ध्वनि आ रही थी। विमान-चालक सो गया था। लड़की चारपाई से उठी, आहिस्ते से क़दम बढ़ाती हुई उसकी चारपाई तक पहुंची, उसका तकिया सीधा किया, और इस प्रकार उसके चारों तरफ कम्बल ठीक से लपेट दिया मानों वह बच्चा हो।

७

मेरेस्येव को कमीशन ने सबसे पहले अन्दर बुलाया। भारी-भरकम, स्थूलकाय प्रथम श्रेणी के फौजी डाक्टर, जो धीरे से बगल मोड़ आये थे, फिर अध्यक्षता कर रहे थे। उन्होंने अलेक्सेई को फौरन पहचान लिया और उसका स्वागत करने के लिए वे कुर्सी छोड़कर उठ तक बैठे।

"वे लोग तुम्हें स्वीकार नहीं करते, एह?" उन्होंने उदार और मद्दा-

[illegible]

[illegible]

[illegible]

कप्तान उसे थोड़ी देर तक [illegible] से [illegible] और फिर उठ खड़ा और बिना एक शब्द कहे, अलेक्सेई के [illegible] के कमरे के दरवाजे के पीछे गायब हो गया।

वह वहाँ काफ़ी देर तक रहा। कमरे से [illegible] के दो स्वरों को सुनकर अलेक्सेई के सारे शरीर को [illegible] दिया और उसका दिल इतनी तेज़ी और पीड़ा से धड़कने लगा, मानो वह किसी तेज़गामी विमान में गोता लगा रहा हो।

कप्तान कमरे से मुसकराता और प्रसन्नचित्त निकला।

"हाँ," उसने कहा, "आपके मामले में जनरल तो आपके उड़ाकुओं में शामिल किये जाने की बात सुनने के लिए भी तैयार न थे, लेकिन उन्होंने यह लिख दिया है. 'प्रार्थी को तनखा या राशन में कटौती बिना ए. एम. बी. में सेवा करने के लिए नियुक्त किया जाये।' समझ गये? बिना कटौती .."

आनन्द के बजाय कप्तान ने अलेक्सेई के चेहरे पर रोष उमड़ते देखा।

"ए. एम. बी.! कभी नहीं!" वह चिल्लाया, "क्या आप इतना भी नहीं समझते? मुझे अपने लिए राशन और तनखा की चिंता नहीं है! मैं विमान-चालक हूं! मैं उड़ान करना चाहता हूं, लड़ना चाहता हूं!.. आप लोग यह क्यों नहीं समझते? इससे सीधी बात क्या हो सकती है?.."

कप्तान उलझन में फंस गया। सचमुच ही यह बड़ा विचित्र प्रार्थी था। उसकी जगह कोई दूसरा आदमी होता तो खुशी से नाच उठता... लेकिन यह व्यक्ति! बिल्कुल सनकी है! लेकिन इस सनकी व्यक्ति को कप्तान अधिकाधिक पसंद करने लगा था। वह हृदय से उसके प्रति सहानुभूति कर रहा था और इस विचित्र स्थिति में उसकी सहायता करना

दिया और फ़ौरन, जैसे उसने कप्तान को बताया था, उसी तरह यहाँ भी अपने दुर्भाग्य की गाथा उगल दी। मेजर ने उसकी कहानी सुनी, मगर उतनी विनम्रता के साथ नहीं, जितनी शान्ति, सहानुभूति और ध्यान से। उसने पत्रिका की कतरन और फ़ौजी सर्जन की राय भी पढ़ ली। मेजर ने जो सहानुभूति प्रदर्शित की उससे प्रोत्साहित होकर मेरेस्येव यह भूलकर कि वह कहाँ है, एक बार फिर अपनी नृत्य की योग्यता प्रदर्शित करना चाहता था और... लगभग सारा खेल ही बिगाड़ दिया, क्योंकि उसी समय दफ़्तर का दरवाज़ा बड़े ज़ोर के धक्के से खुल गया और एक लम्बे क़द का, दुबला-पतला अफ़सर प्रगट हुआ जिसके कौए जैसे काले बाल थे। अलेक्सेई ने उसके जो चित्र देखे थे, उनसे मिलाकर वह उसे फ़ौरन पहचान गया। वह डग भरता हुआ अपने कोट के बटन लगाता, एक जनरल से कुछ कह रहा था जो उसके पीछे-पीछे आ रहा था। वह बड़ा चिन्तित दिखाई दे रहा था और उसने मेरेस्येव की ओर ध्यान तक नहीं दिया।

"मैं क्रेमलिन जा रहा हूँ," उसने अपनी घड़ी की ओर नज़र डालकर मेजर से कहा, "स्तालिनग्राद के लिए एक हवाई जहाज़ छः बजे तैयार रखने का हुक्म दे दो।" इतना कहकर वह उतनी ही शीघ्र तिरोहित हो गया, जैसे प्रगट हुआ था।

मेजर ने फ़ौरन हवाई जहाज़ के लिए हुक्म भेज दिया और फिर याद करके कि मेरेस्येव उसके कमरे में बैठा था, वह उसे क्षमा-याचना के भाव से बोला.

"आपकी किस्मत ही ख़राब है। हम जा रहे हैं। आपको फिर आना होगा। कहीं रहने का ठिकाना है?"

इस अप्रत्याशित अभ्यागत के ताबड़तोड़ झटके पर, जो अभी कुछ क्षण पहले ही इतना बुद्धिमत्ती और इच्छा-शक्ति से सम्पन्न दिखाई दे रहा था, अकस्मात ऐसी गहरी निराशा और थकान छा गयी कि मेजर ने इरादा बदल दिया।

"ठहर," उसने कहा, "मैं जानता हूँ कि कौन सी मदद करूँ।"

इतना कहकर उसने कार्यालय के निजी काग़ज़ का एक पन्ना लेकर उसपर कुछ पंक्तियाँ लिख दीं, उसे एक लिफ़ाफ़े में रख दिया और बन्द किया. "प्रधान नियुक्ति विभाग।" यह लिफ़ाफ़ा उसने मेरेस्येव को दिया और उससे हाथ मिलाते हुए कहा:

"हृदय से मैं आपके लिए शुभकामना करता हूं।"

इस पत्र में लिखा था: " सीनियर लेफ़्टीनेंट अ. मेरेस्येव ने कमांडर [से] मुलाकात की। उनका पूरा ध्यान रखा जाये। उन्हें सक्रिय विमान-सेवा [में] वापस लौटने में हर सम्भव सहायता दी जाये।"

एक घंटे बाद छोटी मूछोंवाला कप्तान मेरेस्येव को अपने प्रधान के [कम]रे में ले गया। मोटे रोएं की तनी भौंहोंवाले स्थूलकाय वृद्ध जनरल ने टिप्पणी पढ़ी और विमान-चालक की ओर प्रफुल्लित, नीली आंखें उठा[कर] हंस पड़ा और बोला:

"अच्छा तो तुम वहां भी हो आये? बड़ी जल्दी, मैं कहूंगा! तुम [वह]ी हो वह, जो नाराज हो गये, क्योंकि मैंने तुमको ए. एस. बी. में [भेज] दिया था? हा-हा-हा! बढ़िया छोकरे हो! मैं समझ गया कि तुम [बड़]े हवाबाज हो। ए. एस. बी. में नहीं जाना चाहते। बुरा मान गये, [क्य]ो?.. क्या मज़ाक है!.. लेकिन मैं तुम्हें, ए जवान नर्त्तक, तुम्हें [लेक]र क्या करता? तुम अपनी गर्दन तोड़ बैठोगे, और फिर वे लोग [ह]मारी गर्दन के एवज में मेरे सिर की मरम्मत करेंगे, यह कहकर कि [वह] बूढ़ा बेवकूफ़ था जिसने तुम्हें नियुक्त किया था। लेकिन यह कौन कहे [कि] तुम क्या कर सकते हो? इस लड़ाई में हमारे जवानों ने इससे भी [ब]ड़ी चीज़ें कर दिखाकर दुनिया को हैरत में डाल दिया... लाओ, यह [प]र्जा मुझे दो।"

इतना कहकर जनरल ने नीली पेंसिल से लापरवाही के साथ गिचपिच लिखावट में, शब्दों को मुश्किल से पूरा लिखते हुए, लिख डाला. "प्रार्थी को ट्रेनिंग स्कूल भेजा जाये।" मेरेस्येव ने कांपते हुए हाथों से काग़ज़ जल्दी से लिया; उस टिप्पणी को वहीं मेज़ के पास पढ़ डाला, फिर उतरते समय सीढ़ियों पर पढ़ा, इसके बाद जहां संतरी पास देख रहा था, वहां पढ़ा, ट्राम-गाड़ी में बैठकर पढ़ा और अंत में बारिश के बीच फुटपाथ पर खड़े होकर पढ़ा। और दुनिया के समस्त निवासियों में से सिर्फ़ वही एक व्यक्ति था जो लापरवाही से घसीटे गये उन शब्दों का अर्थ और मूल्य समझता था।

उस दिन अलेक्सेई मेरेस्येव ने अपनी घड़ी बेच डाली, जो डिविज़नल कमांडर ने उपहारस्वरूप दी थी, और उसके पैसे लेकर बाज़ार गया और तमाम तरह की खाद्य-सामग्री और शराब खरीदी और अन्यूता को टेलीफ़ोन करके उससे अनुरोध किया कि वह अपने अस्पताल से चंद घंटों की छुट्टी

ले ले, उसने बूढ़े दम्पति को भी मन्यूता के कमरे में निमंत्रित किया और अपनी महान विजय के उत्सवस्वरूप दावत का प्रबंध किया।

८

मास्को के पास स्थित प्रशिक्षण विद्यालय में, जो छोटे-से हवाई अड्डे के निकट था, उन चिन्ताग्रस्त दिनों में बड़ा व्यस्त कार्यक्रम होता था।

स्तालिनग्राद के युद्ध में वायुसेना को बड़े पैमाने पर काम करना था। वोल्गा पर स्थित इस दुर्ग के ऊपर का आसमान, जो सदा कौंधता रहता था और आग की लपटों और विस्फोटों के धुएं से भरा रहता था, बराबर आकाशीय मुठभेड़ों का क्षेत्र बना हुआ था और प्रायः ये मुठभेड़ें नियमित आकाश-युद्ध का रूप धारण कर लेती थीं। दोनों पक्षों को भारी क्षति उठानी पड़ रही थी। युद्धरत स्तालिनग्राद बराबर विमान-चालकों और अधिक विमान-चालकों, अधिकाधिक विमान-चालकों का आवाहन करता रहता था... फलतः यह प्रशिक्षण विद्यालय, जहां अस्पतालों से मुक्त किये गये विमान-चालकों को और ऐसे हवाबाजों को, जो अब तक नागरिक यातायात के हवाई जहाज चलाते थे, लड़ाकू विमान संचालन की शिक्षा दी जाती थी, अपनी सम्पूर्ण शक्ति और क्षमता से कार्य कर रहा था। बड़े-बड़े व्याधपतंगों की तरह दिखने-वाले प्रशिक्षण विमान उस छोटे-से, भीड़-भरे हवाई अड्डे पर इस तरह मंडराते थे, मानों रसोईघर की गंदी मेज पर मक्खियां टूट पड़ी हों। और उनकी भनभनाहट सूर्योदय से सूर्यास्त तक सुनाई देती थी। पहियों के निशानों से भरे मैदान पर कभी भी नजर डालो, कोई न कोई विमान उड़ता या उतरता दिखाई देता था।

नाटे-से, बहुत मोटे, लाल चेहरेवाले व्यक्ति—स्कूल के प्रधान ने, जिसकी आंखें नींद के अभाव से सूजी हुई थीं, मेरेस्येव की ओर क्रुद्ध भाव से देखा, मानों कह रहा हो, "किस शैतान ने तुम्हें यहां ला पटका है? तुम्हारे बिना ही यहां मेरे ऊपर कम मुसीबत नहीं है," और उसने अने-क्सेई के हाथों से कागजों का पुलिंदा छीन लिया।

"वह मेरे पैरों के बारे में आपत्ति करेगा और मुझसे फौरन मुंह काला करने के लिए कहेगा," मेरेस्येव ने लेफ्टीनेंट-कर्नल की ठोड़ी पर बहुत दिनों से न बनी दाढ़ी पर चोरी-चोरी नजर डालते हुए सोचा। लेकिन

यी प्रबंध था, भाप के पाइप फट गये थे, और बड़ी सर्दी थी, अलेक्सेई पहले दिन सारी रात अपने कम्बल और चमड़े के कोट के नीचे कांपता रहा—लेकिन इस सबके बावजूद, इन सारी गड़बड़ियों और तकलीफ़ों के बीच उसको ऐसा महसूस हो रहा था जैसे, शायद, किसी मछली को महसूस होता है, जिसे रेतीले किनारे पर पड़े तड़पते रहने के बाद फिर कोई लहर वापस समुद्र में ले गयी हो। उसे यहां हर चीज़ पसंद आयी; पड़ाव जैसी ज़िंदगी तक से उसे यह स्मरण हो आता था कि उसकी मंज़िल क़रीब है।

जिसका वह आदी था, वही सम्पन्न वातावरण, वही चमड़े के कोट पहने—जो अब जर्जर और फीके पड़ गये थे—और उड़ाकोंवाले ऊंचे बूट चढ़ाये प्रसन्नचित्त लोग, उनके धूप खाये चेहरे और फटी आवाज़ें, विमानों के ईंधन की मीठी-सी तीखी गंध से पूरित और गरमाते हुए इंजनों की गड़गड़ाहट की गूंज से प्रतिध्वनित तथा उड़ते हुए विमानों के एकरस, हल्के गुंजन से आच्छादित वही सुपरिचित वायुमण्डल ; ग्रीज़ से सने लबादे पहने हुए थके-मांदे मेकेनिकों के वही कालिख लगे चेहरे, वही चिड़चिड़े मिज़ाज, जिनके चेहरे धूप से तपकर ताम्रवर्ण हो गये थे ; मौसम सर्वेक्षण केन्द्र की वही गुलाबी कपोलोंवाली लड़कियां ; कमान केन्द्र के स्टोव से उठता हुआ वर्तुलाकार नीला धुआं ; विभिन्न यंत्रों की वही मंद गुनगुनाहट और चौंका देनेवाली टेलीफ़ोनों की घंटियां, भोजन-कक्ष में चम्मचों की उसी तरह कमी, विविध रंगों की पेंसिलों से हाथ से लिखा गया बोर्ड-पत्र, जिसमें ऐसे युवक हवाबाज़ों के बारे में अवश्यम्भावी कार्टून होते जो हवाई जहाज़ में उड़ान करते समय लड़कियों के सपने देखते ; हवाई अड्डे के मैदान की नर्म, पोली मिट्टी जिस पर हवाई जहाज़ के पहियों और स्कियों की लकीरें बन गयी थीं और हंसी-ख़ुशी से बातचीत, जिसमें हवाबाज़ों और विमान-कला की अपनी शब्दावली का मिर्च-मसाला मिला हुआ होता है—अलेक्सेई के लिए यह सभी सुपरिचित था।

मेरेस्येव फ़ौरन खिल उठा। लड़ाकू वायुसेना के लोगों में जैसा बन्धुत्व-भाव और अपनापन होता है—जो अलेक्सेई से स्थायी रूप से खत्म हो गया मालूम होता था—वह सब उसके अंदर फिर वापस लौट आया। उसमें फुर्ती आ गयी, वह खुशी और तेज़ी से अपने से छोटे ओहदेवालों के सैल्यूट का जवाब देता, ऊंचे ओहदेवालों से भेंट होने पर फुर्ती से नियमपूर्वक क़दम मारता और, नयी वर्दी मिलने पर, उसने ए. एम. के,

"जाम्रो भौर श्रभी श्राराम करो," उसने कहा। "सफ़र के बाद तुम्हें इसकी जरूरत होगी। कुछ दाना-पानी मिला? यहां जो भीड़-भड़क्का है, उसमें वे तुम्हें खिलाना भी भूल सकते हैं, समझे... ए जड़ मूर्ख! ठहरो, तुम्हें श्रभी उतारता हूँ, तब तुम्हारे 'लड़ाकू' का सब मज़ा निकाल दूंगा!"

मेरेस्येव श्राराम करने न गया, इसलिए श्रौर भी कि सोने के लिए उसे जो क्वार्टर दिया गया था उसके मुकाबले हवाई श्रड्डा कुछ गर्म था, हवा सूखी श्रौर चुभीली थी। ए. एम. बी में उसे एक चर्मकार भी मिल गया जिसे उसने श्रफ़सरोंवाली पेटी से फंदे श्रौर बकसुएदार दो तस्मे बनाने के लिए तम्बाकू का पूरे सप्ताह का श्रपना राशन दे डाला–इन तस्मों से वह हवाई जहाज के पैडल से श्रपने कृत्रिम पैरों को बांधने का इरादा कर रहा था। काम फौरी श्रौर श्रसाधारण किस्म का होने के कारण चर्मकार ने तम्बाकू के श्रलावा श्राधी लिटर वोद्का भी मांगी श्रौर वादा किया कि वह बहुत बढ़िया काम तैयार करेगा। मेरेस्येव हवाई श्रड्डे पर लौट श्राया श्रौर जब तक श्राखिरी हवाई जहाज उतरकर थान में खड़ा न हो गया श्रौर सब यथास्थान खूंटे से न बांध दिये गये, वह उड़ानों को देखता रहा जैसे कि वे साधारण उड़ानें नहीं, बल्कि श्रेष्ठतम विमान-चालकों के बीच प्रतियोगिता हो। उसका मन उड़ानों में इतना नहीं लगा जितना उसे हवाई श्रड्डे के वायुमण्डल में सांस लेने, चहल-पहल, इंजनों की श्रनवरत घड़घड़ाहट, सिगनल राकेटों की मंद धप की श्रावाज़ों श्रौर पेट्रोल तथा तेल की गंध को श्रात्मसात करने में श्रानन्द श्राया। उसका रोम-रोम पुलक रहा था, श्रौर यह विचार कि कल उसका विमान उसकी श्राज्ञा मानने से इनकार कर सकता है, उसके बस से बाहर हो सकता है, श्रौर भयंकर नियति के मुंह में धकेल सकता है, उसके दिमाग़ में कभी श्राया ही नहीं।

श्रगले दिन सुबह जब वह मैदान में पहुंचा तो वह श्रभी वीरान ही था। लाइनों पर गर्म किये जाते हुए इंजन घड़घड़ा रहे थे, गर्मनिकाने स्टोवों में से ऊंची लपटें उठ रही थीं श्रौर जो मेकेनिक हवाई जहाज के पंखों को थपा रहे थे, वे उनसे इस तरह छिटककर दूर भाग जाते थे मानो वे गर्म हों। गुर्राहटभरी श्राज्ञाएं पुकारी जा रही थीं श्रौर उनके जवाब सुनाई दे रहे थे:

"स्टार्ट के लिए तैयार!"

"कंटैक्ट!"

"कंटेक्ट कर लिया!"

किसी ने अलेक्सेई को कोसा कि इतने सवेरे वह हवाई जहाजों के चारों तरफ, भला, क्यों मंडरा रहा है। उसने एक मजाक से उसका जवाब दिया और एक टेक की तरह ये शब्द दोहराने लगा जो न जाने क्यों उसके दिमाग में समा गये थे: "कंटेक्ट कर लिया, कंटेक्ट कर लिया।" आखिरकार हवाई जहाज धीरे-धीरे स्टार्ट होने की लाइन की तरफ फुदकते और भौंडे ढंग से अगल-बगल लुढ़कते हुए चल दिये, उनके पंख कांप रहे थे जिन्हें मेकेनिक लोग संभाले हुए थे। उस समय तक नाऊमोव आ पहुंचा—सिगरेट का टुकड़ा पीते हुए, जो इतना छोटा था कि वह निकोटीन से रंगी उंगलियों से धुआं खींचता प्रतीत होता था।

"अच्छा तो तुम आ गये।" अलेक्सेई के बाजाब्ता सेल्यूट का जवाब न देते हुए उसने कहा, "ठीक है! पहले आये, सो पहले पाये। उस नम्बर नौ के पिछले कॉकपिट में बैठ जाओ। मैं वहां एक मिनट में आता हूं। हम देखेंगे कि तुम कैसे पंछी हो।"

उसने सिगरेट के "टोंटे" से चंद कश जल्दी से लिये, तब तक अलेक्सेई हवाई जहाज तक भागकर पहुंच गया। शिक्षक के आने से पहले वह अपने पैरों को पैडलों से बांध लेना चाहता था। वैसे शिक्षक शिष्ट व्यक्ति मालूम होता था, लेकिन कौन कह सकता है? उसके दिमाग में यकायक कोई खब्त सवार हो सकता है, वह शोर-गुल करने लग सकता है और दाखिला देने से इनकार कर सकता है। कांपते हाथों से कॉकपिट का बाजू पकड़कर मेरेस्येव बड़ी कठिनाई से फिसलने पंखों पर होकर चढ़ पाया। उत्तेजनावश और अभ्यास की कमी के कारण वह जीतोड़ कोशिश करने पर भी अपनी टांग अंदर नहीं डाल सका, और प्रौढ़ मेकेनिक, जिसका चेहरा लम्बा और उदास था, आश्चर्य से ऊपर देखने लगा और अपने आप से वह उठा: "शैतान पिये हुए है!"

आखिरकार वह अपनी एक जड़ टांग कॉकपिट में रखने में सफल हुआ, और धम कल्पनातीत प्रयत्न के बाद वह दूसरी टांग भी अन्दर ला पाया और धम से सीट पर गिर गया। तस्मों की सहायता से उसने फौरन अपने पैर पैडल से बांध लिये। वे बड़े सुगढ़ साबित हुए, और फंदे उसके पैरों पर मजबूती से और आरामदेह ढंग से फिट बैठे।

शिक्षक ने कॉकपिट में अपना सिर घुसेड़ा और पूछा

"क्यों, तुम पिये तो नहीं हो, बताओ तो? मुझे अपना मुंह सूंघने दो।"

रोएंदार उड़ान-जूतों को बेध दिया और पैरों को बर्फ़ बना दिया। उतरने का वक़्त हो रहा था।

लेकिन हर बार जब वह चोंगे में बोलकर आदेश देता: "उतरने के लिए तैयार हो जाओ!" तो वह अपने शीशे में काली-काली, जलती हुई, शिकायत करती आंखें प्रतिबिम्बित होते देखता। नहीं, वे शिकायत नहीं कर रही थीं, मांग कर रही थीं, और उसको इनकार करने का जी न हुआ। दस मिनट के बजाय वे आधे घंटे तक उड़ते रहे।

कॉकपिट से कूदकर नाऊमोव ने अपने पैर ठोंके और बाहें फड़फड़ाईं। आज की सुबह पाले ने सचमुच पार दिया था! मगर शिक्षार्थी कुछ देर तक कॉकपिट में किसी चीज़ से उलझता रहा, फिर धीरे से उतरा—मा-लूम होता था कि उसका मन नहीं हो रहा था। ज़मीन पर पैर रखते ही, वह अपने होंठों पर प्रसन्नतापूर्ण, सच्ची मादक मुसकान लेकर पंख के पास बैठ गया, उसके कपोल पाले और उत्तेजना से लाल हो रहे थे।

"ठंड है, एह?" शिक्षक ने पूछा, "मेरे उड़ान-जूते तक को चीरकर उसने जकड़ लिया, मगर तुम तो साधारण जूते पहने हो। तुम्हारे पैर नहीं जमे?"

"मेरे पैर हैं ही नहीं," शिक्षार्थी ने जवाब दिया और अपने विचारों में लीन मुसकराता रहा।

"क्या?" नाऊमोव हकलाया और उसका जबड़ा विस्मय से लटक गया।

"मेरे पैर नहीं हैं," मेरेस्येव ने स्पष्ट शब्दों में कहा।

"क्या मतलब है तुम्हारा, 'तुम्हारे पैर नहीं हैं'? मतलब उनमें कुछ ख़राबी है क्या?"

"नहीं! मेरे पैर बिल्कुल ही नदारद हैं। ये कृत्रिम पैर हैं।"

एक क्षण नाऊमोव आश्चर्य से ज़मीन में गड़ा रह गया। उस विचित्र व्यक्ति ने जो बात कही थी, वह बिल्कुल अविश्वसनीय थी। पैर ही नहीं! लेकिन अभी तो वह उड़ान कर रहा था और बड़ी खूबी से...

"मुझे दिखाओ तो," उसने कहा और उसके स्वर में शंका की ध्वनि थी।

इस जिज्ञासा से अलेक्सेई न तो परेशान हुआ और न उसने ठेस महसूस की। इसके विपरीत वह इस विचित्र, प्रसन्नचित्त व्यक्ति के विस्मय को ... में सम्पन्न करना चाहता था। उसने इस नाटक-भंगिमा से, जैसे

जादूगर कोई जादू दिखानेवाला हो, अपने पतलून के पायंचे उठा दिए।

शिक्षार्थी चमड़े और अलुमीनम से बने पैरों पर खड़ा था और शिक्षक मेवेनिक तथा उन विमान-चालकों की ओर आनन्दपूर्वक ताक रहा था जो अपनी बारी आने पर उड़ान के लिए जाने की प्रतीक्षा कर रहे थे।

एक कौंध में नाऊमोव को इस व्यक्ति की उत्तेजना का, उसके चेहरे की असाधारण भाव-भंगिमा का, उसकी काली आंखों में आंसू भर आने का और उस आतुरता का कारण समझ में आ गया जिससे वह अपनी उड़ान के आनन्द की घड़ियों को लम्बा करने का अनुरोध कर रहा था। निश्चय ही इस शिक्षार्थी ने उसे विस्मय में डाल दिया। वह उसकी तरफ दौड़ पड़ा और पागलों की भांति उसका हाथ झटकते हुए बोला:

"अरे भाई, कैसे किया वह सब? तुम नहीं जानते, तुम बिल्कुल नहीं जानते कि तुम किस तरह के व्यक्ति हो!"

मुख्य सफलता मिल गयी थी। अलेक्सेई ने शिक्षक का हृदय जीत लिया था। वे शाम को फिर मिले और उन्होंने प्रशिक्षण का कार्यक्रम तैयार किया। वे सहमत थे कि अलेक्सेई की स्थिति कठिन है। अगर वह थोड़ी-सी भी भूल करेगा तो उसके लिए उड़ान पर सदा को पाबन्दी लग जाने का खतरा है और यद्यपि लड़ाकू विमान में प्रवेश कर पाने और उस जगह उड़ जाने की आकांक्षा पहले से भी अधिक प्रबल रूप में प्रज्वलित हो उठी थी जहां – वोल्गा पर स्थित प्रसिद्ध नगर में – देश के सर्वोत्तम योद्धा उमड़े चले आ रहे थे, फिर भी उसने धैर्यपूर्वक सर्वतोमुखी प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए सहमति प्रगट की। वह समझता था कि आज उसकी जो स्थिति है, उसमें उसे पूछने का कोई हक़ नहीं है।

६

मेरेस्येव प्रशिक्षण विद्यालय में कोई पांच महीने से अधिक रहा। हवाई अड्डा बर्फ से ढंका हुआ था और हवाई जहाजों को स्कीइयों पर रख दिया गया था। ऊपर 'क्षेत्र' से अलेक्सेई को अब शरद के विविध निर्मल रंग नहीं, सिर्फ़ दो रंग दिखाई देते थे: सफ़ेद और काला। स्तालिनग्राद में जर्मनों के सफाये, जर्मन छठी फ़ौज के पतन और फ़ील्डमार्शल पाउलस के बंदी बनाये जाने की सनसनीखेज खबरें अब अतीत की बातें हो गयी थीं।

दक्षिण में अब अभूतपूर्व और अप्रतिरोध्यशील प्रत्याक्रमण विकसित हो रहा था। जनरल रोतमिस्त्रोव के टैंक जर्मन मोर्चा बेध चुके थे और पृष्ठप्रदेश में मृत्यु-वर्षा कर रहे थे। ऐसे समय में, जब मोर्चे पर इस तरह की घटनायें हो रही थीं, और जब मोर्चे के ऊपर आसमान में ऐसा भयंकर संग्राम छिड़ा हुआ था, अलेक्सेई को अस्पताल के गलियारे में एक छोर से दूसरे छोर तक दिन प्रतिदिन अनगिनत बार चहलकदमी करते घूमने; या अपनी सूजी हुई, दर्द की पीड़ा से फटती-सी टांगों से नृत्य की अपेक्षा इन नन्हें से प्रशिक्षण हवाई जहाज़ों में सावधानीपूर्वक "चरचराहट" करते उड़न बड़ा दुखदायी मालूम होता था।

लेकिन जब वह अस्पताल में था, तब उसने प्रण किया था कि लड़ाकू कमान में सक्रिय युद्ध के मोर्चे पर लौट कर रहेगा। उसने अपने लिए एक लक्ष्य बना लिया था और वह तमाम दुख, दर्द, थकान और निराशाओं के बावजूद उस लक्ष्य की ओर बढ़ने का प्रयत्न कर रहा था। एक दिन उसके नये पते पर एक मोटा-सा लिफाफा आया, जिसे क्लावदिया मिखाइलोव्ना ने यहां भेजा था। इसके अन्दर कुछ पत्र और एक पत्र स्वयं क्लावदिया मिखाइलोव्ना का था जिसमें पूछा गया था कि उसका हाल-चाल क्या है, उसे कहां तक सफलता मिली है और उसका सपना सच हो गया या नहीं।

"हो गया?" उसने अपने से पूछा, लेकिन उसका उत्तर दिये बिना वह चिट्ठियां छांटने लगा। कई पत्र थे: एक मां का, दूसरा ओल्गा का, तीसरा ग्वोज्देव का और चौथे पत्र को देखकर उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। उसपर पता "मौसमी सार्जेन्ट" की लिखावट में लिखा हुआ था और उसके नीचे आलेख था: "प्रेषक: कप्तान क. कुकूश्किन।" इसे उसने पहले पढ़ा।

कुकूश्किन ने लिखा था कि वह फिर धराशायी हो गया है: उसका हवाई जहाज गोली का शिकार हुआ और आग पकड़ गया। जलते हुए हवाई जहाज से वह कूदा और अपनी पांतों के अन्दर उतरने में कामयाब हो गया, लेकिन इसमें उसकी बांह उतर गयी और अब वह अपने हवाई अड्डे के दवादारू केन्द्र में पड़ा था जहां वह, उसके अपने शब्दों में, "दुश्मन को मात देनेवाले बहादुरों के बीच ऊब का शिकार होकर मरा जा रहा है।" फिर भी उसे कोई चिन्ता नहीं थी, क्योंकि उसे विश्वास था कि वह शीघ्र ही युद्ध-पांत में फिर शामिल हो जायेगा। उसने आगे लिखा था कि वह

यह पत्र उसकी—अलेक्सेई की—पत्रव्यवहारिका वेरा गलीलोवा से मिला रहा है, जो उसकी ही बदौलत आज भी रेजीमेंट में "मौसमी सार्जेन्ट" कहलाती है। पत्र में यह भी लिखा था कि वेरा बहुत बढ़िया कामरेड है और इस दुर्भाग्यपूर्ण क्षण में वही मुख्य सहारा है। इसपर वेरा ने अपनी ओर से कोष्टक में टीका कर दी थी कि वास्तव में यह कोल्या की अतिशयोक्ति है। इस पत्र से अलेक्सेई को पता चला कि रेजीमेंट में अभी भी लोग उसे याद करते हैं, और भोजन-कक्ष में रेजीमेंट के जिन वीरों के चित्र टंगे हुए हैं, उनमें अलेक्सेई का चित्र जोड़ दिया गया है और गार्ड-सैनिकों ने यह आशा नहीं छोड़ी है कि वह एक दिन फिर उनके बीच लौट आयेगा। शाबाश! मेरेस्येव हंसा और फिर हिल उठा। कुकुश्किन और उसकी स्वयंसेविका सेक्रेटरी दोनों ही, मगर रेजीमेंट को गार्ड-सेना का सम्मान प्रदान किये जाने जैसी महत्त्वपूर्ण घटना की सूचना देना भूल गये हैं, तो उनके दिमाग किसी महत्त्वपूर्ण बात में लीन हैं।

फिर अलेक्सेई ने मां का पत्र खोला। वह उस तरह का बकवादी ढंग का पत्र था जैसा कि बूढ़ी माएं लिखा करती हैं—कामकाज कैसा चल रहा है, उसे ठंड तो नहीं लग गयी, क्या भोजन काफ़ी मिल रहा है, क्या उसे गर्म कपड़े प्राप्त हुए हैं और क्या उसके लिए वह दस्तानों का जोड़ा बुनकर भेज दे? वह पांच जोड़े पहले ही बुन चुकी थी और उन्हें लाल सेना के सिपाहियों को उपहारस्वरूप भेज चुकी थी। और हर जोड़े के अंगूठे में उसने एक पंक्ति में लिख दिया था: "इन्हें पहनने के लिए मैं तुम्हारी लम्बी उम्र की कामना करती हूं।" उसने लिखा था कि उसे यह जानकर खुशी होगी कि उन्हीं में से एक जोड़ा अलेक्सेई को मिल गया है! वे बहुत सुन्दर, खूब गर्म दस्ताने थे, जिन्हें उसने अपने खरहों का ऊन काटकर बुना था। हां, वह पहले यह बताना तो भूल ही गयी कि वह अब खरहों के एक पूरे परिवार को—एक नर, एक मादा और सात बच्चों को—पाल रही है। इतनी सब प्यार-भरी, बूढ़ी मांओं जैसी बातों के बाद कहीं जाकर उसने सबसे महत्त्वपूर्ण बात लिखी थी: स्तालिनग्राद से जर्मन भगा दिये गये हैं, वहां वे भारी, बड़ी भारी तादाद में मारे गये थे, और लोग कहते हैं कि उनके बड़े सेनापतियों में से कोई एक बंदी भी बना लिया गया है। और जब वे पूरी तरह भगा दिये गये थे, तब ओल्गा पांच दिन की छुट्टी पर कमीशिन आयी थी। वह उसी के घर ठहरी थी, क्योंकि ओल्गा का मकान एक बम

से गिर गया है। ओल्गा अब सैगर्स की बटालियन में है और लेफ़्टिनेंट हो गयी है। उसे कंधे में घाव लगा था, मगर अब वह अच्छी हो चुकी है और उसे कोई पदक देकर सम्मानित किया गया है—यह पदक क्या था, उसके विषय में, सचमुच, बुढ़िया लिखना ही भूल गयी थी। उसने आगे लिखा था कि उसके घर में रहने समय ओल्गा सारे समय सोती रहती थी और जब जागती तो अलेक्सेई की ही बातें करती; और वे लोग ताश के पत्तों से किस्मत बताते थे तो हर बार चिड़ी के बादशाह के ऊपर पान की बेगम आती थी। उसका क्या मतलब है अलेक्सेई जानता था! जहां तक मां का सम्बन्ध है उसने लिखा था कि वह उस "पान की बेगम" से बेहतर बहू की कामना नहीं कर सकती।

अलेक्सेई बूढ़ी मां की निश्छल कूटनीति पर मुसकराया और सावधानी से वह दूसरा लिफ़ाफ़ा खोला जिसमें "पान की बेगम" का पत्र था। वह कोई लम्बा पत्र नहीं था। ओल्गा ने लिखा था कि 'खाइयां' खोदने के बाद उस श्रम-बटालियन के सर्वोत्तम सदस्यों को नियमित फ़ौज की सैपर यूनिट में ले लिया गया। उसका पद अब लेफ़्टीनेंट-टेक्नीशियन है। उसकी ही यूनिट थी जिसने शत्रु की गोलाबारी के वक़्त ममायेव कुरगान की क़िलेबन्दी बनायी थी, जो अब इतनी प्रसिद्ध हो गयी है, और ट्रैक्टर कारख़ाने के चारों ओर भी क़िलेबन्दी खड़ी की थी, इसके लिए उस यूनिट को "लाल झण्डे का पदक" प्राप्त हुआ है। ओल्गा ने लिखा था कि उन्हें बड़े कठिन काम का सामना करना पड़ रहा था, और हर चीज़—डिब्बाबन्द गोश्त से लेकर फावड़े तक वोल्गा की दूसरी ओर से लानी पड़ती थी, जहां मशीनगनों की बौछार बराबर होती रहती थी। उसने यह भी लिखा था कि नगर में एक भी इमारत सही-सलामत नहीं बची और धरती में गड्ढे पड़ गये हैं और वे चांद के विशालाकार फ़ोटो जैसे दिखाई देते हैं।

ओल्गा ने लिखा था कि जब उसने अस्पताल छोड़ा और उसे अन्य लोगों के साथ एक कार में स्तालिनग्राद के बीच से ले जाया गया तो उसने फ़ासिस्टों की लाशों के अम्बार लगे देखे, जिन्हें गाड़ने के लिए जमा किया गया था। और अभी कितनी और लाशें सड़कों पर पड़ी हैं। "और मैं कितनी चाह करने लगी कि काश, तुम्हारा वह टैंकची दोस्त—उसका मैं नाम भूल गयी हूं, वही जिसका सारा परिवार मारा जा चुका है—यहां आ पाता और यह सब अपनी आंखों देखता। अपनी सौगंध, मेरा ख़्याल है कि इस सबकी फ़िल्म बनायी जानी चाहिए और उस जैसे लोगों को

दिखाई जानी चाहिए। वे लोग देखें कि शत्रु से हमने कैसा बदला लिया है!" अंत में उसने लिखा था — अलेक्सेई ने इस दुर्बोध्य वाक्य को कई बार पढ़ा — कि अब, स्तालिनग्राद के युद्ध के बाद वह महसूस करने लगी है कि वह अलेक्सेई के — वीरों के वीर के — योग्य हो गयी है। यह पत्र जल्दी में रेलवे स्टेशन पर लिखा गया था, जहां उसकी ट्रेन रुकी थी। ग्रोल्या को पता नहीं था कि वे लोग कहां ले जाये जा रहे हैं और इसलिए वह यह सूचित न कर सकी थी कि उसके पोस्ट आफिस का नम्बर क्या है। फलतः जब तक उसका दूसरा पत्र नहीं आया, तब तक अलेक्सेई उसे पत्र नहीं लिख सका और यह नहीं कह सका कि वह नन्ही-सी, दुबली-पतली लड़की, जो घनघोर युद्ध के बीच इतनी लगन से मेहनत करती रही, वही — वह ग्रोल्या स्वयं ही — असली वीरों की वीर है। उसने लिफाफा फिर उलटा और प्रेषक में यह नाम स्पष्ट रूप से पढ़ा: गार्ड जूनियर लेफ्टीनेंट-टेक्नीशियन, आदि आदि।

हर बार, जब अलेक्सेई को हवाई अड्डे पर कोई अवकाश का क्षण मिल जाता तो वह पत्र निकाल लेता और उसे फिर पढ़ता और मैदान की बेधनी हुई सर्द हवा के बीच और अपने हिम-शीतल कमरे में, जो अभी भी उसका निवास-स्थान था, वह पत्र बहुत दिनों तक उसे उष्णता प्रदान करता प्रतीत होता रहा।

अंत में शिक्षक नाऊमोव ने उसकी परीक्षा-उडान के लिए एक दिन निश्चित किया। उसे एक 'उत-२' विमान उड़ाना था और उड़ान का निरीक्षण शिक्षक को नहीं, स्कूल के मुख्याधिकारी द्वारा किया जाना था — उसी मोटे, रक्ताभ चेहरे लेफ्टीनेंट-कर्नल द्वारा, जिसने अलेक्सेई के आगमन के दिन उसका उतनी उदासीनता से स्वागत किया था।

यह बात ध्यान में रखकर कि भूमि से उसको सूक्ष्म दृष्टि से ताका जा रहा है और उसकी किस्मत का फैसला होने जा रहा है, अलेक्सेई ने उस दिन खुद अपने को मात कर दिया। उस छोटे-से हल्के विमान को लेकर उसने ऐसी कलाबाजियां दिखायीं कि लेफ्टीनेंट-कर्नल अपने प्रशंसात्मक उद्गारों को संयमित न रख सका। जब मेरेस्येव हवाई जहाज से उतरा और मुख्याधिकारी के सामने उसने अपने को पेश किया तो नाऊमोव के चेहरे की हर भुर्री से जैसा आनन्द और उत्तेजना का भाव टपकता दिखाई दिया, उसको देखकर वह बता सकता था कि उसने मैदान मार लिया है।

"तुम्हारी शैली बड़ी शानदार है! हां... तुम हो वह व्यक्ति जिसे

कोई नही, और प्रशसा मे भी उसने शब्दो की किफायत नही की। उसने प्रमाणित किया कि मेरेस्येव "कुशल, अनुभवी और सुदृढ़ इच्छा-शक्तिवाला विमान-चालक है और वायुसेना की किसी भी शाखा के लिए उपयुक्त है।"

मेरेस्येव ने शेष शीतकाल और वसत का प्रारम्भिक काल एक सुधार विद्यालय मे बिताया। यह एक बहुत पुराना फौजी उड्डयन विद्यालय था, जिसका हवाई अड्डा बहुत बढ़िया है, रहने के क्वार्टर सुन्दर है और थियेटर-समेत एक शानदार क्लब-भवन है जहा मास्को की थियेट्रिकल कम्पनिया कभी-कभी अपने खेल दिखाती थी। इस स्कूल मे भी बडी भीड़ थी, मगर युद्ध-पूर्व के नियमो का सख्ती से पालन होता था और शिक्षार्थियों को अपनी पोशाक की सूक्ष्म बातों तक के लिए सावधान रहना पड़ता था, क्योकि अगर बूट पर पालिश नही है, अगर कोट का एक भी बटन गायब है, या अगर जल्दी में नक्शे का केस पेटी के ऊपर ही पहन लिया गया, तो अभियुक्त को कमाडेंट के हुक्म से दो घटे की ड्रिल करनी पडती थी।

विमान-चालकों का एक बड़ा दल, जिसमे अलेक्सेई मेरेस्येव भी था, एक नये प्रकार के सोवियत लड़ाकू विमान 'ला–५' को चलाना सीख रहा था। शिक्षण सर्वांग-सम्पन्न था और उसमें विमान के इजन तथा अन्य भागो का अध्ययन भी शामिल था। इस छोटे-से अर्से मे, जिसमे अलेक्सेई फौज से ग़ैरहाजिर रहा, सोवियत उड्डयन कला ने जो प्रगति कर ली, उसके बारे मे जब व्याख्यानों से उसे पता चला तो वह अवाक् रह गया। युद्ध के प्रारम्भिक काल मे जो बड़ा साहसपूर्ण परिवर्तन प्रतीत होता था, वही अब बुरी तरह पुराना पड़ चुका था। वे तीव्रगामी 'ला' और हल्के, ऊंचे उड़नेवाले 'मिग' जो युद्धारम्भ मे श्रेष्ठ वैज्ञानिक कृतित्व प्रतीत होते थे, अब उपयोग से अलग किये जा रहे थे और उनकी जगह पर नयी डिजाइन के हवाई जहाज भेजे जा रहे थे, जिनके निर्माण की पद्धति सोवियत फैक्टरियो ने कल्पनातीत अल्प काल मे सीख ली थी ताज़े से ताज़े नमूने के 'याक' विमान, 'ला-५' हवाई जहाज, जिनका अब फैशन चल गया था और दो सीटोवाले "इल-२ '–'उडन टैंक" जो धरती को भूजकर रख देते थे और शत्रु के सिर पर बमों, गोलो और गोलियों की बौछार करते थे–जर्मन फौजियो ने घबराकर इनका नाम

वह खिन्न-चित्त, खोया हुआ-सा और चिड़चिड़े स्वभाव में विद्यालय में टहलता रहता था।

अलेक्सेई के सौभाग्य से, जिस समय वह विद्यालय में था, उसी समय मेजर स्त्रुच्कोव भी वहां था। वे पुराने मित्रों की भांति मिले। स्त्रुच्कोव वहां अलेक्सेई के आने के दो हफ्ते बाद आया था, मगर वह विद्यालय की शिविर असली जिंदगी में फौरन डूब गया और अपने को उसके अत्यन्त सख्त नियमों के अनुकूल बना लिया जो युद्ध-काल में बिल्कुल निरर्थक मालूम होते थे और हर एक के साथ घुल-मिल गया। अलेक्सेई की मानसिक स्थिति का कारण वह फौरन समझ गया, और रात में अपने-अपने क्वार्टरों में सोने के लिए जाने के पहले स्नानागार से निकलकर वह सीधा अलेक्सेई के पास जाता और पुरमज़ाक ढंग से उसे छेड़ता और कहता.

"दुःख न कर, यार! अपने लिए भी बहुत लड़ाई बाकी रहेगी। देखो तो अभी हम लोग बर्लिन से कितनी दूर हैं! अभी मीलों, मीलों जाना है। फिक्र न करो, हमें भी अपना हिस्सा मिलेगा। हम भी लड़ाई से अपना जी भर सकेंगे।"

पिछले दो-तीन महीनों में, जिनमें वे एक दूसरे को न देख सके थे, मेजर दुबला हो गया था और बन गया था—वह "चूर-चूर" मालूम होता था जैसा कि फौज में कहा जाता है।

जाड़े के मध्य में उस दल ने जिसमें मेरेस्येव और स्त्रुच्कोव रखे गये थे, उड़ान का अभ्यास शुरू किया। इस समय तक अलेक्सेई छोटे-से, नन्हे पखोंवाले 'ला-५' विमान से पूरी तरह परिचित हो गया था, जिसकी शक्ल देखकर उसे उड़न-मछली की याद हो जाती थी। अक्सर, मध्यान्तर काल में वह हवाई अड्डे में जाता और इन विमानों को थोड़ी-सी दौड़ के बाद सीधे आसमान में उठ जाते देखता और जब वे मोड़ लेते तो उनके नीले-से बाजुओं के नीचे के हिस्से को धूप में चमकते निहारता रहता। किसी विमान के पास वह आ जाता, उसकी परीक्षा करता, उसके पंखों को थपथपाता, मानों वह कोई मशीन नहीं, सुन्दर, बढ़िया नस्ल का, भली-भांति खिलाया-पिलाया गया घोड़ा हो। आखिरकार सारे दल को स्टार्ट की रेखा पर पातबन्द कर दिया गया। हर व्यक्ति अपनी कुशलता को परखने के लिए उत्सुक था और उनमें सयमित कलह शुरू हो गया कि पहले कौन जायेगा। शिक्षक ने पहले जिसका नाम पुकारा वह स्त्रुच्कोव था। मेजर की आंखें चमक उठीं, वह जानबूझकर मुसकराया

भाति थी। यही अलेक्सेई को अपनी असाध्य क्षति, अपने पैर की असवेदनशीलता का सबसे जबर्दस्त अहसास हुआ और वह समझ गया कि इस तरह के हवाई जहाज मे सर्वश्रेष्ठ कृत्रिम पैर भी, श्रेष्ठतम प्रशिक्षण के बावजूद, सजीव सवेदनशील लचीले पैरो का स्थान नही ले सकते।

हवाई जहाज बडे सहज भाव मे और लचीली गति से हवा को चीरता बढ़ रहा था और स्टीयरिंग गीयर के प्रत्येक इशारे का पालन कर रहा था, लेकिन अलेक्सेई को उससे डर लग रहा था। उसने गौर किया कि एकदम मोड़ लेते समय उसके पैर देर कर देते थे, और तारतम्य स्थापित नही कर पाते थे जो हर विमान-चालक विचार जैसी गति की भाति साध लेता है। इस देरी से हवाई जहाज़ चक्कर खा सकता है और घातक सिद्ध हो सकता है। अलेक्सेई ने उस घोड़े जैसा महसूस किया, जिसके पैर बधे हुए हो। वह कोई कायर नही था, वह मारे जाने से भी नही डरता था, वह तो यह देखे बिना ही कि उसका पैराशूट ठीक है या नही, उड़ान पर चल दिया था, मगर उसे डर था कि ज़रा-सी गलती से वह लडाकू कमान से बहिष्कृत किया जा सकता है और उसके परमप्रिय पेशे के दरवाजे हमेशा के लिए बद हो सकते हैं। वह और भी सावधान था और बिल्कुल परेशान हालत मे उसने हवाई जहाज उतारा। ऐसा करने मे अपने पैरो की गतिहीनता के कारण वह इतनी बुरी तरह "उछला" कि हवाई जहाज़ बर्फ पर कई बार भौंडे ढग से फुदका।

अलेक्सेई खामोशी के साथ और भौंहें सिकोड़े कॉकपिट से उतरा। उसके साथी और शिक्षक तक ने अपनी उलझन छिपाकर उसकी सराहना की और बधाई दी, मगर इस उदारता से उसे ठेस ही लगी। उसने उन्हें एक तरफ़ हटा दिया और बर्फ पर लुढकती हुई चाल से, अपने पैर घसीटते हुए वह विद्यालय की मटमैली इमारत की तरफ लगडाता चल पडा। लडाकू विमान मे उड़ लेने के बाद अब असफलता। मार्च की उस सुबह के बाद, जब उसका ध्वस्त हवाई जहाज चीड़ों के शिखरो से जा टकराया था, वह पहली बार आज इस दुर्भाग्य का शिकार हुआ। उसने दोपहर का भोजन नही किया और रात को भी भोजन करने न गया। विद्यालय के नियमो का उल्लघन करके, जिनके अनुसार दिन मे शिक्षार्थी के शयनागार मे रहने पर सख्त पाबन्दी थी, वह चारपाई पर जूते समेत पैर रखे और अपने सिर के नीचे हाथ रखे पड़ा हुआ था, और जो लोग भी उसकी वेदना से परिचित थे—वहा से गुजरनेवाले अर्दली से लेकर अफसर तक, किसी ने

वे धुंधले प्रकाश से आलोकित गलियारे में बाहर चले गये—ब्लैक आ-उट के लिए बिजली के बल्ब नीले रंग दिये गये थे—और खिड़की के पास खड़े हो गये। कपूस्तिन ने पाइप से धुम्रा छोड़ना शुरू कर दिया और हर कश से उसका चौड़ा, चिन्तनलीन मुखड़ा एक चमक से आलोकित हो उठता था।

"मैं तुम्हारे शिक्षक को आज डाट पिलाना चाहता था," उसने कहा।

"किस वास्ते?"

"कि उसने अपने ऊंचे अफसरों से इजाजत लिये बिना तुम्हें आकाश क्षेत्र में क्यों जाने दिया... तुम इस तरह मेरी तरफ क्यों घूर रहे हो? दरअसल, डाट का हकदार तो मैं खुद भी हूं कि मैंने तुमसे पहले बात क्यों न कर ली। लेकिन मुझे कभी वक्त ही नहीं मिलता, हमेशा व्यस्त रहना पड़ता है। मैं चाहता हूं, लेकिन... खैर, उसे जाने दो। देखो, मेरेस्येव, उड़ान करना तुम्हारे लिए इतना आसान नहीं है, और यही वजह है कि मैं तुम्हारे शिक्षक की खबर लेना चाहता हूं।"

अलेक्सेई ने कुछ न कहा। वह हैरान था कि उसके सामने खड़ा हुआ जो आदमी कश पर कश लगाये चला जा रहा है, वह कैसा व्यक्ति है। क्या नौकरशाह है, जो इसलिए खफा है कि किसी ने विद्यालय के जीवन में एक असाधारण घटना के घटने की खबर उसको न देकर उसकी सत्ता की उपेक्षा की है? कोई तंगदिल अफसर है जिसे उड़ानकर्ताओं के बारे में कोई ऐसा नियम हाथ लग गया है जिसमें शारीरिक रूप से पंगु व्यक्ति-यों को उड़ान पर भेजने के बारे में पाबन्दी लगायी गयी है? या झक्की आदमी है जो मौका लगते ही अपने अधिकार का प्रदर्शन करना चाहता है? यह क्या चाहता है? यह आया ही क्यों, जबकि उसके बिना भी मेरेस्येव के दिल में मतली भर गयी और फांसी लगा लेने को जी हो रहा था।

मेरेस्येव का सारा अस्तित्व जैसे आग में पड़ा था। बड़ी कठिनाई से ही वह अपने पर काबू रख पाया। महीनों की यंत्रणा ने उसे जल्दबाजी में कोई नतीजा न निकालना सिखा दिया था और इस भद्दे कपूस्तिन में भी कोई ऐसी बात थी जो कमिसार वोरोब्योव की हल्की-सी याद दिला जाती थी जिसे मन में अलेक्सेई असली इनसान पुकारा करता था। कपू-स्तिन के पाइप की आग दमक उठती और बुझ जाती और उसकी चौड़ी, मांसल नाक और धतुर तथा पैनी आंखें नीले अंधेरे में कभी उभर उठतीं और कभी गायब हो जातीं। कपूस्तिन आगे कहता गया·

"सुनो मेरेस्येव, मैं तुम्हारी तारीफ नहीं करना चाहता, मगर हो तुम कुछ भी, दुनिया मे एक तुम्ही पैरहीन आदमी हो जो लड़ाकू विमान को सभाल रहे हो। एकमात्र!" उसने अपने पाइप की नली खोद डाली और उलझन के भाव से सिर हिलाया, "युद्धरत सेना मे वापस लौट जाने की तुम्हारी आकांक्षा के बारे में कुछ नहीं कहना। वह सचमुच प्रशंसनीय है, लेकिन उसमें कोई खास बात भी नहीं है। ऐसे जमाने में जीत हासिल करने के लिए हर आदमी अपनी शक्ति भर काम करना चाहता है . इस सड़ियल पाइप को हो क्या गया है?"

वह नली को साफ करने मे फिर लग गया और उस काम में बिल्कुल लीन-सा लगने लगा; लेकिन एक अस्पष्ट आशंका से घबराया हुआ अलेक्सेई अब तनाव महसूस कर रहा था—यह सुनने को उत्सुक था कि वह क्या कहने जा रहा है। अपने पाइप से उलझना जारी रखते हुए कुर्चिन बोलता ही चला गया—ऊपर से यही मालूम होता था कि उसके शब्दों का क्या प्रभाव पड़ रहा है, इसकी उसे परवाह नहीं थी:

"यह सिर्फ सीनियर लेफ्टीनेंट अलेक्सेई मेरेस्येव का व्यक्तिगत मामला नहीं है। मूल बात यह है कि तुम जैसे पैरहीन व्यक्ति ने एक ऐसी चीज हासिल कर ली जिसके विषय में अब तक सारी दुनिया यह मानती थी कि सिर्फ शारीरिक रूप से सर्वांग सम्पन्न व्यक्ति द्वारा ही वह सिद्ध हो सकती है और वह भी सौ मे एक आदमी द्वारा। तुम सिर्फ नागरिक मेरेस्येव नहीं हो, तुम महान प्रयोगकर्त्ता हो . आह!.. मैंने इसे ठीक कर ही लिया आखिर! इसमें कोई चीज अड़ गयी होगी!.. और इसलिए मैं कहता हूं, हम तुम्हारे साथ साधारण विमान-चालक जैसा व्यवहार नहीं कर सकते, हमें कोई हक नहीं है—समझते हो, कोई हक नहीं है। तुमने एक महत्त्वपूर्ण प्रयोग शुरू किया है, और यह हमारा कर्तव्य है कि हम जिस तरह भी हो सके, हर तरह तुम्हारी सहायता करें। लेकिन किस तरह? यह तुम्हें बताना चाहिए। बताओ, तुम्हारी मदद हम कैसे कर सकते हैं?"

कुर्चिन ने फिर पाइप भर लिया, उसे फिर जलाया और फिर कभी प्रखर होती और कभी मन्द होती हुई लाल-लाल चमक उसके चौड़े चेहरे और मांसल नाक को प्रकाश में उभार देती और फिर लुप्त कर देती।

उसने वायदा किया कि विद्यालय के प्रधान के साथ बात करके वह मेरेस्येव के लिए कुछ अतिरिक्त उड़ानों की व्यवस्था करा देगा और अलेक्सेई

बहुत दिनो पहले, बचपन मे, अलेक्सेई शुरू-शुरू की चिकनी, पारदर्शक बर्फ़ पर, जो वोल्गा मे उस जगह जहा वह रहता था, छोटी-सी खाडी मे जम जाती थी, स्केटिंग की कला सीखने निकला था। वास्तव मे स्केटिंग के विशेष जूते उसके पास न थे; उसकी मा उनको खरीदने की हैसियत में न थी। लुहार ने, जिसके यहा मा कपडे धोया करती थी, उसकी प्रार्थना पर लकडी के छोटे-से लट्टू बना दिये थे जिन मे मोटे तार की पटरिया थी और बगल मे छेद थे।

डोरों और लकड़ी की छोटी-छोटी छडियो की मदद से मेरेस्येव ने इन लट्टूओ को अपने पुराने, थिगडेदार नमदे के जूतो मे लगा दिया था। इनके बल पर वह नदी की पतली-सी, लचकदार, सुरीले स्वर मे चरमरानेवाली बर्फ़ पर स्केटिंग करने चल पडा था। कमीशिन के अडोस-पडोस के सभी छोकरे आनन्द से चीखते-चिल्लाते, नन्हें शैतानो की भाति झपट्टा मारते, एक दूसरे के पीछे दौडते और अपने वर्फ़ के जूतो के बल कुदक्ते और नाचते इधर-उधर फिसल रहे थे। उनकी चुहल मजेदार लग रही थी, मगर जैसे ही अलेक्सेई ने बर्फ़ पर पैर रखा, वह उसके पैरो तले से खिसक्ती जान पड़ी और वह पीठ के बल बुरी तरह गिर पडा।

वह फौरन उछलकर खडा हो गया, इस भय से कि कही उसके साथी यह न समझ लें कि उसने अपने को चोट पहुचा ली है। उसने फिर चलने का प्रयत्न किया और पीठ के बल गिरने से बचने के लिए अपने शरीर को आगे झुकाया, मगर इस बार वह नाक के बल गिर पडा। वह फिर उछलकर खड़ा हो गया और अपने कापते हुए पैरो पर क्षण भर खड़े रहकर यह समझने का प्रयत्न करने लगा कि उसे क्या हो गया है और दूसरे लडको को देखने लगा कि वे कैसे फिसल रहे हैं। वह समझ गया कि उसे अपना शरीर न तो बहुत आगे झुकाना चाहिए और न बहुत पीछे। अपने शरीर को सीधे ताने रखने का प्रयत्न करते हुए उसने अगल-बगल कई क़दम रखे और फिर बगल की तरफ लुढक गया, और इस प्रकार वह गिरा और उठा और फिर गिरा और फिर उठा—यहा तक कि साझ हो गयी। मा परेशानी मे पड गयी जब वह ऊपर से नीचे तक बर्फ़ से सना हुआ लौटा और थकान के कारण उसके पैर काप रहे थे।

लेकिन अगले दिन वह फिर बर्फ़ पर पहुच गया। वह अब पहले से

अधिक [illegible] के साथ चल रहा था, [illegible]
और [illegible] तक [illegible] कोशिश भी कर लिया था, लेकिन सब
कोशिश करने पर वह और अधिक [illegible]
पर मात नहीं खा रहा।

लेकिन एक दिन — और अलेक्सेई उस दिन को [illegible] नहीं
भूल सका — जब [illegible] पर हर [illegible] का [illegible] रही थी — उसने ऐसे कदम रखा कि वह स्वयं अधिक [illegible] गया। वह अधिकाधिक तेजी के साथ और हर चक्कर के बाद और अधिक विश्वास के साथ बराबर [illegible] रहा। हर बार गिरने और चोट खाने और बार-बार फिर प्रयत्न करने के साथ उसने धीरे-धीरे [illegible] दिया था, जो छोटी-छोटी सफलताएँ और चालें हासिल की थीं, वे अचानक घुल-मिलकर एक रूप में ढल गयीं और अब जब वह अपनी टांगें और पैरों को गतिशील करता, तो वह महसूस करता कि उसका सारा शरीर, उसका सम्पूर्ण स्नायु-जाल, दिलोदिमाग, सभी [illegible] प्रफुल्लित और आनन्ददायक आत्म-विश्वास की भावना से पूरित हो रहा है।

यही बात अब उसके साथ हो रही थी। वह वायुयान में अपने अस्तित्व को फिर एक करने का प्रयत्न करते हुए और अपने कृत्रिम पैरों के चमड़े और धातु के माध्यम से उसका स्पन्दन अनुभव करते हुए बड़े उद्यम के साथ अनेक बार उड़ा। कई बार उसे लगा कि वह सफल हो रहा है और इससे उसका उत्साह अत्यधिक बढ़ा। उसने एक कलाबाजी खाने की कोशिश की, मगर फौरन महसूस कर लिया कि उसकी चेष्टाओं में विश्वास का अभाव है, हवाई जहाज हिचकता और हाथ से निकलने के लिए तड़पता-सा मालूम होता है। अपनी आशाओं को विलीन होते देखकर उसने अपना नीरस प्रशिक्षण कार्यक्रम फिर चालू कर दिया।

एक दिन मार्च में, जब बर्फ़ पिघलने लगी थी, उस सुबह हवाई अड्डे की जमीन यकायक स्याह हो गयी थी और भुरभुरीदार बर्फ़ इतनी सख्त गयी थी कि हवाई जहाज उसपर गहरी जुताई जैसी लकीरें छोड़ देते थे, अलेक्सेई अपना लड़ाकू विमान लेकर हवा में उड़ा। जब वह ऊपर उठ रहा था, तो बगल से हवा का एक झोंका उसे अपनी राह से भटकाने लगा और विमान का ठीक दिशा में रखने के लिए उसे सोधा करते रहने के लिए विवश होना पड़ा। विमान को अपनी राह पर लाने के लिए प्रयत्न करने में उसे यकायक महसूस हुआ कि वह उसकी आज्ञा का पालन

कर रहा है और यह तथ्य वह अपने रोम-रोम से महसूस कर रहा था। यह भावना बिजली की कौंध की भांति जागृत हुई और शुरू में तो उसे विश्वास ही न होता था। वह इतनी निराशा भुगत चुका था कि अपने सौभाग्य पर यकायक विश्वास करना कठिन था।

उसने वायुयान तेजी से और एकदम दायीं तरफ घुमा दिया, मशीन आज्ञाकारी और नियमबद्ध बन गयी थी। उसने वही भावना अनुभव की जो उसने बचपन में वोल्गा की छोटी खाड़ी में स्याह और फुसफुसी बर्फ पर की थी। मनहूस दिन यकायक उज्ज्वल प्रतीत होने लगा। उसका दिल खुशी से उछलने लगा, और भावावेगवश उसने गले में हल्की-सी गद्गद संवेदना अनुभव की।

किसी अदृश्य सीमा पर उसके प्रशिक्षण के अनवरत प्रयत्नों की परीक्षा हो गयी थी। वह सीमा उसने पार कर ली थी और अब वह कठिन श्रम के अनगिनत दिनों के फल की मधुरता सहज भाव से, बिना किसी पीड़ा के चख रहा था। उसने अब यह मुख्य वस्तु प्राप्त कर ली जिसके लिए वह बहुत दिनों से प्रयत्न कर रहा था: वह अपने वायुयान से एकात्म हो गया था, उसे अपने शरीर के अंग की भांति ही अनुभव करने लगा था। इसमें जड़, निस्पंद पैर भी अब बाधक न रह गये थे। उसको आनन्द की हिलोरें जिस प्रकार झकझोर रही थीं, उससे विभोर होकर उसने कई बार गहरे मोड़ लिये, एक फंदा बनाया और इसे मुश्किल से पूरा ही किया था कि विमान को स्पिन करने लगा। सीटी के स्वर के साथ धरती घूमने लगी, और हवाई अड्डा, विद्यालय भवन, अपने धारीदार फूले हुए थैलों समेत मौसम सर्वेक्षण केन्द्र की मीनारें, सभी अटूट वृत्त में लीन हो गयीं। बड़े विश्वास से उसने वायुयान को स्पिन से निकाला और सहज गति से फिर फंदा बनाया। अब जाकर उस सुप्रसिद्ध 'ला-५' विमान ने अपने सारे विदित और अविदित गुणों का उसके सामने उद्घाटन किया। अनुभवी हाथों में यह विमान कैसे करिश्मे दिखाता है! स्टीयरिंग गीयर के हर इशारे का वह संवेदनशीलता के साथ पालन करता है, सबसे बारीक कलाबाजी को भी वह बड़े सहज भाव से कर दिखाता है, और राकेट की भांति ऊपर उठ जाता है, द्रुतगामी और चपल।

मेरेस्येव कॉकपिट में से उतरा तो लड़खड़ाता हुआ, मानो वह नशे में धुत्त हो। उसके चेहरे पर मूर्खतापूर्ण मुसकान फैली हुई थी। उसने क्रुद्ध प्रशिक्षक को नहीं देखा, न उसकी कुपित झिड़कियां सुनीं। बकने-

सकने दो उसे! गार्डरूम? ठीक है, वह गार्डरूम की सजा भुगतने के लिए भी तैयार है। अब उससे क्या फर्क पड़ता है? एक बात साफ थी: वह एक विमान-चालक है, अच्छा विमान-चालक। अमूल्य पेट्रोल की जो अतिरिक्त मात्रा उसके प्रशिक्षण में व्यय हुई है, वह बरबाद नहीं हुई। वह इस खर्चे की भी पूरी भरपाई कर देगा, अगर वे उसे शीघ्र ही मोर्चे पर जाने दें और युद्ध में जूझ जाने दें।

उसके क्वार्टर में एक और खुशी उसकी प्रतीक्षा कर रही थी: उसके तकिये पर ग्वोज्देव का पत्र पड़ा था। अपनी मंजिल पर पहुँचने के पहले यह पत्र कहाँ-कहाँ, कितने दिनों और किसकी जेब में भटकता रहा था यह कहना कठिन था, क्योंकि लिफाफे पर तहें पड़ी थीं, गन्दी मिट्टी थी और तेल के धब्बे पड़े थे। वह एक साफ लिफाफे में बंद था जिस पर अन्यूता की लिखावट में पता लिखा था।

टैंकची ने अलेक्सेई को सूचित किया था कि उसके साथ एक नयी घटना घट गयी थी। उसके सिर में चोट लग गयी थी—और वह भी कैसे? एक जर्मन जहाज के पंख से। अब वह अपने दस्ते के अस्पताल में है हालांकि एक दो दिन में ही मुक्त होने की आशा कर रहा है। और यह कल्पनातीत घटना इस प्रकार घटी: स्तालिनग्राद में छठी जर्मन फ़ौज के कट जाने और घिर जाने के बाद उस टैंक दस्ते ने, जिसमें ग्वोज्देव था, पीछे हटते हुए जर्मनों का मोर्चा बेध दिया और सारे दस्ते ने इस दरार से घुसकर स्तेपी प्रदेश में शत्रु के मोर्चे के पिछले भाग पर हमला कर दिया। इस हमले में टैंक बटालियन की कमान ग्वोज्देव के हाथ में थी।

बड़ा प्यारा हमला था। इस इस्पाती बेड़े ने जर्मनों के पृष्ठ प्रदेशीय प्रशासन पर, क़िलेबन्द गांवों और रेलवे जंक्शनों पर हमला किया और उनपर इस तरह टूट पड़ा जैसे आसमान से बिजली। टैंकों ने सड़कों पर हमला बोल दिया और रास्ते में जो भी शत्रु आया, उसे गोली से उड़ाते और कुचलते हुए तहलका मचा दिया और जब जर्मन रक्षक सेना के शेष लोग भी भाग गये तो टैंक-चालकों ने और पैदल सेना के लोगों ने, जिन्हें वे अपने साथ लिये फिरते थे, शस्त्र-भण्डारों और पुलों को उड़ा दिया, रेलवे पटरियों और इंजन घुमाने के पाटों को उखाड़ दिया और इस प्रकार वे पीछे हटते हुए जर्मनों की ट्रेनों का रास्ता बंद कर रहे थे। क़ब्ज़े में आये शत्रु के भण्डारों से वे टैंकों के लिए पेट्रोल और रसद आदि हासिल कर लेते, और इसके पहले कि जर्मन अपने होश दुरुस्त कर सकें

और शोरगोल करने के लिए जैसा कुछ बने या कम-से-कम गड़बड़ा जाना करें कि वे ठीक उस दिशा में जायेंगे, ठीक ग्लूखारेव हो जायें।

"हमने, दोस्तोई, बुदोन्नी के घुड़सवारों की भांति गोली से आर-पार हमले किये। और हमने जर्मनों को हवा कर दिया। तुम विश्वास न करोगे, मगर कभी-कभी हम सिर्फ तीन टैंकों और कारों में भरी हुई एक जर्मन बख्तरबंद गाड़ी लेकर पूरे गांव और अच्छे केन्द्रों पर अधि-कार कर लेते थे। युद्ध में घबराहट बड़ी भारी चीज होती है। हमलावर सेना के लिए शत्रु की पांत में भारी घबराहट फैलाना तो गुरिल्ला डिवी-जनों से अधिक उपयोगी सिद्ध होता है। सिर्फ यह कि उसे होशियारी से बनाये रखना चाहिए, शराब की आग की भांति, इस आग में नये-नये उत्साहित दस्तों के रूप में ईंधन बराबर डालते रहना चाहिए ताकि वह बुझ न सके। ऐसा जान पड़ा कि हमने जर्मन कवच बेध दिया है और देखा कि उसके नीचे शराब-भरे पेट के अलावा और कुछ नहीं है। हम उनके बीच इतनी आसानी से घुसपैठ करते रहे जैसे पनीर काट रहे हों।

"... और मेरे साथ यह बेवकूफी की घटना इस तरह घटी। कमांडर ने हम सबको बुलाया और कहा कि एक सन्ती विमान ने यह संदेश गिराया है कि फलां-फलां जगह पर बड़ा भारी हवाई अड्डा है लगभग तीन सौ जहाज और पेट्रोल, रसद आदि है। उसने अपनी नुकीली नाक मूछें घुम-मायीं और कहा, 'ल्योनेंका, उस हवाई अड्डे पर आज रात ही धावा बोलो! एक बार भी गोली चलाये बिना वहां इन नामोंशी के साथ, बढ़ि-या ढंग से चढ़ जाओ, मानो तुम जर्मन हो, और जब काफ़ी नज़दीक पहुंच जाओ तो उतरकर हल्ला बोल दो, अपनी सारी तोपों के मुंह खोल दो, और इसके पहले कि वे यह समझ पायें कि वहां हम आ गये हैं, सब कुछ उलट-पलट दो और यह ध्यान रखना कि एक भी हरामज़ादा बचने न पाये।' यह काम मेरे लोगों को और एक दूसरे बटालियन को सौंपा गया जिसे मेरी कमान में रख दिया गया। बाकी सेना ने अपना अभियान येल्न्या की तरफ़ जारी रखा।

"और हम लोग उस हवाई अड्डे में इस तरह घुस गये जैसे मुर्गी के दरबे में लोमड़ी। तुम विश्वास न करोगे, यार, लेकिन हम खुली सड़क पर खड़े हुए जर्मन यातायात नियामक तक पहुंच गये। हमें किसी ने न रोका—वह धुंध-भरी सुबह थी और वे लोग कुछ नहीं देख पाये, वे सिर्फ इंजनों की आवाज़ और पट्टों की खड़खड़ाहट ही सुन पाये। उन्होंने समझा

चतुर्थ खण्ड

१

१९४३ के अन्त ग्रीष्म काल में एक दिन एक ढचरा-सा पुराना मोटर-ट्रक उस सड़क पर दौड़ता चला जा रहा था जो अभी हाल में खड़े हुए राई के खेतों के बीच, लाल फौज की आगे बढ़ती हुई टुकड़ियों के सामान की गाड़ियों द्वारा रौंदे जाने के कारण बन गयी थी। गड्ढों पर उछलता हुआ, अपने ऊबड़-खाबड़ अंग-प्रत्यंगों को खड़खड़ाता हुआ वह मोर्चे की लाइन की तरफ बढ़ता जा रहा था। उसके टूटे-फूटे और धूल में सने प्रत्येक बाजू पर सफेद रंग से रंगी पट्टी मुश्किल से ही दिखाई देती थी जिस पर लिखा था 'फौजी डाक सेवा'। मोटर-ट्रक दौड़ता जाता और अपने पीछे धूल की बड़ी भारी लकीर छोड़ता जाता जो शान्त, निश्चल हवा में धीरे-धीरे घुल जाती थी।

ट्रक पर डाक के थैले और ताजे समाचारपत्रों के बण्डल लदे थे, और विमान-चालकों की वर्दी तथा नीली पट्टियोंवाली छज्जेदार टोपियां पहने दो सिपाही बैठे थे जो ट्रक की चाल के अनुसार उछल या झुक पड़ते थे। इन दो में से जो जवान था, उसके कंधे के बिल्कुल नये फीतों को देखने से पता चल जाता कि वह वायुसेना में सार्जेन्ट-मेजर था—छरहरा, सुगड और सुकेशी। उसके मुखड़े पर ऐसी कोमलता थी कि ऐसा लगता था मानो सुन्दर त्वचा से रक्त दमक रहा है। वह लगभग १६ वर्ष का लगता था। वह मजे हुए सैनिक की भांति व्यवहार करने का प्रयत्न कर रहा था—कभी दांतों के बीच से थूक देता, कर्कश स्वर में कोस बैठता, उंगली जैसी मोटी सिगरेट बनाता और हर चीज की तरफ लापरवाही का भाव दिखाता। लेकिन इस सबके बावजूद यह स्पष्ट था कि वह युद्ध मोर्चे की पांतों की ओर पहली बार जा रहा था और अधीर था। चारों ओर हर वस्तु—सड़क के किनारे पड़ी हुई क्षत-विक्षत तोप, जिसकी थूथनी जमीन की तरफ थी, एक टूटा पड़ा हुआ सोवियत टैंक, जिसके ऊपर तक घास उग आयी थी, एक जर्मन टैंक के इधर-उधर बिखरे हुए टुकड़े जो स्पष्ट

ही हवाई बम की सीधी चोट का शिकार हुआ था। रास्ते के गड्ढे जिन
पर घास खूब उग आयी थी, नयी सड़क के किनारे और सिपाहियों द्वारा
हटायी गयी टैंक-विरोधी सुरंगों के गोल ढक्कनों के ढेर लगे थे और
जर्मन सिपाहियों के कब्रिस्तान में लगे हुए क्रास, वृक्ष के पास जो दूर से
ही दिखाई देते थे—ये सभी उस युद्ध के चिह्न थे जो यहां छिड़ा हुआ था
और जिसकी ओर युद्ध में मंजे हुए सिपाही कोई ध्यान नहीं देते। मगर
ये दृश्य उस लड़के को चकित और विस्मित कर रहे थे। उसे अत्यन्त
महत्वपूर्ण और अतीव दिलचस्प प्रतीत होते थे।

दूसरी ओर यह स्पष्ट देखा जा सकता था कि उसका साथी—एक सी-
नियर लेफ्टिनेंट—सचमुच मंजा हुआ सिपाही था। पहली नजर में आप
कहेंगे कि वह तेईस या चौबीस वर्ष का होगा। मगर उसका धूप तथा मौ-
सम खाया चेहरा और उसकी आंखों और मुंह के चारों ओर तथा माथे
पर बारीक झुर्रियां देखकर, और उसकी काली-काली, चिन्तनपूर्ण थकित
आंखों में झांककर शायद आप उसकी उम्र में दस वर्ष और जोड़ देंगे।
आस-पास के दृश्य ने उसपर कोई प्रभाव नहीं डाला। युद्ध यन्त्रों के जंग
खाये ध्वंसावशेषों को देखकर, जो विस्फोटों से टेढ़े-मेढ़े हो गये थे और
इधर-उधर पड़े थे, या जले हुए गांवों की वीरान सड़कों को देखकर जि-
नसे ट्रक गुजर रहा था, उसे कोई आश्चर्य नहीं हुआ। यहां तक कि एक
चकनाचूर सोवियत हवाई जहाज का दृश्य देखकर, जो टेढ़े-मेढ़े अलमीनम
के ढेर की भांति पड़ा था, और उससे थोड़ी दूर पर उसका चकनाचूर
इंजन तथा नम्बर और लाल सितारे से अंकित पूंछ पड़ी थी—जिस पर
नजर पड़ते ही वह कम उम्र सिपाही सुर्ख पड़ गया था और कांपने लगा
था—वह तनिक भी विचलित न हुआ।

पतवारों के बंडलों से अपने लिए आराम कुर्सी बनाकर वह अफसर
शबनूम की विचित्र-सी भारी छड़ी पर—जिस पर कोई सुनहरा आलेख
अंकित था—अपनी ठुड्डी टिकाये ऊंघ रहा था। कभी-कभी वह चौंककर
अपनी आंखें खोल लेता और मुसकराकर इस भांति चारों ओर देखता मा-
नो अपनी ऊंघ भगा रहा हो, और उष्ण तथा सुगंधित वायु में गहरी
सांस भर लेता। सड़क से दूर, लाल-सी घास के लहराये हुए सागर के
ऊपर उसने दो बिंदु देखे, जिनकी सावधानी से परीक्षा करने के बाद वह
समझ गया कि वे दो हवाई जहाज़ हैं, जो एक दूसरे के पीछे, पांत बना-
कर आराम से आसमान में फिसलते घूम रहे हैं। तत्क्षण उसकी ऊंघ भा-

यत्र हो गयी, उसकी आँखें रोशन हो उठीं, नथुने फड़कने लगे और कठिनाई से दृष्टिगोचर होनेवाले उन दो बिंदुओं पर नजर गड़ाये हुए उसने ड्राइवर की केबिन की छत को थपथपाया और जोर से चिल्लाया:

"हवाई जहाज! सड़क से मुड़ जाओ!"

वह खड़ा हो गया, उसने अनुभवी आँखों से सारा प्रदेश छान डाला और छोटी-सी नदी की धारा के निकट एक खोह ड्राइवर को दिखायी जिसके किनारे पर मटमैली घास और सुनहरी झाड़ियां घनी उगी हुई थीं।

नौजवान मजा लेकर मुसकराया। हवाई जहाज कहीं दूर पर मर्ज़ में मंडरा रहे थे और ऐसा लगता था कि जो एकमात्र ट्रक वीरान और मनहूस मैदान में धूल का भारी गुबार उड़ाता चला जा रहा था, उसकी तरफ़ उनका जरा भी ध्यान न था। लेकिन इसके पहले कि वह कोई विरोध प्रगट कर पाता, ड्राइवर ने सड़क छोड़ दी और अपना पंजर खड़काता हुआ ट्रक उस खोह की तरफ दौड़ पड़ा।

ज्यों ही वे खोह के पास पहुँचे, सीनियर लेफ्टीनेंट उतर आया और घास पर बैठकर जागरूकता के साथ सड़क को ताकने लगा।

"आप यह सब क्यों कर रहे हैं..." नौजवान ने शुरू किया और व्यंग्यपूर्वक अफसर की ओर देखा, लेकिन इसके पहले कि वह अपना वाक्य खत्म कर पाता, अफसर जमीन पर लुढ़क गया और चिल्लाया,

"लेट जाओ!"

उसी क्षण हवाई जहाजों के इंजनों की बर्बर धड़धड़ाहट सुनाई दी और दो विशालकाय छायाएं विचित्र खट-खट आवाज करती हुई उनके ऊपर घुमड़ती गुजर गयीं और हवा में कम्पन भर गया। नौजवान इससे भी नहीं घबराया साधारण हवाई जहाज, निस्सन्देह अपने ही हैं। उसने चारों तरफ नजर दौड़ायी और यकायक देखा कि सड़क के किनारे उलटे पड़े कुछ खाली ट्रक से धुआं उठने लगा और लपटें फूट पड़ीं।

"ओह! डाकू बम छोड़ रहे हैं," डाक ट्रक के ड्राइवर ने मुसकराकर कहा और ट्रक के मडगार्ड और उसके हिलने की ओर ताकने लगा।

"दूसरों की ताक में हैं।"

"शिकारी हैं," सीनियर लेफ्टीनेंट ने घास पर आराम से बैठे हुए शान्तिपूर्वक जवाब दिया, "हमें इन्तजार करना पड़ेगा, वे फिर लौटेंगे। वे सारी सड़क का निरीक्षण कर रहे हैं। अच्छा हो कि तुम अपना ट्रक जरा और पीछे ले जाओ, उधर ओक वृक्ष के नीचे।"

उसने इस प्रकार शान्तिपूर्वक और विश्वास के साथ कहा मानो जर्मन विमान-चालकों ने अभी-अभी उसे अपनी योजना बता दी हो। डाक के साथ एक महिला डाकिया थी—युवती, जो ड्राइवर की बगल में बैठी थी। वह अब घास पर लेटी थी—पीली-सी, होंठों पर हल्की-सी उलझन-भरी मुस्कान लिये हुए, आसमान की ओर उत्तेजनापूर्वक निहार रही थी, जहां पर ग्रीष्म के अनगिन बादल सुड़कते चले जा रहे थे। उसी को ध्यान में रखकर सार्जेन्ट-मेजर ने उदासीनता के साथ कहा, हालांकि उसने स्वयं बड़ी उलझन महसूस की:

"अच्छा हो, हम लोग आगे चल दें। वक्त क्यों बरबाद किया जाये? जिसे फांसी लगनी होती है, वह कभी डूबता नहीं है।"

सीनियर लेफ़्टीनेंट ने शान्त भाव से घास की पत्ती चूसते हुए अपनी सख्त काली आंखों में अदृश्य-सी विनोदपूर्ण चमक भरकर उसकी ओर देखा और प्रत्युत्तर दिया:

"सुनो भाई! इससे पहले कि वक्त हाथ से निकल जाये, वह बेवकूफ़ों की कहावत भूल जाओ। एक बात और समझ लो, कामरेड सार्जेन्ट-मेजर, मोर्चे पर तुमसे बड़ों की आज्ञा मानने की आशा की जाती है। अगर हुक्म है: 'लेट जाओ!' तो तुम्हें लेटना ही पड़ेगा।"

उसे घास में अम्बर्वेन का डंठल पड़ा मिल गया, उसने नाखूनों से उसका रेशेदार छिलका उतारा और कुरकुरे डंठल को बड़े स्वाद से चूसने लगा। हवाई जहाज़ के इंजनों की धड़धड़ाहट फिर सुनाई दी और वहीं दो हवाई जहाज़ सड़क पर नीचे उड़ते नज़र आये, वे बहुत धीरे-धीरे उड़ रहे थे—और वे इतने पास से गुज़र गये कि उनके पंखों का गहरा पीला रंग, सफ़ेद-काले क्रास और उनमें से निकटतर विमान के ढांचे पर अंकित हुक्म के इक्के तक बड़े साफ़ दिखाई दे रहे थे। सीनियर लेफ़्टीनेंट ने अनमन भाव से कुछ और डंठल लिये घड़ी की ओर देखा और हुक्म दिया:

"सब साफ़! चलो, रवाना हो! जल्दी करो, प्यारे! इस जगह से जितनी दूर खिसक जायें उतना ही बेहतर होगा!

ड्राइवर ने अपना भोंपू बजाया और युवती डाकिया खोह से दौड़ी हुई आयी। वह जंगली स्ट्राबेरी के फलों के अनेक गुच्छे लिये हुए थी। ये गुच्छे उसने सीनियर लेफ़्टीनेंट को दिये।

"ये पकने लगे हैं... हमने गौर नहीं किया कि ग्रीष्म आ रहा है,"

पिछले भाग में कूद गयी जहां उसे सशक्त, मैत्रीपूर्ण बाहों ने सभाल लिया।

"मैंने तुम्हें गाते सुना, इसलिए तुम्हारा साथ देने की इच्छा हुई..."

और इस प्रकार ट्रक की खड़खड़ाहट और घास पर फुदकनेवाले टिड्डों की उत्साहपूर्ण चहक के साज पर वे तीनो गाने लगे।

युवक आत्म-विभोर हो उठा। उसने अपने सामान के थैले से मुह का बाजा निकाला, और कभी उसे बजाने लगता, और कभी उसे डडे की तरह पकडकर हवा मे झुलाता उन लोगो के साथ स्वर मिलाकर गाने लगता; वह संगीत-संचालक की भाति कार्य करने लगा। और धूल से आच्छादित, सर्वजयी घास-पात के बीच बिछी इस उदासीजनक और आजकल वीरान मोर्चावर्ती सड़क पर उस गीत के शक्तिशाली और वेदनापूर्ण स्वर गूज उठे जो इतना ही पुराना और इतना ही नया था जितना कि ग्रीष्म के ताप से तड़पते हुए ये मैदान, उष्ण और सुगधित घास के बीच टिड्डों की जीवन्त चहक, स्वच्छ ग्रीष्म आकाश मे लवा पक्षी का सगीत और जैसे कि स्वयं यह उच्च और अनन्त आकाश है।

वे अपने संगीत मे इतने डूब गये थे कि जब ड्राइवर ने यकायक ब्रेक लगा दिये तो धक्का खाकर वे लोग करीब-करीब ट्रक से बाहर ही गिर गये। ट्रक बीच सडक में रुक गया। सडक की बगल की खाई मे एक तीन टनवाला ट्रक उलटा पड़ा था जिसके धूल से ढके पहिये भर दिखाई दे रहे थे। युवक पीला पड़ गया, मगर उसका साथी बाजू से उतर पडा और खाई की तरफ भागा। वह विचित्र स्प्रिंगदार, डगमगाते कदमो से जा रहा था। एक क्षण बाद डाक ट्रक का ड्राइवर उलटे हुए ट्रक के केबिन से एक क्वार्टरमास्टर कप्तान के खून-सने शरीर को निकाल रहा था। उसका चेहरा घायल था और खरोचें पडी हुई थीं, जो स्पष्ट ही टूटे काच के गड़ने से पड़ गयी थी और चेहरे का रंग स्याह पड गया था। सीनियर लेफ्टीनेंट ने उसकी पलकें उठायी।

"यह खत्म हो गया," उसने अपनी टोपी उतारते हुए कहा, "कोई और तो नही है?"

"हा, ड्राइवर है," डाक ट्रक के ड्राइवर ने जवाब दिया।

"तुम उधर खड़े क्या कर रहे हो? आओ, मदद करो।" सीनियर लेफ्टीनेंट ने किंकर्त्तव्यविमूढ युवक से कहा, "क्या तुमने इससे पहले खून

कभी नही देखा? इसके आदी हो जाओ, अब बहुत देखने को मिलेगा। देखो, यह है उन शिकारियों का शिकार।"

ड्राइवर जीवित था। वह हल्के-से कराह उठा, मगर आखें बन्द किये रहा। चोट का कोई चिह्न नही था, मगर स्पष्ट था कि जब बम की चोट के बाद ट्रक खाई मे गिरा होगा तो उसका वक्ष बुरी तरह स्टीयरिंग से टकरा गया होगा और फिर चकनाचूर केबिन के बोझ से वह दब गया होगा। सीनियर लेफ़्टीनेंट ने उसे डाक ट्रक में लादने का हुक्म दिया। लेफ़्टीनेंट के पास एक सूती कपडे मे सावधानी से लिपटा हुआ बढ़िया, बिल्कुल नया ग्रेटकोट था, जो एक बार भी नही पहना गया था। चोट खाये व्यक्ति को लिटाने के लिए उसने ट्रक के फर्श पर उस कोट को बिछा दिया और आहत व्यक्ति के सिर को अपने घुटनों पर रख लिया।

"तुम जितना तेज़ हो सकता है, उतनी तेज़ी से चलाओ!" उसने ड्राइवर को हुक्म दिया।

आहत व्यक्ति के सिर को आहिस्ते-से सहारा देते हुए वह अपनी ही किसी दूरागत स्मृति से मुसकरा पड़ा।

जब ट्रक एक छोटे-से गाव की सड़क पर दौड़ने लगा, जहा अनुभवी आख फौरन पहचान लेती कि इस स्थान पर किसी छोटी-सी विमान टुकड़ी की कमान का केंद्र है, तब तक साझ उतर आयी थी। सामने के बगीचों में खड़े चेरी और सेब के वृक्षों की धूल से आच्छादित शाखाओं से, कुओं की ढेंकलियों से, चहारदीवारी के खम्भों मे तारों की कई लाइनें लटकी हुई थी। मकानों के पास घास-फूस से ढके ओसारों मे, जहा किसान अपनी गाड़िया और खेती के औज़ार रखा करते थे, जगह-जगह से टिकटी मारे और जीर्ण खड़ी दिखाई दे रही थी। यहां-वहा छोटी-छोटी झोंपड़ियों की खिड़कियों के धुधले शीशो के पार नीली पट्टीवाली टोपियां पहने सिपाही दिखाई दे जाते थे और टाइपराइटरों की खटखट सुनाई दे जाती थी, और एक घर से, जिस पर तारों का जाल आकर मिल गया था, तार भेजने का यंत्र खड़खड़ाता सुनाई दिया।

यही गांव, जो छोटी-बड़ी सड़कों से दूर बसा था, ऐसा लगता था कि वह इस वीरान और धाम-पात से आच्छादित स्थान मे एक ऐसे प्रदर्शन की भांति बच गया है, जो यह प्रदर्शित करता है कि फ़ासिस्ट आक्रमण से पहले इस क्षेत्र मे रहना कितना भला था। छोटा-सा पोखर भी, जिसमे पोखों-सी सेवार बनी उग आयी थी, पानी से भरा था। पुराने वृक्षों

हमें ठीक सामने की पांतो में तोपें मिली। और अस्त्र-शस्त्र के भण्डार भी। लकडी के ढेर से ढके हुए। कल वे इस जगह नही थे भारी भण्डार है।"

"बस?"

"बस, कामरेड कर्नल। क्या मैं रिपोर्ट लिख डालूं?

"रिपोर्ट? नही। अभी रिपोर्ट के लिए वक्त नही है। फौरन फौजी हेडक्वार्टर जाओ। समझते हो कि इसका क्या मतलब है? ऐ अर्दली! मेरी जीप में कप्तान को हेडक्वार्टर भेज दो।

कमाडर का दफ्तर एक काफी बडी कक्षा म था। लट्ठो की नगी दीवारोंवाले इस कमरे मे फर्नीचर के नाम पर सिर्फ एक मेज थी जिस पर टेलीफोनो के चमडे के खोल, विमान-सैनिक नक्शा और एक लाल पेंसिल रखे थे। नाटा-सा, स्फूर्तिवान, सुगठित व्यक्ति, वह कर्नल पीठ के पीछे हाथ बांधे कमरे मे चहलकदमी कर रहा था। अपने विचारों में लीन, वह एक-दो बार उन विमान-चालको के पास से निकला, जो अटेंशन खडे हुए थे। यकायक वह उनके सामने रुका और उनकी ओर जिज्ञासापूर्वक देखने लगा।

"सीनियर लेफ्टीनेंट अलेक्सेई मेरेस्येव। आपकी कमान म नियुक्त" ताम्रवर्ण अफसर ने एडिया बजाते हुए और सेल्यूट मारते हुए रिपोर्ट दी।

"सार्जेन्ट-मेजर अलेक्सान्द्र पेत्रोव," युवक न अपने फौजी बूटो को जरा जोर से मारते हुए और जरा ज्यादा फुर्ती से सेल्यूट करते हुए रिपोर्ट दी।

"रेजीमेंटल कमाडर, कर्नल इवानोव," बडे अफसर ने जवाब म कहा। "कोई सदेश?"

बडी नपी-तुली भाव-भगिमा से मेरेस्येव ने अपने नक्शे के खोल स एक पत्र निकाला और कर्नल को दे दिया। कर्नल ने शीघ्रता म उस सदेश की परीक्षा की, नवागतो पर शीघ्रतापूर्वक अन्वेषी दृष्टि डाली और कहा

"बहुत अच्छा! आप लोग ठीक वक्त पर आये है। लेकिन इतने कम लोग उन्होंने क्यो भेजे है?" यकायक उसके चेहरे पर विस्मय का भाव दौड गया, मानो उसे कोई बात याद आ गयी हो। 'क्या' उसने पूछा, "तुम मेरेस्येव हो? वायुसेना हेडक्वार्टर के प्रधान ने तुम्हारे बारे मे मुझे फ़ोन किया था। उन्होंने मुझे चेतावनी दी थी कि तुम

"यह कोई महत्त्व की बात नही है, कामरेड कर्नल,' अलेक्सेई ने

कुछ रूखी-सी आवाज़ में टोका, "मुझे अपनी ड्यूटी पर जाने की आज्ञा दीजिये।"

कर्नल ने कौतुहलवश अलेक्सेई की ओर देखा और सिर हिलाते हुए, स्वीकृतिसूचक मुसकान के साथ कहा.

"ठीक। अर्देली! इन व्यक्तियों को चीफ़ स्टाफ़-अफ़सर के पास ले जाओ और मेरा यह हुक्म दे दो कि इनके भोजन और निवास का प्रबंध किया जाये। कहो कि इन्हें गार्ड कप्तान चेस्लोव के स्क्वाड्रन में भरती किया जाये।"

पेत्रोव ने सोचा कि रेजीमेंटल कमांडर ज़रा ज़्यादा अमेनिया है। मेरेस्येव ने उसे पसन्द किया। इस तरह के व्यक्ति – जो तेज़ होते है, हर मामले की पकड़ फौरन कर लेते है, स्पष्ट चिन्तन की क्षमता रखते हैं और दृढ़तापूर्वक फ़ैसले ले सकते हैं – उसको दिल से प्यारे होते हैं। बाँधे में बैठे-बैठे उसने हवाई टोह की जो रिपोर्ट सुनी थी, वह उसके दिमाग में समा गयी थी। अनेक ऐसे चिह्नों से जिन्हें सिपाही पढ़ लिया करते हैं: फ़ौजी हेडक्वार्टर छोड़ने के बाद वे जिन रास्तों से उड़ते-फिरते आये थे, उन पर भारी भीड़ का होना, यह तथ्य कि सड़क के सारी सख्त ग्राउंड पर ज़ोर देने में और आज्ञा का उल्लंघन करनेवालों के टायरों पर गोली चलाने की धमकी देते थे, मुख्य सड़क से अलग भोज वृक्षों के जंगलों में टैंकों और तोपों के केन्द्रित होने के कारण भीड़-भाड़ और शोरगुल, और यह तथ्य कि उस दिन वीरान सड़क पर उनके ऊपर जर्मन 'शिकारियों' ने हमला किया था – मेरेस्येव भाँप गया था कि मोर्चे की शान्ति भंग होनेवाली है, जर्मन इस क्षेत्र में नया प्रहार करनेवाले हैं और यह प्रहार शीघ्र ही होगा, सोवियत फ़ौज की कमान इससे सुपरिचित है और उसका यथायोग्य जवाब देने के लिए तैयार है।

२

बेचैन सीनियर लेफ़्टीनेंट ने भोजन के समय पेत्रोव को तीसरे दौर का इन्तज़ार ही नहीं करने दिया और उसे अपने साथ एक पेट्रोल ट्रक पर जाने के लिए विवश किया जो गांव के बाहर एक मैदान में स्थित हवाई अड्डे की ओर जा रहा था। यहां इन नये व्यक्तियों ने विमान टुकड़ी के कमांडर, गार्ड कप्तान चेस्लोव को अपना परिचय दिया जो बड़ा भद्दे

चलानेवाला और अल्पभाषी तो था, मगर बंसे अत्यन्त सहृदय स्वभाव का व्यक्ति था। अधिक कहे-सुने बिना वह उन्हें धास से ढके मिट्टी के बने विमान-गाह में ले गया, जिनमें दो बिल्कुल नये, चमकीली वार्निशवाले नीले 'ला-५' खड़े थे, जिन पर '११' और '१२' नम्बर अंकित थे। ये विमान थे जिन्हें नवागतों को उड़ान पर ले जाना था। उन्होंने शेष शाम सुगंधित झोजवुंज में–जहां इंजनों की धड़धड़ाहट में भी पक्षियों की चहक दूब नहीं पा रही थी–विमानों की परीक्षा करते, मेकेनिकों से गप लगाते और रेजीमेंट के जीवन का परिचय प्राप्त करते हुए काट दी।

अपने दिलचस्प धंधे में वे इतने डूब गये थे कि जब वे आखिरी ट्रक में गांव लौटे तो काफी अंधेरा हो चुका था और उनको रात का भोजन न मिल सका। लेकिन इससे वे चिन्तित न हुए। उनके थैलों में अभी सूखे राशन का कुछ हिस्सा बकाया था जो उन्हें रास्ते के लिए दिया गया था। सोने के स्थान की कठिनाई और भी गम्भीर थी। इस छोटे-से नखलिस्तान की आबादी दो विमान रेजीमेंटों के चालकों और कर्मचारियों के कारण हद से अधिक बढ़ गयी थी। भीड़-भाड़ से भरे हुए एक मकान से दूसरे मकान तक भटकते हुए और वहां रहनेवालों से–जो नवागतों के लिए जगह देने से इनकार कर देते थे–क्रोधपूर्वक कहा-सुनी करते और इस खेद-पूर्वक तथ्य पर दार्शनिक चिन्तन करते हुए कि मकान रबर के तो बने नहीं हैं और उन्हें फैलाकर बड़ा नहीं किया जा सकता, अंत में वे लोग जिस मकान पर पहुंचे, वहीं क्वार्टर-मास्टर ने उन्हें घुसेड़ दिया और कहा·

"आज की रात यहीं सो जाओ। सुबह तुम लोगों के लिए मैं दूसरा बन्दोबस्त कर दूंगा।"

उस छोटी-सी झोंपड़ी में वे लोग पहले से ही नौ व्यक्ति थे और वे सब लौट आये थे। किसी गोले के खोल को चपटाकर बनायी गयी, धुआं उगलती, मिट्टी के तेल की ढिबरी की रोशनी से सोनेवालों की छायाकृतियों पर धुंधला प्रकाश पड़ रहा था। कुछ लोग चारपाइयों और तख्तों पर लेटे थे और कुछ लोग फर्श पर पुआल बिछाकर लेटे थे। इन नौ निवासियों के अलावा झोंपड़ी में उसकी मालकिन–एक बुढ़िया और उसकी जवान बेटी–भी थी, जो जगह की तंगी के कारण बड़े भारी मिट्टी के बने रूसी चूल्हे पर सोती थी।

नवागत दहलीज पर ही रुक गये और हैरान रह गये कि सोते हुए लो-

गों को पार कर कैसे अन्दर जायें। बुढ़िया चूल्हे पर से उतर कर क्रोध-पूर्वक चिल्लायी

"यहां जगह नहीं है, जाओ, जगह नहीं है! दिखाई नहीं देता कि यहां बड़ी भीड़ है? तुम्हें हम लोग कहां गुजारेंगे, क्या छप्पर पर?"

पेत्रोव ने इतनी परेशानी महसूस की कि वह पीछे हटने ही वाला था, लेकिन मेरेस्येव सोनेवालों पर पैर पड़ने से बचाता हुआ मेज की तरफ बढ़ रहा था।

"हमें सिर्फ एक कोना चाहिए जहां बैठकर हम लोग अपना भोजन कर सकें, दादीजान। हमने दिन भर से कुछ नहीं खाया है," उसने कहा, "क्या तुम हमें एक तश्तरी और दो प्याले दे सकोगी? यहां सोकर हम तुम्हें तकलीफ नहीं देंगे। रात काफ़ी गर्म है, और हम बग़ीचे में सो रहेंगे।"

चूल्हे के पटरे के छोर से चिड़चिड़ी बुढ़िया के पीछे से दो नन्हे-नन्हे नंगे पैर प्रगट हुए: एक छरहरी आकृति खामोशी से चूल्हे पर से उतर आयी और सोनेवालों के बीच बड़ी होशियारी से संतुलन करते हुए दरवाज़े के पीछे गायब हो गयी और शीघ्र ही कुछ तश्तरियां और भिन्न रंगों के प्यालियां अपनी नाजुक उंगलियों से लटकाकर वापस लौट आयी। पहले तो पेत्रोव ने सोचा कि वह बच्चा है, मगर जब वह मेज़ के पास पहुंच गयी और धुंधली पीली रोशनी ने अंधकार से उसके मुखड़े को उबार लिया, तो उसने देखा कि वह युवती है और सुन्दर भी, सिर्फ यह कि भूरे ब्लाउज़ और बोरे के स्कर्ट और जर्जर शाल ने, जिसे वह अपने वक्ष पर ओढ़े थी और बुढ़िया की तरह पीठ पर बांधे थी, उसके सौन्दर्य को मार दिया था।

"मरीना! मरीना! इधर आ फूहड़।" चूल्हे से बुढ़िया ने पुकारा।

लेकिन युवती ने तनिक भी परवाह नहीं की। कुशलतापूर्वक उसने मेज़ पर एक अख़बार बिछा दिया और उसपर तश्तरियां, प्याले और कांटे-छुरियां रख दीं और साथ ही कनखियों से पेत्रोव पर नज़र डाली।

"हां, करिये अपना भोजन। आशा है, आपको मज़ा आयेगा," उसने कहा, "शायद आप कुछ काटना या गरम करना चाहेंगे? मैं एक सेकंड में कर दूंगी। क्वार्टर-मास्टर ने सिर्फ यही कहा है कि हम बाहर आग न जलायें।"

"मरीना, इधर आ!" बुढ़िया ने पुकारा।

"उसकी बातों पर ध्यान न दीजिये, वह जरा होश खो बैठी है। जर्मनों ने उसे बुरी तरह डरा दिया है," युवती ने कहा, "ज्यों ही वह रात को सिपाहियों की शक्लें देखती है, उसे मेरे बारे में फिक्र होने लगती है। उसपर क्रोध न कीजिये, वह रात को ही ऐसी हो जाती है। दिन में वह भली-चंगी रहती है।"

अपने थैले में मेरेस्येव को कुछ सौसेज, गोश्त का एक टिन, दो सूखी मछलियां जिन पर लगा हुआ नमक चमक रहा था और एक फौजी पावरोटी मिल गयी। पेत्रोव की किस्मत कमजोर निकली – उसके पास सिर्फ थोड़ा-सा गोश्त और सूखी रोटी के टुकड़े निकले। मरीना ने इस सबको अपने नन्हें-से कुशल हाथों से काट दिया और तश्तरियों पर इस तरह लगा दिया कि भूख बढ़ गयी। लम्बी बरौनियों में छिपी हुई उसकी आंखें पेत्रोव के चेहरे को अधिकाधिक परीक्षा करने लगी और उधर पेत्रोव उसकी ओर लालसापूर्ण दृष्टि डाल रहा था। जब उनकी आंखें मिलीं तो दोनों लाल हो गये, दोनों ने भौंहें सिकोड़ी और दूसरी ओर मुंह फेर लिया, और उन दोनों ने एक दूसरे को सीधे सम्बोधित किये बिना मेरेस्येव के द्वारा बातचीत की। उन्हें देखकर अलेक्सेई को बड़ा मजा आया, मजा भी और दुख भी, क्योंकि दोनों ही बड़े कम उम्र थे। उनकी तुलना में वह अपने को बूढ़ा, थका हुआ और जीवन का एक बहुत बड़ा भाग पीछे छोड़ आनेवाला महसूस करने लगा।

"अच्छा, मरीना, तुम्हारे पास, सम्भव है, खीरा तो होगा?" ने पूछा।

"हां, संभव तो है," युवती ने शैतानी-भरी मुसकान के साथ जवाब दिया।

"और शायद तुम्हारे पास दो-एक उबले आलू निकल आयें?"

"हां – अगर प्रार्थना करें तो शायद मिल जायें।"

वह फिर कमरे से बाहर चली गयी, सोनेवालों के शरीरों से बचती हुई, फुर्ती से और बिना आहट के, तितली की तरह।

"कामरेड सीनियर लेफ्टीनेंट," पेत्रोव ने विरोध प्रकट किया, "जिस लड़की को आप नहीं जानते, उससे आप इतने बेतकल्लुफ कैसे हो सकते हैं? उससे खीरा मांग रहे हैं.."

मेरेस्येव विनोदपूर्ण हंसी में फूट पड़ा:

"वाह रे भोले, क्या समझते हो तुम कहां हो? हम मोर्चे पर नहीं हैं क्या? . ऐ, दादी ! बड़बड़ाना बंद कर! उतर आ और हम लोगों के साथ दो कौर तो खा ले।"

अपने आप बड़बड़ाती और कोसती हुई बुढ़िया चूल्हे पर से उतर आयी, मेज के पास आ पहुंची और फौरन सॉसेज पर टूट पड़ी—जैसे कि पता चला युद्ध के पहले वह इसकी बड़ी शौकीन रही थी।

वे चारों मेज के इर्द-गिर्द बैठ गये और खर्राटों तथा कुछ लोगों की उनींदी बड़बड़ाहट के बीच बड़े स्वाद से खाने लगे। अलेक्सेई सारे समय गप्पें मारता रहा, बुढ़िया को चिढ़ाता रहा और मरीना को हंसाता रहा। आखिरकार, अपने स्वभाव के अनुकूल डेरों की जिंदगी पाकर वह पूरी तरह आनन्द का उपभोग कर रहा था, मानो विदेशों में भटकने के बाद वह बहुत दिनों के उपरान्त अपने घर लौट आया हो।

भोजन के अंत में जाकर मित्रों को मालूम हुआ कि यह गांव इसलिए बच गया कि वह एक जर्मन सेना का हेड क्वार्टर रहा था। जब सोवियत सेना ने अपना प्रत्याक्रमण प्रारम्भ किया तो जर्मन इतनी जल्दी में भ कि वे इस गांव को ध्वस्त नहीं कर पाये। जब फासिस्टों ने बुढ़िया मौजूदगी में उसकी बड़ी लड़की के साथ बलात्कार किया—जो बाद में उ पोखर में डूब मरी—तो बुढ़िया पागल हो गयी। आठ महीने तक, ज तक फासिस्ट इस जिले में रहे, मरीना पीछे आंगन में बने खाली भूग घर में छिपी रही जिसके दरवाजे को भूसे और लंगड़-खंगड़ के ढेर लगाक छिपा दिया गया था। इन दिनों उसने सूरज नहीं देखा। रात को म खाना-पीना लाती और छोटी-सी खिड़की से अन्दर डाल देती। अलेक्सेई लड़की से बातें करता जा रहा था, और वह पेत्रोव पर नजरें डाले जा रही थी। उसकी चंचल और शर्मीली आंखों में सराहना का भाव छिपाये नहीं छिप रहा था।

और इस प्रकार गप-शप करने और हंसते हुए उन्होंने भोजन समाप्त किया। मरीना ने बचे हुए खाद्य पदार्थों को मेरेस्येव के थैले में रख दिया यह सोचकर कि सिपाही के साथ जो कुछ भी रहे वह काम आ जाता है। उसके बाद उसने अपनी मां से कुछ कानाफूसी की और फिर मुड़कर बोली:

"सुनिये। चूंकि क्वार्टर-मास्टर आपको यहां छोड़ गये हैं, इसलिए यहीं ठहरिये। चूल्हे पर चढ़ जाइये, मां और मैं कोठरी में जा सोयेंगी।

सफ़र के बाद आप लोगों को आराम भी तो चाहिए। कल आपके लिए हम लोग जगह तलाश कर देंगे।"

वह सोते हुए लोगों के बीच सावधानी से क़दम धरती फिर बाहर चली गयी और भूसे का एक गट्ठर लेकर लौटी जिसे उसने चूल्हे की छत पर बिछा दिया और कुछ कपड़ों को तकिये की तरह गोल कर दिया और यह सब उसने बड़ी फुर्ती से, होशियारी से, बिना आहट किये, बिल्लियों जैसी चपलता के साथ कर दिया।

"बढ़िया लड़की है, क्यों बच्चू ?" मेरेस्येव ने भूसे पर लेटकर आनन्दपूर्वक कहा और हाथ-पाव फैलाकर इस तरह अंगडाई ली कि जोड तडक उठे।

"बुरी नही है," पेत्रोव ने बनावटी उपेक्षा से जवाब दिया।

"और तुम्हारी तरफ वह कैसे बराबर घूर रही थी! .."

"नही तो ! वह तो सारे वक़्त आपसे बातें कर रही थी।"

क्षण भर बाद उसकी सासो की नियमित आवाज़ सुनाई देने लगी। लेकिन मेरेस्येव को नीद नही आयी। शीतल, सुगंधित भूसे पर लेटे हुए ने देखा कि मरीना कमरे में आयी, कोई चीज़ खोजने लगी, वह ...बार चूल्हे की तरफ चोरी-चोरी निगाह डाल लेती। उसने मेज़ के ... को ठीक तरह से टिकाया, एक बार फिर चूल्हे की ओर निगाह ...ी और फिर सोनेवालों के बीच राह बनाती हुई आहिस्ते-से दरवाज़े ...ओर चली गयी। किसी कारण, चिथड़े पहनी हुई इस सुन्दर, मन...क लड़की को देखकर अलेक्सेई की आत्मा वेदना से भर गयी। इस ...र सोने का प्रबंध तो हो गया था। सुबह ही उसे पहली उड़ान करनी ... पेत्रोव के साथ उसका जोड़ा होगा —वह, मेरेस्येव, लीड करेगा। ...ी बीतेगी? लड़का तो बढ़िया मालूम होता है—मरीना पहली ही नजर उसे चाहने लगी है। खैर, मुझे कुछ सो लेना चाहिए। उसने ...ट बदली, भूसे को थोड़ा ठीक-ठाक किया और गहरी नीद ...सो गया।

वह जागा तो ऐसी घबराहट से मानो कोई भयंकर घटना हो गयी है। ...न तो वह नहीं समझ पाया कि क्या हो गया है, मगर सिपाही के ...ज स्वभाववश वह उठ पडा और अपनी पिस्तौल थाम ली। वह कह ...ी सकता था कि वह कहा है। तीखे धुएं के बादल से, जिसमे लहसुन ...ी गंध आ रही थी, हर चीज ढंक गयी थी, और जब हवा उस बादल

को वहां ले गयी तो उसे अपने सिर के ऊपर बड़े-बड़े विचित्र तारे चमकते नजर आने लगे। चारों तरफ़ की चीजें इतनी साफ़ दिखाई देने लगी थीं, जैसे दिन के निर्मल प्रकाश में दिखाई देती हैं और माचिस की तीलियों की तरह बिखरे हुए झोंपड़ी के लट्ठे, एक तरफ़ गिरा छप्पर, झाड़-तिरछे शहतीर और कुछ आकारहीन चीजें उसे थोड़ी दूर पर जलती हुई दिखाई दीं। उसने कराहें, हवाई जहाजों के इंजनों को कंपा देनेवाली धड़धड़ाहट और गिरते बमों की भयानक सीटी जैसी आवाज सुनी।

"लेट जाओ!" वह पेत्रोव पर चिल्लाया, जो खंडहर के बीच खड़े चूल्हे की छत पर घुटने के बल बैठकर पागल की भांति चारों तरफ़ देख रहा था।

वे लोग ईंटों पर सीधे लेट गये और उनने अपने शरीर सिकोड़े रहे। उसी क्षण बम का एक बड़ा-सा टुकड़ा चिमनी से टकराया और लाल धूल और सूखे चूने का एक फ़व्वारा उनपर बरस पड़ा।

"हिलो-डुलो मत! निश्चल लेटे रहो!" मेरेस्येव ने आदेश दिया और कूदकर भाग जाने की आकांक्षा—किसी भी तरफ़, जहां तक पग साथ दें दौड़ते जाने की अभिलाषा, जो रात्रिकालीन हवाई हमले के दौरान हर आदमी महसूस करता है—उसने हठात् दबा ली।

बमवर्षक दिखाई न दे रहे थे। उन्होंने जो रोशनी करनेवाले रॉकेट छोड़े थे, उनकी रोशनी के ऊपर अंधेरे में वे चक्कर काट रहे थे। लेकिन उस कांपती हुई, चकाचौंध रोशनी में बम कभी-कभी प्रकाश के क्षेत्र में काले बिंदुओं की भांति घुसे दिखाई दे जाते थे और धीरे-धीरे आकार में बड़ा रूप धारण करते हुए जमीन की तरफ़ गोता लगाते थे और पंजा की रात के अंधकार में लाल-लाल लपटें छोड़ देते थे। ऐसा लगता था कि धरती फटी जा रही है और "र-र-रिक्स! र-र-रिक्स!" करती बरस रही है।

विमान-चालक चूल्हे की छत पर समतल पड़े रहे जो हर विस्फोट के धमाके से डोल जाता था। वे अपना समूचा शरीर, कपोल और पेट छत से चिपकाये हुए थे और मानों ईंटों में घुस जाने का प्रयत्न कर रहे थे। इंजनों की धड़धड़ाहट खत्म हो गयी और तभी पैराशूट पर नीचे उतरते रोशनी करनेवाले रॉकेटों की चटचट और सड़क की दूसरी ओर जलते हुए खंडहरों में लपटों की भाय-भाय सुनाई देने लगी।

•••

"चलो, उन्होंने हमें पहला सबक दे दिया," मेरेस्येव ने अपने कपड़ों से भूसे और चूने को झाड़ते हुए कहा।

"सोनेवालों का क्या हुआ?" पेत्रोव ने अपने जबड़े के तनाव को और हिचकियों को, जो गले तक उमड़ आयी थी, रोकने का प्रयत्न करते हुए चिन्ता भाव से पूछा, "और मरीना?"

वे चूल्हे से उतर आये। मेरेस्येव के पास टार्च थी। उसके सहारे उसने फ़र्श पर बिखरे हुए तख़्तों और लट्ठों के बीच तलाश शुरू की। वहां कोई नहीं था। बाद में उन्हें पता चला कि विमान-चालकों ने हवाई हमले का अलार्म सुन लिया था और वे खाई तक भागकर पहुंचने में कामयाब हो गये थे। पेत्रोव और मेरेस्येव ने सारे खंडहर को खोज डाला, मगर उन्हें मरीना या उसकी मां का पता न चला। उन्होंने आवाज़ लगायी, मगर कोई जवाब न मिला। उनको क्या हो गया? क्या वे बचने में सफल हो गयीं?

गश्ती दस्ते व्यवस्था फिर स्थापित करते हुए सड़कों पर घूम रहे थे। सैपर आग बुझा रहे थे, खंडहरों को साफ़ कर रहे थे, मृतकों और घायलों को खोदकर निकाल रहे थे। विमान-चालकों के नाम पुकारते हुए अर्दली सड़क पर भाग-दौड़ कर रहे थे। रेजीमेंट को शीघ्र ही दूसरी जगह ले जाया जा रहा था। हवाई अड्डे पर विमान-चालक जमा किये जा रहे थे ताकि सुबह होते ही वे अपने हवाई जहाज़ लेकर निकल जायें। प्रारम्भिक गिनती से पता चला कि मृतकों की संख्या अधिक नहीं थी। एक विमान-चालक घायल हो गया था, और दो मेकैनिक और कई सन्तरी, जो हवाई हमले के समय भी ड्यूटी पर थे, मारे गये। अनुमान था कि कई ग्राम-निवासी भी मारे गये थे, लेकिन कितने, अंधेरे और गड़बड़ी की वजह से यह जानना कठिन था।

सुबह होने से पहले, हवाई अड्डे जाते हुए मेरेस्येव और पेत्रोव उस मकान के निकट रुके बिना न रह सके, जहां रात में सोये थे। लट्ठों और तख़्तों के ऊबड़-खाबड़ ढेर के बीच दो सैपर सिपाही एक स्ट्रेचर लिये जा रहे थे जिसपर खून से सनी चादर से ढका हुआ कोई लेटा था।

"कौन है वह?" पेत्रोव ने पूछा—दुर्शकाओं से उसका चेहरा पीला और दिल भारी हो गया।

स्ट्रेचरवाहकों में से एक मूंछोंवाले बुजुर्ग सैपर ने, जिसे देखकर मेरेस्येव को स्तेपान इवानोविच की याद आ गयी, विस्तार से बताया:

"एक बुढ़िया और एक लड़की। इनको पहले एक मलबे से निकाला है। वे लोग गिरती हुई ईंटों के शिकार हो गये। हम ही निकाल रहे। पता नहीं कि पोलिश लड़की है या रूसी—वह बहुत सुन्दर है। इससे ये लगता है कि वह सुन्दर रही होगी। एक ईंट उसके सीने पर लगी। वह ऐसी सुन्दर है जैसे सोया बच्चा।"

उस रात जर्मन सेनाओं ने अपना आखिरी बड़ा आक्रमण आरम्भ किया, और सोवियत फ़ौजों पर उनके हमलों से कुर्स्क का संघर्ष आरम्भ हुआ जो जर्मनों के लिए घातक सिद्ध हुआ।

३

सूर्य अभी उदय नहीं हुआ था, गर्मियों की ग्रीष्म रात्रि का यह सबसे अंधेरा प्रहर था, किन्तु हवाई अड्डे के मैदान में गर्म किये जानेवाले इंजन अभी से धड़धड़ाने लगे थे। ओस से भीगी घास पर फैले हुए नक़्शे पर कप्तान मेरेस्येव अपनी टुकड़ी के हवाबाजों को नया अड्डा और उस तक जाने का मार्ग दिखा रहा था:

"आगे सूची रखना," वह कह रहा था। एक दूसरे को ओझल न कर बैठना। हवाई अड्डा ठीक अग्रिम मोर्चे के पीछे है।"

नया अड्डा, सचमुच, युद्ध-स्थान में था, नक़्शे पर उस जगह नीली पेंसिल की रेखा खिंची थी, एक ऐसी जगह पर जिसकी नोक जर्मन सेनाओं के मोर्चे की ओर इशारा कर रही थी। उन्हें पीछे नहीं, आगे उड़ना था। विमान-चालक प्रसन्न थे। इसके बावजूद कि शत्रु ने फिर पहल की थी, सोवियत सेना पीछे हटने की नहीं, हमला करने की तैयारी कर रही थी।

जब सूर्य की पहली किरणों ने आसमान रोशन किया, जब गुलाबी कुहरा अभी भी मैदानों पर घुमड़ रहा था, तब दूसरा स्क्वाड्रन अपने कमांडर के बाद आसमान में उठा और वे एक दूसरे को दृष्टिगत रखते हुए दक्षिण की ओर बढ़ने लगे।

अपनी पहली संयुक्त उड़ान में मेरेस्येव और पेत्रोव एक दूसरे के सन्निकट रहे और इस बीच, यद्यपि यह उड़ान संक्षिप्त थी, पेत्रोव ने अपने लीडर की विश्वासपूर्ण और वास्तविक रूप में कलात्मक शैली का मूल्यांकन

कर लिया था, और मेरेस्येव ने राह में कई बार जानबूझकर तेजी से और अकस्मात मोड़ लेकर यह देख लिया था कि उसके साथी में जागरुकता, सूक्ष्म दृष्टि, सुदृढ़ स्नायविक शक्ति और—जिसे वह अत्यधिक महत्वपूर्ण समझता था—अभी विश्वासपूर्ण तो नहीं, किन्तु बढ़िया उड़ान शैली है।

नया अड्डा एक पैदल रेजीमेंट के पृष्ठ-प्रदेश में स्थित था। अगर जर्मन उसका पता पा लेते तो वे अपनी हल्की तोपें लेकर और अपने भारी मार्टर तक लेकर वहां पहुंच सकते थे। लेकिन उनके पास उस हवाई अड्डे की चिन्ता करने का समय ही नहीं था जो ठीक उनकी नाक के नीचे आ गया था। अभी अंधेरा ही था कि वे सारे तोपखाने लेकर, जिन्हें वे वसन्त भर यहां एकत्र कर रहे थे, सोवियत सेनाओं की क़िलेबन्दी पर गोलाबारी करने लगे। लाल-लाल, कांपती हुई लौ किलेबद क्षेत्र के ऊपर आसमान में ऊंची उठ गयी। विस्फोटों से हर चीज इस तरह ओझल हो जाती मानो हर क्षण काले वृक्षों का घना जंगल उग आता हो। यहां तक कि जब सूरज उग आया, तब भी अंधेरा बना रहा। उस भनभनाहट, गर्जन और अंधेरे में किसी चीज को पहचानना कठिन था, और सूर्य आसमान में धुंधली-सी मटमैली लाल पूरी की तरह लटका था।

सोवियत हवाई जहाजों ने एक महीने पहले जर्मन स्थितियों पर जो उड़ानें की थी, वे बेकार नहीं गयी थी। जर्मन कमान के इरादे स्पष्ट हो गये थे, नक़्शे पर उसकी पोजीशनों और जमाव के स्थानों को अंकित कर लिया गया था और चप्पे-चप्पे का अध्ययन किया गया था। अपनी आदत के अनुसार फ़ासिस्ट यह सोचते थे कि वे सुबह से पहले की मीठी नींद में डूबे अपने शत्रु की पीठ में पूरी शक्ति से कटार भोंक सकेंगे, लेकिन शत्रु तो सोने का बहाना मात्र कर रहा था। उसने आक्रमणकारी की बांह पकड़ ली और अपने इस्पाती, दानवी पंजे में जकड़कर उसे चकनाचूर कर दिया। इसके पहले कि दसियों किलोमीटर लम्बे मोर्चे पर उनकी तोपों की घमासान गोलाबारी शान्त हो पाती, अपनी तोपों की गरज से बहरे और अपनी स्थितियों पर छाये हुए बारुदी धुएं से अंधे हुए जर्मनों को स्वयं अपनी ही खंदकों में विस्फोट महसूस होने लगे। सोवियत तोपों का निशाना अचूक था, और उनकी गोलाबारी किसी इलाके पर नहीं होती थी जैसा कि जर्मनों ने की थी, बल्कि वे निश्चित लक्ष्यों, बैट-

हवाई जहाज पर गोली चलाने के लिए आतुर था, जिसमें शायद खोल के अंदर बैठे घोंघे की तरह वही व्यक्ति बैठा हुआ हो, जिसके बम ने उस छरहरी, सुन्दर लड़की को मार डाला था, जिसके विषय मे उसे अब ऐसा लगता था मानों उसे किसी सुन्दर स्वप्न में देखा था।

मेरेस्येव ने अपने बेचैन साथी को निहारा और अपने मन में सोचा "हम लगभग एक ही उम्र के है। वह उन्नीस वर्ष का है और मैं तेईस का। आदमी के लिए तीन-चार वर्ष का फ़र्क होता ही क्या है?" लेकिन फिर भी अपने साथी की अपेक्षा वह अपने को अनुभवी, गम्भीर और शक्ति वयोवृद्ध व्यक्ति अनुभव कर रहा था। और अब पेत्रोव अपने कॉकपिट मे उछल रहा था, खिल-खिला रहा था, हथेलिया मल रहा था, गुजरनेवाले सोवियत बममारों की ओर कुछ चिल्ला रहा था, मगर अलेक्सेई अपने सीट पर टाग फैलाये आराम से बैठा था। वह शान्त था। उसके पैर नही थे, और उसके लिए उड़ान करना दुनिया के किसी भी विमान-चालक की अपेक्षा कही अधिक कठिन था, मगर इससे भी वह विचलित नहीं हुआ। उसे अपने हुनर पर पूरा विश्वास था और अपनी पंगु टागो पर पूरा भरोसा।

"तैयारी नम्बर २" की अवस्था मे वह रेजीमेंट शाम तक रही। किसी कारण उसे सुरक्षित रखा गया था। शायद वे उसकी स्थिति को समय से पहले प्रगट नही करना चाहते थे।

रेजिमेंट को सोने के लिए वे खोहें मिली थी, जिन्हें जर्मनो ने इस स्थल पर अपने अधिकार काल मे बनाया था। उन्हें और आरामदेह बनाने के लिए उन्होंने उनकी दीवारों को अंदर से दफ़्ती और पैकिंग कागज से ढक दिया था। अभी भी दीवारों पर कामातुर चेहरोंवाली सिनेमा सुन्दरियों के चित्रों के पोस्टकार्ड और जर्मन शहरों के दृश्य लटके हुए थे।

तोपों का युद्ध जारी रहा। धरती कांप रही थी। दीवारों पर लगे कागज के ऊपर सूखी रेत बरस पड़ती थी और खड़खड़ करती थी मानो खोह मे कीडे रेंग रहे हों।

मेरेस्येव और पेत्रोव ने फ़ैसला किया कि वे बाहर बरसाती बिछाकर खुले मे सोयेंगे। हुक्म था कि वर्दी में ही सोया जाये। मेरेस्येव ने सिर्फ अपने पैरो के तस्मे ढीले कर लिये और पीठ के बल लेटकर आसमान की तरफ ताकने लगा, जो विस्फोटो की लाल कौंध में कांपता-सा लगता था। पेत्रोव फ़ौरन सो गया। और नीद मे खर्राटे भरने, बड़बड़ाने, जबडे

घराने, घोंठ चाटने लगा और सोते हुए बच्चों की तरह सुड़कने लगा। मेरेस्येव ने उसे अपने ओवरकोट से ढांप दिया। यह देखकर कि उसे नींद नहीं आनेवाली है, वह उठ बैठा, सर्दी से कांपने लगा और अपने को गर्म करने के लिए तेजी से कुछ शारीरिक व्यायाम करने लगा और एक पेड़ के ठूंठ पर बैठ गया।

तोपों का तूफान शान्त हो गया। यहां-वहां, इक्के-दुक्के, कोई तोप अकस्मात गोला उगल देती थी। कई भटके हुए गोले उड़कर हवाई अड्डे के पास ही कहीं फट पड़े। परेशान करने के लिए की जानेवाली इस गोलाबारी से अवसर कोई विचलित नहीं होता। विस्फोट का धमाका सुनकर अलेक्सेई अपनी गर्दन तक न मोड़ता था, उसकी टकटकी बंधी थी युद्ध पान की ओर। अंधेरे में वह स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर थी। अभी भी, इतनी रात गये, गहरी, अनवरत, भारी लड़ाई चल रही थी, जो सोती हुई धरती पर विस्तृत ज्वालाओं की लाल दमक के रूप में दिखाई दे रही थी जिनसे सारा क्षितिज दहक रहा था। उसके ऊपर राकेटों की कांपती हुई ज्योति कौंध जाती थी—फास्फोरस की नीली-सी जर्मन राकेटों की और पीली-सी हमारे। यहां-वहां किसी लपट की लम्बी-सी जीभ निकल आती थी जो एक क्षण के लिए धरती पर से अंधेरे का पर्दा हटा देती थी, और उसके बाद विस्फोटों की भारी कराह छूट पड़ती थी।

रात्रिकालीन बमबारों की भनभनाहट सुनाई दी और सारा मोर्चा उनकी लक्ष्यवेधी बहुरंगी गोलियों के मोतियों से दमक उठा। तेजी से चलनेवाली विमान-भंजक तोपों के गोले लहू की बूंदों की भांति ऊपर उछलने लगे। धरती फिर कांपी, कराही और चीत्कार कर उठी। भोज वृक्षों के शिखरों पर जो भौंरे मंडरा रहे थे, वे इस से विचलित नहीं हुए; जंगल में दूर कहीं कोई उल्लू आदमियों जैसी आवाज में बोल रहा था और अमंगल की भविष्यवाणी कर रहा था, किसी झाड़ी में कहीं खोखले स्थल पर दिन के अपने भय से मुक्त होकर कोई बुलबुल पहले तो कुछ हिचक के साथ, जैसे अपने कण्ठ को परख रही हो, और फिर पूरे कण्ठ से चहकने-गाने लगी मानो उसका हृदय अपने संगीत के स्वरों से फूट ही पड़ेगा। उसके गीत को अन्य स्वरों ने पकड़ लिया और शीघ्र ही यह सारा जंगल जो अब युद्ध-थान में आ गया था, सभी दिशाओं से आनेवाले मधुर संगीत से भर गया। कोई आश्चर्य नहीं, कूर्स्क की बुलबुलें सारी दुनिया में प्रसिद्ध हैं।

श्रौर श्रब वे श्रपने गीत से सारे श्रासमान को गुंजाने लगीं। श्रलेक्सेइ – जिसे श्रगले दिन परीक्षा देनी थी, किसी कमीशन को नहीं, स्वयं मौत को देनी थी – बुलबुलों के इस समवेत गान के कारण सो नहीं सका। श्रौर उसके विचार न तो कल की बातों में, न भावी युद्धों में, न मारे जाने की सम्भावनाश्रों में डूबे थे, बल्कि उस दूरवासी बुलबुल की श्रोर लगे हुए थे जिसने कमीशिन के उपनगर में उनके लिए गीत गाया था, उनकी 'श्रपनी' बुलबुल की श्रोर, श्रोल्गा की श्रोर, श्रपने जन्म के क़स्बे की श्रोर।

पूर्वी श्राकाश पीला पड़ चला। धीरे-धीरे बुलबुलों का संगीत तोपों की गरज में डूब गया। रण-क्षेत्र के ऊपर सूर्य उदय हुश्रा – बड़ा भारी, लाल श्ररुण – जो गोलाबारी श्रौर विस्फोट के धुएं को मुश्किल से वेध पा रहा था।

४

कूर्स्क का युद्ध निर्बाध रूप से छिड़ गया। जर्मनों की श्रसली योजना यह थी कि टैंक सेनाश्रों के तीव्र श्रौर शक्तिशाली प्रहार से कूर्स्क के उत्तर श्रौर दक्षिण में हमारी किलेबन्दियों को चकनाचूर कर दें, श्रौर कैंची की कार्रवाई के द्वारा सोवियत सेना के सारे कूर्स्क दल को घेर लें श्रौर वहां 'जर्मन स्तालिनग्राद' बना दें। लेकिन रक्षा-पांत की सुदृढ़ता के कारण यह मंसूबा श्रसफल रहा। कुछ दिनों बाद जर्मन कमान यह समझ गयी कि इस रक्षा-पांत को वे न तोड पायेंगे, श्रौर श्रगर इसमें सफल भी हो गये, तो इस प्रयत्न में उन्हें इतनी भारी क्षति उठानी पड़ेगी कि घेरा कसने के लिए उनके पास काफ़ी शक्ति न बची रहेगी, मगर सारी कार्रवाई रोकने का श्रब समय नहीं रहा था। हिटलर ने इस युद्ध पर बड़ी श्राशायें – रणनीतिक, कार्यनीतिक श्रौर राजनीतिक श्राशायें – लगा रखी थीं। पहाड़ पर से बर्फ़ की चट्टान छोड़ दी गयी। वह ढलान पर श्रधिकाधिक वेग से लुढ़कती श्रौर राह में जो कुछ भी मिला उसे श्रपने साथ लेती श्रौर कुचलती चली गयी, जिन लोगों ने उसे छोड़ा था, श्रब उनमें उसे रोकने की शक्ति न थी। जर्मन श्रपनी प्रगति किलोमीटरों में नापते थे श्रौर उन्हें श्रपनी क्षति कई डिवीजनों, कोरों, सैंकड़ों टैंकों तथा तोपों श्रौर हज़ारों ट्रकों के रूप में गिननी पड़ती थी। बढ़ती हुई सेनायें लहू-लुहान हो रही थीं

रेल पटरी पर तेज़ी से चोटें पड़ती सुनाई दीं, जो विमान-चालकों को उनके वायुयानों पर उपस्थित होने के लिए बुला रही थी।

मेरेस्येव ने दोनों पत्रों को अपने कोट में सरका दिया और फ़ौरन उनकी सुधि भूलकर जंगल की उस पगडंडी पर पेत्रोव के पीछे-पीछे दौड़ पड़ा, जो उस स्थल की ओर जाती थी जहां विमान खड़े थे। छड़ी टेकते हुए वह काफ़ी तेज़ दौड़ा और कुछ लंगड़ाता जान पड़ा। जब वह विमान के पास पहुंचा तो इंजन का ढक्कन हटाया जा चुका था और एक चेचकरू मज़ाक़-पसंद लड़का जो मेकेनिक था उसकी अधीरता से प्रतीक्षा कर रहा था।

एक इंजन गरज उठा। मेरेस्येव "नम्बर ६:" को देखने लगा जिसे स्क्वाड्रन का कमांडर स्वयं उड़ानेवाला था। कप्तान चेस्लोव अपने विमान को चलाता हुआ खुले मैदान में ले गया। उसने अपना हाथ उठाया—इसका अर्थ था "तैयार!" अन्य इंजन भी गरज उठे। विमानों के पंखों से उठा बवंडर घास को जमीन तक नवाने लगा और भोज वृक्षों के हरे गुच्छों को इस तरह झकझोरने लगा कि ऐसा लगता था मानो वे टूटकर पेड़ों से अलग होने के लिए तड़प रहे हैं।

अलेक्सेई जब अपने विमान की ओर दौड़ा जा रहा था, तब एक अन्य विमान-चालक उसके पास से गुज़रा, जो चिल्लाकर उसे बताता गया कि टैंक प्रत्याक्रमण करने जा रहे हैं। इसका अर्थ था कि लड़ाकू विमानों का काम यह था कि वे शत्रु की चकनाचूर किलेबंदी पार करके बढ़नेवाले टैंकों को झाड़ दें और बढ़ती सेनाओं के लिए वायुक्षेत्र साफ़ रखें और उसकी सुरक्षा करें। वायुक्षेत्र की रक्षा करें? इसमें क्या था? इस प्रकार के भीषण युद्ध में इसका अर्थ शान्तिपूर्ण उड़ान नहीं हो सकता। उसे विश्वास था कि देर-सवेर आसमान में शत्रु से मुठभेड़ अवश्य होगी। अब परीक्षा थी। अब वह सिद्ध कर देगा कि वह किसी विमान-चालक से कम नहीं है और उसने अपना लक्ष्य प्राप्त कर लिया है।

अलेक्सेई का दिल बेचैन हो रहा था, मगर इसलिए नहीं कि वह मरने से डरता था; ख़तरे की उस भावना से भी नहीं, जो वीरतम और धीरतम पुरुष तक को प्रभावित करती है। उसे कुछ और ही चिन्ता थी. क्या शस्त्रनिरीक्षकों ने मशीनगनों और तोपों की परीक्षा कर ली है? क्या उसके नये हैलमट के हेडफ़ोन ठीक हैं जिन्हें उसने अभी तक युद्ध में नहीं पहना था? अगर शत्रु से मुठभेड़ हो गयी तो पेत्रोव पीछे तो नहीं रह जायेगा या

वह बहुत जल्दबाजी से कार्यवाही तो न करेगा? छड़ी कहां है? वह बर्ने-लो वर्सालेविच की भेंट को खोना नहीं चाहता और उसे यहां तक चिन्ता हुई कि खोह में वह जो पुस्तक छोड़ आया है—एक उपन्यास, जिसे उसने पिछले दिन अत्यन्त मर्मस्पर्शी स्थल तक पढ़ लिया था और जिसे जल्दी में मेज पर छोड़ आया था—उसपर कोई हाथ न मार दे। उसे याद था कि उसने पेत्रोव से विदाई भी नहीं ली है, इसलिए उसकी तरफ उसने अपने कॉकपिट में हाथ हिलाया। मगर पेत्रोव ने उसे देखा भी नहीं। चमड़े के हेलमेट से घिरे हुए उसके चेहरे पर दागों-सी लालिमा बिखरी हुई थी। वह कमांडर के उठे हुए हाथ को अधीरता से ताक रहा था। हाथ झुक गया। कॉकपिट के ढक्कन बंद कर दिये गये।

स्टार्ट की रेखा पर खड़े तीन विमानों के पहले दल ने फर्राटे भरकर दौड़ना शुरू किया, उसके पीछे दूसरे दल ने दौड़ शुरू की और तीसरा भी चलने लगा। आगेवाले विमान हवा में तैरने लगे, उनके पीछे-पीछे मेसेरश्मिट का दल दौड़ने लगा। डोलती सपाट धरती नीचे छूट गयी। मेसे-रश्मिट पहले तीन विमानों के दल के पीछे-पीछे उड़ने लगा। उसके पीछे-पीछे तीसरा दल आ रहा था।

वे आगे की पांत तक पहुंच गये। खोहों से छिद्रित और ध्वस्त धरती धुंधलके में ऐसी दिखाई दे रही थी मानो पहली मूसलाधार वर्षा के बाद की कच्ची रेत-भरी सड़क हो। ध्वस्त खाइयां, फुंसियों जैसी दिखाई देने-वाले बंकर और छिन्न-भिन्न [illegible] ड्रम और ईंटों के ढेर मग्न पड़ गये थे। भारी ऊबड़-खाबड़ घाटी में नीली चिनगारियां उछल पड़ती थीं और बुझ जाती थीं। यह उस घनघोर युद्ध की आग थी, जो नीचे छिड़ा हुआ था। वह सब ऊपर से नन्हा, खिलौने जैसा और रंगीन जान पड़ता था। [illegible] कोई विश्वास कर पाता कि नीचे हर चीज जल रही है, [illegible] रही है, [illegible] रही है और विकृत धरती पर धुएं और कालिख के बीच [illegible] घूम रही है और [illegible] फाड़ रही है।

[illegible] अगली पांत को पार किया, शत्रु के पृष्ठभाग पर [illegible] चक्कर लगाया और फिर पृष्ठभाग पार कर लौट आये। किसी ने उन पर [illegible] न चलाया। [illegible] के [illegible] आते ही [illegible] के [illegible] कि [illegible] की [illegible] की तरह [illegible] देखा था [illegible] था। [illegible] ठीक कहां है? आहा! वो रहे! [illegible] एक के पीछे एक, [illegible]

था, उसपर उसने नज़र बांध सी और दोनों अंगूठे घोड़ों पर जमाये हुए वह उसपर टूट पड़ा। मटमैली, रोयेंदार डोरों जैसी रेखाएं उसके पास से गुज़र गयी। आहा! वे लोग गोलियां चला रहे हैं। चूक गये। फिर सही। इस बार नज़दीक से। कोई क्षति नही। पेत्रोव का क्या हाल है? उसे भी चोट नही लगी। वह बायी तरफ है। खूब चक्कर दिया है उन्हें! शाबाश, छोकरे! जर्मन विमान की मटमैली बाज़ू उसके लक्षक मे बड़ी होने लगी। उसके अंगूठों ने अलुमीनम के घोड़ो की ठडक महसूस की। थोड़ा और क़रीब पहुंच जाओ...

यह क्षण था जब अलेक्सेई ने महसूस किया कि वह अपने विमान से पूरी तरह एक हो गया है। वह इंजन का प्रकम्पन इस तरह अनुभव करने लगा मानो वह उसके वक्ष की ही धड़कन हो, पंखों और पीछे के रडरो की संवेदना वह रोम-रोम मे महसूस कर रहा था, और उसे ऐसा लगने लगा मानो वेढब, कृत्रिम पैरों में संवेदनशीलता पैदा हो गयी हो और वे भयंकर तीव्र गति से चलते हुए विमान से अपने को एकाकार करने मे बाधक नही बन रहे थे। फ़ासिस्ट विमान का भारी चमकीला ढाचा उसके लक्षक से ओझल हो गया, मगर उसने उसे फिर पकड़ लिया। वह सीधा उसपर झपटा और घोड़ा दबा दिया। उसने गोली दगने की आवाज़ नही सुनी, अन्वेषी गोलियो के तार तक को वह नही देख सका, लेकिन वह जान गया था कि उसका निशाना बैठ गया है और इस विश्वास के साथ कि उसका शिकार गिर गया है और उसका विमान अब उससे नही टकरा सकता, वह अपना विमान सीधी दिशा मे उड़ाये चला गया। अपनी दिशा से नज़रें हटाकर देखने पर उसे पहले बममार के करीब ही दूसरा बममार भी गिरता नज़र आया। क्या उसने दो बममारों को गिरा दिया? नही। यह पेत्रोव की कारगुज़ारी थी। वह दाहिनी तरफ था। नौसिखिये के लिए यह शानदार कामयाबी है! उसे अपने युवा मित्र की सफलता पर अपनी सफलता से अधिक आनन्द मिला।

जर्मन पातवन्दी की दरार के बीच से दूसरा दल भी गुज़र गया। और तभी मज़ेदार घटना घटी। जर्मन विमानो की दूसरी लहर ने, जिसे सम्भवत: कम अनुभवी विमान-चालक चला रहे थे, अपनी पात तोड़ दी। चेस्लोव दल के विमान इन बिखरे हुए 'जंकर्सों' के बीच घुस गये, उनका पीछा करने लगे और उन्हें इस बात के लिए विवश कर दिया कि वे अपनी ही 'पोज़ीशनो पर अपने बम गिरा दें। अपनी चाल निर्धारित

करते समय कप्तान चेम्नोव ने यही हिसाब-किताब लगाया था कि शत्रु को अपनी ही किलेबन्दी पर बम गिराने के लिए मजबूर किया जाये। सूरज को पीठ पीछे करना ही उसका मुख्य उद्देश्य नहीं था।

फिर भी जर्मन विमानों की पहली लहर ने अपनी पातवंदी फिर कर ली और 'जवर्म' उस स्थान की तरफ़ बढ़ने गये जहां टैंकों ने मोर्चा बेध दिया था। तीसरे दल का हमला असफल रहा। जर्मनों ने एक भी विमान नहीं खोया, उल्टे एक लड़ाकू विमान ग़ायब हो गया जो जर्मन तोपची का निशाना बन गया था। वे लोग उस स्थान के निकट पहुंचते जा रहे थे जहां टैंकों को अपना हमला करना था, और अपने विमानों को ऊंचाई पर ले जाने का समय नहीं था। चेम्नोव ने नीचे ही से हमला करके खतरा मोल लेने का फ़ैसला किया। अलेक्सेई ने मन-ही-मन इसका समर्थन किया। वह स्वयं इस बात के लिए उत्सुक था कि शत्रु के पेट में 'चोट' करने के लिए नीचे से सीधे ऊपर हमला कर सकने की जो क्षमता 'ला-५' विमानों में है, उसका लाभ उठाया जाये। पहला दल ऊपर की तरफ़ धावा कर रहा था और फ़व्वारे की भांति गोलियां छोड़ रहा था। फ़ौरन दो जर्मन विमान पास से गिर गये। उनमें से शायद एक के दो खण्ड हो गये होंगे, क्योंकि वह यकायक फट गया और उसकी दुम मेरेस्येव के विमान से टकराते बाल-बाल बची।

"आखें खुली रख!" मेरेस्येव चिल्लाया और पेत्रोव के विमान पर कनखियों से नज़र डालकर उसने अपने विमान की जॉयस्टिक अपनी ओर खींच ली।

धरती उलट गयी। अलेक्सेई अपनी सीट पर इस तरह गिर पड़ा मानों उसपर भारी चोट की गयी हो। उसने अपने मुंह और होंठों पर खून का स्वाद महसूस किया, उसकी आंखों के सामने लाल धुंध छा गयी। उसका विमान लगभग सीधे खड़ा तेज़ी से ऊपर झपटा। अपनी सीट पर पीठ से टिके बैठे-बैठे उसकी आंखों के सामने एक 'जवर्म' का धारीदार पेट, उसके मोटे-मोटे पहियों के विचित्र-से ढक्कन और उनपर चिपके हुए हवाई अड्डे की मिट्टी के लौंदे तक कौंध गये।

उसने घोड़े दबा दिये। उसने शत्रु के विमान में वहां निशाना मारा—पेट्रोल की टंकी में, इजन में या बम रखने के स्थान पर—यह वह न जान सका, मगर शत्रु का हवाई जहाज़ विस्फोट के भूरे धुएं में तत्क्षण विलीन हो गया।

विस्फोट के झोंके से मेरेस्येव का विमान एक तरफ उछल गया और वह एक अग्नि-पुंज के पास से गुज़र गया। वह अपने विमान को सतह पर ले आया और आसमान की छानबीन करने लगा। उसका साथी दायीं तरफ़ था—अनन्त नीलिमा में सफ़ेद बादलों के सागर पर तैरता हुआ, और ये बादल साबुन के बुलबुलों-बगूलों जैसे लग रहे थे। आसमान वीरान था, सिर्फ़ क्षितिज पर, सुदूर बादलों की पृष्ठ-भूमि में छोटे-छोटे बिंदु दृष्टिगोचर हो रहे थे—वे 'जर्कर्स' विमान थे जो विभिन्न दिशाओं में बिखर गये थे। अलेक्सेई ने घड़ी देखी और चकित रह गया। उसे ऐसा लग रहा था कि युद्ध कम-से-कम आधे घंटे चला होगा और उसका पेट्रोल खत्म हो गया होगा, लेकिन घड़ी से पता चला कि वह सिर्फ़ साढ़े तीन मिनट चला था।

"ज़िन्दा हो?" उसने अपने साथी की ओर देखकर पूछा, जो "रेंगकर" आगे निकल आया था और अब उसके बराबर उड़ रहा था।

अपने हेडफ़ोन में खड़-खड़ के बीच उसे दूरागत, हर्षित स्वर सुनाई दिया:

"ज़िन्दा हूँ... नीचे... नीचे देखो..."

नीचे एक ध्वस्त, कटी-फटी पहाड़ी घाटी में कई स्थानों पर पेट्रोल की टंकियाँ जल रही थीं और शान्त हवा में घने धुएं के बादल खम्भों की भांति ऊंचे उठ रहे थे। लेकिन अलेक्सेई शत्रु के जलते हुए विमानों के अवशेषों को नहीं देख रहा था। उसकी आंखें मटमैले हरे गुबरैलों पर जमी हुई थीं जो बड़ी तादाद में मैदान पार करते भागे चले जा रहे थे। वे दो घाटियों के किनारे-किनारे रेंगते शत्रु की पोज़ीशनों तक पहुंच गये थे और उनमें से आगे के टैंक खाइयां पार कर चुके थे। अपनी छोटी-छोटी सूंडों से लाल चिनगारियां उगलते हुए वे शत्रु की किलेबन्दी की पांत को तोड़कर घुस गये और अधिकाधिक आगे बढ़ते गये—हालांकि उनके पीछे के क्षेत्र में अभी भी गोले कौंध जाते थे और जर्मन तोपों से निकलता हुआ धुआं दिखाई दे रहा था।

मेरेस्येव जानता था कि शत्रु की चकनाचूर पोज़ीशनों की गहराई में इन सैकड़ों गुबरैलों के पहुंच जाने का क्या मतलब है।

वह ऐसा दृश्य देख रहा था जिसके बारे में अगले दिन सोवियत जनता ने और सभी स्वतन्त्राप्रेमी देशों की जनता ने बड़े आनन्द और गर्व से पढ़ा। कूर्स्क क्षेत्र के एक भाग में सेना ने दो घंटे के भयंकर तोप-युद्ध के

"...ठीक मेरी ही बगल में वे थे, बस एक हाथ की दूरी होगी... तो, सुनो... मैंने सीनियर लेफ़्टीनेंट को आगेवाले पर निशाना साधते देखा। उसके बगलवाले पर मेरी नज़र पड़ी। बस, बैंग!"

वह दौड़कर मेरेस्येव के पास पहुंचा, उसके पैरों के पास नर्म, मखमली घास पर लुढ़क गया और लेट गया, लेकिन इस आरामदेह स्थिति में भी वह पड़ा न रह सका; वह उछल पड़ा और बोला:

"आपने तो आज कमाल की कलाबाज़ियां दिखायीं! शानदार! मेरा तो दम रुक गया था... पता है, मैंने उसको कैसे मार गिराया था? आप सुनिये तो... मैं आपके पीछे-पीछे चलता गया और उसे ठीक अपनी बगल में देखा, इतने ही पास जैसे कि अभी आप बैठे हैं..."

"एक मिनट ठहरो, बुढ़ऊ," अलेक्सेई ने टोका और जेबें टटोलीं, "वह चिट्ठियां! उन चिट्ठियों का मैंने क्या किया?"

उसे उन पत्रों की याद हो आयी जो उसी दिन प्राप्त हुए थे और जिन्हें पढ़ने का समय न मिला था। उसका सारा शरीर ठंडे पसीने से नहा गया जब उन पत्रों को वह जेबों में न पा सका। उसने अपना हाथ कोट के अन्दर डाला, लिफ़ाफ़ों के खड़खड़ाने की ध्वनि सुनी और चैन की सांस ली। उसने ओल्गा का पत्र निकाला और अपने उत्साही युवा मित्र की कथा की अनसुनी करके लिफ़ाफ़े को एक तरफ़ से फाड़कर खोलने लगा।

तभी एक सिगनल रॉकेट के छूटने की आवाज़ सुनाई पड़ी। आसमान में लाल ज्वाला का सांप लहराने लगा, हवाई अड्डे पर उसने चक्कर लगाया और एक स्याह, धीरे-धीरे घुलती हुई रेखा छोड़कर गायब हो गया। विमान-चालक उछलकर खड़े हो गये। अलेक्सेई ने पत्र का एक शब्द भी पढ़े बिना उसे अपने कोट में खिसका दिया। लिफ़ाफ़ा खोलते समय उसने पत्र के अलावा कोई सख़्त चीज़ भी रखी महसूस की थी। अब सुपरिचित दिशा में अपने दल के आगे-आगे उड़ते हुए, उसने कई बार लिफ़ाफ़े को छुआ और कल्पना करने लगा कि क्या हो सकता है।

जिस दिन टैंक सेना ने शत्रु की पांतों को तोड़ा, उस दिन से गार्ड लड़ाकू विमान रेजीमेंट के लिए–जिसमें अलेक्सेई सेवा कर रहा था–अत्यन्त व्यस्त काल का प्रारम्भ हुआ। टूटे मोर्चे के क्षेत्र के ऊपर स्क्वाड्रन के बाद स्क्वाड्रन जाता था। युद्ध से लौटने के बाद एक उतरा कि दूसरा आसमान में पहुंच गया, और पेट्रोल के ट्रक उन विमानों की तरफ़ दौड़

पड़ते थे, जो अभी लौटे ही थे। खाली टंकियों में पेट्रोल बडी उदारता से उंडेला जाता था। गर्म इंजनों के ऊपर ऐसी कांपती हुई भाप नजर आती थी जैसी तप्त ग्रीष्म की वर्षा के बाद खेतों से उठती है। विमान-चालक भोजन तक के लिए अपने कॉकपिट से बाहर नहीं आते थे। मनु-मीनम के कटोरदानों में भोजन वहीं ले आया जाता था। लेकिन खाने में किसी को रुचि न थी, खाना उनके गले में अटकने लगता था।

जब कप्तान चेस्लोव का स्क्वाड्रन फिर उतरा और जंगल की छाया में विमानों में फिर पेट्रोल भरा जाने लगा तो मेरेस्येव एक आनन्ददायक, टीस-सी पैदा करनेवाली थकान को अनुभव करता, अपने कॉकपिट में मुस्कराता हुआ बैठा रहा; वह अधीरता से आसमान की ओर देखता और पेट्रोल भरनेवालों को जल्दी करने के लिए कहता जाता। वह फिर आसमान में पहुंच जाने और अपनी परीक्षा करने के लिए व्याकुल था। वह बार-बार अपना हाथ कोट के अन्दर डाल लेता और खड़खड़ाते लिफाफे को टटोल लेता, मगर इस स्थिति में पढ़ने को उसका जी न हुआ।

केवल शाम को, जब अंधेरे ने सेना की चढ़ाई के क्षेत्र को ढक दिया, तब विमान-चालकों को छुट्टी मिली। मेरेस्येव अपने निवास-स्थान तक जंगल की उस छोटी-सी पगडंडी से नहीं गया, जिससे वह अक्सर जाता था, बल्कि उसने घास-पात से ढके मैदान से जानेवाला लम्बा रास्ता पकड़ा। अनन्त प्रतीत होनेवाले इस दिन के क्षण-क्षण परिवर्तित इतने अनुभवों के बाद, इतने कोलाहल और खींचतान के बाद अब वह अपने विचारों को केन्द्रित करना चाहता था।

बडी स्वच्छ शाम थी—सौरभपूर्ण और इतनी शान्त कि सुदूर गोलाबारी की गड़गड़ाहट अब किसी युद्ध का शोर नहीं, कहीं दूर बादलों की गरज जैसी लग रही थी। यह रास्ता एक ऐसे मैदान में होकर जाता था जो पहले 'राई' का खेत रहा होगा। उदास-सी घास-पात जो साधारण मानवीय संसार में किसी अहाते के कोने में या खेत के किनारे पत्थरों के ढेर पर थोरी-थोरी अपने नाजुक डंठलों को ऊंचा उठाती है—ऐसी जगहों पर जहां उसके स्वामी की नजरें मुश्किल से पहुंच पाती हैं—यहीं एक ठोस दीवार की भांति, भारी-भरकम, उद्दंड और शक्तिशाली रूप में यहां खड़ी थी और उस धरती पर हावी हो गयी थी जिसे मेहनतकशों की पीढ़ियों ने अपना खून-पसीना एक कर उर्वरा बनाया था। सिर्फ यहां-वहां अपनी 'राई' की पतली-सी बालें दिखाई दे रही थीं। घास-पात ने मिट्टी का

था, और शाम को मेकेनिकों के साथ तेल सने इंजनों पर झुका रहता था। वह आम तौर पर नीली डंगरी पहनता था और सिर्फ़ उसके रोबदार चेहरे और वायुसेना की उसकी चुस्त, नयी टोपी से ही उसमें और उन कामकाजी तेल सने मिस्त्रियों में भेद किया जा सकता था।

मेरेस्येव अभी भी छड़ी से ज़मीन कुरेदता किंकर्तव्यविमूढ़ खड़ा था। कर्नल ने उसके कंधे पर हाथ रखा और कहा:

"ज़रा देखूँ तो तुम्हारा चेहरा। हूंह, लानत है शैतान पर! कोई ख़ास बात नहीं! मैं अब इक़बाल करता हूं: जब तुम हमारे यहां आये थे, तब तुम्हारे बारे में सेना के हेडक्वार्टर पर जो कुछ कहा जा रहा था, उस सबके बावजूद मैंने यक़ीन नहीं किया था कि तुम लड़ाई के क़ाबिल हो। फिर भी तुम ख़ूब निकले! और कैसे!.. यह है हमारी माता रूस का चमत्कार! बधाई हो! मैं तुम्हें बधाई देता हूं और सराहना करता हूं। 'बाग़ीपुरी' की तरफ़ जा रहे हो? चढ़ आओ, मैं तुम्हें पहुंचा दूंगा।"

जीप सपाटी और मैदान की सड़क पर पूरी रफ़्तार से चल पड़ी—मोड़ों पर पागलों की तरह लड़खड़ाती हुई।

"मुझे बताना, शायद तुम्हें किसी चीज़ की ज़रूरत हो या किसी तरह की तकलीफ़ हो? मदद लेने में न हिचकना, तुम इसके हक़दार हो," कर्नल ने झाड़ियों के बीच और 'खाइयों' के बीच—अपने क्वार्टरों को विमान-चालकों ने यही नाम दे रखा था—होशियारी से कार चलाते हुए कहा।

"मुझे किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं है, कामरेड कर्नल। मैं दूसरों से किसी भांति भिन्न नहीं हूं। अच्छा हो, अगर लोग यह भूल जायें कि मेरे पैर नहीं हैं," मेरेस्येव ने जवाब दिया।

"हां, तुम ठीक कहते हो। तुम कहां रहते हो? इसमें?"

कर्नल ने खाई के द्वार पर यकायक गाड़ी रोक दी और मेरेस्येव उतर ही पाया था कि जीप चीड़ और बबूल वृक्षों के बीच झाड़ीदार वन में अगम्य पार करती उड़ गयी।

अलेक्सेई खाई में न गया, बल्कि एक चीड़ वृक्ष के नीचे मखमली, कुकुरमुत्ते के रंग में मुरझाई घास पर लेट गया और सावधानी से जैकेट के अन्दर से ओल्गा का पत्र निकाला। एक फ़ोटोचित्र उसमें से निकलकर घास पर गिर पड़ा। अलेक्सेई ने उसे जल्दी से उठा लिया, उसका चित्र घुटनों पर रख ध्यान के साथ देखने लगा।

फ़ोटो से एक सुपरिचित और फिर भी लगभग अनपहचाना मुखड़ा उसकी ओर झांक उठा। वह ओोल्या थी फ़ौजी वर्दी में: कोट, पेटी, परतला, लाल झण्डे का पदक और गार्ड बैज तक—और यह सब उसपर कितना फब रहा था। वह अफ़सरों की वर्दी में एक दुबले-पतले, सुन्दर लड़के की भांति दिखाई दे रही थी। सिर्फ़ यह कि इस लड़के का चेहरा थका हुआ था और उसकी बड़ी-बड़ी गोल, चमकदार आंखों में यौवनहीन मर्मबेधक भाव था।

अलेक्सेई उन आंखों की ओर बड़ी देर तक टकटकी बांधे देखता रहा। उसके हृदय में वही अवर्णनीय मधुर वेदना भर गयी जो सांझ को किसी परमप्रिय गीत की दूरागत स्वर-लहरी सुनकर उत्पन्न हो जाती है। अपनी जेब में उसे ओोल्या का पुराना फ़ोटो भी मिल गया जिस में वह सफ़ेद, तारों जैसे बाबूनों के बीच पुष्पाच्छादित कुंज की पृष्ठ-भूमि में छींट की फ़्राक पहने हुए बैठी थी। यह बात विचित्र ही है कि यह वर्दीधारी थकी हुई लड़की, जिसे उसने कभी नहीं देखा था, उसको उस लड़की से अधिक प्रिय प्रतीत हुई जिससे वह परिचित था। नये फ़ोटो के पीछे लिखा था: "भुलाना नहीं।"

पत्र संक्षिप्त और उल्लासपूर्ण था। यह लड़की अब सैपर सैनिकों की प्लैटून की कमांडर थी—सिर्फ़ यह कि यह प्लैटून युद्ध में नहीं, शान्तिपूर्ण कार्य में लगी हुई थी, वह स्तालिनग्राद के पुनर्निर्माण में भाग ले रही थी। उसने स्वयं अपने बारे में बहुत कम लिखा था, लेकिन उस महान नगर के विषय में, उसकी पुनर्निर्मित इमारतों के विषय में, उस नगर का निर्माण करने के लिए देश के विभिन्न भागों से जो महिलाएं, युवतियां और युवक आये थे और तहख़ानों में, लड़ाई के बाद वीरान पड़े हुए रक्षा-स्थलों पर, खोटों और रेलवे के डिब्बों, लकड़ी की झोपड़ियों और खोहों में रह रहे थे, उनके बारे में लिखते हुए वह फूली नहीं समा रही थी। उसने लिखा था; लोग कह रहे हैं कि जो भी निर्माण-कार्य अच्छा करेगा, उसे इस पुनर्निर्मित नगर में रहने के लिए फ्लैट दिया जायेगा। अगर यह सब निकला तो अलेक्सेई यह विश्वास रखे कि युद्ध के बाद एक विश्राम-स्थल अवश्य प्राप्त होगा।

सांझ की रोशनी थोड़ी ही देर रही, जैसा कि ग्रीष्म काल में होता है। अलेक्सेई ने पत्र की आख़िरी पंक्तियां अपनी टार्च की रोशनी में पढ़ीं। जब वह पढ़ चुका तो उसने रोशनी की एक किरण उस फ़ोटो पर डाली।

सिपाही लड़के की दृष्टि में निश्चलता और गम्भीरता थी। "प्रिये, तुम्हें कितने कठिन दिन देखने पड़ रहे हैं... युद्ध ने तुम्हें भी नहीं छोड़ा, लेकिन उसने तुम्हें नहीं तोड़ा। क्या तुम इंतजार कर रही हो? इंतजार करना, इंतजार करती रहना, मैं आऊगा। तुम मुझे प्यार करती हो? तुम प्यार किये जाना, प्रिये!" और यकायक अलेक्सेई को बड़ी शर्मिन्दगी महसूस हुई कि वह पूरे अठारह महीने तक उसमें, एक स्वाभिमानी वीरांगना में उस विरक्ति को छिपाता आया जो उसपर टूट पड़ी थी। उसने यह प्रेरणा अनुभव की कि वह तुरंत खोह में जाये और फ़ौरन बड़ी ईमानदारी से और दिल खोलकर सब बातें लिख दे—ताकि वह शीघ्र ही दो टूक फ़ैसला कर ले, जितना जल्दी हो उतना ही अच्छा। जब हर बात निश्चित हो जाये, तो दोनों को ही राहत मिलेगी।

उस दिन की सफलता के बाद वह उसमें समानता के स्तर पर बात कर सकता था। वह अब न सिर्फ़ उड़ान कर रहा था, बल्कि लड़ भी रहा था। क्या उसने यही संकल्प नहीं किया था कि वह उसे सब बातें तभी बतायेगा जब या तो उसकी आशाएं धूल में मिल जायेंगी या वह युद्ध-क्षेत्र में सबके समान स्थान प्राप्त कर लेगा? अब उसका प्रण पूरा हो गया है। जिन दो वायुयानों को उसने मार गिराया था, वे झाड़ियों में गिरे थे और सबकी आंखों के सामने जलते रहे थे। स्टाफ़ अफ़सर ने इसे रेजीमेंट के रोजनामचे में दर्ज कर लिया था और उसकी रिपोर्ट डिवीजन के और फ़ौजी हेडक्वार्टर के कार्यालयों तथा मास्को को भेजी जा चुकी है।

यह सब सच था। उसका प्रण पूरा हो गया था और अब वह इसके बारे में लिख सकता है। लेकिन सोचो तो, लड़ाकू विमान से मोर्चा लेने में 'जंकर्स' जैसे विमान क्या बराबरी कर सकते हैं? असली बढ़िया शिकारी क्या इसी को अपने हुनर का सबूत मानेगा कि उसने एक खरगोश मार लिया है?

जंगल में गर्म, नम रात और भी अंधेरी हो गयी। अब चूंकि युद्ध की गरज दक्षिण की ओर हट गयी थी, वृक्षों की शाखाओं में से दूर के अग्निकाण्ड अब मुश्किल से ही दृष्टिगोचर होते थे, इसलिए ग्रीष्म के सुगन्धित, शानदार जंगल के समस्त निशा स्वर स्पष्ट रूप से सुनाई देने लगे थे: वन के किनारे झींगुरों की तीव्र झंकार, पास के दलदल में सैकड़ों मेढकों की आकण्ठ टर्र-टर्र, किसी पक्षी की तीखी चीख और इन सबके

के दस्तों को सुदृढ़ छत्रछाया देने का आदेश मिला था जिन्होंने उस रात टूटे मोर्चे की दरार में से होकर टैंकों के पीछे बढ़ना शुरू कर दिया था।

'रिख़्तगोफ़ेन!' अनुभवी विमान-चालक इस नाम से भली भाँति परिचित थे और जानते थे कि इसे जर्मन वायुसेना मन्त्री गोयरिंग का विशेष संरक्षण प्राप्त था। जहाँ कहीं भी जर्मनों की सेनाएँ दबने लगती थीं, वे इन विमानों को ले आते थे। इस डिवीजन के हवाबाज, जिनमें से कुछ ने स्पेन में डाकेजनी जैसी कार्रवाइयों का संचालन किया था, बड़े भयंकर और होशियार लड़ाकू माने जाते थे और खतरनाक शत्रु के रूप में कुख्यात थे।

"लोग कह रहे हैं कि हमारे खिलाफ़ कोई 'रिख़्तगोफ़ेन' भेजे जा रहे हैं। ही-ही! उम्मीद है, उनसे जल्दी मुठभेड़ होगी! हम उनको, 'रिख़्तगोफ़ेन' को मजा चखा देंगे।" पेत्रोव ने मैस में जल्दी-जल्दी भोजन निगलते हुए कहा और खुली खिड़की की तरफ़ नजर डालता रहा, जहाँ वेट्रेस राया मैदानी फूलों के गुच्छे जमा कर रही थी और उन्हें गोलों के खोलों में सजा रही थी, जिनपर खड़िया से इतनी पालिश की गयी थी कि वे चमक रहे थे।

कहने की आवश्यकता नहीं कि 'रिख़्तगोफ़ेनों' के खिलाफ़ यह तिरस्कार का भाव अलेक्सेई के लाभ के लिए नहीं प्रगट किया गया था, जो इस समय कॉफ़ी खत्म कर रहा था, बल्कि इसका निशाना थी वह लड़की जो फूलों में मग्न थी और जब-तब इस खूबसूरत, गुलाबी गालोंवाले पेत्रोव की ओर कनखियों से ताकती जा रही थी। मेरेस्येव उन्हें दार्शनिक भाव से मुसकराता हुआ देखता रहा, लेकिन जब कोई गम्भीर बात हो तो उसके विषय में हंसी-मजाक की बातें उसे पसन्द नहीं थीं।

"'रिख़्तगोफ़ेन'-'कोई' नहीं," वह बोला, "और 'रिख़्तगोफ़ेन' का अर्थ है अगर तुम आज आसमान के बीच अपने पंख रहो तो बचना चाहते हो तो आंखें खुली रखो। उसका अर्थ है: अपने कान साफ़ रखो और रेडियो मार्ग बनाये रखो। मेरे लाड़ले, 'रिख़्तगोफ़ेन' ऐसे अनुभवी चालबाज हैं कि इससे पहले, तुम जान पाओ कि तुम कहाँ हो, तुम्हारे पंख में छेद कर देंगे।"

भोर हुए ही पहला स्क्वाड्रन स्वयं कर्नल के नेतृत्व में उड़ा। यह अभी अन्धेरा ही था कि इधर बारह लड़ाकू-विमानों का एक दूसरा दल रवाना हो गया। इसकी कमान मेरेस्येव के हाथ में थी और इसकी उड़ान के समय-

मिट गार्ड मेजर फ़ेदोतोव संभालनेवाले थे जो रेजिमेंट में कमांडर के बाद सबसे अनुभवी विमान-चालक थे। विमान तैयार थे, चालक अपने कॉक-पिटों में पहुंच चुके थे, इंजन निचले गीयर पर शान्तिपूर्वक चल रहे थे, इस लिए जंगल के किनारे पर इस तरह हवा के झोंके उड़ा रहे थे जैसे उस समय, जब प्यासी धरती पर वर्षा की पहली-पहली, बड़ी-बड़ी बूंदें आसमान से टपकने लगती है, तब तूफ़ान के पहले हवाएं ज़मीन को बुहार देती हैं और पेड़ों को झकझोर देती है।

अपने कॉकपिट से अलेक्सेई ने पहले दल के विमानों को इस प्रकार सीधे उतरते देखा मानो वे आसमान से टपक रहे हों। अनचाहे उसने उन्हें गिन डाला और जब दो विमानों के उतरने में कुछ देर लगी तो उसका दिल चिंता से धड़कने लगा। अंत में आखिरी विमान भी उतर आया। सभी वापस लौट आये थे। अलेक्सेई ने चैन की सांस ली।

आखिरी विमान उतरकर अपनी जगह की तरफ़ दौड़ा ही था कि मेजर फ़ेदोतोव का "नम्बर एक" धरती छोड़कर उड़ा और उसके पीछे जोड़ों में अन्य लड़ाकू-विमान रवाना हो गये। जंगल पार कर वे पांतबद्ध हो गये। अपने विमान को दायें-बायें हिलाकर फ़ेदोतोव ने अपनी दिशा प्रगट की। वे नीचे उड़ान कर रहे थे और अपने को इस क्षेत्र में रख रहे थे जहाँ पिछले दिन सेनाओं ने दरार डाली थी। अब अलेक्सेई को अपने नीचे ज़मीन दौड़ती नज़र आयी—बहुत ऊंचाई से नहीं, दूर के दृश्याव-लोकन के रूप में नहीं, कि जिससे हर चीज खिलौने जैसी दिखाई देने लगती है, बल्कि पास से उसने देखा। पिछले दिन उसे ऊपर से जो चीज एक खेल जैसी लग रही थी, वह अब उसके सामने सुविस्तृत और अनन्त युद्ध-क्षेत्र के रूप में प्रगट हो गयी थी। मैदान, कुंज और झाड़ियाँ—जो गोलों और बमों से क्षत-विक्षत पड़ी थी और जिन पर खाइयों के घाव बने थे—उसके पंखों के नीचे तीव्र गति से दौड़ने लगी। लाशें मैदान भर में बिखरी पड़ी थी, परित्यक्त तोपें, कहीं इक्की-दुक्की और कहीं पूरी बैटरी की बैटरी, चकनाचूर टैंक, जहाँ तोपखाने किसी टुकड़ी पर टूट पड़े थे वहाँ टेढ़े-मेढ़े लोहे और चकनाचूर लकड़ी के अम्बार; भारी जंगल प्रदेश ज़मीन पर बिछा हुआ, जो ऊपर से ऐसा लगता था मानो उसे किसी बड़े भारी पशुयूथ ने रौंद दिया हो—सभी उसके सामने से इस तरह से गुज़र गये मानो वे फ़िल्म के दृश्य हों और इस फ़िल्म का अन्त ही न हो।

यह सब उस घमासान युद्ध का, जो यहाँ छिड़ा था, उसकी भारी क्षति का और यहाँ प्राप्त विजय की महत्ता का प्रमाण दे रहा था।

इस समस्त विस्तृत प्रसार में टैंकों के पद-चिह्नों के रूप में दर्जनों दोहरी और आड़ी-तिरछी गहरी रेखाएँ बनी रह गयी थीं जो शत्रु की पाँत-बन्दी में दूर-दूर तक, बिल्कुल क्षितिज तक चली गयी थीं मानो किसी विचित्र पशु का एक बड़ा भारी झुंड मैदानों को पार करता, राह में अनेवाली हर चीज को रौंदता-कुचलता दक्षिण की ओर चला गया था। और बढ़ चुके टैंकों के पीछे दूर पर दृष्टिगोचर धूल की मटमैली पूँछें अपने पीछे छोड़ते हुए मोटर-लॉरी, पेट्रोल की टंकियाँ, ट्रैक्टरों द्वारा खींचे जानेवाले बड़े-बड़े मरम्मत वर्कशाप तिरपाल से ढके हुए ट्रकों की अनन्त पाँतें जैसे कि ऊपर से लगता था बहुत धीरे-धीरे चली जा रही थीं—और जब लड़ाकू विमान आसमान में और ऊँचे उठे तो यह सब ऐसा लगने लगा मानो वसं-तकाल में वन-मार्ग पर चींटियाँ चली जा रही हों।

धूल की इन्हीं पूछों में, जो शान्त हवा में ऊँची उठ रही थीं, इस तरह गोता लगाकर जैसे वे बादलों के बीच गोता लगा रहे हों, वे लड़ाकू विमान पान के ऊपर उड़ते-उड़ते उन आगेवाली जीपों के ऊपर पहुँच गये, जिन पर, स्पष्टतया, टैंक सेना के कमांडर सवार थे। इस पान के ऊपर आसमान शत्रु से शून्य था, और दूर पर, धुंधले क्षितिज पर युद्ध के धुएँ के ऊबड़-खाबड़ बादल उठते दृष्टिगोचर होने लगे थे। पतंग की भांति चक्कर लगाते हुए वह दल लौट पड़ा। उसी क्षण अलेक्सेई ने ठीक क्षितिज पर पहले एक और फिर टिड्डी दल की भांति अनेक स्याह धब्बे धरती पर तैरते देखे। जर्मन! वे भी जमीन का आलिंगन करते उड़ रहे थे—स्पष्टतया उनका उद्देश्य था लाल-से, घास-पात ढके मैदानों पर दृष्टिगोचर धूल की पूछों पर हमला करना। अलेक्सेई ने सहज वृत्ति-वश पीछे की ओर दृष्टिपात किया। उसका साथी पीछे था और अपने को इतने नजदीक रख रहा था जितना सम्भव था।

उसने कानों पर जोर लगाया और दूरागत स्वर सुना:

"मैं हूँ सीगल दो, फ़ेदोतोव; मैं हूँ सीगल दो, फ़ेदोतोव। साव-धान! मेरे पीछे आओ!"

आकाश में, जहाँ विमान-चालक के स्नायु-तंत्र पर अत्यधिक दबाव पड़ते, अनुशासन ऐसा होता है कि कभी-कभी इसके पहले कि कमांडर पूरा कर पाये, वह उसके इरादे को पूरा कर देता है। खड़-

खड़ और भन्-भन् के बीच दूसरा आदेश सुनाई देने के पहले सारा दल
जोड़ों में बटकर मगर घनिष्ठ रूप से पांतबद्ध रहकर जर्मनों को राह में
रोकने के लिए मुड़ पड़ा। दृष्टि, श्रवण-शक्ति और मस्तिष्क अधिकतम
सचेत हो गये। अलेक्सेई को शत्रुओं के विमानों के अलावा, जो बड़ी तेजी
से उसकी आंखों के सामने बड़े होते जा रहे थे, और कुछ नहीं दिखाई
दे रहा था, अपने हेडफ़ोन की खड़-खड़ और भन्-भन् के अलावा, जिनमें
उसे अगला आदेश सुनना था, उसे और कुछ नहीं सुनाई दे रहा था। ले-
किन आदेश के बजाय उसे बहुत स्पष्ट रूप से कोई उत्तेजित स्वर विदेशी
भाषा में चिल्लाते सुनाई दिया :

"आख्तुग! आख्तुग! 'ला-फ़ुन्फ़!' आख्तुग!"

वह भूमिवर्ती जर्मन पर्यवेक्षक का स्वर रहा होगा जो अपने विमानों
खतरे से सावधान कर रहा था।

अपनी रीति के अनुसार इस प्रसिद्ध जर्मन विमान डिवीज़न ने बड़ी
बिछानी से सारे रणक्षेत्र में मुखबिरों और थल-पर्यवेक्षकों का जाल बिछा
रखा था, जिन्हें रेडियो संवाद-प्रेषण यंत्रों से लैस कर सम्भावित आकाश-
युद्ध के क्षेत्र में पिछली रात पैराशूट से उतार दिया था।

तभी, कुछ कम स्पष्ट रूप में एक और स्वर सुनाई दिया, कर्कश
और क्रोधपूर्ण, जर्मन में चीखता हुआ:

"ओ दोन्नरवेतर। निन्कम 'ला-फ़ुन्फ़!' निन्कम 'ला-फ़ुन्फ़!'"

परेशानी के अलावा उस स्वर में घबराहट की ध्वनि थी।

"'रिख्तगोफ़ेन', तुम जानते हो, हमारे 'ला-५' तुम्हारे विमानों
से श्रेष्ठ हैं, और तुम डर रहे हो," मेरेस्येव क्रोधपूर्ण स्वर में बड़बड़ा-
या और शत्रु की पांतों को निकट आते ताकता रहा और उसके तने हुए
शरीर भर में उल्लास की सिहरन इस तरह फैल गयी कि उसके सिर के
बाल खड़े हो गये।

उसने शत्रु की सूक्ष्म परीक्षा की। वे आक्रमणकारी विमान थे—'फ़ो-
क्के-वोल्फ़-१९०'—शक्तिशाली, तीव्रगामी विमान जो हाल में ही उपयोग
में लाये गये थे।

फ़ेदोतोव के दल से उनकी सख्या एक के मुकाबले दो थी। वे ऐसी
बड़ी पांत से उड़ रहे थे, जो 'रिख्तगोफ़ेन' डिवीज़न की ही विशेषता
होती है—जोड़ों में, सीढ़ियों जैसे ढंग से, इस प्रकार कि हर जोड़ा आगे-
वाले जोड़े की पीछे से रक्षा कर रहा था। अगले दल के अधिक ऊंचाई

है। मेरेस्येव ने मुड़कर देखा कि इस गड़बड़ी में कहीं उसने अपना साथी तो नहीं खो दिया। नहीं! वह लगभग उसके समानान्तर उड़ रहा था।

"पीछे न रह जाना, बुढऊ," अलेक्सेई ने दांत भीचे हुए कहा।

उसके कान भनभनाहट और कड़कड़ाहट से, गाने से, दो भाषाओं में विजय और भयभीत अवस्था की चीखों-चिल्लाहटों से बैठे गलों की आवाज़, दांत पीसने, कोसने और भारी सांस लेने के स्वरों से गूंजने लगे। इन आवाज़ों से तो ऐसा लगता था कि धरती से बहुत ऊँचाई पर कोई लड़ाकू विमान एक दूसरे से टक्कर नहीं ले रहे हैं, बल्कि शत्रु हैं, जो धरती पर घातक गुत्थमगुत्थी में एक दूसरे को पकड़े हुए हैं, लुढ़क रहे हैं, हाथापाई कर रहे हैं, और हर *स्नायु और मांसपेशी का जोर लगा* रहे हैं।

मेरेस्येव ने कोई और निशाना पाने के लिए चारों तरफ़ दृष्टि डाली और यकायक उसकी रीढ़ में एक ठंडी कंपकपी दौड़ गयी और उसे लगा कि उसके रोएँ खड़े हो गये हैं। ठीक अपने नीचे उसने देखा कि एक 'फ़ोक्के' 'ला-५' विमान पर हमला कर रहा है। वह सोवियत विमान का नम्बर तो नहीं देख सका, लेकिन अन्तर्बोधवश भाप गया कि वह पेत्रोव का विमान है। 'फ़ोक्के-वोल्फ़' *उसपर अपने तमाम हथियारों से* गोलियाँ उगलता हमला कर रहा था। पेत्रोव एक सेकंड के अल्पांश का ही मेहमान था। योद्धा एक दूसरे से इतने निकट थे कि हवाई युद्ध के आम नियमों का पालन करते हुए अपने मित्र की सहायता के लिए पहुँचने के वास्ते अलेक्सेई के पास न तो समय था और न उन चालों को इस्तेमाल करने की गुजाइश थी। लेकिन उसके साथी का जीवन दांव पर लगा था और उसने एक असाधारण चाल का ख़तरा मोल लेने का फ़ैसला किया। उसने अपने विमान को सीधे खड़े करके नीचे फेंका और गैस बढ़ा दी। अपने ही भार से नीचे गिरते हुए, और इंजन की पूरी ताक़त के कारण विमान का वेग कई गुना बढ़ गया था, और असाधारण रूप से थरथराते हुए वह एक पत्थर की भांति–नहीं, नहीं, एक गोले की भांति–'फ़ोक्के' के छोटे पखोंवाले ढांचे के ऊपर गिर पड़ा और उसे गोलियों के जाल में लपेट दिया। *यह अनुभव करते हुए कि इस भयंकर वेग और तीव्र उतार* से वह चेतनता खो रहा है, मेरेस्येव अपनी धुंधली आँखों से बड़ी मुश्किल से यह देख पाया कि ठीक उसके पंखे के सामने 'फ़ोक्के' एक विस्फोट के धुएँ में लिपट गया। लेकिन पेत्रोव कहाँ है? वह विलीन हो

युद्ध में जुटा हुआ है, शीघ्र ही सारे हवाई अड्डे में फैल गया। वे सभी जो फ़ुर्सत थे, जंगल से मैदान में निकल आये और चिन्ता से दक्षिण की ओर देखने लगे, जहां से विमानों के लौटने की आशा थी।

सफ़ेद पोशाकें पहने हुए डाक्टर मुंह से कौर चबाते बाहर दौड़ पड़े। एम्बुलेंस कारें, जिनकी छतों पर बड़े-बड़े रेड क्रास चिह्न बने थे, झाड़ियों से बाहर निकल आयी और इंजन चालू किये काम के लिए तैयार खड़ी थी।

वृक्षों के शिखरों के ऊपर से उड़ता हुआ पहला जोड़ा आ पहुँचा और हवाई अड्डे पर चक्कर लगाये बिना सीधा उतर गया और लम्बे-चौड़े मैदान में दौड़ने लगा। इसमें 'नम्बर १' था जिसके चालक थे सोवियत संघ के वीर फ़ेदोतोव और 'नम्बर २' था जिसका चालक उनका साथी था। और ठीक उनके पीछे दूसरा जोड़ा भी आ पहुँचा। लौटते हुए विमानों की घड़घड़ाहट से जंगल के ऊपर वायुमण्डल प्रतिध्वनित हो उठा।

"सातवाँ, आठवाँ, नौवाँ, दसवाँ," हवाई अड्डे पर खड़े लोगों ने आकाश की अधिकाधिक सूक्ष्मता से जांचते हुए गिनना शुरू किया।

जो विमान उतरे, वे मैदान छोड़कर चले गये और अपने विश्राम-स्थलों में घुस गये। शान्ति छा गयी। लेकिन दो विमान अभी भी गायब थे। प्रतीक्षातुर भीड़ में आशापूर्ण शान्ति छा गयी। कई मिनट बड़ी पीड़ाजनक मंद गति से गुज़र गये।

"मेरेस्येव और पेत्रोव," किसी ने धीमे से कहा।

यकायक आनन्दविह्वल एक नारी-स्वर मैदान में गूंज उठा:

"लो एक यह आ गया!"

एक विमान के इंजन की घड़घड़ाहट सुनाई दी। भोज वृक्षों के शिखरों के ऊपर से, उनपर अपने फैले हुए पंजे मारता 'नम्बर १२' भी आ पहुंचा। विमान क्षतिग्रस्त था, उसकी पूछ का एक टुकड़ा गायब था, उसके बायें पख की नोक कट गयी थी और वह टुकड़ा किसी तार से लटका था। उतरने पर विमान विचित्र गति से फुदका, वह ऊँचे उछला, फिर नीचे गिरा और फिर उछला और फिर गिरा और इस तरह फुदकता हुआ वह हवाई अड्डे के छोर तक पहुँच गया और पूछ उठाकर खड़ा हो गया। सर्जनों को लिये एम्बुलेंस कारें, कई जीपें और सारी भीड़ उस विमान की ओर दौड़ पड़ी। कॉकपिट से कोई बाहर न निकला।

उन्होंने उसका ढक्कन उठाया। खून में डूबा हुआ पेत्रोव सीट में लुढ़-

[illegible] रहा था। उसका सिर [illegible] था। [illegible]
[illegible] पर सिर [illegible] थी। कर्नल और [illegible]
[illegible] जिसमें [illegible] टुकड़े [illegible]
लिए था। [illegible] शरीर को उठाया और [illegible] पर [illegible]
दिया। विमान-चालक की टांगों और भुजा में [illegible] थे। उसकी
पोशाक पर शीघ्र ही [illegible] गये।

पेत्रोव की प्राथमिक चिकित्सा की गयी और स्ट्रेचर पर लिटाया [illegible] जब उसे उठाकर एम्बुलेंस कार पर लाया जा रहा था तब उसने [illegible] खोली। वह कुछ बुदबुदाया, लेकिन इतने धीमे से कि जो कुछ [illegible] वह सुना नहीं जा सका। कर्नल उसपर झुक आया।

"मेरेस्येव कहाँ है?" पायलट ने पूछा।

"अभी नहीं उतरा।"

स्ट्रेचर फिर उठाया गया, लेकिन पायलट ने बड़े ज़ोर से अपना सिर हिलाया-डुलाया और उतर भागने तक की कोशिश की।

"ठहरो!" उसने कहा, "मुझे यहाँ से ले जाने की ज़ुर्रत न करना। मैं नहीं जाना चाहता। मैं मेरेस्येव का इन्तज़ार करूँगा। उसने मेरे प्राण बचाये हैं।"

विमान-चालक ने इतने ज़ोर से विरोध किया था, अपनी पट्टियाँ फाड़ डालने की धमकी दी थी कि कर्नल ने अपना हाथ हिलाया और अपना सिर मोड़कर दांत भींचकर बोला.

"अच्छा! रख दो उसे ज़मीन पर। मरेगा नहीं। मेरेस्येव के पास सिर्फ एक मिनट के लायक और पेट्रोल होगा।"

कर्नल ने अपनी आँखें घड़ी पर टिका लीं और उसकी लाल-लाल सेकंड सूचक सुई को अपना चक्कर पूरा करते देखा। अन्य सभी लोग नीले-जंगल के ऊपर ताक रहे थे जिस पर से अंतिम विमान के लौट आने की आशा थी। कानों पर अत्यधिक ज़ोर लगाया गया, मगर तोपों की दूरागत गरज और निकट ही कठफोड़वे की गूंजती हुई ठक्-ठक् के अलावा और कोई स्वर नहीं सुन पड़ा।

एक मिनट कभी-कभी कितना लम्बा खिंच जाता है!

शत्रुओं ने एक दूसरे पर पूरी रफ़्तार से हमला किया।

'मा-५' और 'फ़ोक्के-वोल्फ़-१९०' तीव्रगामी विमान होते हैं। शत्रु-
ओं ने एक दूसरे पर भयंकर वेग से धावा किया।

मलेस्सेई मेरेस्येव और प्रसिद्ध 'रिख्तगोफ़ेन' डिवीजन का प्रख्यात
जर्मन विमान-चालक एक दूसरे से सीधे भिड़ गये। विमानों की सीधी
मुठभेड़ क्षण भर की होती है। लेकिन वह क्षण इतना स्नायविक तनाव
पैदा करता है, विमान-चालक के सारे मानसिक संतुलन की ऐसी परीक्षा
होता है, जैसी कि स्थल-युद्ध में सारे दिन के संग्राम मे भी नही होती।

कल्पना कीजिये कि दो द्रुतगामी लड़ाकू विमान एक ही सीध मे पूर्ण
वेग से एक दूसरे की ओर झपट रहे हैं। शत्रु का विमान आपकी आँखों
के सामने आकार मे बड़ा हो रहा है। यकायक उसका अंग-प्रत्यंग आप-
के सामने आ जाता है. पंख, चक्कर खाते हुए पंखे का चमकदार चक्र,
काले बिन्दु जो उसकी तोपें हैं। दूसरे ही क्षण हवाई जहाज टकरा जायेंगे
और इस तरह खण्ड-खण्ड होकर चकनाचूर हो जायेंगे कि मशीन के ध्व-
सावशेष मे विमान-चालक के अवशेष खोज पाना कठिन हो जायेगा। न
सिर्फ़ विमान-चालक की इच्छा-शक्ति बल्कि उसके नैतिक तन्तुओं की भी
इस क्षण परीक्षा हो जाती है। कमज़ोर स्नायविक प्रकृति का व्यक्ति वह
तनाव सहन नही कर सकेगा। विजय-प्राप्ति के लिए जो प्राणो की बाजी
लगाने के लिए तैयार नही है, वह सहज वृत्तिवश वायुयान का रुख ऊपर
को कर देगा ताकि इस घातक तूफ़ान से बचने के लिए, जो उसकी ओर
उड़ा आ रहा है, वह कूद जाये, और अगले क्षण उसका विमान चिरा
पेट या टूटे हुए पंख लेकर जमीन पर आ गिरेगा। अनुभवी विमान-चालक
इसे भली-भांति समझते हैं और केवल वीरतम योद्धा ही इसे सीधी
मुठभेड़ का खतरा मोल लेते हैं।

शत्रुओं ने एक दूसरे पर भयकर रफ़्तार से हमला किया।

मलेस्सेई जानता था कि उसके खिलाफ़ जो व्यक्ति आ रहा है, वह
गोयरिंग की तथाकथित भरती का कोई नौसिखिया नहीं है जिसे पूर्वी मोर्चे
पर हुई भारी क्षति की पूर्ति के लिए जल्दबाजी से प्रशिक्षित कर भेज दिया
गया हो। वह 'रिख्तगोफ़ेन' डिवीजन का श्रेष्ठ विमान-चालक है,
वायुयान मे जिस के दोनो बाजुओं पर अनेक विमानो की

समय में जब मोर्चे पर हमारी महान विजय आरम्भ हो रही है, ग
पर हाथ धरे बैठे रहना, ऐसे मौके पर बिना काम-धंधा निठल्ले
फिरना।

"नहीं, नहीं, मैं कभी ऐसा न होने दूंगा!" अलेक्सेई ने
कहा मानों किसी ने उसके सामने यह प्रस्ताव रखा था।

उस समय तक उड़ो जब तक इंजन बंद न हो जाये। और
तब देख लेंगे। और वह उड़ चला, पहले तीन हजार मीटर
फिर चार हजार मीटर की ऊँचाई से, कोई छोटा-सा समतल मैद
के लिए वह स्थानीय क्षेत्र की सूक्ष्म दृष्टि से परीक्षा करता जा
जिस जंगल के पीछे हवाई अड्डा था, वह क्षितिज पर दिखाई
था; वह लगभग पंद्रह किलोमीटर दूर था। पेट्रोल मापक सूई
नहीं रही थी, वह सीमान्त पेच पर दृढ़तापूर्वक स्थिर हो गयी थी
इंजन अभी भी काम कर रहा था! क्या चीज उसे बल दे रही है
और अधिक ऊँचे... ठीक!

यकायक उस निर्बाध गुंजार का स्वर दूसरा हो गया जिस पर
चालक उसी तरह ध्यान नहीं देते जिस प्रकार स्वस्थ व्यक्ति अपने
धड़कन पर ध्यान नहीं देते। अलेक्सेई ने यह परिवर्तन फ़ौरन पक
जंगल स्पष्ट दृष्टिगोचर हो रहा था, वह लगभग सात किलोमीटर
और लगभग तीन या चार किलोमीटर चौड़ा था। कोई अधिक
मगर इंजन की धड़कन में यह मनहूस परिवर्तन हो गया था। वि
इस परिवर्तन को अपने रोम-रोम में अनुभव कर लेता है, मानों
नहीं, वह स्वयं है जो सांस लेने के लिए तड़प रहा है। अ
अशुभ "चक, चक, चक" शुरू हो गयी, जो भयानक पीड़
से उसके सारे शरीर में फैल गयी।

"नहीं! सब ठीक है। वह फिर दृढ़तापूर्वक चलने लगा है
रहा है! हुर्रा! लो, जंगल भी आ गया।" सोज वृक्षों क
उसे हरे सागर की भांति धूप में लहराती दिखाई दे रही थीं।
अड्डे के सिवाय और कहीं विमान उतारना असम्भव था। अ
एक ही काम था: बढ़े चलो, बढ़े चलो!

"चक-चक-चक!"

इंजन फिर सनसनाने लगा। कितनी देर के लिए? वह जं
था। जंगल के बीच दौड़ता हुआ रेतीला मार्ग उसे इस तरह

रहा था जैसे रेजीमेंटल कमांडर के सिर पर बालों के बीच मांग
अड्डा अब तीन किलोमीटर दूर था: वह उस दानेदार हद के
था और अलेक्सेई को यह मालूम हो रहा था मानो अब उसे बह
देने लगा है।

"चक, चक, चक!"

अचानक ऐसी शान्ति छा गयी कि उसे हवा में विमान के हि
गुंजार सुनाई देने लगी। क्या अन्त आ गया? मेरेस्येव की रीढ़
कंपकपी दौड़ गयी। कूद पड़े क्या? नहीं। थोड़ा आगे और बढ़
उसने वायुयान को इनकी उतार की तरह मोड़ दिया और जिस
जितना सम्भव हो सकता था उतना वह विमान को समतल
प्रयत्न करने लगा और साथ ही चक्कर खाने से बचाने की कोशि
लगा।

आकाश में यह पूर्ण शान्ति कितनी भयंकर थी! वह इतनी
कि ठंडे होते हुए इंजन का तड़कना, और तेज उतार के कारण
कनपटियों का धड़कना और कानों में शोर मचना उसे सा
दे रहा था। और धरती उससे मिलने के लिए इतनी तेज
रही थी, मानो कोई भारी चुम्बक उसे हवाई जहाज को ता
रहा हो।

जंगल का किनारा और उसके पार हवाई अड्डे का धब्बे जैसा
सा उसे दिखाई दे रहा था। क्या वक्त हाथ से गया? पंखा प्राय
खाकर अटक गया। उसे आकाश में गतिहीन देखना कितना भया
जंगल बिल्कुल पास आ गया था। क्या यही अन्त होगा? क्या
नहीं जान सकेगी कि उसके साथ क्या बीती, पिछले अठारह म
उसने कैसे अतिमानवीय प्रयत्न किये और इस सबके बाद जब उस
मंजिल प्राप्त कर ली और एक असली, हाँ, असली इनसान
तो प्राप्त करते ही वह इतने बेहूदे ढंग से मर गया?

कूद पड़े क्या? उसका मौक़ा भी गया। उसके नीचे से ज
से गुजर रहा था और इस तूफ़ानी दौड़ में वृक्षों के शिखर धु
एक अनवरत हरी पट्टी जैसे जान पड़ रहे थे। इस तरह का
पहले भी देख चुका है। कब? क्यों, ठीक तो है! उस कसल
उस दुर्भाग्यपूर्ण घटना के समय। तब हरी-हरी पट्टी इसी तरह उ
से गुजर गयी थी। आखिरी कोशिश, खींच लो लीवर को

कहा और भीड़ की तरफ़ से मुंह फेरकर और आँखें इस तरह मिचमिचाकर मानो उन्हें हवा से बचा रहा हो, वह जल्दी से चल दिया।

लोग मैदान से छंटने लगे, लेकिन उसी क्षण एक हवाई जहाज जंगल के किनारे से इस प्रकार खामोशी से फिसलता आया जैसे किसी की छाया हो, उसके पहिए वृक्ष-शिखरों को छूते जा रहे थे। प्रेत-छाया की भांति वह लोगों के सिरों के ऊपर से निकल गया और तीन पहियों से घास पर आ गया। एक हल्का-सा धमाका, कंकड़ों की कड़-कड़ और घास की सर-सराहट सुनाई दी, जो असामान्य था, क्योंकि विमान जब उतरते हैं तो उनके इंजनों की घड़घड़ाहट के कारण विमान-चालकों को ये स्वर कभी नहीं सुनाई देते। वह सब इतना यकायक हुआ कि कोई यह नहीं समझ सका कि क्या हो गया, हालांकि यह अत्यन्त साधारण बात थी एक हवाई जहाज उतरा था और वह 'नम्बर ११' था—वही जिसकी वे सब लोग इतनी आतुरता से प्रतीक्षा कर रहे थे।

"यह तो वह है!" कोई व्यक्ति उन्मादपूर्ण और अस्वाभाविक स्वर में चिल्ला उठा और फ़ौरन सब लोग जड़ता से उबर आये।

हवाई जहाज ने अपनी दौड़ ख़त्म की और अड्डे के छोर पर ही तरुण घुंघराले, सफ़ेद छालवाले भोज वृक्षों के झुंड के सामने रुक गया, जं अस्ताचलगामी सूर्य की नारंगी किरणों से आलोकित था।

इस बार फिर कॉकपिट से कोई न उठा। लोग अपनी पूरी शक्ति विमान की ओर दौड़ पड़े, हांफते हुए, अपशकुन की भावनाओं से चिन्तित उन सबके आगे रेजीमेंटल कमांडर था; वह उसके पंख पर उछलकर च गया, उसका ढक्कन हटाकर उसने कॉकपिट में देखा। मेरेस्येव नमे सि बैठा था, उसका चेहरा सफ़ेद था और रक्तहीन, नीले-से होंठों पर मु रान खेल रही थी। उसकी ठोडी पर रक्त की दो धाराएँ थीं, जो हुए होंठों से बह रही थीं।

"जिन्दा हो? तुम्हें कोई चोट लगी है?"

मेरेस्येव निर्बलतापूर्वक मुस्कराया और बुरी तरह थकी हुई आँखों कर्नल की ओर देखकर उसने जवाब दिया.

"मैं ठीक हूं। मैं सिर्फ़ घबरा गया था कोई छ किलोमीटर पेट्रोल की एक बूंद के बिना आया हूं।"

सभी हवाबाज उसके विमान के चारों ओर एकत्र हो गये और कांसा पूर्वक अलेक्सेई को बधाई देने लगे और उससे हाथ मिलाने लगे।

दुम के पीछे पड़ा हुआ था। दूसरे को ग्राम युद्ध के क्षेत्र से उत्तर की ओर तीन किलोमीटर दूर पर, ग्रामने-सामने के हमले से।"

"मुझे मालूम है। थल-पर्यवेक्षक ने अभी ही रिपोर्ट दी थी धन्यवाद।"

"मैं..." अलेक्सेई ने फौजी क़ायदे के अनुसार उत्तर देना शुरू किया, मगर कर्नल ने, जो वैसे क़ायदों के बारे में बड़ा सख्त था, उसे बीच में ही रोक दिया, और बेतकल्लुफ़ी से कहा:

"बहुत अच्छा। बस तुम कमान संभालना. स्क्वाड्रन नम्बर तीन का कमांडर अड्डे पर वापस नहीं आया।"

वे कमान केन्द्र तक साथ-साथ आये। चूंकि आज की उड़ान का कार्यक्रम खत्म हो गया था, इसलिए सारी भीड़ उनके पीछे-पीछे चल पड़ी। वे लोग कमान केन्द्र के हरे टीले के निकट पहुँच ही रहे थे, तभी अर्दली अफ़सर उनकी ओर भागा-भागा आया। वह कमांडर के सामने आकर यकायक खड़ा हो गया, वह नंगे सिर और बहुत आनन्दित और उत्तेजित दिखाई पड़ रहा था, उसने कुछ कहने के लिए मुँह खोला, मगर कर्नल ने उसे सूखी और सख्त आवाज़ में टोक दिया

"तुम नंगे सिर क्यों हो? क्या तुम, स्कूली लड़के हो?"

"कामरेड कर्नल, मुझे निवेदन करने की आज्ञा दीजिये," उत्तेजित लेफ्टिनेंट ने अटेंशन खड़े होते हुए और कठिनाई से सांस भरते हुए बड़बड़ा दिया।

"कहो!"

"हमारे पड़ोसी, 'याक' विमानों के रेजीमेंटल कमांडर आपसे टेलीफ़ोन पर बात करना चाहते हैं।"

"हमारे पड़ोसी? वह क्या चाहते हैं?"

कर्नल तेज़ी से अपनी खोह में घुस गये।

"यह तुम्हारे बारे में है. . " अर्दली अफ़सर ने अलेक्सेई को बताना शुरू किया, मगर तभी नीचे से कर्नल की आवाज़ आयी

"मेरेस्येव को मेरे पास भेजो!"

जब मेरेस्येव सावधान की मुद्रा में उसके सामने सीधा तनकर चुपचाप खड़ा हो गया, तो कर्नल ने टेलीफ़ोन रिसीवर पर हथेली रख ली और उसकी तरफ़ क्रोधपूर्वक गुर्राया:

"तुम मुझे गलत सूचना क्यों देते हो? हमारे पड़ोसी ने अभी

फोन किया था और वह जानना चाहता था कि 'नम्बर ११' कौन उड़ा रहा था। मैंने जवाब दिया 'सीनियर लेफ्टीनेंट मेरेस्येव।' तो उसने पूछा, 'उसके नाम पर तुमने कितने विमान लिखे हैं?' मैंने जवाब दिया: 'दो।' वह बोला, 'एक और उसके नाम के आगे लिख लो। उसने मेरे विमान की पूछ पर लपकनेवाले 'फोके वोल्फ' को मार गिराया था। मैंने अपनी आंखों से उसे गिरते देखा।' खैर, तो तुम्हें अपनी सफाई में क्या कहना है?" कर्नल ने अलेक्सेई की ओर भौंहें चढ़ाकर देखा और यह कहना कठिन था कि वह मजाक कर रहा था या गम्भीर था, "क्या यह सच है? लो, अब तुम्ही बात कर लो उससे... हैलो! तुम हो? अभी सीनियर लेफ्टीनेंट मेरेस्येव है फोन पर। मैं उसे रिसीवर दे रहा हूँ।"

एक अपरिचित कर्कश, मंद स्वर फोन पर सुनाई दिया:

"धन्यवाद सीनियर लेफ्टीनेंट! कमाल कर दिया तुमने! मैं सराहना करता हूँ। तुमने मुझे बचा लिया। हाँ! मैंने उसका जमीन तक पीछा किया और उसे चकनाचूर होते देखा... तुम पीते हो? कभी मेरे कमान केन्द्र पर आओ, मैं तो एक लीटर शराब का देनदार रहूँगा। अच्छा, फिर धन्यवाद। बढ़े चलो।"

मेरेस्येव ने रिसीवर रख दिया। उसपर जो कुछ बीता था, उसके बाद वह इतना थक गया था कि उसके लिए खड़े रहना भी कठिन हो रहा था। उसको एक ही धुन थी कि किसी भांति जितनी जल्दी सम्भव हो सके, अपनी "बावीपुरी" पहुँच जाये, अपनी खोह में घुस जाये, ये कृत्रिम पैर उतार फेंके और तख्ते पर पांव फैलाकर पसर जाए। एक क्षण भौंडे ढंग से टेलीफोन के पास चहलकदमी करके वह धीरे-धीरे दरवाजे की ओर बढ़ा।

"तुम कहाँ चले?" रेजीमेंटल कमांडर ने उसे रोकते हुए कहा। उसने मेरेस्येव का हाथ पकड़ा और अपने नन्हे-से पुष्ट हाथों से इतने जोर से दबा दिया कि वह दुखने लगा। "खैर, मैं तुमसे क्या कहूँ? बहुत अच्छे लड़के हो। अपनी रेजीमेंट में तुम जैसे आदमी के होने पर मुझे गर्व है.....खैर, और क्या? धन्यवाद... हाँ, और वह तुम्हारा मित्र, पेत्रोव से मेरा मतलब है। वह क्या भला लड़का नहीं है? और दूसरे लोग भी... मैं बताता हूँ कि इस तरह के आदमियों के होते हुए हम युद्ध कभी नहीं हार सकते!"

और फिर उसने मेरेस्येव का हाथ इतना दबाया कि वह दुखने लगा।

मोह तक पहुँचते-पहुँचते शाम हो गयी थी, लेकिन वह
उसने करवट बदली, एक हजार तक गिनती गिनी और
गुरु की, उसने "म" से शुरू होनेवाले सारे सभी परि
गिन डाले, और फिर "व" से गिने और इसी तरह बराबर
फिर मिट्टी के तेल के लैम्प की हल्की रोशनी की तरफ़ अप
मगर नींद बुलाने के ये सभी परीक्षित उपाय इस बार काम
हुए। वह ज्यों ही आँखें बंद करता, त्योंही उसके सामने
उभरने लगते, अंधकार में सभी साफ़ दिखाई देने लगते ते
से पहचाने जाते। रुपहली भवों के नीचे से उसकी ओर
मार्शल नाना की चिन्तामग्न आँखें, "गाय जैसी पलकें"
अन्द्रेई देगत्येरेव, अपने खिचड़ी बाल हिलाते हुए और
हुए वर्शीनी वसील्येविच, वह बूढ़ा स्नाइपर जिसके निराहि
मुसकराहट की भुर्री पड़ी रहती थी, तकिये की सफ़ेद पृ
बीमार वोरोब्योव का मोम जैसा चेहरा दिखाई दिया जो
मर्मवेधी, विह्वल और सर्वज्ञ आँखों से उसकी ओर ताक
बोम्बा के लपटों जैसे केश हवा में लहराते हुए उसके सा
छोटा-सा, फुर्तीला शिक्षक नाउमोव उसकी ओर सहानुभू
वना से मुसकरा उठा। अंधकार में से कितने गौरवशाली,
उसकी ओर देखने और मुसकराने लगे, पुरानी स्मृतियां उ
उसके नवजात हृदय में और अधिक हार्दिकता उड़ेलने ल
सभी मैत्रीपूर्ण चेहरों के बीच से और फ़ौरन उन सबको हट
का मुखड़ा उभर उठा—अफ़सर की वर्दी पहने हुए एक लड़
पतला चेहरा और बड़ी-बड़ी, थकी हुई आँखें। उसने उ
रूप में और इतने साफ़ रूप में देखा मानो वह साक्षात उस
हो और इस रूप में, जिसमें उसने वास्तविक जीवन में
देखा। यह आभास इतना स्पष्ट था कि वह बिस्तर पर मच

सोने की कोशिश करने से लाभ ही क्या था! हर्षो
होकर वह अपने तख़्ते पर उठकर बैठ गया, ढिबरी का गु
की ज्योति बढ़ायी, कापी से एक पन्ना फाड़ लिया, पेंसिल
की और लिखने बैठ गया.

"प्रियतमे," अस्पष्ट लिखावट में उसने लिखा और ज

अनुलेख

जिस काल में ओर्योल के युद्ध का विजयी अंत निकट आ रहा था और जो अब रेजीमेंटें उत्तर से बढ़ रही थीं, वे रिपोर्ट भेज रही थी कि उन्हें नगर जलता हुआ दिखाई दे रहा है, तभी एक दिन ब्रियान्स्क मोर्चे के हेडक्वार्टर पर यह रिपोर्ट आयी कि पिछले नौ दिनों में गार्ड लड़ाकू विमान रेजीमेंट के चालकों ने जो उसी क्षेत्र में सक्रिय थी, शत्रु के सैंतालीस हवाई जहाज मार गिराये। उनके केवल पांच विमानों और तीन आदमियों की क्षति हुई, क्योंकि दो अन्य विमानों के चालक पैराशूट से कूद पड़े थे और पैदल अपने अड्डे पर वापस लौट आये थे। उन दिनों सोवियत सेना तेजी से बढ़ रही थी, तब के लिए भी यह विजय असामान्य थी। मैंने एक संपर्क विमान में अपने लिए एक सीट प्राप्त कर ली, जो उस रेजीमेंट के अड्डे तक जा रहा था, इरादा यह था कि वहाँ जाऊँ और इन गार्ड विमान चालकों की सफलताओं के विषय में 'प्राव्दा' के वास्ते एक लेख के लिए मसाला जमा कर लूँ।

इस रेजीमेंट का हवाई अड्डा एक साधारण चरागाह पर स्थित था जिसकी ऊबड़-खाबड़ जमीन को जैसे-तैसे समतल कर दिया गया था। जवान भोज वृक्षों के जंगल के किनारे हवाई जहाज जंगली मुर्गी के नन्हे चूजों की भांति छिपे खड़े थे। संक्षेप में, वह उसी भांति का फौजी हवाई अड्डा था जैसे युद्ध के सरगर्म दिनों में आम तौर पर बनाये जाते थे।

हम दोपहर बाद पहुँचे जब कि रेजीमेंट का कठिन और व्यस्त दिन समाप्त होने जा रहा था। ओर्योल के क्षेत्र के आकाश में जर्मन विशेष रूप से सक्रिय थे और उस दिन प्रत्येक लड़ाकू विमान ने सात-सात बार मुठभेड़ें की थीं। सूर्यास्त के समय आखिरी दल अपनी आठवीं उड़ान से लौट रहा था। नाटे-से, कसकर पेटी बांधे हुए, स्फूर्तिवान व्यक्ति, रेजीमेंटल कमांडर ने जिसका चेहरा ताम्रवर्ण था, बाल सावधानी से कढ़े हुए थे, और जो नयी नीली डंगरी पहने था, यह खुलकर स्वीकार किया

कि वह उस दिन की साहसपूर्ण कहानी न सुना सकेगा, क्योंकि वह सुबह छ: बजे से ही हवाई अड्डे पर जुटा हुआ था, तीन बार वह स्वयं उड़ान पर जा चुका और इतना थक गया था कि खड़े रहना तक मुश्किल था। कोई और कमांडर भी इस मन:स्थिति में न था कि वह शाम को समाचारपत्र के लिए भेंट-वार्ता दे सके। मैं समझ गया कि मुझे अगले दिन तक प्रतीक्षा करनी पड़ेगी, और फिर देर भी इतनी हो गयी थी कि लौटा ही क्या जाता। सूरज भोज वृक्षों के सिरों को छूने लगा था और उनपर सोना लुटा रहा था।

आखिरी विमान भी उतर आये और इंजन घड़घड़ाते हुए वे सीधे जंगल की ओर चले गये। मैकेनिक लोग उनका चक्कर लगाने लगे। धीरे-धीरे, थके हुए हवाबाज़ अपने कॉकपिटों से नीचे उतरे जब उनके विमान हरे-भरे टहनियों से ढके विश्राम-स्थलों में सुरक्षित हो गये।

बिल्कुल आखिरी विमान तीन नम्बर स्क्वाड्रन के कमांडर का था। कॉकपिट का पारदर्शी ढक्कन हटा दिया गया। पहले एक बड़ी-सी आबनूसी छड़ी, जिस पर सुनहरे अक्षरों में कुछ खुदा हुआ था, उसमें उड़ती हुई बाहर आयी और घास पर जा गिरी। फिर एक ताम्रवर्ण, खुरे चेहरेवाले, श्यामकेशी व्यक्ति ने अपनी शक्तिशाली बाहों के बल अपने को खींचा, फुर्ती से अपने शरीर को एक तरफ उछाला, अपने को पंख पर डाल दिया और भारी धमाके से ज़मीन पर कूद गया। किसी ने मुझे बताया कि इस रेजीमेंट का सर्वश्रेष्ठ विमान-चालक यही है। शाम बरबाद न हो जाये, इसलिए मैंने उससे बातें करने का निश्चय किया। मुझे साफ याद है कि उसने मेरी ओर अपनी विनोदपूर्ण, प्रफुल्ल, काली आंखों से देखा था, जिनमें अनबुझ, बालसुलभ उद्दंडता के साथ ऐसे व्यक्ति की विशाल बुद्धिमत्ता का सम्मिश्रण था जिसने जीवन में काफी भोगा हो। मुसकराकर वह मुझसे कहने लगा था:

"मैं बुरी तरह थका हुआ हूँ। खाना खाया? नहीं? तो मेस की तरफ मेरे साथ चले चलो, हम लोग साथ ही खाना खा लेंगे। एक विमान गिराने पर वे हमें दो सौ ग्राम वोद्का देते हैं। आज की रात मुझे चार सौ ग्राम पाने का हक है। दो जनों के लिए काफी होगा। पर रहे ... कहानी पाने के लिए जब आप इतने अधीर हैं तो चलो, आ- ... बात कर लेंगे।"

... हो गया। मुझे यह निश्छल और प्रफुल्ल व्यक्ति पसंद आया।

हम उस रास्ते से गये जो विमान-चालकों ने सीधे जगल के बीच बना लिया था। मेरा सदर्दारविन व्यक्ति तेज़ी से चल रहा था और जब-तब वह बिलबेरी और गुलाबी व्होरटिल-बेरी का गुच्छा चुनने के लिए झुक जाता था और उसे तत्काल मुह मे डाल लेता था। वह बहुत थका हुआ होगा, क्योंकि उसके कदम भारी पड रहे थे, लेकिन वह अपनी विचित्र छड़ी का सहारा नही ले रहा था। वह उसकी बाह पर टगी हुई थी और कभी-कभी वह उसे हाथ मे लेकर किसी कुकुरमुत्ते या झाड़ी पर चोट कर देता था। जब हम लोग एक नाले को पार कर फिसलनी मिट्टी की ढलान पर चढ़ने लगे, तो विमान-चालक को चढ़ने मे कठिनाई महसूस हुई और वह झाड़ियां पकड़कर अपने को ऊपर घसीटने लगा, मगर उसने छड़ी का सहारा न लिया।

मैस मे उसकी थकान फौरन गायब हो गयी। उसने खिडकी के पास एक मेज चुनी जिसके बाहर हमे सूर्यास्त की शीतल, लाल आभा दिखाई दे रही थी, जिसे विमान-चालक अगले दिन तेज़ हवा होने की भविष्यवाणी समझते है, उसने एक बडा मग भरकर अत्सुरतापूर्वक पानी पी डाला और सुन्दर, घुंघराले बालोंवाली वेट्रेस से अस्पताल मे पडे हुए उसके एक मित्र के विषय मे मज़ाक करने लगा जिसके प्रेम मे खोयी-खोयी रहने की वजह से – विमान-चालक ने बताया – वह शोरबे मे दो-दो बार नमक डाल देती। उसने बड़े स्वाद से खाया। पास की मेज के साथियो से उसने मज़ाक किये, मुझसे कहा कि मैं मास्को की ताज़ी खबरें सुनाऊ, ताज़ी किताबो और नाटकों की चर्चा करू और खेद प्रगट किया कि उसने मास्को का थियेटर कभी नही देखा। जब हमने तीसरा दौर खत्म कर लिया – बिलबेरी की जेली, जिसे यहा के विमान-चालक "घनघोर घटा" कहते है – तो उसने मुझसे पूछा·

"आपने रात मे रहने का ठिकाना कहीं लिया है क्या? ... तो चलो, मेरी खोह मे ठहरना," उसने कहा। उसने एक क्षण भौहें चढाकर देखा और मंद स्वर मे आगे कहा "मेरे कमरे का साथी आज वापस न लौट सका... इसलिए एक तख्ता खाली है। मैं साफ चादरों का प्रबंध कर लूगा। तो चलिए।"

स्पष्ट ही, वह उन लोगो मे से था जो हर नवागत से बातें करने के शौकीन होते हैं और उससे सारी जानकारी निकाल लेना चाहते हैं। मैं राज़ी हो गया। हम सूखे नाले मे उतरे जिसकी दोनों ढलानो पर जगली

ाई देते थे और ऐसा जान पड़ता था मानो वहां कोई आदमी छिपा है जिसकी टांगें बाहर झांक रही हैं। स्पष्ट था कि मैं जो आश्चर्य अनुभव कर रहा था, वह मेरे चेहरे पर अभिव्यक्त हो उठा था, क्योंकि मेजबान ने मेरी तरफ देखा और प्रसन्नतापूर्वक, विनोदी मुसकान के साथ पूछा:

"आपने पहले नहीं गौर किया क्या?"

"मैं सपने में भी नहीं सोच सकता था. . ."

"यह सुनकर मुझे खुशी हुई! धन्यवाद! लेकिन मुझे ताज्जुब है कि आपको किसी ने नहीं बताया। यहां जितने अव्वल दर्जे के विमान-चालक हैं, उतने झक्की भी। कैसी बात है कि वे किसी नये आदमी को बताने से चूक गये और वह भी 'प्राव्दा' के संवाददाता को, और उसे अपनी यहां की करामात के बारे में नहीं बताया।"

"लेकिन यह तो असाधारण बात है, यह तो तुम मानोगे। बिना पैरों के, लड़ाकू विमान में लड़ना! इसके लिए पौरुष की आवश्यकता है। उड्डयन कला के इतिहास में ऐसी मिसाल कोई नहीं है।"

विमान-चालक ने आनन्दपूर्वक सीटी बजायी और कहा

"उड्डयन कला का इतिहास उसमें बहुत-सी बातें नहीं थीं, लेकिन इस युद्ध में सोवियत विमान-चालकों ने उन बातों को लिख दिया है। लेकिन इसमें खुशी की क्या बात है? विश्वास करो, मैं इन पैरों के बजाय असली पैरों से उड़ना ही पसंद करता। मगर क्या किया जाये। यही होना था," विमान-चालक ने सांस खींची और आगे कहा, "और ठीक बात तो यह है कि उड्डयन के इतिहास में ऐसी घटनाएं हैं।"

उसने अपने नक्शे के केस में टटोलकर किसी पत्रिका की कतरन निकाल ली जो फटी हुई और जर्जर थी और सेलोफेन के टुकड़े पर चिपकी हुई थी। इसमें एक विमान-चालक की चर्चा थी जिसने एक पैर खो दिया था और फिर भी विमान चलाया था।

"लेकिन उसके एक पैर तो था। और इसके अलावा, उसने लड़ाकू विमान नहीं, पुराना 'फरमान' चलाया था," मैंने कहा।

"लेकिन मैं सोवियत हवाबाज़ हूं," उत्तर मिला, "यह मत समझना कि मैं शेखी बघार रहा हूं। ये मेरे शब्द नहीं हैं। ये शब्द मुझसे एक बहुत बढ़िया आदमी, एक असली इनसान ने कहे थे," उसने 'असली' शब्द पर विशेष ज़ोर दिया, "वह मर चुका है।"

विमान-चालक के चौड़े, उत्साहपूर्ण चेहरे पर मधुर, कोमल दुख की छाया दौड़ गयी, उसकी आँखें करुण, निर्मल प्रकाश से आलोकित हो उठीं, उसका चेहरा कम-से-कम दस वर्ष कम आयु का, लगभग जवान, दिखने लगा और मैं यह देखकर चकित रह गया कि एक क्षण पहले जिस व्यक्ति को मैं प्रौढ़ समझा था, वह मुश्किल से बाईस-तेईस वर्ष का है।

"मुझे इससे बड़ी चिढ़ होती है जब लोग पूछते हैं कि यह कहाँ, कैसे और कब हुआ .. लेकिन इस समय वह सब मेरी आँखों के सामने घूमने लगा है.. आप मेरे लिए अजनबी हैं। कल हम दोनों अलविदा कहेंगे और शायद फिर कभी न मिलें... अगर आप चाहें, तो मैं आपको अपने पैरों की गाथा सुना सकता हूँ।" ..

वह तख्ते पर उठकर बैठ गया, उसने अपना कम्बल ठोड़ी तक खींच लिया और अपनी कहानी शुरू की। वह जैसे गहरी सोच में डूबकर मुझे बिल्कुल भूल गया था, मगर उसने कहानी बड़ी अच्छी तरह और स्पष्ट रूप से बतायी। स्पष्ट था कि उसकी बुद्धि तीव्र, स्मृति पैनी और हृदय विशाल है। फौरन समझकर कि कोई महत्त्वपूर्ण और अभूतपूर्व बात सुनने को मिल रही है, जिसे शायद मैं और कभी न सुन सकूँगा, मैंने मेज से स्कूली कापी उठा ली जिस पर लिखा था "तीसरे स्क्वाड्रन की उड़ानों का रोजनामचा" और वह जो कुछ कहता जा रहा था, उसे लिखना शुरू कर दिया।

रात अनदेखे ही जंगल के ऊपर से सरक गयी। मेज का लैम्प भभक और सिसकारियाँ भर रहा था, और और असावधान पतंगे, जिन्होंने उसकी लौ में पंख जला लिये थे, उसके चारों ओर बिखरे पड़े थे। हवा के झोंके के द्वारा अकार्डियन की स्वर-लहरी हमारे कानों तक छू गयी। फिर अकार्डियन का कहना शान्त हो गया और जंगल के रात्रिकालीन स्वर-पक्षी का मीठा चीत्कार, उल्लू की दूरागत कूक, पास के दलदल में मेढ़कों का टर्राना और झिंगुरों की झनकार—सब और उत्तम स्वर की सम्पूर्ण धुन के साथ सुनाई देने लगी।

इस व्यक्ति ने जो आश्चर्यजनक कथा सुनाई, वह इतनी रोमांचकारी थी कि मैंने उस विवरण को पूर्ण रूप से यथासम्भव हू-ब-हू उसी रूप में लिख लेने का प्रयत्न किया। मैंने वह कापी भर डाली, मेज पर रखी हुई दूसरी कापी भी ... उसे भी भर दिया और यह न देख सका कि रात के सब रहस्य के आसमान का जो भाग दिखाई देता था, वह धीरे धीरे ...

इसलिए वह बहाना करने लगी कि जैसे उसे कुछ नहीं मालूम है। हम दोनो एक दूसरे को छल रहे थे, भगवान जाने क्यों! क्या आप उसे देखना चाहेंगे?"

उसने लौ बढ़ायी और तख्ते के ऊपर दीवार पर टंगी हुई मेनुताइड के फ्रेम में जड़ी तस्वीरों के पास लैम्प ले गया। एक औसिया फ़ोटो था, जो बिल्कुल धुंधला और जर्जर हो गया था और मैदान में फूलों के बीच बैठी हुई मुसकराती, अल्हड़ लड़की के लम्बगिस कठिनाई से ही समझ में आते थे। दूसरे चित्र में वही लड़की जूनियर लेफ़्टीनेंट–टेकनीशियन की वर्दी पहने दिखाई दे रही थी–उसके मुखड़े पर गम्भीरता और चतुराई के भाव थे और आंखों में एक पैनी-सी अभिव्यक्ति। वह इतनी छोटी-सी थी कि अपनी वर्दी में वह सुन्दर लड़के के समान दिखाई देती थी, लेकिन इस लड़के की आंखें थकी हुई, बाल-सुलभ भाव से विहिन और मर्मवेधी थी।

"तुम्हें पसंद आयी?"

"बहुत," मैंने हृदय से कहा।

"मुझे भी बहुत पसंद है," उसने आनन्दपूर्वक मुसकराकर कहा।

"और स्त्रुच्कोव, वह कहा है?"

"मुझे पता नही। उसका आखिरी पत्र मुझे मिला था शीतकाल में।"

"और टैंकची, क्या नाम है उसका?"

"तुम्हारा मतलब है ग्रिगोरी ग्वोज्देव से? वह अब मेजर हो गया है। उसने प्रोखोरोवका के प्रसिद्ध युद्ध मे और बाद में कूर्स्क के टैंक आक्रमण मे भाग लिया था। हम दोनो एक ही क्षेत्र मे लड़ रहे थे, मगर भेंट न कर सके। वह एक टैंक रेजीमेंट का कमाडर है। इधर कुछ दिनों से उसका कोई पत्र नही मिला है, पता नहीं क्यों। लेकिन कोई फ़िक्र नही। जिंदा रहें, तो हम दोनो एक दूसरे को खोज निकालेंगे। और क्यो नही . खैर, अब हम लोगो को कुछ सो लेना चाहिए। रात बीत गयी है।"

उसने रोशनी बुझा दी।

"मैं तुम्हारे बारे मे 'प्राव्दा' मे लिखना चाहूगा," मैंने कहा।

"चाहो तो लिखो," विमान-चालक ने बिना विशेष उत्साह से कहा। और फिर बहुत उनींदे भाव से आगे कहा, "लेकिन शायद बेहतर हो, न लिखो। गोयबल्स इस कहानी को हथिया लेगा और सारी दुनिया में

पीटता फिरेगा कि रूसी लोग पैरविहीन लोगों को लड़ने के लिए
र रहे हैं और इस तरह की बात... तुम जानते ही हो,
वैसे हैं।"

एक क्षण बाद वह जोरदार खर्राटे भरने लगा। लेकिन मैं न
। इस बयान की सादगी और महत्ता ने मुझे इतना रोमांचित
था। अगर इस कथा का नायक ठीक मेरे सामने न सोया हुआ
उसके नमी से चमक रहे कृत्रिम पैर जमीन पर रखे हुए
र भोर की मटमैली रोशनी में साफ दिखाई न दे रहे होते, तो
सब कुछ सुन्दर लोक-कथा मालूम होती।

...मैं तब से अलेक्सेई मेरेस्येव से न मिल सका, लेकिन
रा मुझे जहां भी वहां ले गयी, वहां वे दो स्कूली कापियां
रहीं, जिनमें मैंने ओर्योल के निकट उस विमान-चालक की
था को अंकित किया था। युद्ध-काल में, युद्ध के बीच खामोशी
सके बाद मुक्त यूरोप के देशों में भ्रमण करते हुए न जाने कि
ने उसके बारे में कहानी लिखना आरम्भ किया, लेकिन हर
अलग रख देता था, क्योंकि मैं जो कुछ लिखने में सफल होता
उसके असली जीवन की रक्तहीन छाया मात्र मालूम होता था

लेकिन ऐसा हुआ कि मैं न्यूरेनबर्ग में अंतर्राष्ट्रीय फौजी अ
बैठक में उपस्थित था। वह दिन था जब गोयरिंग की जिरह
रही थी। दस्तावेज़ी सबूतों से कांपकर और सोवियत अभियोक्ता
लो से मजबूर होकर "जर्मन नाजी नम्बर २" ने अनिच्छापू
मीजकर अदालत को बताया कि कैसे फासिज्म की विशाल औ
अजेय सेना मेरे देश के विस्तृत प्रसार में लड़े गये युद्धों में स
के आघातों से ढह गयी और लुप्त हो गयी। अपनी सफाई देते
रिंग ने आसमान की ओर अपनी आंखें उठायी और कहा· "
की यही इच्छा थी।"

"क्या तुम यह मंजूर करते हो कि सोवियत संघ पर [illegible]
ढंग से हमला करके, जिससे जर्मनी का सफाया हो गया, तुमने अत्यन्त
घृणित अपराध किया था?" सोवियत अभियोक्ता रोमान रुदेन्को ने गोय-
रिंग से पूछा।

"वह अपराध नहीं, घातक गलती थी," मंद स्वर में गोयरिंग ने
त्योरिया चढ़ाकर और आंखें नीची करते हुए उत्तर दिया था, "मैं इतना

ही मंज़ूर कर सकता हूं कि हमने अंधाधुंध कार्रवाई की, क्योंकि जैसा युद्ध के दौरान साबित होता गया, हमें बहुत-सी चीज़ों का ज्ञान न था और कई चीज़ों के बारे में तो हमें अनुमान भी नहीं हो सकता था। मुख्य चीज़ जो हम नहीं जानते या समझते थे, वह था सोवियत रूस के वासियों का चरित्र। वे एक पहेली थे और आज भी हैं। दुनिया का सर्वोत्तम जासूसी विभाग भी यह नहीं पता लगा सकता है कि सोवियत की असली युद्ध-क्षमता कितनी है। मेरा मतलब तोपों, हवाई जहाज़ों और टैंकों की संख्या से नहीं है। उसका हमें करीब-करीब अंदाज़ था। और न मेरे दिमाग में उनके उद्योगों की क्षमता और क्रियाशीलता का प्रश्न है। मेरा मतलब है उनकी जनता से। रूसी लोग विदेशियों के लिए हमेशा पहेली रहे हैं। नेपोलियन भी उन्हें समझने में असमर्थ रहा। हमने सिर्फ़ नेपोलियन की ही ग़लती दोहरायी।"

"रूसियों की पहेली" और हमारे देश की "अज्ञात युद्ध-क्षमता" के बारे में इस जनरल इकबाल से हमारे अन्दर गर्व का भाव भर गया।

हम भली-भांति विश्वास कर सकते हैं कि सोवियत जनता, उसकी क्षमता, प्रतिभा, साहस और आत्म-त्याग, जिनसे युद्ध-काल में संसार भर इतना विस्मित हो गया, इन सभी गोयरिंगों के लिए घातक पहेली थे और रहेंगे। सचमुच, जर्मनों के तुच्छ "नस्ल सिद्धान्त" का आविष्कार करनेवाले लोग समाजवादी देश में पली-पुसी जनता की आत्मा और शक्ति को कैसे समझ सकते हैं? और मुझे यकायक अलेक्सेई मेरेस्येव का स्मरण हो आया। उसकी अर्धविस्मृत आकृति स्पष्ट और घनिष्ठ रूप में वहीं गम्भीर, बलूत-जड़ित भवन में मेरे सामने खड़ी हो गयी। और ठीक वहीं, न्यूरेनबर्ग में, फासिज़्म के जन्म-स्थान में मेरे अंदर यह उत्कंठा जागृत हो गयी कि जिस साधारण सोवियत जनता ने कैटल की फ़ौजों और गोयरिंग के विमान-बेड़े को चकनाचूर कर दिया, रोयडर के समुद्री जहाज़ों को डुबो दिया और अपने शक्तिशाली आघातों से हिटलर के लुटेरे राज्य को ख़त्म कर दिया, उसी जनता के एक व्यक्ति की कहानी कह डालूं।

न्यूरेनबर्ग में वहीं कापियां मेरे साथ ही थीं, जिनमें से एक पर मेरेस्येव के हाथ की लिखावट में लिखा था: "तीसरे स्क्वाड्रन की उड़ानों का रोज़नामचा।" अदालत की बैठक से अपने निवास-स्थान पर लौटकर मैंने पुरानी टिप्पणियों को फिर पढ़ा और फिर लिखने बैठ गया, और अलेक्सेई मेरेस्येव ने जो कुछ मुझे बताया था, उसके बारे में मुझे जितनी

जानकारी थी, वह सारा विवरण सच्चाई के साथ पेश करने बैठ गया।'

उसने मुझे जो कुछ बताया था, उसका बहुत भाग मैं लिख नहीं पाया था और इन वर्षों में बहुत-सी बातें मेरी स्मृति से उतर गयी थीं। विनम्रतावश, अलेक्सेई मेरेस्येव ने अपने बारे में बहुत कुछ छोड़ दिया था और मुझे इस अभाव को अपनी कल्पना से भरना पड़ा। उस रात उसने अपने मित्रों का चित्रांकन जितने स्पष्ट रूप से और हार्दिकता के साथ किया था, वह मेरी स्मृति में धुंधला पड़ गया था और मुझे उनमें फिर रंग भरना पड़ा। तथ्यों का पूर्णतया पालन न कर पाने के कारण मैंने नायक के नाम में थोड़ा-सा परिवर्तन कर दिया और उसके उन साथियों और सहायकों के नाम भी बदल दिये जिन्होंने दुस्साध्य और वीरतापूर्ण मार्ग में उसकी सहायता की थी। मुझे आशा है कि इस कथा में अगर वे अपने को पहचान लेंगे तो मुझे क्षमा कर देंगे।

इस पुस्तक का शीर्षक मैंने रखा है "असली इनसान" क्योंकि अलेक्सेई मेरेस्येव असली सोवियत मानव है, जिस तरह के लोगों को गोयरिंग जीवनपर्यंत नहीं समझ सका और आज भी वे लोग नहीं समझ पा रहे हैं जो इतिहास के सबक भुला रहे हैं और जिनकी आज भी गुप्त आकांक्षा है कि वे नेपोलियन और हिटलर का अनुसरण कर सकें।

"असली इनसान" इसी प्रकार लिखी गयी थी। प्रकाशन के लिए पांडुलिपि तैयार हो जाने के बाद मैं चाहता था कि प्रकाशित होने से पहले इसका नायक इसे पढ़ ले, मगर युद्ध की उथल-पुथल में उसका पता मैं खो चुका था।

कहानी एक पत्रिका में प्रकाशित होना शुरू हो गयी थी और रेडियो पर पढ़ी जा रही थी, तभी एक सुबह मेरे टेलीफ़ोन की घंटी बजी। मैंने रिसीवर उठाया और किंचित भर्रायी-सी, परिचित और धुंधली-सी परिचित आवाज़ सुनाई दी।

"मैं आपसे मिलना चाहता हूं।"

"कौन बोल रहा है?"

"गार्ड मेजर अलेक्सेई मेरेस्येव।"

कुछ घंटे बाद अपनी भालू जैसी, किंचित लुढ़कती चाल से उसने मेरे कमरे में प्रवेश किया – वह उसी तरह फुर्तीला और प्रसन्नचित्त दिखाई दे रहा था। युद्ध के चार वर्षों ने उसमें मुश्किल ही से कोई परिवर्तन किया था।

पाठको से

'रादुगा' प्रकाशन ताशकन्द इस पुस्तक के अनुवाद और डिजाइन के बारे मे आपके विचारो के लिए आपका अनुगृहीत होगा। आपके अन्य सुझाव प्राप्त करके भी हमे बड़ी प्रसन्नता होगी। कृपया हमे इस पते पर लिखिये

'रादुगा' प्रकाशन
मकान नम्बर ३३, त्स.१४
ताशकन्द – ७०००११, जी. एस. पी.
सोवियत सघ

Raduga publishers
House No. 33, C—14
Tashkent—700011, GSP
USSR